हिन्दी गाइड

कक्षा

10

गद्य- खण्ड

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हिन्दी गद्य का प्राचीन रूप किस रूप में हमें देखने को मिलता है?

उत्तर—हिन्दी गद्य का प्राचीनतम रूप हमें राजस्थानी एवं ब्रजभाषा के रूप में देखने को मिलता है।

प्रश्न **2.** हिन्दी गद्य का आविर्भाव कब हुआ?

उत्तर—हिन्दी गद्य का आविर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी के नवजागरण काल में हुआ।

प्रश्न **3.** राजस्थानी गद्य हमें कहाँ दृष्टिगत होता है?

उत्तर—राजस्थानी गद्य हमें दानपात्रों, पट्टे-परवानों, टीकाओं तथा अनुवाद ग्रंथों में दृष्टिगत होता है।

प्रश्न **4.** ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात कब हुआ?

उत्तर—ब्रजभाषा के गद्य का सूत्रपात (विकास) संवत् 1400 के लगभग हुआ।

प्रश्न 5. 'अगहन माहात्म्य' एवं 'बैशाख माहात्म्य' के लेखक कौन हैं?

उत्तर—'अगहन माहात्म्य' तथा 'बैशाख माहात्म्य' के लेखक बैकुण्ठमणि शुक्ल हैं।

प्रश्न 6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल खड़ीबोली गद्य का उद्‌भव किससे मानते हैं?

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल खड़ीबोली गद्य का उद्‌भव अपभ्रंश काव्य से मानते हैं।

प्रश्न 7. 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' के लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—'चन्द छन्द बरनन की महिमा' के लेखक अकबर के दरबारी कवि गंग हैं।

प्रश्न 8. खड़ीबोली गद्य को प्रगतिपथ पर आगे बढ़ाने के महत्त्वपूर्ण कार्य का श्रेय जिन चार लेखकों को दिया जाता है, उनके नाम लिखिए।

उत्तर—खड़ीबोली गद्य को प्रगतिपथ पर आगे बढ़ाने के महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए इन चार लेखकों—सदासुखलाल, इंशा अल्ला खाँ, लल्लूलाल और सदल मिश्र को विशेष श्रेय दिया जाता है।

प्रश्न 9. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दो प्रमुख कृतियों के नाम लिखिए।

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दो प्रमुख कृतियाँ हैं—

(1) चिन्तामणि (2) विचार वीथी।

प्रश्न 10. शुक्ल युग के किन्हीं दो गद्यकारों और उनकी कृतियों के नाम लिखिए।

***अथवा* शुक्ल युग के दो प्रमुख गद्य-लेखकों के नाम लिखिए।**

उत्तर—शुक्ल युग दो गद्यकार तथा उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं—

(1) जयशंकर प्रसाद—आँधी, कंकाल

(2) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल—चिन्तामणि, त्रिवेणी।

प्रश्न 11. भाषा किसे कहते हैं?

उत्तर—भाषा अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। इसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों, भावों व अनुभूतियों को व्यक्त करता है।

प्रश्न 12. भाषा के कौन-कौन से रूप हैं?

उत्तर—भाषा के दो रूप हैं—(1) गद्य (2) पद्य।

प्रश्न 13. गद्य का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—छन्द, ताल, यति, गति, तुकबन्दी व लय से मुक्त स्वतंत्र वाक्यबद्ध रचना गद्य कहलाती है। सामान्य रूप से व्यवहार में प्रयोग की जाने वाली बोलचाल की साधारण भाषा गद्य है।

प्रश्न 14. गद्य और पद्य का अन्तर एक वाक्य में लिखिए।

उत्तर—गद्य एवं पद्य में मुख्य अंतर यह है कि गद्य, विचारप्रधान और पद्य भावप्रधान होते हैं।

प्रश्न 15. हिन्दी के महत्त्व को किसने स्पष्ट किया है?

उत्तर—हिन्दी शब्द के संदर्भ में प्रसिद्ध शायर इकबाल ने 'हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा' कहकर हिन्दी के महत्त्व को स्पष्ट किया है।

प्रश्न 16. गद्य का महत्त्व संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गद्य का महत्त्व यह है कि हम गद्य के द्वारा अपने विचारों व भावों को सरल एवं सहज भाषा के रूप में अभिव्यक्त कर सकते हैं।

प्रश्न 17. गद्य के उद्‌देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—गद्य का मुख्य उद्‌देश्य मानव में बुद्धि, वैचारिकता, विवेक, तर्क, चिन्तन आदि का विकास करना होता है।

प्रश्न 18. भारतीय इतिहास में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

उत्तर—भारतीय इतिहास में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग हिन्दुस्तान में रहने वाले लोगों के लिए प्रयोग की जाने वाली जनसम्पर्क भाषा के रूप में किया गया है।

प्रश्न 19. हिन्दी क्या है?

उत्तर—हिन्दी एक भाषा है, जिसे भारतियों द्वारा मातृभाषा के रूप में प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 20. हिन्दी में कितनी बोलियाँ समाहित हैं?

उत्तर—हिन्दी में आठ बोलियाँ समाहित हैं। ये हैं—ब्रज, खड़ीबोली, बुन्देली, हरियाणवी, कन्नौजी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।

प्रश्न 21. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को किन दो विधाओं में सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली है?

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को निबन्ध एवं आलोचना के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली है।

प्रश्न 22. कुछ प्रगतिवादी लेखकों के नाम लिखिए।

उत्तर—कुछ प्रगतिवादी लेखक हैं—डॉ० धर्मवीर भारती, डॉ० रामविलास शर्मा, डॉ० रांगेय राघव, डॉ० शिवप्रसाद सिंह, राजेन्द्र यादव, डॉ० नामवर सिंह।

प्रश्न 23. विचारात्मक तथा भावात्मक निबन्ध-लेखकों में से एक-एक निबन्ध-लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—विचारात्मक निबन्ध के एक लेखक का नाम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल है।

भावनात्मक निबन्ध के एक लेखक का नाम वियोगी हरि है।

प्रश्न 24. शुक्ल युग के दो मुख्य निबन्धकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—शुक्ल युग के दो मुख्य निबन्धकार हैं—(1) बाबू गुलाबराय (2) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

प्रश्न 25. शुक्लोत्तर युग के किन्हीं दो गद्यकारों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—शुक्लोत्तर युग के दो निबन्धकार या गद्यकार हैं—(1) जैनेन्द्र कुमार (2) हजारीप्रसाद द्विवेदी।

प्रश्न 26. 'बात' किस प्रकार का निबन्ध है?

उत्तर—बात, भेटवार्ता अर्थात् साक्षात्कार व इण्टरव्यू से सम्बन्धित एक निबन्ध है।

प्रश्न 27. 'स्मृति की प्रमुख शैली कौन-सी है?

उत्तर—स्मृति की प्रमुख शैली संस्मरण है।

प्रश्न 28. कहानी शीर्षक की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कहानी एक साहित्यिक विधा है, जिसमें जीवन के किसी एक पक्ष का कल्पनामिश्रित, मार्मिक एवं रोचक चित्रण होता है।

प्रश्न 29. कहानियों के किन्हीं चार भेदों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—कहानी के चार भेद इस प्रकार हैं—(1) ऐतिहासिक कहानी (2) सामाजिक कहानी (3) मनोवैज्ञानिक कहानी (4) यथार्थवादी कहानी।

प्रश्न 30. कहानी के कौन-कौन-से तत्त्व होते हैं?

उत्तर—कहानी के तत्त्व हैं—(1) कथावस्तु (2) चरित्र-चित्रण (3) कथोपकथन (4) भाषा-शैली (5) देशकाल का वातावरण (6) उद्देश्य।

प्रश्न 31. आधुनिक कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—आधुनिक कहानी का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन के भोगे हुए सत्य की यथार्थ अभिव्यक्ति का चित्रण करना है।

प्रश्न 32. उपन्यास और कहानी का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कहानी में जहाँ जीवन के किसी एक पक्ष का वर्णन होता है, वहीं उपन्यास में प्रसन्न करने का भाव निहित होता है।

प्रश्न 33. विषयवस्तु के आधार पर कहानियों के भेद स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—विषयवस्तु के आधार पर कहानियों का विभाजन इस प्रकार है—(1) ऐतिहासिक (2) सामाजिक (3) प्रतीकवादी (4) यथार्थवादी (5) मनोवैज्ञानिक (6) हास्य-व्यंग्यात्मक इत्यादि।

प्रश्न 34. 'पूस की रात', 'कफन' और 'मन्त्र' कहानियों के लेखक कौन हैं?

उत्तर—'पूस की रात', 'कफन', और 'मंत्र' कहानियों के लेखक मुंशी प्रेमचन्द हैं।

प्रश्न 35. 'झलमला' कहानी के लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—'झलमला' कहानी के लेखक का नाम पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी है।

प्रश्न 36. हिन्दी के दो प्रसिद्ध कहानी-लेखकों के नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी के दो प्रसिद्ध कहानीकार हैं—(1) मुशी प्रेमचन्द (2) जयशंकर प्रसाद।

प्रश्न 37. शुक्ल युग के दो प्रमुख कहानीकारों एवं एक-एक कहानी का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—शुक्ल युग के दो कहानीकार है—मुंशी प्रेमचन्द एवं रामचन्द्र शुक्ल। क्रमशः इनकी रचनाएँ हैं—'गबन' एवं 'चिंतामणि'।

प्रश्न 38. मुंशी प्रेमचन्द की किसी एक प्रसिद्ध कहानी का नाम लिखिए।

उत्तर—मुंशी प्रेमचन्द की एक कहानी का नाम 'पंचपरमेश्वर' है।

प्रश्न 39. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख कहानीकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—शुक्लोत्तर युग के दो कहानीकारों हैं—(1) इलाचन्द्र जोशी (2) राजेन्द्र यादव।

प्रश्न 40. प्रेमचन्दोत्तर युग के किन्हीं दो कहानीकारों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—प्रेमचन्दोत्तर युग के दो कहानीकार हैं—(1) यशपाल (2) जैनेन्द्र कुमार।

प्रश्न 41. नाटक वास्तव में किसका एक भेद है?

उत्तर—नाटक वास्तव में कहानी का एक भेद है।

प्रश्न 42. नाटक को रूपक क्यों कहा गया है?

उत्तर—नाटक में पात्रों और घटनाओं पर किन्हीं अन्य व्यक्तियों व घटनाओं को आरोपित किया जाता है। रूप के इस आरोप के कारण इसे 'रूपक' भी कहा जाता है।

प्रश्न 43. आज नाटक किसका पर्याय बन गया है?

उत्तर—आज नाटक हिन्दी फिल्मों का एक पर्याय बना गया है।

प्रश्न 44. हिन्दी में मौलिक नाटकों का आरम्भ किससे माना जाता है?

उत्तर—हिन्दी में मौलिक नाटकों का आरम्भ 'नहुष' से प्रारम्भ हुआ।

प्रश्न 45. छायावादी युग के दो ऐतिहासिक नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—छायावादी युग के दो ऐतिहासिक नाटकाकार हैं—(1) डॉ० रामकुमार वर्मा (2) जयशंकर प्रसाद।

प्रश्न 46. शुक्ल युग के दो नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—शुक्ल युग के दो नाटककार हैं—(1) जयशंकर प्रसाद (2) हरिकृष्ण 'प्रेमी'।

प्रश्न 47. प्रसाद युग के किन्हीं दो नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रसाद युग के दो नाटककार हैं—(1) जयशंकर प्रसाद (2) हरिकृष्ण 'प्रेमी'।

प्रश्न 48. जयशंकर प्रसाद के नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर—जयशंकर प्रसाद के दो नाटक हैं—(1) स्कन्दगुप्त (2) चन्द्रगुप्त।

प्रश्न 49. जयशंकर प्रसाद के परवर्ती नाटककारों में से किन्हीं दो का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—जयशंकर प्रसाद के परवर्ती दो नाटककार हैं—(1) उदयशंकर भट्ट (2) लक्ष्मीनारायण मिश्र।

प्रश्न 50. शुक्लोत्तर युग के दो/चार प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—शुक्लोत्तर युग के चार नाटककार हैं—(1) मोहन राकेश, (2) विष्णु प्रभाकर, (3) लक्ष्मीनारायण मिश्र, (4) धर्मवीर भारती।

प्रश्न 51. 'अन्धायुग' के रचनाकार का नाम लिखिए।

उत्तर—'अन्धायुग' के लेखक धर्मवीर भारती हैं।

प्रश्न 52. 'लहरों के राजहंस' के रचनाकार का नाम लिखिए।

उत्तर—'लहरों के राजहंस' के लेखक 'मोहन राकेश' हैं।

प्रश्न 53. वर्तमान युग के दो प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—वर्तमान युग के दो नाटककार हैं—(1) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (2) लक्ष्मीनारायण लाल।

प्रश्न 54. भारतेन्दु युग के बाद के प्रमुख ऐतिहासिक नाटककार का नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु युग के बाद के प्रमुख ऐतिहासिक नाटककार जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रश्न 55. जयशंकर प्रसाद के नाटकों के क्या विषय हैं?

उत्तर—जयशंकर प्रसाद के नाटकों के विषय हैं—प्राचीन इतिहास और संस्कृति का समन्वय, देशप्रेम, आधुनिक युग की समस्याएँ, मानव-मन का द्वंद्व आदि।

प्रश्न 56. प्रमुख रेडियो-नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रमुख रेडियो-नाटककार हैं—उदयशंकर भट्ट, सुमित्रानन्दन पंत, अमृतलाल नागर, विष्णु प्रभाकर, चिरंजीव, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' आदि।

प्रश्न 57. हिन्दी में उपन्यास शब्द का प्रयोग किसके पर्याय के रूप में जाना जाता है?

उत्तर—हिन्दी में उपन्यास शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के 'नॉवेल' के पर्याय के रूप में किया जाता है।

प्रश्न 58. हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास किसे माना जाता है? उसके लेखक का भी नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षागुरु' को माना जाता है।

प्रश्न 59. प्रेमचन्द उपन्यास को क्या समझते थे?

उत्तर—प्रेमचन्द 'उपन्यास' को मानव-चरित्र का चित्र समझते थे।

प्रश्न 60. 'चन्द्रकान्ता सन्तति' के लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—'चन्द्रकांता सन्तति' के लेखक देवकीनन्दन खत्री हैं।

प्रश्न 61. शुक्ल युग के सबसे प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक और उनके प्रमुख उपन्यासों के नाम लिखिए।

उत्तर—शुक्ल युग के प्रमुख उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द हैं। उनके प्रमुख उपन्यासों के नाम 'गोदान', 'गबन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' आदि हैं।

प्रश्न 62. प्रेमचन्द के दो प्रसिद्ध उपन्यासों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रेमचन्द्र के दो प्रमुख उपन्यास हैं—(1) गोदान (2) प्रेमाश्रय।

प्रश्न 63. 'गबन' के रचनाकार का नाम लिखिए।

उत्तर—'गबन' के रचनाकार मुंशी प्रेमचन्द हैं।

प्रश्न 64. 'सेवा सदन' के लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—'सेवा सदन' के लेखक मुंशी प्रेमचन्द हैं।

प्रश्न 65. शुक्ल युग के दो प्रमुख उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

अथवा किसी एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—शुक्ल युग के दो प्रमुख उपन्यासकार हैं—(1) आचार्य चतुरसेन शास्त्री (2) मुंशी प्रेमचन्द।

प्रश्न 66. प्रेमचन्द के बाद के तीन उपन्यासकारों के नाम लिखिए। **(2009)**

उत्तर—प्रेमचन्द के बाद के तीन उपन्यासकार हैं—(1) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', (2) इलाचन्द्र जोशी, (3) जैनेन्द्र कुमार।

प्रश्न 67. प्रेमचन्द के परवर्ती दो उपन्यासकारों तथा कहानीकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रेमचन्द के परवर्ती दो उपन्यासकार तथा कहानीकार हैं—(1) जैनेन्द्र कुमार (2) इलाचन्द्र जोशी।

प्रश्न 68. शुक्लोत्तर युग के दो उपन्यासकारों तथा उनके एक-एक उपन्यास का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—शुक्लोत्तर युग के दो उपन्यासकार व उनके उपन्यासों के नाम इस प्रकार हैं—(1) यशपाल—'झूठ सच' (2) जैनेन्द्र—'सुनीता'।

प्रश्न 69. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के चार उपन्यासों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के चार उपन्यास इस प्रकार हैं—(1) चारुचन्द्र लेखा (2) अनामदास का पोथा (3) बाणभट्ट की आत्मकथा (4) पुनर्नवा।

प्रश्न 70. प्रमुख आंचलिक उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रमुख आंचलिक उपन्यासकार इस प्रकार हैं—
(1) फणीश्वरनाथ 'रेणु' (2) नागार्जुन (3) देवेन्द्र सत्यार्थी (4) डॉ० रांगेय राघव (5) अमृतलाल नागर (6) उदयशंकर भट्ट।

प्रश्न 71. 'मृगनयनी' के लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—'मृगनयनी' उपन्यास के लेखक 'वृन्दावनलाल वर्मा' हैं।

प्रश्न 72. जयशंकर प्रसाद ने कौन-कौन-से उपन्यास लिखे हैं?

उत्तर—जयशंकर प्रसाद ने दो उपन्यास लिखे हैं—(1) कंकाल (2) तितली।

प्रश्न 73. हिन्दी के प्रमुख सामाजिक उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

उत्तर— हिन्दी के प्रमुख सामाजिक उपन्यासकार हैं—पाण्डेय बेचन शर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, अमृतलाल नागर, मोहन राकेश, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' इत्यादि।

प्रश्न 74. प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं—डॉ० धर्मवीर भारती, डा० देवराज, इलाचन्द्र जोशी, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', जैनेन्द्र कुमार इत्यादि।

प्रश्न 75. एकांकी किसे कहते हैं?

उत्तर—एक अंक में समाप्त होने वाले नाटक को एकांकी कहते हैं।

प्रश्न 76. एकांकी और नाटक का अन्तर संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—एकांकी एक ही घटना पर आधारित होता है, जबकि नाटक में एक मुख्य कथा तथा कुछ अन्तर्कथाएँ होती हैं।

प्रश्न 77. हिन्दी एकांकी का जनक किसे माना जाता है?

उत्तर—हिन्दी एकांकी का जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को माना जाता है।

प्रश्न 79. भुवनेश्वर गद्य की किस विधा-विशेष के लिए प्रसिद्ध हैं?

उत्तर—भुवनेश्वर नाटक और एकांकी गद्य-विधाओं के लिए प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न 79. यशपाल की किसी एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—यशपाल की एक रचना है—'झूठा सच'।

प्रश्न 80. हिन्दी के दो प्रमुख एकांकीकारों और उनके द्वारा लिखित एक-एक एकांकी के नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी के दो प्रमुख एकांकीकार और उनके द्वारा लिखित एकांकी के नाम है—(1) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'—'तौलिए' (2) डॉ० रामकुमार वर्मा—'दीपदान'।

1

हिन्दी गद्य

मित्रता

(आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किन साहित्यिक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई?

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सम्पादन, कहानी, इतिहास, आलोचना, निबन्ध इत्यादि विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई।

प्रश्न 2. 'हिन्दी शब्द सागर' के सम्पादक कौन हैं?

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल बनारस से प्रकाशित होने वाले पत्र 'हिन्दी शब्द सागर' के सम्पादक हैं।

प्रश्न 3. 'ग्यारह वर्ष का समय' कृति की विधा क्या है?

उत्तर—'ग्यारह वर्ष का समय' एक कहानी है, जो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा वर्ष 1903 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित कराई गई थी।

प्रश्न 4. 'चिन्तामणि' के लेखक का नाम बताइए।

उत्तर—'चिन्तामणि' के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। यह उनके द्वारा रचित एक निबन्ध है।

प्रश्न 5. शुक्ल जी की कृतियाँ बताइए।

उत्तर—शुक्ल जी की कृतियाँ हैं—चिन्तामणि, विचारवीथी, मित्रता (निबन्ध), रसमीमांसा, भ्रमरगीत-सार, जायसी ग्रन्थावली, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास (आलोचना), हिन्दी-साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास आदि।

प्रश्न 6. 'हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं' वाक्य का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं' इसका अर्थ है—जैसे कुम्हार कच्ची मिट्टी को विभिन्न आकार देता है, उसी तरह हमें भी अच्छा या बुरा बनाया जा सकता है। हमारी संगत जैसी होगी हम वैसे ही बन जाएँगे। इसलिए मित्रता अच्छे लोगों से करनी चाहिए, जिससे हमारा चित्त अच्छे संस्कार ग्रहण कर सके।

प्रश्न 7. स्वयं से दृढ़-संकल्प वाले लोगों का साथ बुरा क्यों है?

उत्तर—स्वयं से दृढ़-संकल्प वाले लोगों का साथ बुरा इसलिए है, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है।

प्रश्न 8. जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं, उन मित्रों का साथ कैसा होता है?

उत्तर—जो हमारी ही बात को ऊपर रखते है, उन मित्रों का साथ भी बुरा होता है क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है।

प्रश्न 9. मित्र कैसा होना चाहिए?

उत्तर—मित्र ऐसा होना चाहिए जो विश्वासपात्र हो, हमारे अन्दर संकल्पों को दृढ़ करे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाए, हमारे अन्दर सत्य, पवित्रता एवं मर्यादा की वृद्धि करे, कुमार्ग से हमें बचाए।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रामचन्द्र शुक्ल का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्याकाश के ऐसे देदीप्यमान नक्षत्र हैं जो पाठक को अज्ञान रूपी अन्धकार से दूर हटाकर ज्ञान के ऐसे आलोक में ले जाते हैं, जहाँ विवेक और बुद्धि का सुखद साम्राज्य होता है। शुक्ल जी एक कुशल निबन्धकार तो थे ही, वे समालोचना और इतिहास-लेखन के क्षेत्र में भी अग्रगण्य थे। इन्होंने अपने काल के ही नहीं अपितु वर्तमान के भी लेखक और पाठक दोनों का ही पर्याप्त मार्गदर्शन किया है।

जीवन-परिचय—हिन्दी के प्रतिभासम्पन्न मूर्धन्य समीक्षक एवं युग-प्रवर्तक साहित्यकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म **सन् 1884 ई०** में बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम के एक सम्भ्रान्त परिवार में हुआ था। इनके पिता चन्द्रबली शुक्ल मिर्जापुर में कानूनगो थे। इनकी माता अत्यन्त विदुषी और धार्मिक थीं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा अपने पिता के पास जिले की राठ तहसील में हुई और इन्होंने मिशन स्कूल से दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। गणित में कमजोर होने के कारण ये आगे नहीं पढ़ सके। इन्होंने एफ० ए० (इण्टरमीडिएट) की शिक्षा इलाहाबाद से ली थी, किन्तु परीक्षा से पूर्व ही विद्यालय छूट गया। इसके पश्चात् इन्होंने मिर्जापुर के न्यायालय में नौकरी आरम्भ कर दी। यह नौकरी इनके स्वभाव के अनुकूल नहीं थी, अत: ये मिर्जापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक हो गये। अध्यापन का कार्य करते हुए इन्होंने अनेक कहानी, कविता, निबन्ध, नाटक आदि की रचना की। इनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर इन्हें 'हिन्दी शब्द-सागर' के सम्पादन-कार्य में सहयोग के लिए श्यामसुन्दर दास जी द्वारा काशी नागरी प्रचारिणी सभा में ससम्मान बुलवाया गया। इन्होंने 19 वर्ष तक **'काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका'** का सम्पादन भी किया। किया कुछ समय पश्चात् इनकी नियुक्ति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक के रूप में हो गयी और श्यामसुन्दर दास जी के अवकाश प्राप्त करने के बाद ये हिन्दी विभाग के अध्यक्ष भी हो गये। स्वाभिमानी और गम्भीर प्रकृति का हिन्दी का यह दिग्गज साहित्यकार **सन् 1941 ई०** में स्वर्गवासी हो गया।

रचनाएँ—शुक्ल जी एक प्रसिद्ध निबन्धकार, निष्पक्ष आलोचक, श्रेष्ठ इतिहासकार और सफल सम्पादक थे। इनकी रचनाओं का विवरण निम्नवत् है—

(1) **निबन्ध**—इनके निबन्धों का संग्रह 'चिन्तामणि' (दो भाग) तथा 'विचारवीथी' नाम से प्रकाशित हुआ।

(2) **आलोचना**—शुक्ल जी आलोचना के सम्राट् हैं। इस क्षेत्र में इनके तीन ग्रन्थ प्रकाशित हुए—(क) रस मीमांसा—इसमें सैद्धान्तिक आलोचना सम्बन्धी निबन्ध हैं, (ख) त्रिवेणी—इस ग्रन्थ में सूर, तुलसी और जायसी पर आलोचनाएँ लिखी गयी हैं तथा (ग) सूरदास।

(3) **इतिहास**—युगीन प्रवृत्तियों के आधार पर लिखा गया इनका **'हिन्दी-साहित्य का इतिहास'** हिन्दी के लिखे गये सर्वश्रेष्ठ इतिहासों में एक है।

(4) **सम्पादन**—इन्होंने **'जायसी ग्रन्थावली', 'तुलसी ग्रन्थावली', 'भ्रमरगीत सार', 'हिन्दी शब्द-सागर', 'काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका'** और **'आनन्द कादम्बिनी'** का कुशल सम्पादन किया।

इसके अतिरिक्त शुक्ल जी ने कहानी (ग्यारह वर्ष का समय), काव्य-रचना (अभिमन्यु-वध) की रचना की तथा कुछ अन्य भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद भी किये। इनमें 'मेगस्थनीज का भारतवर्षीय विवरण', 'आदर्श जीवन', 'कल्याण का आनन्द', 'विश्व प्रबन्ध', 'बुद्धचरित' (काव्य) आदि प्रमुख हैं।

साहित्य में स्थान—हिन्दी निबन्ध को नया आयाम देकर उसे ठोस धरातल पर प्रतिष्ठित करने वाले शुक्ल जी हिन्दी-साहित्य के मूर्धन्य आलोचक, श्रेष्ठ निबन्धकार, निष्पक्ष इतिहासकार, महान् शैलीकार एवं युग-प्रवर्तक साहित्यकार थे। ये हृदय से कवि, मस्तिष्क से आलोचक और जीवन से अध्यापक थे। इनकी विलक्षण प्रतिभा के कारण ही इनके समकालीन हिन्दी गद्य के काल को 'शुक्ल युग' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

शुक्ल जी के विषय में **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने कहा है कि ''आचार्य शुक्ल उन महिमाशाली लेखकों में हैं, जिनकी प्रत्येक पंक्ति आदर के साथ पढ़ी जाती है और भविष्य को प्रभावित करती रहती है। आचार्य शब्द ऐसे ही कर्त्ता साहित्यकारों के योग्य है।''

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(1) विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे, तब वे हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि वे हमें उत्तमतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में हर तरह से सहायता देंगे। सच्ची मित्रता में उत्तम-से-उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक पुरुष को करना चाहिए।

प्रश्न (क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ व लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश का पाठ 'मित्रता' है। इसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंश की व्याख्या—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का कहना है कि जिस तरह कुशल वैध नाड़ी देखकर तत्काल रोग का पता लगा लेता है, उसी प्रकार सच्चा मित्र हमारे गुणों और दोषों को परख लेता है। जिस प्रकार अच्छी माता धैर्य के साथ सभी कष्टों को सहन कर मधुर व्यवहार करती है, उसी प्रकार सच्चा मित्र अपने मित्र को बड़े धैर्यपूर्वक कुमार्ग से हटाकर स्नेह के साथ सन्मार्ग पर लगाता है। अत: हमें ऐसा मित्र चुनना चाहिए, जिस पर हमें यह विश्वास हो कि वह हमें कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग की ओर ले जाएगा।

(ग) प्रस्तुत अवतरण में शुक्ल जी क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर—प्रस्तुत अवतरण में शुक्ल जी ने अच्छे और विश्वासपात्र मित्र के महत्त्व को प्रकट करते हुए कहा है कि ऐसे मित्र में गुण-दोष की परख होती है, धैर्य एवं स्नेह होता है तथा ऐसा मित्र ही जीवन को सफल बनाने में सहायक होता है। लेखक ने विश्वासपात्र से ही मित्रता करने की प्रेरणा दी है।

(2) बाल-मैत्री में जो मग्न करने वाला आनन्द होता है, जो हृदय को बेधने वाली ईर्ष्या और खिन्नता होती है, वह और कहाँ? कैसी मधुरता और कैसी अनुरक्ति होती है, कैसा अपार विश्वास होता है। हृदय के कैसे-कैसे उद्‌गार निकलते हैं! वर्तमान कैसा आनन्दमय दिखाई पड़ता है और भविष्य के सम्बन्ध में कैसी लुभाने वाली कल्पनाएँ मन में रहती हैं। कितनी जल्दी बातें लगती हैं और कितनी जल्दी मानना-मनाना होता है। 'सहपाठी की मित्रता' इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल-पुथल का भाव भरा हुआ है।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यावतरण **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** द्वारा लिखित एवं हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'गद्य-खण्ड' में संकलित **'मित्रता'** नामक निबन्ध से अवतरित है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—रेखांकित अंश की व्याख्या—लेखक का कथन है कि बाल-मैत्री जहाँ असीम आनन्द को प्रदान करने वाली होती है, वहीं ईर्ष्या और खिन्नता का भाव भी उसमें शीघ्र ही आ जाता है। बालक का स्वभाव होता है कि यदि कोई उसके मन की बात कह दे तो वह उससे अपार स्नेह करता है और यदि कोई उसके मन के प्रतिकूल आचरण कर दे तो उसका मन छोटी-छोटी बातों को लेकर खिन्न हो जाता है, लेकिन यह खिन्नता क्षणिक होती है। बालकों की मित्रता में जैसी मधुरता एवं प्रेम होता है, उसका उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलता। बच्चों में एक-दूसरे के प्रति जो विश्वास देखने को मिलता है, वह भी परमानन्द प्रदान करने वाला होता है। अपने भविष्य के लिए उनके मन में जो अनेकानेक कल्पनाएँ होती हैं, उसके कारण उन्हें वर्तमान आनन्ददायक दिखाई पड़ता है।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर—प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने बाल-मैत्री एवं बाल-स्वभाव पर प्रकाश डालते हुए इस पर आधारित मित्रता का अत्यधिक स्वाभाविक चित्रण किया है तथा यह स्पष्ट किया है कि बचपन आनन्ददायक होता है।

(3) 'सहपाठी की मित्रता' इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल-पुथल का भाव भरा हुआ है। किन्तु जिस प्रकार युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शान्त और गम्भीर होती है, उसी प्रकार हमारी युवावस्था के मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं। मैं समझता हूँ कि मित्र चाहते हुए बहुत-से लोग मित्र के आदर्श की कल्पना मन में करते होंगे, पर इस कल्पित आदर्श से तो हमारा काम जीवन की झंझटों में चलता नहीं।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यावतरण **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** द्वारा लिखित एवं हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'गद्य-खण्ड' में संकलित **'मित्रता'** नामक निबन्ध से अवतरित है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—रेखांकित अंश की व्याख्या—आचार्य शुक्ल का कथन है कि बचपन में जब बच्चे एक साथ विद्यालयों में पढ़ते हैं और आपस में मित्र बनते हैं, तब की मित्रता में और जब वे युवावस्था में पहुँचते हैं, तब उनकी मित्रता का स्वरूप बदल जाता है। अब उनकी मित्रता में अधिक दृढ़ता, शान्ति और गम्भीरता होती है। बात-बात पर रूठने व मनाने-मानने की स्थिति नहीं रह जाती। युवावस्था में उम्र के अनुसार जो अनुभव एवं चिन्तन

की प्रवृत्ति विकसित होती है, उससे व्यक्तित्व के साथ मैत्रीभाव में भी दृढ़ता आती है।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर—प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने बाल्यावस्था और युवावस्था की मित्रता एवं उस समय के मित्रों के मध्य तुलना की है तथा यह स्पष्ट किया है कि मित्रता में कोरी-मधुर कल्पनाओं से नहीं वरन् व्यावहारिकता से काम लेना चाहिए।

(4) सुन्दर प्रतिमा, मनभावनी चाल और स्वच्छन्द प्रकृति ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है; पर जीवन-संग्राम में साथ देने वाले मित्रों में इनमें से कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिससे हम स्नेह न कर सकें। जिससे अपने छोटे-मोटे काम तो हम निकालते जाएँ, पर भीतर-ही-भीतर घृणा करते रहें? मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें, भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति-पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए—ऐसी सहानुभूति, जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे।

(क) प्रस्तुत अवतरण के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यावतरण **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** द्वारा लिखित एवं हमारी पाठ्य-पुस्तक '**हिन्दी**' के 'गद्य-खण्ड' में संकलित '**मित्रता**' नामक निबन्ध से अवतरित है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—रेखांकित अंश की व्याख्या—शुक्ल जी कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति को मित्र नहीं माना जा सकता, जो हमारे गुणों की तो प्रशंसा करता हो लेकिन मन में हमसे प्रेम न रखता हो। ऐसे व्यक्ति को भी मित्र नहीं माना जा सकता, जो समय-समय पर अपने छोटे-बड़े काम निकालकर स्वार्थ तो सिद्ध कर लेता है लेकिन अन्दर-ही-अन्दर अपने हृदय में हमसे घृणा करता हो। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मित्रता का आधार प्रेम-स्नेह होना चाहिए।

शुक्ल जी का कहना है कि मित्र के प्रति हृदय में प्रेम होना चाहिए। सच्चा मित्र विश्वास करने योग्य, सही मार्ग बताने वाला और भाई के समान निष्कपट प्रेम करने वाला होता है। हमारी और हमारे मित्र की आपस में सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए जिससे वह हमारे हानि-लाभ को अपना हानि-लाभ समझे और हम उसके हानि-लाभ को अपना। तात्पर्य यह है कि सच्ची मित्रता में सच्चा स्नेह होना चाहिए। जिनके हृदय में परस्पर घृणा भरी हो, वे मित्र नहीं हो सकते।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर—शुक्ल जी का कहना है कि सामान्यतया व्यक्ति के बाह्य व्यक्तित्व को देखकर उससे मित्रता कर ली जाती है, जबकि मित्रता का आधार व्यक्ति का अन्तर्व्यक्तित्व होना चाहिए, जिसकी लोग प्राय: अनदेखी करते हैं।

(5) मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार के कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। इसी प्रकार प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या वांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है। राम धीर और शान्त प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाइयों में अत्यन्त प्रगाढ़ स्नेह था। उदार तथा उच्चाशय कर्ण और लोभी दुर्योधन के स्वभावों में कुछ विशेष समानता न थी, पर उन दोनों की मित्रता खूब निभी।

(क) प्रस्तुत अवतरण के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यावतरण **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** द्वारा लिखित एवं हमारी पाठ्य-पुस्तक '**हिन्दी**' के 'गद्य-खण्ड' में संकलित '**मित्रता**' नामक निबन्ध से अवतरित है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—**रेखांकित अंश की व्याख्या**—शुक्ल जी कहते हैं कि सच्ची मित्रता के लिए दो व्यक्तियों के स्वभाव का एक समान होना कोई महत्त्व नहीं रखता है। यदि इसमें महत्त्व है तो केवल इस बात का कि दोनों व्यक्ति एक-दूसरे से कितनी सहानुभूति रखते हैं। यदि वे ऐसा समझते हैं तो विपरीत स्वभाव का होने पर भी उनकी मित्रता सच्ची सिद्ध होती है और यदि वे ऐसा नहीं समझते तो समान स्वभाव का होने पर भी मित्रता नहीं निभ सकती। राम-लक्ष्मण एवं कर्ण-दुर्योधन के दृष्टान्त इस तथ्य के स्पष्ट उदाहरण हैं।

(ग) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कहना चाहते हैं कि मित्रता के लिए समान स्वभाव एवं रुचि का होना ही आवश्यक नहीं है। इस बात को उन्होंने दृष्टान्तपूर्वक सिद्ध भी किया है कि परस्पर विपरीत स्वभाव वाले भी मित्र हो सकते हैं।

(6) यह कोई बात नहीं कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों। चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। उच्च आकांक्षा वाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था। नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

(क) प्रस्तुत अवतरण के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यावतरण **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** द्वारा लिखित एवं हमारी पाठ्य-पुस्तक '**हिन्दी**' के 'गद्य-खण्ड' में संकलित '**मित्रता**' नामक निबन्ध से अवतरित है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—रेखांकित अंश की व्याख्या—शुक्ल जी कहते हैं कि दो व्यक्तियों में मित्रता होने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि उनके स्वभाव एक जैसे हों और उनकी रुचियाँ समान हों। वरन् भिन्न स्वभाव के लोगों में भी मित्रता हो सकती है। समाज में व्याप्त विभिन्नता को देखकर निर्धन, धनी की ओर; निर्बल, शक्तिशाली की ओर तथा विनीत, नम्र व गम्भीर व्यक्ति उत्साही व्यक्ति की ओर आकर्षित होते हैं जिससे कि उन्हें विपरीत समय में उचित प्रेरणा मिल सके। इसका मूल कारण यही है कि व्यक्ति चाहता है कि जो गुण उसमें नहीं हैं उसे मित्र रूप में ऐसा व्यक्ति मिलना चाहिए जिसमें वे गुण हों। चिन्ताग्रस्त व्यक्ति प्रफुल्लित चित्त वाले व्यक्ति की तलाश में रहता है, जिससे कि वह भी कुछ समय के लिए तो चिन्तामुक्त हो जाए।

(ग) समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर क्यों आकर्षित होते हैं?

उत्तर—समाज में विभिन्नता देखकर ही व्यक्ति एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं क्योंकि व्यक्ति में होने वाले कतिपय गुणों का अभाव उसे उस गुण से युक्त व्यक्ति की ओर आकर्षित करता है।

(7) मित्र का कर्तव्य इस प्रकार बताया गया है–'उच्च और महान् कार्य में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी निज की सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।' यह कर्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़-चित्त और सत्य-संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिये, जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिये, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

(क) उपर्युक्त अवतरण का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—उपर्युक्त अवतरण हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के 'मित्रता' नामक अध्याय से लिया गया है, जिसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—सच्चे मित्र का कर्तव्य है कि अपने मित्र को सदैव अच्छे काम करने के लिए प्रोत्साहित करे। संकट और विपत्ति के क्षणों में वह मित्र को उत्साहित करे तथा उसका मनोबल बढ़ाए, जिससे वह संकट का दृढ़तापूर्वक सामना कर सके। तात्पर्य यह है कि एक सच्चा मित्र अपने मित्र की अच्छे एवं महान् कार्यों के करने में इस प्रकार से सहायता करता है कि वह साहस और दृढ़ संकल्प के बल पर अपने सामर्थ्य से भी अधिक कार्य कर जाता है, लेकिन ऐसे सच्चे मित्र आसानी से नहीं मिलते। संकट में अपने मित्र की सहायता वही कर सकता है, जिसका मन शक्तिशाली हो तथा जो स्वभाव से दृढ़निश्चयी हो। शक्तिशाली मन तथा सत्य के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति ही संकट आने पर मित्र की सहायता कर सकते हैं। मित्र का चुनाव करते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम उसी को अपना मित्र बनाएँ, जो आत्मबल से युक्त हो। आत्मबल से परिपूर्ण का सहारा हम पूरे विश्वास के साथ ले सकते हैं। भगवान् राम की आत्मशक्ति के विषय में विश्वास हो जाने पर ही वानर-राज सुग्रीव ने उनका आश्रय ग्रहण किया था। श्रीराम की शक्ति के बल पर ही वह अपना राज्य और अपनी पत्नी को प्राप्त कर सका। वस्तुत: राम-जैसा मित्र पाकर सुग्रीव धन्य हो गया।

(ग) मित्र के कौन-से कर्त्तव्य बताए गए हैं?

***अथवा* मित्र का कर्त्तव्य कैसा होना चाहिए।**

उत्तर—मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र का साहस तथा उत्साहवर्द्धन करके उच्च और महान् कार्यों में उसकी इस प्रकार से सहायता करे कि वह अपनी सामर्थ्य से बाहर जाकर उन कार्यों को पूरा करे।

(घ) मित्र कैसा और क्यों होना चाहिए?

उत्तर—हमें ऐसे मित्र की खोज में रहना चाहिए, जिसका समाज में सम्मान हो या जो सत्य में निष्ठा रखने वाला हो। निष्कपट, सभ्य, परिश्रमी एवं सत्यनिष्ठ मित्र कभी अपने मित्र को धोखा नहीं दे सकता। ऐसे सच्चे मित्र के सहारे हम अपने जीवन का निर्वाह भली-भाँति कर सकते हैं।

(8) बहुत-से लोग ऐसे होते हैं जिनके घड़ी भर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है; क्योंकि उतने ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं, जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्राय: सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गम्भीर या अच्छी बात नहीं।

(क) प्रस्तुत अवतरण के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यावतरण **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** द्वारा लिखित एवं हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'गद्य-खण्ड' में संकलित **'मित्रता'** नामक निबन्ध से अवतरित है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रथम रेखांकित अंश की व्याख्या—प्रस्तुत गद्यांश में शुक्ल जी ने बुरी संगति को व्यक्ति की उन्नति में बाधक बताते हुए कहा है कि समाज में अनेकानेक लोग इस प्रकार के होते हैं जिनके साथ थोड़ी देर के लिए भी रह लेने से व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता का पतन हो जाता है। ऐसे लोग उस थोड़ी-सी देर में ही ऐसी-ऐसी बातें कह डालते हैं, जो सामान्य व्यक्ति के तो सुनने लायक भी नहीं होतीं। ऐसी बातों से व्यक्ति के मन-मस्तिष्क पर इतने बुरे प्रभाव पड़ते हैं कि उससे उसके हृदय की पवित्रता अर्थात् मन के अच्छे भाव समाप्त हो जाते हैं।

द्वितीय रेखांकित अंश की व्याख्या—शुक्ल जी का कहना है कि बुरी आदतें या भावना व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में स्थायी रूप से विराजमान रहती हैं और बहुत समय तक स्थिर रूप में जमी रहती हैं। अपनी बात को और अधिक पुष्ट करते हुए लेखक कहते हैं कि इस बात का तो सामान्य लोगों ने भी अनुभव किया होगा कि बेढंगे और अश्लील गीत जितने शीघ्र व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में अपनी पैठ (पहुँच) बनाते हैं, उतनी शीघ्र कोई अच्छी या लाभकर बात नहीं।

(ग) किन लोगों के क्षणमात्र के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और क्यों?

उत्तर—बुरे लोगों की क्षणमात्र की संगति से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है; क्योंकि बहुत कम समय में ही वे इतनी बुरी बातें कह डालते हैं, जिनसे मन की पवित्रता समाप्त हो जाती है।

(9) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जाएगी।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—पाठ—मित्रता, **लेखक**—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **'गद्य संकलन'** के **'मित्रता'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** हैं।

(ख) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रथम रेखांकित अर्थ की व्याख्या—जीवन में संगति के प्रभाव को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानते हुए आचार्य शुक्ल कहते हैं कि बुरे दुष्ट लोगों की संगति एक भयानक ज्वर के समान है। जिस प्रकार भयानक ज्वर शरीर की सम्पूर्ण शक्ति को क्षीण कर देता है, उसी प्रकार दुष्टों की संगति में पड़ा व्यक्ति अपनी बुद्धि, विवेक, सदाचार आदि को भी खो बैठता है। बुरी संगति के प्रभाव में पड़कर व्यक्ति अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित का भी ज्ञान खो देता है। विशेष रूप से युवावस्था में जो लोग बुरी संगति में पड़ जाते हैं, वे कभी उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो पाते।

द्वितीय रेखांकित अर्थ की व्याख्या—मानव-जीवन में युवावस्था सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। अत: इस समय बुद्धि और विवेक दोनों को जागृत रखना आवश्यक है। बुरी संगति तो पत्थर की चक्की के समान होती है, जो पैरों में बँधने पर व्यक्ति को गतिहीन बना देती है तथा उसकी प्रगति

के सभी मार्ग अवरुद्ध कर देती है, जिससे व्यक्ति का पतन होने लगता है और एक दिन वह पतन के गहरे गड्ढे में जा गिरता है। इसके विपरीत सुसंगति एक ऐसी बाँह के समान है, जो गिरे हुए को उठाती है तथा गिरते हुए को सहारा देती है, अर्थात् सत्संगति मिल जाने पर बुरी संगति में पड़ा हुआ व्यक्ति भी उन्नति की ओर बढ़ सकता है

(ग) गद्यांश में क्या सन्देश दिया गया है?

उत्तर—गद्यांश में कुसंग को त्यागने और सत्संगति करने का सन्देश दिया गया है।

(घ) कुसंग के ज्वर को सबसे भयानक क्यों कहा गया है?

उत्तर—किसी भी प्रकार का भयानक ज्वर व्यक्ति की शारीरिक शक्ति का नाश करके उसे दुर्बल बनाता है, जबकि कुसंग का ज्वर उसकी नीति, सद्वृत्ति और बुद्धि का नाश्कर उसकी आत्मा को दुर्बल बनाता है, इसीलिए कुसंग के ज्वर को सबसे भयानक कहा गया है।

(ङ) अच्छी संगति के लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—अच्छी संगति व्यक्ति को सहारा देने वाली भुजा के समान होती है, जो कि व्यक्ति को अवनति के गड्ढे में गिरने से बचाकर उसे उन्नति की ओर अग्रसर करती है।

(च) बुरी संगति के दोष लिखिए।

उत्तर—बुरी संगति व्यक्ति को निरन्तर अवनति के गड्ढे में गिराती जाती है; क्योंकि वह उसकी नीति, सद्वृत्ति और बुद्धि का नाश करती है।

(10) बहुत-से लोग ऐसे होते हैं जिनके घड़ी भर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है; क्योंकि उतने ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं, जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्राय: सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गम्भीर या अच्छी बात नहीं।

(क) प्रस्तुत अवतरण के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यावतरण **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** द्वारा लिखित एवं हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'गद्य-खण्ड' में संकलित **'मित्रता'** नामक निबन्ध से अवतरित है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रथम रेखांकित अंश की व्याख्या—प्रस्तुत गद्यांश में शुक्ल जी ने बुरी संगति को व्यक्ति की उन्नति में बाधक बताते हुए कहा है कि समाज में अनेकानेक लोग इस प्रकार के होते हैं जिनके साथ थोड़ी देर के लिए भी रह लेने से व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता का पतन हो जाता है। ऐसे लोग उस थोड़ी-सी देर में ही ऐसी-ऐसी बातें कह डालते हैं, जो सामान्य व्यक्ति के तो सुनने लायक भी नहीं होतीं। ऐसी बातों से व्यक्ति के मन-मस्तिष्क पर इतने बुरे प्रभाव पड़ते हैं कि उससे उसके हृदय की पवित्रता अर्थात् मन के अच्छे भाव समाप्त हो जाते हैं।

द्वितीय रेखांकित अंश की व्याख्या—शुक्ल जी का कहना है कि बुरी आदतें या भावना व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में स्थायी रूप से विराजमान रहती हैं और बहुत समय तक स्थिर रूप में जमी रहती हैं। अपनी बात को और अधिक पुष्ट करते हुए लेखक कहते हैं कि इस बात का तो सामान्य लोगों ने भी अनुभव किया होगा कि बेढंगे और अश्लील गीत जितने शीघ्र व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में अपनी पैठ (पहुँच) बनाते हैं, उतनी शीघ्र कोई अच्छी या लाभकर बात नहीं।

(ग) किन लोगों के क्षणमात्र के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और क्यों?

उत्तर—बुरे लोगों की क्षणमात्र की संगति से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है; क्योंकि बहुत कम समय में ही वे इतनी बुरी बातें कह डालते हैं, जिनसे मन की पवित्रता समाप्त हो जाती है।

व्योकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए–

धुन सवार होना, बात लगना, हृदय को बेधना, मुँह ताकना, पल्ला पकड़ना, कीचड़ में पैर डालना।

उत्तर—**धुन सवार होना** (किसी बात के पीछे पड़ना)—इस समय मोहन को कुछ कहना व्यर्थ है क्योंकि उस पर जादूगर बनने की धुन सवार है।

बात लगना (किसी बात को गहराई से लेना)—उस लड़के को कुछ समझाना बेकार है क्योंकि उसे बात लग जाती है।

हृदय को बेधना (अत्यधिक आघात पहुँचाना)—रमेश ने चोरी करके अपने पिता के हृदय को बेध दिया।

मुँह ताकना (कुछ पाने के लिए किसी पर निर्भर होना)—वह छोटा बच्चा मिठाई के लिए अपने दोस्तों का मुँह ताकता रह गया।

पल्ला पकड़ना (सहारा लेना)—रामू ने सपा छोड़कर बसपा का पल्ला पकड़ लिया।

कीचड़ में पैर डालना (जान-बूझकर बुरा काम करना)—राकेश ने अपने कपटी मित्र को बचाने के लिए कीचड़ में पैर डाल दिया।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग और शब्दों को अलग करके लिखिए–

निष्कलंक, उज्ज्वल, प्रवृत्ति, संकल्प, सहानुभूति, उच्चाशय, कुमार्ग, कुसंग, दुर्भाग्य, प्रभाव, अपवित्र।

उत्तर—दिए गए शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग इस प्रकार हैं—

उपसर्ग		**शब्द**		
निष्	+	कलंक	=	निष्कलंक
उत्	+	ज्वल	=	उज्ज्वल
प्र	+	वृत्ति	=	प्रवृत्ति
सम्	+	कल्प	=	संकल्प
सह	+	अनुभूति	=	सहानुभूति
उत्	+	आशय	=	उच्चाशय
कु	+	मार्ग	=	कुमार्ग
कु	+	संग	=	कुसंग
दु	+	भाग्य	=	दुर्भाग्य
प्र	+	भाव	=	प्रभाव
अ	+	पवित्र	=	अपवित्र

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों से प्रकृति (मूलशब्द) व प्रत्यय को पृथक् करके लिखिए–

उपयुक्तता, निपुणता, आनन्दमय, कोमलता, उत्साहित, दुर्भाग्यवश, सात्विक, कलुषित, सत्यनिष्ठ, बुद्धिमान, लड़कपन, कुण्ठित।

उत्तर—दिए गए शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय इस प्रकार हैं—

शब्द		प्रत्यय		
उपयुक्त	+	ता	=	उपयुक्तता
निपुण	+	ता	=	निपुणता
आनन्द	+	मय	=	आनन्दमय
कोमल	+	ता	=	कोमलता
उत्साह	+	इत	=	उत्साहित
दुर्भाग्य	+	वश	=	दुर्भाग्यवश
सत्व	+	इक	=	सात्विक
कलुष	+	इत	=	कलुषित
सत्य	+	निष्ठ	=	सत्यनिष्ठ
बुद्धि	+	मान	=	बुद्धिमान्
लड़का	+	पन	=	लड़कपन
कुण्ठा	+	इत	=	कुण्ठित

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों का सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए–

एकान्त, हतोत्साहित, छात्रावास, उच्चाशय, दुर्योधन, नाशोन्मुख, उज्ज्वल।

उत्तर—

एकान्त	=	एक	+ अन्त (दीर्घ),
हतोत्साहित	=	हत्	+ उत्साहित (दीर्घ)
छात्रावास	=	छात्र	+ आवास (दीर्घ),
उच्चाशय	=	उत् + च	+ आशय (व्यंजन)
दुर्योधन	=	दुः	+ योधन (विसर्ग),
नाशोन्मुख	=	नाश	+ उन्मुख (गुण)
उज्ज्वल	=	उत्	+ ज्वल (व्यंजन)

प्रश्न 5. 'मित्रता' शब्द में 'ता' प्रत्यय है। 'ता' प्रत्यय जोड़कर पाँच अन्य शब्दों की रचना कीजिए।

उत्तर—'ता' प्रव्यय जोड़कर बनाए गए पाँच शब्द इस प्रकार हैं—

शब्द		प्रत्यय		
शत्रु	+	ता	=	शत्रुता
बुद्धिमान्	+	ता	=	बुद्धिमानता
शिष्ट	+	ता	=	शिष्टता
रूप	+	ता	=	रूपता
कुरूप	+	ता	=	कुरूपता

❑

2

ममता

(जयशंकर प्रसाद)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर—जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, 1890 ई० में काशी के सुँघनी शाहू नामक वैश्य परिवार में हुआ था।

प्रश्न 2. प्रसाद जी की दो गद्य-रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रसाद की दो गद्य रचनाएँ हैं—आकाशदीप, ममता।

प्रश्न 3. प्रसाद जी ने अपने गद्य में किन मुख्य शैलियों का प्रयोग किया है?

उत्तर—प्रसाद जी ने अपने गद्य में पाँच प्रमुख शैलियों का प्रयोग किया—(1) इतिवृत्तात्मक शैली (2) चित्रात्मक शैली (3) भावात्मक शैली (4) विचारात्मक शैली (5) अनुसंधानात्मक शैली।

प्रश्न 4. प्रसाद जी की कहानी, उपन्यास, नाटक और निबन्ध से सम्बन्धित एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रसाद जी की कहानी का नाम—छाया, उपन्यास का नाम कंकाल, नाटक का नाम चन्द्रगुप्त तथा निबन्ध का नाम काव्यकला है।

प्रश्न 5. प्रसाद जी की नाट्य रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—प्रसाद जी की नाट्य रचनाएँ हैं—चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नागयज्ञ, सज्जन, कल्याणी-परिणय, प्रायश्चित्त, विशाख, राज्यश्री।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जयशंकर प्रसाद का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी-साहित्य को प्रसाद जी की उपलब्धि एक युगान्तरकारी घटना है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए ही अवतरित हुए थे। यही कारण है कि हिन्दी-साहित्य का प्रत्येक पक्ष इनकी लेखनी से गौरवान्वित हो उठा है। ये हिन्दी के महान् कवि, नाटककार, कहानीकार, निबन्धकार आदि के रूप में जाने जाते हैं। हिन्दी-साहित्य इन्हें सदैव याद रखेगा।

जीवन-परिचय—हिन्दी-साहित्य के महान् कवि, नाटककार, कहानीकार एवं निबन्धकार श्री जयशंकर प्रसाद जी का जन्म **सन् 1889 ई०** में वाराणसी के प्रसिद्ध सुँघनी साहू परिवार में हुआ था। इनके पिता बाबू देवीप्रसाद काशी के प्रतिष्ठित और धनाढ्य व्यक्ति थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई तथा स्वाध्याय से ही इन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू और फारसी का श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त किया और साथ ही वेद, पुराण, इतिहास, दर्शन आदि का भी गहन अध्ययन किया। माता-पिता तथा बड़े भाई की मृत्यु हो जाने पर इन्होंने व्यवसाय और परिवार का उत्तरदायित्व सँभाला ही था कि युवावस्था के पूर्व ही भाभी और एक के बाद दूसरी पत्नी की मृत्यु से इनके ऊपर विपत्तियों का पहाड़ ही टूट पड़ा। फलतः वैभव के पालने में झूलता इनका परिवार ऋण के बोझ से दब गया। इनको विषम परिस्थितियों से जीवन-भर संघर्ष करना पड़ा, लेकिन इन्होंने हार नहीं मानी और निरन्तर

साहित्य-सेवा में लगे रहे। क्रमश: प्रसाद जी का शरीर चिन्ताओं से जर्जर होता गया और अन्तत: ये क्षय रोग से ग्रस्त हो गये। 15 **नवम्बर, सन् 1937 ई०** को केवल 48 वर्ष की आयु में हिन्दी साहित्याकाश में रिक्तता उत्पन्न करते हुए इन्होंने इस संसार से विदा ली।

कृतियाँ—प्रसाद जी ने काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास और निबन्धों की रचना की। इनकी प्रमुख कृतियों का विवरण निम्नलिखित है—

(1) **नाटक**—'स्कन्दगुप्त', 'अजातशत्रु', 'चन्द्रगुप्त', 'विशाख', 'ध्रुवस्वामिनी', 'कामना', 'राज्यश्री', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'करुणालय', 'एक घूँट', 'सज्जन', 'कल्याणी-परिणय' आदि इनके प्रसिद्ध नाटक हैं। प्रसाद जी के नाटकों में भारतीय और पाश्चात्य नाट्य-कला का सुन्दर समन्वय है। इनके नाटकों में राष्ट्र के गौरवमय इतिहास का सजीव वर्णन हुआ है।

(2) **कहानी-संग्रह**—'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप' तथा 'इन्द्रजाल' प्रसाद जी की कहानियों के संग्रह हैं। इनकी कहानियों में मानव-मूल्यों और भावनाओं का काव्यमय चित्रण हुआ है।

(3) **उपन्यास**—कंकाल, तितली और इरावती (अपूर्ण)। प्रसाद जी ने अपने इन उपन्यासों में जीवन की वास्तविकता का आदर्शोन्मुख चित्रण किया है।

(4) **निबन्ध-संग्रह**—'काव्यकला तथा अन्य निबन्ध'। इस निबन्ध-संग्रह में प्रसाद जी के गम्भीर चिन्तन तथा साहित्य सम्बन्धी स्वस्थ दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति हुई है।

(5) **काव्य**—'कामायनी' (महाकाव्य), 'आँसू', 'झरना', 'लहर' आदि प्रसिद्ध काव्य हैं। 'कामायनी' श्रेष्ठ छायावादी महाकाव्य है।

साहित्य में स्थान—प्रसाद जी छायावादी युग के जनक तथा युग-प्रवर्तक रचनाकार हैं। बहुमुखी प्रतिभा के कारण इन्होंने मौलिक नाटक, श्रेष्ठ कहानियाँ, उत्कृष्ट निबन्ध और उपन्यास लिखकर हिन्दी-साहित्य के कोश की श्रीवृद्धि की है। आधुनिक हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों में प्रसाद जी का विशिष्ट स्थान है।

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के शब्दों में,

''भारत के इने-गिने श्रेष्ठ साहित्यकारों में प्रसाद जी का स्थान सदैव ऊँचा रहेगा।'' इनके विषय में किसी कवि ने उचित ही कहा है—

सदियों तक साहित्य नहीं यह समझ सकेगा
तुम मानव थे या मानवता के महाकाव्य थे।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिये, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी-हिन्दू-विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है-तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था?

अथवा ममता विधवा.....कहाँ अन्त था?

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

***अथवा* उपुर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर—गद्यांश का पाठ—ममता,

गद्यांश के लेखक—जयशंकर प्रसाद।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी की पाठ्यपुस्तक से 'ममता' नामक शीर्षक से लिया गया है जिसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—ममता दुर्भाग्य से बपचन में ही विधवा हो गई थी। अपने दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी वह सोन नदी के तेज प्रवाह को देख रही है। जिस प्रकार सोन नदी उफनकर बह रही है, उसी प्रकार ममता का यौवन भी पूरी तरह उफान पर है। उसके यौवन में और सोन नदी के उमड़ते प्रवाह में अद्‌भुत समानता है। वह हर प्रकार के भौतिक सुख से सम्पन्न है, फिर भी विधवा-जीवन के कठोर अभिशाप से उसका मन तरह-तरह के विचारों और भावों की आँधी से भरा हुआ है। उसकी आँखों से दु:ख के आँसू बह रहे हैं। विलासिता का सुख भी उसको काँटों की दु:खपूर्ण शय्या के समान प्रतीत हो रहा है। तात्पर्य यह है कि काँटों की शय्या पर सोने वाला व्यक्ति जिस प्रकार हर पल बेचैन रहता है, उसी प्रकार सभी प्रकार के भौतिक सुखों के रहते हुए भी ममता का जीवन कष्टदायक सिद्ध हो रहा है।

(ग) रोहतास-दुर्ग कहाँ स्थित है?

उत्तर—रोहतास-दुर्ग सोन नदी के तट पर स्थित है।

(घ) उपर्युक्त गद्यांश में हिन्दू-विधवा की क्या स्थिति है?

उत्तर—समाज में हिन्दू-विधवा की स्थिति अत्यन्त दयनीय होती है। उसे समाज का सबसे तुच्छ (दीन-हीन) और बेसहारा प्राणी माना जाता है।

(च) ममता के लिए कुछ अभाव होना क्यों असम्भव था?

उत्तर—ममता के लिए किसी वस्तु का अभाव संभव न था क्योंकि—

1. वह मगध की राजकुमारी थी।
2. वह मगध के महाराज की पुत्रवधू थी
3. वह मंत्री चूड़ामणि की अकेली दूहिता थी
4. ममता स्वाभिमानी थी।

(2) ''हे भगवान्! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी, क्या भीख न मिलेगी? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जाएगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके? यह असम्भव है। फेर दीजिये पिताजी, मैं काँप रही हूँ-इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।''

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—उपर्युक्त गद्यांश 'ममता' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक जयशंकर प्रसाद जी हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—हे भगवान्! मेरे इस पिता को धिक्कार है, जिसने मुसीबत के समय के लिए अपना ईमान-धर्म बेचकर घूस के रूप में यह विपुल स्वर्णराशि प्राप्त की है। मेरे यह पिता भी कितने मूर्ख हैं कि जो यह नहीं जानते कि हम अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकते। यदि हमारे भाग्य में मुसीबत है तो उसे किसी भी स्थिति में टाला नहीं जा सकता, सारे संसार की धन-सम्पत्ति हमें उस मुसीबत से छुटकारा नहीं दिला सकती । इस विपत्ति को देने वाला परम शक्तिशाली परमपिता परमात्मा ही तो है, जो सारे संसार का संचालन करता है। जब उसने विपत्ति दी है तो उसे किसी भी स्थिति में टाला नहीं जा सकता, यदि हम उसके विरुद्ध कुछ करते हैं तो यह हमारा उसके प्रति दुस्साहस ही तो है। वह अपने पिता से कहती है कि पिताजी! आपने यह अच्छा कार्य नहीं किया। यदि भविष्य में विपत्ति आती भी तो हम भीख माँगकर अपना पेट पाल सकते थे, इस घूस लेने से तो वह भीख माँगना कहीं श्रेष्ठ होता। क्या इस संसार पर यह भी भरोसा नहीं रहा

कि कल को भिखारी को भीख भी न मिलेगी। यदि आपका यह सोचना है तो गलत है।

(ग) इस गद्यांश में ममता की किस मनोवृत्ति को स्पष्ट किया गया है?

उत्तर—इस गद्यांश से ममता की भाग्यवादी अथवा ईश्वरवादी मनोवृत्ति को स्पष्ट किया गया है।

(घ) गद्यांश के आधार पर ममता के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—ममता इस कहानी का प्रधान पात्र तथा नायिका है। इस कहानी का घटनाक्रम उसी के आस-पास घूमता है। वह मंत्री चूड़ामणि की विधवा युवती पुत्री है। वैधव्य की पीड़ा उसको सता रही है। वह त्यागी और संतोषी है। उसको भावी आवश्यकता के लिए संग्रह करने में विश्वास नहीं है।

(3) ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है। वह अपनी झोंपड़ी में एक दिन पड़ी थी। शीतकाल का प्रभात था। उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूँज रहा था। ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ उसे घेरकर बैठी थीं; क्योंकि वह आजीवन सबके सुख-दुःख की सहभागिनी रही।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी की पाठ्यपुस्तक से 'ममता' नामक शीर्षक से लिया गया है। इसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—ममता इतनी अशक्त थी कि स्वयं चल-फिर न सकती थी। एक प्रकार से ममता मृत्युशैया पर लेटी थी। उसकी सेवा-शुश्रूषा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ उसे चारों ओर से घेरकर बैठी थीं। यद्यपि उसका कोई सगा-सम्बन्धी न था, किन्तु उसने जीवनभर लोगों के सुख-दुःख में उनका साथ निभाया था, इसलिए अन्त समय में उसकी सेवा के लिए गाँव की स्त्रियाँ उसके पास उपस्थित थीं।

(ग) कहानी में किस काल का वर्णन है?

उत्तर—कहानी में मुगल काल का वर्णन किया गया है।

(घ) ममता के चरित्र की किस विशेषता को यहाँ प्रकट किया गया है?

उत्तर—गद्यांश में ममता के चरित्र की विशेषताएँ थीं— (1) मिलनसार (2) परोपकारी (3) सहयोगी आदि।

(4) अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा-''मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोपड़ी खोदवाने के डर से भयभीत रही। भगवान् ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ।''

***अथवा* मैं नहीं जानती.....गृह में जाती हूँ।**

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **'गद्य संकलन'** के **'ममता'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **जयशंकर प्रसाद** हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—मैंने सुना था कि वह अपने किसी आदमी को मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे रहा था। उस दिन से आज तक मुझे यही भय सताता रहा कि पता नहीं कब कोई आकर मेरी इस झोंपड़ी को गिराकर और इस स्थान को खुदवाकर मकान बनवा दे। मुझे अपनी इस झोंपड़ी से बड़ा प्यार था, मैं नहीं चाहती थी कि कोई इसे गिराकर इसके स्थान पर मकान बनवा दे; क्योंकि इस झोपड़ी के साथ मेरे जीवन की न जाने कितनी यादें जुड़ी हैं। यही मेरे भयभीत होने का कारण था। शायद भगवान् ने मेरी प्रार्थना सुन ली थी, इसीलिए आज तक यहाँ कोई मकान बनवाने नहीं आया। अब मेरा समय पूरा हो गया है। मैं इसे छोड़कर परमधाम को जा रही हूँ; अत: मुझे अब किसी प्रकार का डर भी नहीं है, चाहे तुम इस स्थान पर मकान बनावाओं या कोई विशाल-आलीशान महल। आज मुझे इस झोंपड़ी से कोई मोह अथवा लगाव नहीं रह गया। अब मैं सदैव के लिए अलौकिक विश्राम-गृह में आराम करने के लिए जा रही हूँ। अर्थात् अब मैं इस संसार को छोड़कर स्वर्गलोक को जा रही हूँ।

(ग) अश्वारोही किसलिए ममता की झोंपड़ी ढूँढ़ता हुआ आया?

उत्तर—अश्वारोही ममता की झोपड़ी को ढूँढता हुआ इसलिए आया था; क्योंकि उसे उसकी झोंपड़ी के स्थान पर मकान बनवाने का आदेश मिला था।

(घ) वह आजीवन क्यों भयभीत रही?

उत्तर—ममता के भय का एकमात्र कारण यह था कि वह अपनी झोंपड़ी को बहुत प्यार करती थी और उसमें एक दिन के लिए विश्राम करने वाले किसी मुगल ने उसके स्थान पर घर बनवाने का आदेश दिया था। यही आदेश उसके भय का कारण था; क्योंकि वह जीते-जी अपनी झोंपड़ी छोड़ना नहीं चाहती थी।

(ङ) ममता क्या नहीं जानती थी?

उत्तर—ममता नहीं जानती थी कि वह शहंशाह या साधारण मुगल है।

(च) 'चिर-विश्राम-गृह' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर—'चिर-विश्राम-गृह' का आशय स्वर्गलोक से है।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–

दुहिता, संसार, स्वर्ण, भगवान्, सूर्य, चन्द्रमा।

उत्तर—

शब्द		पर्यायवाची शब्द
दुहिता	—	पुत्री, लड़की, सुता, तनया
संसार	—	भव, दुनिया, जगत्, विश्व
स्वर्ण	—	हिरण्य, कंचन, हेत, सुवर्ण
भगवान	—	ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु, परमात्मा
सूर्य	—	दिनकर, दिवाकर, भानु, भास्कर
चन्द्रमा	—	हिमांशु, सुधांशु, चन्द्र, चाँद

प्रश्न 2. 'प्रकोष्ठ' शब्द में 'प्र' उपसर्ग लगा है। इसी प्रकार 'प्र' उपसर्ग के योग से पाँच शब्दों की रचना कीजिए।

उत्तर—'प्र' उपसर्ग लगाकर बनाए गए पाँच शब्द निम्नलिखित हैं—

उपसर्ग		शब्द		
प्र	+	काश	=	प्रकाश
प्र	+	ख्यात	=	प्रख्यात
प्र	+	चार	=	प्रचार
प्र	+	बल	=	प्रबल
प्र	+	स्थान	=	प्रस्थान

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों में सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए–

पुस्तकालय, देवेन्द्र, तत्रैव, यद्यपि, शयन, दिगम्बर, सज्जन।

उत्तर—दिए गए शब्दों का सन्धि विच्छेद इस प्रकार है—

शब्द		सन्धि विच्छेद				
पुस्तकालय	—	पुस्तक	+	आलय	=	पुस्तकालय (दीर्घ सन्धि)
देवेन्द्र	—	देव	+	इन्द्र	=	देवेन्द्र (गुण सन्धि)
तत्रैव	—	तत्र	+	एव	=	तत्रैव (वृद्धि सन्धि)
यद्यपि	—	यदि	+	अपि	=	यद्यपि (यण सन्धि)
शयन	—	शे	+	अन	=	शयन (अयादि सन्धि)
दिगम्बर	—	दिक्	+	अम्बर	=	दिगम्बर (व्यंजन सन्धि)
सज्जन	—	सत्	+	जन	=	सज्जन (व्यंजन सन्धि)

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में विग्रहपूर्वक समास का नाम लिखिए–

यथा विधि, गगनचुम्बी, त्रिफला, राम-कृष्ण, दशानन।

उत्तर—दिए गए समास का सही विग्रह इस प्रकार है—

समास		विग्रह	
यथाविधि	—	विधि के अनुसार	(यथा + विधि)
गगनचुम्बी	—	गगन को चूमने वाला	(गगन + चुम्बी)
त्रिफला	—	तीन फलों को समाहार	(त्रि + फला)
राम-कृष्ण	—	राम और कृष्ण	(राम + कृष्ण)
दशानन	—	दश हैं आनन जिसके अर्थात् रावण	(दश + आनन)

❑

3

क्या लिखूँ?

(पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. बख्शी जी का जन्म कब व कहाँ हुआ था? उनकी दो कृतियों के नाम बताइए।

उत्तर—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म सन् 1894 ई० में छत्तीसगढ़ के खैरागढ़ कस्बे में हुआ था। 'शतदल' तथा 'अश्रुदल' उनकी दो कृतियाँ (रचनाएँ) हैं।

प्रश्न 2. बख्शी जी की भाषा-शैली स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—बख्शी जी की भाषा-शैली उर्दू व अंग्रेजी के व्यावहारिक शब्दों से युक्त, सरस व गतिशील है। इन्होंने भावात्मक, व्याख्यात्मक व विचारात्मक शैली को अपनाया था।

प्रश्न 3. 'अश्रुदल' की रचना-विधा क्या है?

उत्तर—अश्रुदल की रचना-विधा काव्य है।

प्रश्न 4. 'कुछ यात्री' तथा 'अंजलि' किस साहित्यिक विधा से सम्बन्धित हैं?

उत्तर—'कुछ यात्री' तथा 'अंजलि' की साहित्यिक विधा क्रमश: निबन्ध एवं कहानी संग्रह है।

प्रश्न 5. 'बख्शी' जी के पिता का नाम क्या था?

उत्तर—बख्शी जी के पिता का नाम 'उमराव' था।

प्रश्न 6. 'बख्शी' जी किस युग के लेखक हैं?

उत्तर—बख्शी जी द्विवेदी युग के लेखक हैं।

प्रश्न 7. वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल क्यों बना रहता है?

उत्तर—तरुण और वृद्ध दोनों को वर्तमान से असन्तोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रांति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत-गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

प्रश्न 8. जीवन की प्रगतिशीलता किस बात पर निर्भर है?

उत्तर—जीवन की प्रगतिशीलता इस बात पर निर्भर है कि दोषों का अन्त किस प्रकार किया जाए तथा इनमें सुधार कैसे किया जाए। जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गए हैं और उन सुधारों का फिर नवसुधार से किया जाता है। तभी तो यह जीवन प्रगतिशील माना गया है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के जीवन-परिचय एवं एवं कृतियाँ बताइए।

उत्तर—प्रचार से दूर हिन्दी के मौन साधक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी हिन्दी के प्रतिष्ठित निबन्धकार, कवि, सम्पादक तथा साहित्य मर्मज्ञ थे। साहित्य-सृजन की प्रेरणा आपको विरासत में मिली थी, जिसके कारण आपने विद्यार्थी जीवन से ही लिखना प्रारम्भ कर दिया था। ललित निबन्धों के लेखन के लिए आपको प्रभूत यश प्राप्त हुआ। एक गम्भीर विचारक, शिष्ट हास्य-व्यंग्यकार और कुशल आलोचक के रूप में आप हिन्दी-साहित्य में विख्यात हैं।

जीवन-परिचय—श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म **सन् 1894 ई०** में छत्तीसगढ़ के जबलपुर जिले के खैरागढ़ नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता श्री उमराव बख्शी तथा बाबा पुन्नालाल बख्शी साहित्य-प्रेमी और कवि थे। इनकी माताजी को भी साहित्य से प्रेम था। अत: परिवार के साहित्यिक वातावरण का प्रभाव इनके मन पर भी गहरा पड़ा और ये विद्यार्थी जीवन से ही कविताएँ लिखने लगे। बी०ए० उत्तीर्ण करने के बाद बख्शी जी ने साहित्य-सेवा को अपना लक्ष्य बनाया तथा कहानियाँ और कविताएँ लिखने लगे। द्विवेदी जी बख्शी जी की रचनाओं और योग्यताओं से इतने अधिक प्रभावित थे कि अपने बाद उन्होंने 'सरस्वती' की बागडोर बख्शी जी को ही सौंपी। द्विवेदी जी के बाद 1920 से 1927 ई० तक इन्होंने कुशलतापूर्वक 'सरस्वती' के सम्पादन का कार्य किया। ये नम्र स्वभाव के व्यक्ति थे और ख्याति से दूर रहते थे। खैरागढ़ के हाईस्कूल में अध्यापन कार्य करने के पश्चात् इन्होंने पुन: 'सरस्वती' का सम्पादन-भार सँभाला। **सन् 1971 ई०** में 77 वर्ष की आयु में निरन्तर साहित्य-सेवा करते हुए आप गोलोकवासी हो गए।

कृतियाँ—बख्शी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इन्होंने निबन्ध, काव्य, कहानी, आलोचना, नाटक आदि पर अपनी लेखनी चलायी। निबन्ध और आलोचना के क्षेत्र में तो ये प्रसिद्ध हैं ही, अपने ललित निबन्धों के

कारण भी ये विशेष रूप से स्मरण किये जाते हैं। इनकी रचनाओं का विवरण निम्नलिखित है—

(1) **निबन्ध-संग्रह**—'पंचपात्र', 'पद्मवन', 'तीर्थरेणु', 'प्रबन्ध-पारिजात', 'कुछ बिखरे पन्ने', 'मकरन्द बिन्दु', 'यात्री', 'तुम्हारे लिए', 'तीर्थ-सलिल' आदि। इनके निबन्ध जीवन, समाज, धर्म, संस्कृति और साहित्य के विषयों पर लिखे गये हैं।

(2) **काव्य-संग्रह**—'शतदल' और 'अश्रुदल' इनके दो काव्य-संग्रह हैं। इनकी कविताएँ प्रकृति और प्रेमविषयक हैं।

(3) **कहानी-संग्रह**—'झलमला' और 'अंजलि', इनके दो कहानी-संग्रह हैं। इन कहानियों में मानव-जीवन की विषमताओं का चित्रण है।

(4) **आलोचना**—'हिन्दी-साहित्य विमर्श', 'विश्व-साहित्य', 'हिन्दी उपन्यास साहित्य', 'हिन्दी कहानी साहित्य', 'साहित्य शिक्षा' आदि इनकी श्रेष्ठ आलोचनात्मक पुस्तकें हैं।

(5) **अनूदित रचनाएँ**—जर्मनी के मॉरिस मेटरलिंक के दो नाटकों का 'प्रायश्चित्त' और 'उन्मुक्ति का बन्धन' शीर्षक से अनुवाद।

(6) सम्पादन—'सरस्वती' और 'छाया'। इन्होंने सरस्वती के सम्पादन से विशेष यश अर्जित किया।

साहित्य में स्थान—बख्शी जी भावुक कवि, श्रेष्ठ निबन्धकार, निष्पक्ष आलोचक, कुशल पत्रकार एवं कहानीकार हैं। आलोचना और निबन्ध के क्षेत्र में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। विश्व-साहित्य में इनकी गहरी पैठ है। अपने ललित निबन्धों के लिए ये सदैव स्मरण किये जाएँगे। विचारों की मौलिकता और शैली की नूतनता के कारण हिन्दी-साहित्य में शुक्ल युग के निबन्धकारों में इनके निबन्धों का विशिष्ट स्थान है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) मुझे आज लिखना ही पड़ेगा। अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक ए. जी. गार्डिनर का कथन है कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति-सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग-सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिन्ता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है। उसी तरह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश के पाठ का नाम—क्या लिखूँ?

प्रस्तुत गद्यांश के लेखक—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—लेखक के लिए एक विशेष प्रकार की मानसिक स्थिति का होना आवश्यक है। इस मानसिक स्थिति के सन्दर्भ में वे लिखते हैं कि जब मन उल्लास अथवा आनन्द से भर उठे, हृदय में स्फूर्ति अर्थात् ताजगी के भाव अनुभूत होने लगें तथा मस्तिष्क में एक दबाव-सा उत्पन्न हो जाए तो लेखक स्वत: ही लिखने के लिए बाध्य हो जाता है। मनोभावों के अतिरेक की इस स्थिति में वह स्वत: ही कुछ-न-कुछ लिखने को आतुर हो उठता है और उसकी लेखनी मनोभावों को अभिव्यक्त करने लगती है। इस प्रकार की मनोदशा में लेखक के लिए विषय अथवा शैली का कोई महत्त्व नहीं होता, उसका उद्देश्य तो मात्र अपने मन के विचारों एवं भावों को व्यक्त करना ही होता है। मन के विचारों एवं भावों पर आधारित कोई भी विषय हो, वह उसी विषय पर तब तक लिखता रहता है जब तक उसके हृदय में उत्पन्न भावों का आवेग शान्त नहीं हो जाता। तात्पर्य यह है कि किसी भी प्रकार का लेख लिखने के लिए सर्वप्रथम कुछ विशिष्ट प्रकार के मनोभावों का उत्पन्न होना नितान्त आवश्यक होता है। विशिष्ट मनोभावों से पूर्ण मनोदशा के अभाव में कुछ भी लिख पाना सम्भव नहीं होता है।

(ग) लिखने की मानसिक स्थिति कैसी होती है?

उत्तर—लिखने के लिए मानसिक स्थिति निम्न प्रकार की होनी चाहिए—

(1) मन उल्लास अथवा आनन्द से परिपूर्ण हो,

(2) हृदय में स्फूर्ति हो अर्थात् ताजगी हो,

(3) मस्तिष्क में दबाव हो, इत्यादि।

(ग) हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है। कथन का अर्थ लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश में हैट का उदाहरण मनोभावों के लिए दिया गया है और खूँटी का विषय के लिए। गार्डिनर महोदय के अनुसार जिस प्रकार मुख्य वस्तु हैट होती है, खूँटी नहीं उसी प्रकार मन के भाव-विचार मुख्य हैं, विषय नहीं। आशय यह है कि यदि मन में भाव एंव विचार हों तो किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है।

(2) उस पद्धति के जन्मदाता मानटेन समझे जाते हैं? उन्होंने स्वयं जो कुछ देखा, सुना और अुनभव किया, उसी को अपने निबन्धों में लिपिबद्ध कर दिया। ऐसे निबन्धों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मन की स्वच्छन्द रचनाएँ हैं। उनमें न कवि की उदात्त कल्पना रहती है, न आख्यायिका-लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और न विज्ञों की गम्भीर तर्कपूर्ण विवेचना। उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है। उनमें उसके सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है, उनमें उसका उल्लास रहता है। ये निबन्ध तो उस मानसिक स्थिति में लिखे जाते हैं, जिसमें न ज्ञान की गरिमा रहती है और न कल्पना की महिमा, जिसमें हम संसार को अपनी ही दृष्टि से देखते हैं और अपने ही भाव से ग्रहण करते हैं। तब पद्धति का अनुसरण कर मैं भी क्यों न निबन्ध लिखूँ।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—पाठ का नाम—क्या लिखूँ?,

पाठ के लेखक—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—स्वच्छन्दतावादी निबन्ध-लेखक अपने निबन्धों में हृदय की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति करता है। वह जो कुछ और जैसा भी अनुभव करता है, उसी को कागज पर उतार देता है। निबन्ध-लेखक के हृदय की उमंग और उसके मन की प्रसन्नता उसके निबन्ध में व्यक्त होती है। निबन्ध लिखते समय लेखक का मन एक विशेष स्थिति में होता है। इस अवस्था में वह न तो अपनी विद्वत्ता के गौरव को प्रकट करता है और न ही अपनी कल्पना-शक्ति का विशेष महत्त्व दिखाने की लालसा करता है। संसार को देखकर जो अनुभव लेखक को होते हैं अथवा जो भाव उसके मन में उत्पन्न होते हैं, वह उन्हें स्वच्छंद रूप से प्रकट करने का ही प्रयास करता है।

(ग) मन की स्वच्छन्द रचनाएँ किस प्रकार के निबन्धों को कहा गया है?

उत्तर—मन की स्वच्छन्द रचनाएँ उन्हें कहा गया है जो जैसा देखा, सुना या अनुभव किया उसी अनुरूप लिख दिया।

(3) दूर के ढोल सुहावने होते हैं; क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जब ढोल के पास बैठे हुये लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर, सन्ध्या के समय किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं। ढोल के उन्हीं शब्दों को सुनकर वह अपने हृदय में किसी के विवाहोत्सव का चित्र अंकित कर लेता है। कोलाहल से पूर्ण घर के एक कोने में बैठी हुई किसी लज्जाशीला नववधू की कल्पना वह अपने मन में कर लेता है। उस नववधु के प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका और विषाद से युक्त हृदय के कम्पन ढोल की कर्कश ध्वनि को मधुर बना देते हैं; क्योंकि उसके साथ आनन्द का कलरव, उत्सव व प्रमोद और प्रेम का संगीत ये तीनों मिले रहते हैं। तभी उसकी कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु नहीं प्रतीत होती और दूरस्थ लोगों के लिये तो वह अत्यन्त मधुर बन जाती है।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

***अथवा* उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर—पाठ का नाम—क्या लिखूँ?

पाठ के लेखक—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'क्या लिखूँ'? नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी हैं।

(ख) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक ने इन पंक्तियों में एक प्रचलित मुहावरे पर अपने दृष्टिकोण को व्यक्त किया है। वह कहता है कि दूर के ढोल सुहावने इसलिए लगते हैं, क्योंकि ढोल की आवाज की कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जिस समय यह आवाज पास बैठे लोगों के कानों के पर्दों को फाड़ती हुई महसूस होती है, उसी समय दूर सन्ध्या के समय किसी नदी के किनारे पर बैठे किसी व्यक्ति को यह अत्यन्त मधुर लगती है। इस मधुरता का मनोवैज्ञानिक कारण बताते हुए लेखक कहता है कि वस्तुत: जो व्यक्ति दूर से ढोल की आवाज को सुनता है उसके मानसपटल पर इस आवाज के कारण किसी विवाहोत्सव का चित्र अंकित हो जाता है।

(ग) दूर के ढोल सुहावने होने का क्या कारण है?

उत्तर—दूर के ढोल सुहावने लगने का लेखक यह कारण मानता है कि ढोल की आवाज सुनकर व्यक्ति के मन-मस्तिष्क पर उस उत्सव का चित्र साकार हो उठता है और व्यक्ति उत्सव जैसा ही हर्ष-उल्लास अपने मन में अनुभव करने लगता है।

(घ) ढोल की कर्कश ध्वनि को कौन-से मनोभाव मधुर बना देते हैं?

उत्तर—उत्सव के प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका और विषाद आदि मनोभाव मिलकर ढोल की कर्कश ध्वनि को भी मधुर बना देते हैं।

(4) जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीत होता है। जो वृद्ध हो गये हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आये हैं, उन्हें अपने अतीतकाल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है। वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरुणों के लिये जैसे भविष्य उज्ज्वल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिये अतीत। वर्तमान से दोनों को असन्तोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रान्ति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

***अथवा* उपर्युक्त अवतरण का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर—पाठ का नाम—क्या लिखूँ?,

पाठ के लेखक—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्य अवतरण 'क्या लिखूँ? पाठ से लिया गया है। इसके लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—लेखक का मत है कि जो युवा हैं और जिन्होंने अभी तक जीवन के संघर्षों का सामना नहीं किया है, उन्हें संसार सुन्दर और मनमोहक लगता है। इसीलिए वे सांसारिक सुखों में लिप्त रहना चाहते हैं। जो वृद्ध हो गए हैं और अपने चंचल बाल्यकाल और मोहक युवास्था को पीछे छोड़ आए हैं, वे वृद्ध अपने अतीत की स्मृतियों में डूबे रहना चाहते हैं। अतीत को याद करना उन्हें अच्छा लगता है। इस प्रकार वृद्ध अपने अतीत के स्वप्नों में खोया रहता है और युवक अपने भविष्य की उज्ज्वल कल्पना में। दोनों में से कोई भी अपने वर्तमान से सन्तुष्ट नहीं है। युवक भावी जीवन की ऊँची-ऊँची कोरी कल्पनाओं से अपना मन बहलाया करता है तो वृद्ध बीते दिनों और बीते पलों को याद कर-करके दु:खी होता रहता है।

युवकों की अभिलाषा होती है कि उनके स्वप्नों का भविष्य किसी भी तरह उनके वर्तमान में उतर आए, अर्थात् उनकी कल्पनाएँ वर्तमान में यथार्थ का स्वरूप ग्रहण कर लें। वृद्धों की आकांक्षा होती है कि उनके अतीत के सुनहरे दिन किसी प्रकार वर्तमान में लौटकर आ जाएँ, जिससे उनका वर्तमान सुखी हो सके। अपने उत्साह एवं उत्तेजना के कारण युवक परम्पराओं में क्रान्ति लाना चाहते हैं; जबकि वृद्ध अतीत की महान् परम्पराओं और मूल्यों को बनाए रखना चाहते हैं।

(ग) संसार का चित्र किसे बड़ा मनमोहक प्रतीत होता है?

उत्तर—तरुण को संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीक होता है।

(घ) तरुण और वृद्ध दोनों क्या चाहते हैं?

उत्तर—तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते है और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते है।

(ङ) वृद्ध और तरुण अपने वर्तमान से असन्तुष्ट क्यों रहते हैं?

उत्तर—वृद्ध अपने अतीत के जीवन' मूल्यों को आदर्श मानते हैं; अत: वे वर्तमान के युवकों के नए चलन को हेय दृष्टि से देखते हैं। इसी प्रकार युवा अतीत पर आधारित वर्तमान परम्पराओं और जीवन-आदर्शों को निरर्थक मानकर अपनी भविष्य की नवीन सोच को वर्तमान में क्रियान्वित करना चाहते हैं। इस प्रकार दोनों अपने वर्तमान से असन्तुष्ट रहते हैं।

(च) अतीत का स्वप्न कौन देखते हैं?

उत्तर—वृद्ध लोग अतीत का स्वप्न देखते हैं।

(छ) वर्तमान काल सुधारों का काल कैसे बना रहता है?

उत्तर—वृद्ध अपने अतीत को और युवा अपने भविष्य को वर्तमान में साकार होते देखना चाहते हैं, जिस कारण दोनों की विचारधाराओं में टकराव उत्पन्न हो जाता है। इस टकराव को टालने के लिए बीच के मार्ग को निश्चित कर लिया जाता है, जिसमें अतीत और भविष्य दोनों का समन्वय होता है। इस प्रकार वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

(5) मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो। तभी तो आज तक कितने ही सुधारक हो गये हैं। पर सुधारों का अन्त कब हुआ? भारत के इतिहास

में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द और महात्मा गाँधी में ही सुधारकों की गणना समाप्त नहीं होती। सुधारकों का दल नगर-नगर और गाँव-गाँव में होता है। यह सच है कि जीवन में नये-नये क्षेत्र उत्पन्न होते हैं और नये-नये सुधार हो जाते हैं। न दोषों का अन्त है और न सुधारों का। जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गये हैं और उन सुधारों का फिर नव सुधार किया जाता है। तभी तो यह जीवन प्रगतिशील माना गया है।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—**पाठ का नाम**—क्या लिखूँ?,

पाठ के लेखक—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी।

(ख) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—**व्याख्या**—आदिकाल से ही समाज में बुराइयाँ व्याप्त रही हैं। उनको दूर करने के लिए समय-समय पर समाज-सुधारक महापुरुषों ने अवतार लिए हैं। समाज की ये बुराइयाँ कभी दूर नहीं होगीं; क्योंकि एक बुराई को दूर किया जाता है तो चार नई बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। जिसे हम आज अच्छाई मानकर स्वीकार करते हैं परिस्थितियों के बदल जाने पर कल वही बुराई बन जाती है। इस प्रकार मनुष्य जाति के आज तक के इतिहास में कोई भी ऐसा काल नहीं हुआ, जब समाज बुराइयों से मुक्त रहा हो और समाज में किसी सुधार की आवश्यकता न अनुभव की गई हो। इन्हीं बुराइयों को दूर कर समाज को सुधारने के लिए कभी महात्मा बुद्ध और स्वामी महावीर जैसे तपस्वियों ने समाज के नई राह दिखाई तो कभी राजा राममोहन राय, महर्षि दयानन्न जैसे प्रज्ञा-पुरुषों ने समाज में नव-प्राण फूँके, किन्तु कभी समाज से सुधारों का अन्त नहीं हुआ। इसी कारण समाज-सुधारकों के निरन्तर आविर्भाव के कारण उनकी गणना कभी सामप्त नहीं होती। महात्मा गाँधी के पश्चात् भी प्रत्येक नगर और गाँव में समाज-सुधारकों के नए-नए दल विकसित होते रहते हैं। इस प्रकार मानव-समाज नए-नए सुधारों के साथ प्रगति के पथ पर धीरे-धीरे आगे बढ़ता जाता है। इसी तरह लगातार दोषों का निराकरण होता जाता हैं।

(ग) समाज में सुधारों का अन्त क्यों नहीं होता?

उत्तर—समाज में क्योंकि कभी भी सुधारों की आवश्यकता समाप्त नहीं होती, इसलिए उन सुधारों के लिए समय-समय पर अनेक समाज-सुधारक आगे आते रहते हैं और इस प्रकार उनकी गिनती आगे बढ़ती रहती है, वह कभी समाप्त नहीं होती।

(घ) आधुनिक समाज-सुधारकों में किसे अन्तिम और मुख्य समाज-सुधारक माना गया है?

उत्तर—आधुनिक समाज-सुधारकों में लेखक ने महात्मा गांधी को अन्तिम समाज-सुधारक माना है।

(ङ) समाज में दोषों का अन्त क्यों नहीं होता है?

उत्तर—आज जो सुधार होते हैं, कल परिस्थितियों के परिवर्तित हो जाने के कारण वही दोष बन जाते हैं, इसलिए दोषों का अन्त नहीं होता।

(6) हिन्दी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है। उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है। पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक हो जाएगा और आज तो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे। उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जाएगा, जो भविष्य का स्वप्न देखेगा। दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं, क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—**पाठ के लेखक**—क्या लिखूँ?,

पाठ के लेखक—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी।

(ख) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—**व्याख्या**—विद्वान् लेखक श्री बख्शी जी साहित्यिक सुधार की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि युवा साहित्यकार वर्तमान में भूत और भविष्य का समन्वय करते हुए यह सोचकर प्रगतिवादी साहित्य की रचना कर रहे हैं क्योंकि उनके साहित्य में भविष्य के गौरव का वर्णन किया गया है। अत: भविष्य में उसमें सुधार की आवश्यकता नहीं होगी, किन्तु कुछ समय पश्चात् ही उनकी सोच की यह भव्य इमारत धराशायी हो जाएगी और आज के ये युवा लेखक भी इस दिन वृद्ध होकर अतीत का गुणगान करेंगे। साहित्यिक सुधार की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए विद्वान लेखक श्री बख्शी जी कहते हैं कि आज के युवा लेखक भी एक दिन वृद्ध होकर अतीत का गुणगान करेंगे और उस समय के जो युवा साहित्यकार होंगे, वे वर्तमान से असन्तुष्ट होकर कोई और नया साहित्य रचने लगेंगे। वे भी भविष्य के लिए चिन्तित होंगे। यह क्रम सनातन है। युवाओं से भविष्य दूर है और वृद्धों से अतीत; इसीलिए दोनों को ये सुखद लगते हैं। यह मानव स्वभाव है कि जो वस्तु उसकी पहुँच से दूर होती है, वह उसे अच्छी लगती है और वह उसे पाने का प्रयत्न करता रहता है। इसीलिए 'दूर के ढोल सुहावने' वाली कहावत चरितार्थ हुई है।

(ग) हिन्दी में आज किस प्रकार के साहित्य का निर्माण हो रहा है?

उत्तर—हिन्दी में आज प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है।

(घ) प्रगतिशील साहित्य के निर्माता क्या समझ रहे हैं?

उत्तर—प्रगतिशील साहित्य के निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है।

(ङ) अतीत के गौरव का स्वप्न कौन देखते हैं?

उत्तर—अतीत के गौरव का स्वप्न वृद्ध लोग देखते हैं। लेकिन जो आज तरुण हैं वह कल वृद्ध होकर उसका स्वप्न देखेंगे।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए—

उमंग, प्रतिमा, दूरस्थ, अनुसंधान, कलरव, आग्रह, विषाद, क्षुब्ध, दुर्बोध, कर्कशता।

उत्तर—**उमंग**—परीक्षा के प्रति राम का **उमंग** देखकर ऐसा लगता है कि इस बार वह प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण होगा।

प्रतिमा—राम की **प्रतिमा** अत्यंत सुन्दर थी।

दूरस्थ—**दूरस्थ** देश में कहीं आतंकी हमला हुआ है।

अनुसंधान—रेफ्रिजरेटर हमारे वैज्ञानिकों के **अनुसंधान** का परिणाम है।

कलरव—चिड़ियों का **कलरव** प्रकृति की शोभा को और बढ़ा देता है।

आग्रह—मैं आपसे **आग्रह** करता हूँ कि मेरे पुत्र की शादी में जरूर आइएगा।

विषाद्—उसे तो **विषाद्** ने घेर रखा है।

क्षुब्ध—बच्चे के इस कार्य से उसकी माता **क्षुब्ध** हो गई।

दुर्बोध—उसे समझ पाना बड़ा **दुर्बोध** है।

कर्कशता—कक्षा में बच्चों की **कर्कशता** पर प्रिंसिपल मैम नाराज हो गईं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

दूर के ढोल सुहावने होते हैं, मोटी अक्ल वाला होना, एक ही ढेले से दो चिड़ियाँ मारना, स्वप्न देखना, कसौटी पर खरा उतरना।

उत्तर—दूर के ढोल सुहावने होते हैं—वास्तविकता से दूर की वस्तुएँ अच्छी लगती हैं

वाक्य प्रयोग—बाबा जी के गुणों की चर्चा बाहर से आने वाले खूब करते है, क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

मोटी अक्ल वाला होना—कम बुद्धि/महामूर्ख होना

वाक्य प्रयोग—वह बालक कुछ नहीं समझता। वह तो मोटी अक्ल वाला है।

एक ही ढेले से दो चिड़िया मारना—एक कार्य से दो उद्देश्यों की पूर्ति करना

वाक्य प्रयोग—हिन्दी-साहित्य से परास्नातक करने के साथ ही सिविल सेवा की परीक्षा की तैयारी हो तो एक ढेले से दो शिकार हो जाएँगे।

स्वप्न देखना—वास्तविकता से दूर रहना

वाक्य प्रयोग—सफलता के केवल सपने ही नहीं देखना चाहिए, बल्कि अथक प्रयास भी करना चाहिए।

कसौटी पर खरा उतरना—जाँच/परख में सफल होना

वाक्य प्रयोग—उस बालक पर चोरी का इल्जाम मत लगाओ। वह पहले ही कसौटी पर खरा उतर चुका है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाकर लिखिए—वि, आ, नि, प्र, अनु, सु, उप, अभि।

उत्तर—

उपसर्ग		उपसर्ग लगाकर बने शब्द
वि	—	वियोग, विरंजन
आ	—	आकर्षण, आकार
नि	—	निकृष्ट, निबन्ध
प्र	—	प्रकाश, प्रचार
अनु	—	अनुक्रम, अनुचर
सु	—	सुडौल, सुशील
अप	—	अपमान, अपकीर्ति
अभि	—	अभिमान, अभिमुख

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय और मूलशब्द अलग करके लिखिए—यथार्थता, प्रगतिभावान्, लेखक, लज्जाशील, शीर्षक, नामकरण, समीपस्थ, सुखद, सुधारक।

उत्तर—दिए गए शब्दों में निम्न प्रत्यय लगे हैं—

शब्द		प्रत्यय
यथार्थता	—	ता
प्रतिभावान्	—	वान्
लेखक	—	अक
लज्जाशील	—	शील
शीर्षक	—	अक
नामकरण	—	करण
समीपस्थ	—	अस्थ
सुखद	—	द
सुधारक	—	अक

प्रश्न 5. निम्नलिखित में सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए—

तरुणावस्था, नागार्जुन, विवाहोत्सव, लोकोक्ति, मनोभाव, पुस्तकालय।

उत्तर—दिए गए शब्दों का सन्धि-विच्छेद इस प्रकार है—

शब्द		योग		
तरुण	+	अवस्था	=	तरुणावस्था
नाग	+	अर्जुन	=	नागार्जुन
विवाह	+	उत्सव	=	विवाहोत्सव
लोक	+	उक्ति	=	लोकोक्ति
मन:	+	भाव	=	मनोभाव
पुस्तक	+	आलय	=	पुस्तकालय

❑

4 भारतीय संस्कृति

(डॉ० राजेन्द्र प्रसाद)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 1884 ई० में बिहार के छपरा जिले के जीरादेई ग्राम में हुआ था।

प्रश्न 2. राजेन्द्र प्रसाद का निधन किस वर्ष में हुआ?

उत्तर—राजेन्द्र प्रसाद का निधन वर्ष 1963 में हुआ।

प्रश्न 3. राजेन्द्र प्रसाद ने आजीविका हेतु कौन-सा कार्य किया?

उत्तर—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी आजीविका के लिए मुजफ्फरनगर के एक कॉलेज में अध्यापन कार्य किया तथा वर्ष 1911 में वकालत आरम्भ की और वर्ष 1920 में कलकत्ता और पटना उच्च न्यायालय में वकालत की।

प्रश्न 4. गाँधी जी से प्रभावित प्रसाद जी की दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—गाँधी जी से प्रभावित, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की दो रचनाएँ हैं—(1) गाँधी जी की देन (2) बापू जी के कदमों में।

प्रश्न 5. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन कीजिए।

उत्तर—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जीवन, 'सादा जीवन उच्च विचार' पर आधारित था। अपने विचारों की सरल और सुबोध अभिव्यक्ति के लिए

सदैव याद किये जाएँगे। उनके कृतित्व में 'मेरी आत्मकथा' का विशेष स्थान है। वे जीवनभर देश की सेवा करते रहे। उनकी प्रमुख रचनाएँ (कृतित्व) निम्न हैं—भारतीय शिक्षा, गाँधी जी की देन, शिक्षा और संस्कृति, मेरी आत्मकथा-मेरी यूरोप यात्रा, चम्पारन में गाँधी आदि।

प्रश्न 6. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का हिन्दी-साहित्य में स्थान निर्धारित कीजिए।

उत्तर—डॉ० राजेन्द्रप्रसाद उच्चकोटि के साहित्यकार थे। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा हिन्दी-साहित्य की पर्याप्त सेवा की है। उन्होंने राजनैतिक, सामाजिक और दार्शनिक विषयों के साथ-साथ सांस्कृतिक विषयों पर भी लेखन कार्य किया। हिन्दी-साहित्य में उनका सर्वोच्च स्थान है।

प्रश्न 7. राजेन्द्र प्रसाद की मुख्य शैलियों का परिचय दीजिए।

उत्तर—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की मुख्य शैलियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) विवेचनात्मक (2) भावात्मक (3) आत्मकथात्मक आदि।

प्रश्न 8. 'मेरी आत्मकथा' के लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—'मेरी आत्मकथा' के लेखक डॉ० राजेन्द्र प्रसाद हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के राजनैतिक और सामाजिक जीवन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर—भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद एक सादगीपसन्द कृषक पुत्र थे। जहाँ वे एक देशभक्त राजनेता थे, वहीं कुशल वक्ता एवं श्रेष्ठ लेखक भी थे। सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और निर्भीकता इनके रोम-रोम में बसी हुई थी। साहित्य के क्षेत्र में भी इनका योगदान बहुत स्पृहणीय रहा है। अपने लेखों और भाषणों के माध्यम से इन्होंने हिन्दी-साहित्य को समृद्ध किया है। सांस्कृतिक, शैक्षिक, सामाजिक आदि विषयों पर लिखे गये इनके लेख हिन्दी-साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं।

जीवन-परिचय—देश रत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म **सन् 1884 ई०** में बिहार राज्य के छपरा जिले के जीरादेई नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम महादेव सहाय था। इनका परिवार गाँव के सम्पन्न और प्रतिष्ठित कृषक परिवारों में से था। इन्होंने कलकत्ता (कोलकाता) विश्वविद्यालय से एम० ए०, एल० एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। ये प्रतिभासम्पन्न और मेधावी छात्र थे और परीक्षा में सदैव प्रथम आते थे। कुछ समय तक मुजफ्फरपुर कॉलेज में अध्यापन कार्य करने के पश्चात् ये पटना और कलकत्ता हाईकोर्ट में वकील भी रहे। इनका झुकाव प्रारम्भ से ही राष्ट्रसेवा की ओर था। सन् 1917 ई० में गाँधी जी के आदर्शों और सिद्धान्तों से प्रभावित होकर इन्होंने चम्पारन के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और वकालत छोड़कर पूर्णरूप से राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-संग्राम में कूद पड़े। अनेक बार जेल की यातनाएँ भी भोगीं। इन्होंने विदेश जाकर भारत के पक्ष को विश्व के सम्मुख रखा। ये तीन बार अखिल भारतीय कांग्रेस के सभापति तथा भारत के संविधान का निर्माण करने वाली सभा के सभापति चुने गये।

राजनीतिक जीवन के अतिरिक्त बंगाल और बिहार में बाढ़ और भूकम्प के समय की गयी इनकी सामाजिक सेवाओं को भुलाया नहीं जा सकता। 'सादा जीवन उच्च-विचार' इनके जीवन का पूर्ण आदर्श था। इनकी प्रतिभा, कर्त्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी और निष्पक्षता से प्रभावित होकर इनको भारत गणराज्य का **प्रथम राष्ट्रपति** बनाया गया। इस पद को ये सन् 1952 से सन् 1962 ई० तक सुशोभित करते रहे। भारत सरकार ने इनकी महानताओं के सम्मान-स्वरूप देश की सर्वोच्च उपाधि '**भारतरत्न**' से **सन् 1962 ई०** में इनको अलंकृत किया। जीवन भर राष्ट्र की नि:स्वार्थ सेवा करते हुए ये **28 फरवरी, 1963 ई०** को दिवंगत हो गये।

रचनाएँ—राजेन्द्र बाबू की प्रमुख रचनाओं का विवरण निम्नवत् है—

(1) 'चम्पारन में महात्मा गाँधी'—इसमें किसानों के शोषण और अंग्रेजों के विरुद्ध गाँधीजी के आन्दोलन का बड़ा मार्मिक वर्णन है। (2) 'बापू के कदमों में'—इसमें महात्मा गाँधी के प्रति श्रद्धा-भावना व्यक्त की गयी है। (3) 'मेरी आत्मकथा'—यह राजेन्द्र बाबू द्वारा सन् 1943 ई० में जेल में लिखी गयी थी। इसमें तत्कालीन भारत की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति का लेखा-जोखा है। (4) 'मेरे यूरोप के अनुभव'—इसमें इनकी यूरोप की यात्रा का वर्णन है। इनके भाषणों के भी कई संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इसके अतिरिक्त (5) शिक्षा और संस्कृति, (6) भारतीय शिक्षा, (7) गाँधीजी की देन, (8) साहित्य, (9) संस्कृति का अध्ययन, (10) खादी का अर्थशास्त्र आदि इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं।

साहित्य में स्थान—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद सुलझे हुए राजनेता होने के साथ-साथ उच्चकोटि के विचारक, साहित्य-साधक और कुशल वक्ता थे। ये 'सादी भाषा और गहन विचारक' के रूप में सदैव स्मरण किये जाएँगे। हिन्दी की आत्मकथा विधा में इनकी पुस्तक 'मेरी आत्मकथा' का उल्लेखनीय स्थान है। ये हिन्दी के अनन्य सेवक और प्रबल प्रचारक थे। राजनेता के रूप में अति-सम्मानित स्थान पर विराजमान होने के साथ-साथ हिन्दी-साहित्य में भी इनका अति विशिष्ट स्थान है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(1) अगर असम की पहाड़ियों में वर्ष में तीन सौ इंच वर्षा मिलेगी तो जैसलमेर की तप्तभूमि भी मिलेगी, जहाँ साल में दो-चार इंच भी वर्षा नहीं होती। कोई ऐसा अन्न नहीं, जो यहाँ उत्पन्न न किया जाता हो। कोई ऐसा फल नहीं, जो यहाँ पैदा नहीं किया जा सके। कोई ऐसा खनिज पदार्थ नहीं, जो यहाँ के भू-गर्भ में न पाया जाता हो और न कोई ऐसा वृक्ष अथवा जानवर है, जो यहाँ फैले हुये जंगलों में न मिले। यदि इस सिद्धान्त को देखना हो कि आब-हवा का असर इंसान के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, शरीर और मस्तिष्क पर पड़ता है तो उसका जीता-जागता सबूत भारत में बसने वाले भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोग देते हैं।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—गद्यांश का पाठ—भारतीय संस्कृति,

पाठ के लेखक—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—भारत की प्राकृतिक विविधता का यहाँ के लोगों के रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान, शरीर और मस्तिष्क पर भी खूब प्रभाव पड़ा है। यह वैज्ञानिक सिद्धान्त भी है कि किसी स्थान की जलवायु व्यक्ति के रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान और शारीरिक विकास आदि को प्रभावित करती है। विज्ञान के इस सिद्धान्त का जीता-जागता प्रमाण अर्थात् व्यावहारिक रूप यहाँ के विभिन्न राज्यों के लोगों में प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है। आशय यही है कि भारत के विभिन्न राज्यों के लोगों की वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान तथा शारीरिक संरचना में जो विविधता देखने को मिलती है, उसका सबसे प्रमुख कारण यहाँ की प्राकृतिक विविधता अथवा जलवायु ही है।

(ग) जैसलमेर की प्रकृति कैसी है?

उत्तर—जैसलमेर की प्रकृति है—तप्तभूमि तथा अत्यल्प वर्षा।

(घ) भारत-भूमि की क्या विशेषता है?

उत्तर—भारत-भूमि की यह विशेषता है कि इसमें संसार में पाया जाने वाला प्रत्येक फल, अन्न, खनिज पदार्थ, वृक्ष और जानवर मिलता है।

(2) भिन्न-भिन्न धर्मों के मानने वाले भी, जो सारी दुनिया के सभी देशों में बसे हुये हैं, यहाँ भी थोड़ी-बहुत संख्या में पाये जाते हैं और जिस तरह यहाँ की बोलियों की गिनती आसान नहीं, उसी तरह यहाँ भिन्न-भिन्न धर्मों के सम्प्रदायों की भी गिनती आसान नहीं। इन विभिन्नताओं को देखकर अगर अपरिचित आदमी घबड़ाकर कह उठे कि यह एक देश नहीं, अनेक देशों का एक समूह है; यह एक जाति नहीं, अनेक जातियों का समूह है तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—गद्यांश का पाठ—भारतीय संस्कृति,

पाठ के लेखक—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—भारत की इस प्रकार की भिन्नताओं को देखकर कोई अजनबी ऐसा महसूस कर सकता है कि भारत एक देश न होकर कई देशों का समुच्चय है। इसी प्रकार अनेक भारत की जातियों को अनेक राष्ट्रीयताओं में गिना जा सकता है। ऊपर से देखने पर ऐसा ही आभास मिलता है, जबकि गहराई में देखने पर पता चलता है कि सबने एक में मिश्रित होकर विराट् भारतीय संस्कृति की उच्चता को और अधिक गौरवशाली बनाया है।

(ग) भारत के धर्मों और बोलियों में क्या समानता है?

उत्तर—भारत के धर्मों और बोलियों में एकमात्र समानता यह है कि वे मात्रा (परिमाण) में असंख्य हैं।

(घ) कोई अपरिचित व्यक्ति भारत को देखकर क्या कह उठेगा?

उत्तर—विश्व के अधिकांश देशों में प्राय: किसी एक ही धर्म अथवा जाति का बाहुल्य है, जबकि भारत में अनेक धर्मों और जातियों का बाहुल्य है और सभी को अपने धर्मानुसार जीवन व्यतीत करने की स्वतन्त्रता है। किसी अपरिचित द्वारा भारत को अनेक देशों का समूह कह देगा।

(3) यह केवल एक काव्य की भावना नहीं है, बल्कि एक ऐतिहासिक सत्य है, जो हजारों वर्षों से अलग-अलग अस्तित्व रखते हुये अनेकानेक जल-प्रपातों और प्रवाहों का संगमस्थल बनकर एक प्रकांड और प्रगाढ़ समुद्र के रूप में भारत में व्याप्त है, जिसे भारतीय संस्कृति का नाम दे सकते हैं। इन अलग-अलग नदियों के उद्गम भिन्न-भिन्न हो सकते हैं और रहे हैं। इनकी धारायें भी अलग-अलग बही हैं और प्रदेश के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के अन्न और फल-फूल पैदा करती रही हैं; पर सबमें एक ही शुद्ध, सुन्दर, स्वस्थ, और शीतल जल बहता रहा है, जो उद्गम और संगम में एक ही हो जाता है।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—गद्यांश का पाठ—भारतीय संस्कृति,

पाठ के लेखक—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—विशाल भारत की बहुरंगी संस्कृति की अनेकता में एकता व्याप्त है। यह किसी कवि की कल्पनामात्र नहीं है। लेखक ने किसी भावावेश में भी ऐसा नहीं लिखा है कि भारतीय संस्कृति के मूल में एकता विद्यमान है। यह कविता की उड़ान नहीं, वरन् एक ऐतिहासिक सत्य है। जैसे विभिन्न झरनों और नदियों के उद्गम-स्थल अलग-अलग होने पर भी उनका जल दूर-दूर से आकर सागर की गोद में समा जाता है और उनका संगम 'सागर' कहलाता है, उसी प्रकार भारत में अनेक विचारधाराओं के लोग रहते हैं और विभिन्न धर्मों तथा सम्प्रदायों के झरने हजारों वर्षों से भारत में आकर मिलते रहे हैं। इन सबके मिलने से एक विस्तृत और गहरे सागर का निर्माण हुआ है। इसी सागर को हम भारतीय संस्कृति कहते हैं।

(ग) लेखक ने किसे भारतीय संस्कृति का नाम दिया है?

उत्तर—भारत की अनेकता में जो एकता की भावना है, उसी को लेखक ने भारतीय संस्कृति का नाम दिया है।

(घ) भारतीयों के हृदयों में प्रवाहित भारतीयता की भावना की तुलना किससे की गई है?

उत्तर—भारतीयों के हृदयों में प्रवाहित भारतीयता की भावना की तुलना विभिन्न नदियों में बहने वाले जल से की गई है।

(4) आज हम इसी निर्मल, शुद्ध, शीतल और स्वस्थ अमृत की तलाश में हैं और हमारी इच्छा, अभिलाषा और प्रयत्न यह है कि वह इन सभी अलग-अलग बहती हुई नदियों में अभी भी उसी तरह बहता रहे और इनको वह अमर तत्त्व देता रहे, जो जमाने के हजारों थपेड़ों को बरदाश्त करता हुआ भी आज हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए है और रखेगा।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के '**गद्य-खण्ड**' के '**भारतीय संस्कृति**' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **डॉ० राजेन्द्रप्रसाद** हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—रेखांकित अंश की व्याख्या—भारतीय संस्कृतिरूपी विशाल सागर में आकर गिरने वाली जाति, धर्म भाषारूपी आदि नदियों में एक ही भाव से शुद्ध, स्वच्छ शीतल तथा स्वास्थ्यप्रद भारतीयतारूपी एकता का जल अमृत के समान प्रवाहित होता रहा है। आज यह जल राजनैतिक स्वार्थ, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, धार्मिक, कट्टरता आदि के द्वारा मलिन हो गया है। हमें आज सदियों पहले प्रवाहित उसी अमृत तत्त्व की तलाश है, जिस अमृतरूपी जल में एक ही उदात्त भाव का समावेश रहा है, जो भारतीय संस्कृति को अमरता और स्थिरता प्रदान करता है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि विभिन्न विचारधाराओं के रूप में इन नदियों में अमृतरूपी जल सदैव प्रवहमान् बना रहे, जिससे सभी लोगों में प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना का संचार हो। इस भावना का विस्तृत रूपी ही सनातन धर्म है और यही भारतीय संस्कृति उदात्त परम्परा है। यद्यपि इस देश ने तरह-तरह के संकट झेले हैं, तथापि भारतीय संस्कृति की विभिन्नता में एकता एक ऐसा तत्त्व है, जो आज तक मिटाया नहीं जा सका है। न जाने कितनी बार इस देश पर बाहरी लोगों द्वारा आक्रमण किए गए और अनगिनत बार यह देश आक्रमणकारियों की धर्मान्धता का शिकार हुआ, किन्तु यहाँ एक ऐसा तत्त्व सदैव विद्यमान रहा, जिसके बल पर भारतीय संस्कृति का अस्तित्व आज तक बना हुआ है।

(ग) हमारे अस्तित्व को कौन कायम रखे हुए है?

उत्तर—भारतीय संस्कृति का एकता तत्त्व ही वह अमृत है, जो हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए हैं।

(5) हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा-तत्त्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धान्तों का वर्णन आया है, अहिंसा को ही उनमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या दूसरा नाम स्वार्थ

है, जो प्राय: भोग के रूप में हमारे सामने आता है। पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग ही से निकाला है और भोग भी त्याग में ही पाया है। श्रुति कहती है–'त्तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:'। इसी के द्वारा हम व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का विरोध, व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध, देश और देश के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्त्व से ओत-प्रोत है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

***अथवा* गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।**

उत्तर—**संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के '**गद्य-खण्ड**' के '**भारतीय संस्कृति**' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **डॉ० राजेन्द्रप्रसाद** हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्यख्या कीजिए।

उत्तर—**रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखक कहता है कि हमारी भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार अहिंसा तत्त्व ही है। इसीलिए हमारे ग्रन्थों में जहाँ कहीं भी नैतिक सिद्धान्तों की बात कही गई है, वहाँ मन वचन और कर्म से हिंसा न करने का उल्लेख अवश्य किया गया है। लेखक ने अहिंसा को त्याग का नाम दिया है। त्याग करना ही अहिंसा है और दूसरे रूप में अहिंसा ही त्याग है। अहिंसा और त्याग दोनों में कोई अन्तर नहीं है। ठीक इसी प्रकार हिंसा का दूसरा नाम अथवा दूसरा रूप स्वार्थ है। हिंसा ही स्वार्थ है और स्वार्थ का पर्याय हिंसा है। दोनों में उतना ही घनिष्ठ सम्बन्ध है, जितना अहिंसा और त्याग में। एक मानव दूसरे मानव को कष्ट अथवा हानि तब पहुँचाता है, जब वह स्वार्थ के व शमें हो जाता है। अत: स्वार्थ का दूसरा नाम हिंसा है और हिंसा अथवा स्वार्थ का अर्थ है—भोग। भारतीय दर्शन के अनुसार भोग की उत्पत्ति त्याग से हुई है और त्याग भी भोग में ही पाया जाता है। उपनिषद् में कहा गया है कि संसार का भोग, त्याग की भावना से करो। यहाँ त्याग में ही भोग माना गया है। भोग के लिए एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से झगड़ा करता है, लड़ता है और समाज में उसका विरोध करता है। भोग के कारण ही एक समाज का दूसरे समाज से अथवा एक देश का दूसरे देश से संघर्ष होता है; अत: इन समस्त विरोधों को पूरी तरह नष्ट करने के लिए त्याग की भावना का उत्पन्न होना अनिवार्य है। त्याग की भावना मन में आते ही चित्त में अपार सुख अथवा शान्ति का अनुभव होने लगता है। इस प्रकार त्याग अथवा अहिंसा भारतीय संस्कृति का वह तत्त्व है, जो संसार में व्याप्त समस्त व्यक्ति, सामाजिक, राजनैतिक देश-विदेशगत विरोधों को समाप्त कर सकता है।

(ग) हमारी संस्कृति का मूलाधार क्या रहा है?

उत्तर—हमारी संस्कृति का मूलाधार अहिंसा का रहा है।

(घ) त्याग और स्वार्थ क्या है?

उत्तर—अहिंसा का दूसरा नाम त्याग और हिंसा का दूसरा नाम स्वार्थ है।

(6) यह एक नैतिक और आध्यात्मिक स्त्रोत है, जो अनन्तकाल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण देश में बहता रहा है और कभी-कभी मूर्त रूप होकर हमारे सामने आता रहा है। यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने ऐसे ही मूर्त रूप को अपने बीच चलते-फिरते, हँसते-रोते भी देखा है और जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नयी मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नये प्राण फूँके और मुरजाए हुए दिलों को फिर खिला दिया, वह अमरत्व सत्य और अहिंसा का है, जो केवल इसी देश के लिये नहीं, आज मानवमात्र के जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

***अथवा* उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर—**गद्यांश का पाठ**—भारतीय संस्कृति,

पाठ के लेखक—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पुस्तक के पाठ 'भारतीय संस्कृति' से लिया गया है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्र प्रसाद हैं।

(ख) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—**व्याख्या**—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कहते हैं कि भारत की राष्ट्रीय एकता की प्राण-शक्ति इसकी नीति और इसके अध्यात्म में निहित है। वास्तविकता यह है कि भारतीय संस्कृति में पवित्र चरित्र तथा आत्मा सम्बन्धी चिन्तन का झरना सदा से ही अबाध गति से बहता रहा है। यह झरना कभी स्पष्ट दिखता हुआ और कभी परोक्ष रूप से बहता रहा है। हमारे सामने समय-समय पर उच्च चरित्र वाले तथा धार्मिक एवं आत्मिक चेतना से सम्पन्न महापुरुष आते रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य ही कहा जाएगा कि आधुनिक युग में इस चरित्र अध्यात्म की सजीव एवं साकार मूर्ति, महात्मा गाँधी के रूप में हमारा नेतृत्व कर रही थी। नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के इस मूर्त रूप को अर्थात् महात्मा गाँधी को प्रत्यक्ष रूप से हमने चलते-फिरते तथा हँसते-रोते भी देखा है।

(ग) हमारा नैतिक और आध्यात्मिक स्त्रोत क्या है?

उत्तर—राष्ट्रीय एकता की भावना नैतिक और आध्यात्मिक स्त्रोत है।

(घ) लेखक ने अमरत्व का स्त्रोत किसे बताया है?

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने अमरत्व का स्त्रोत सत्य और अहिंसा को बताया है।

(ङ) किस मूर्त रूप से चलते-फिरते रहने की बात गद्यांश में की गयी है?

उत्तर—गाँधी जी के रूप में राष्ट्रीय एकता के मूर्त रूप से चलते-फिरते रहने की बात यहाँ कही गई है।

(7) इसलिये हमने भिन्न-भिन्न विचारधाराओं को स्वच्छन्दतापूर्वक अपने-अपने रास्ते बहने दिया। भिन्न-भिन्न धर्मों और सम्प्रदायों को स्वतन्त्रतापूर्वक पनपने और भिन्न-भिन्न भाषाओं को विकसित और प्रस्फुटित होने दिया। भिन्न-भिन्न देशों की संस्कृतियों को अपने में मिलाया और अपने को उनमें मिलने दिया और देश और विदेश में एकसूत्रता तलवार के जोर से नहीं, बल्कि प्रेम और सौहार्द से स्थापित की। दूसरों के हाथों और पैरों पर, घर और सम्पत्ति पर जबरदस्ती कब्जा नहीं किया, उनके हृदयों को जीता और इसी वजह से प्रभुत्व, जो चरित्र और चेतना का प्रभुत्व है, आज भी बहुत अंशों में कायम है, जब हम स्वयं उस चेतना को बहुत अंशों में भूल गये हैं और भूलते जा रहे हैं।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—**गद्यांश का पाठ**—भारतीय संस्कृति,

पाठ के लेखक—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—**व्याख्या**—हमने सभी देशों के लोगों को सहजता से स्वीकार करके उन्हें अपने बीच में इस प्रकार घुल-मिल जाने दिया, मानो वे हमारे ही अभिन्न अंग हों। हमारे यहाँ जितनी भी विदेशी संस्कृतियाँ आईं, वे हमारी संस्कृति में स्वाभाविक रूप से मिल गईं और हमारी संस्कृति उनमें

घुल-मिलकर एकरस हो गई। हमने कभी अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हुए अपनी विचारधारा को किसी के ऊपर नहीं थोपा। हमने देश-विदेश में सब जगह प्रेम-प्यार और भाईचारे के बल पर स्वयं को स्थापित किया।

(ग) हमने एकसूत्रता किसके द्वारा स्थापित की?

उत्तर—हमने प्रेम और सौहार्द के द्वारा देश और विदेश में एकसूत्रता स्थापित की।

(घ) हमने भिन्न-भिन्न विचारधाराओं को स्वच्छन्दतापूर्वक अपने-अपने रास्ते क्यों बहने दिया?

उत्तर—लेखक उन दुर्दिनों की बात कर रहा है, जब हम विदेशियों से आक्रान्त हुए। प्रकृति और मानव दोनों ने हम पर मुसीबतों के पहाड़ ढहाए फिर भी हमने उनकी विचारधाराओं को आगे बढ़ने दिया।

(ङ) हम क्या भूलते जा रहे हैं?

उत्तर—हमने प्रेम और सौहार्द के द्वारा दूसरों के हृदयों को जीतकर जो प्रभुत्व और चरित्र कायम किया था, आज हम प्रेम और सौहार्द की उसी चेतना को भूलते जा रहे हैं।

(8) दूसरी बात, जो इस सम्बन्ध में विचारणीय है, वह यह है कि संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र में हमारे नगर और ग्राम, हमारे प्रदेश और सम्प्रदाय, हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं। जहाँ उनमें और सब तरफ की विभिन्नताएँ हैं, वहाँ उन सबमें यह एकता है। इसी बात को ठीक तरह से पहचान लेने से बापू ने जनसाधारण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रान्ति करने के लिये तत्पर करने के लिये इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था। अहिंसा, सेवा और त्याग की बातों से जनसाधारण का हृदय इसीलिये आन्दोलित हो उठा; क्योंकि उन्हीं से तो वह शताब्दियों से प्रभावित और प्रेरित रहा।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

***अथवा* उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर—गद्यांश के पाठ का नाम—भारतीय संस्कृति,

गद्यांश के लेखक—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद।

संदर्भ—प्रस्तुत अवतरण हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक के 'भारतीय संस्कृति' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्र प्रसाद हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—किसी समूह की एक जैसी सोच अथवा विचारधारा ही वस्तुत: संस्कृति कहलाती है। हमारे देश की संस्कृति की यही विशेषता है कि उसमें विविधता होते हुए भी किसी एक बिन्दु पर जाकर समानता अवश्य दृष्टिगोचर होती है। यही समानता अथवा एकता ही हमारे देश की जीवन्तता का मूलतत्व अर्थात् प्राण है। हमारे मन-मस्तिष्क में बसी एकता की यही नैतिक भावना हमें असंख्य नगर, ग्राम, प्रदेश, सम्प्रदाय, जाति और वर्ग आदि में बँटा होने के बाद भी आपस में एक-दूसरे जोड़े हुए है और उसी जुड़ाव के कारण हम सब स्वयं को एक ही जाति भारतीयता का अंग मानते हैं। एक जाति और एक भारत माता की सन्तान होने के कारण हम आपस में भाई हैं। एकता का ऐसा उदाहरण विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं दृष्टिगत होता। विभिन्न जाति, धर्म और प्रदेश में बँटा होने के कारण हमारी वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन और भाषा में विभिन्नता दिखती ही है, फिर भी भारतीयता की भावना हमें एक बनाती है।

(ग) क्रान्ति के लिये बापू ने किसका सहारा लिया था?

उत्तर—क्रांति के लिए बापू ने नैतिक चेतना का सहारा लिया था।

(ङ) जनसाधारण किन बातों से आन्दोलित हो उठा?

उत्तर—अहिंसा, सेवा और त्याग की बातों से जनसाधारण आंदोलित हो उठा।

(9) यदि हमें अपने समाज और देश में उन सब अन्यायों और अत्याचारों की पुनरावृत्ति नहीं करनी है, जिनके द्वारा आज के सारे संघर्ष उत्पन्न होते हैं, तो हमें अपनी ऐतिहासिक, नैतिक चेतना या संस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिये, अर्थात् उसके पीछे वैयक्तिक लाभ और भोग की भावना प्रधान न होकर वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना प्रधान होनी चाहिये। हमारे प्रत्येक देशवासी को अपने सारे आर्थिक व्यापार उसी भावना से प्रेरित होकर करने चाहियें। वैयक्तिक स्वार्थों और स्वत्वों पर जोर न देकर वैयक्तिक कर्तव्य और सेवा-निष्ठा पर जोर देना चाहिये और हमारी प्रत्येक कार्यवाही इसी तराजू पर तौली जानी चाहिये।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—उपर्युक्त गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'भारतीय संस्कृति' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्र प्रसाद हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—हम जो भी कार्य करें, उसको कर्तव्य और लोक-कल्याण की कसौटी पर परखना चाहिए। आज हम अत्यधिक स्वार्थी हो गए हैं और हमारा प्रत्येक कार्य व्यक्तिगत हित पर आधारित हो गया है। भारतीय समाज को नया रूप प्रदान करना तभी सम्भव हो सकेगा, जब व्यक्तिगत हित का लोक-कल्याण के लिए बलिदान कर दिया जाए एवं अधिकार प्राप्त करने के लिए कर्तव्यों का पालन किया जाए। इसके अतिरिक्त जब व्यक्ति प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन कर्तव्य और सेवाभावरूपी तराजू से करेगा तब ही हमारा देश स्वार्थ प्रेरित संघर्षों में मुक्ति प्राप्त कर सकेगा और हमारी भारतीय संस्कृति की मूलभूत चेतना फिर से कार्य करने लगेगी।

(ग) आर्थिक व्यापार करने में किस भावना की प्रधानता होनी चाहिये?

उत्तर—आर्थिक व्यापार करने में वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना की प्रधानता होनी चाहिए।

(घ) देश और समाज में व्याप्त सारे संघर्षों को किस प्रकार दूर किया जा सकता है?

उत्तर—हम अपनी आर्थिक व्यवस्था को ऐतिहासिक, नैतिक चेतना अथवा संस्कृति के आधार पर बनाकर देश और समाज में व्याप्त सारे संघर्षों को दूर कर सकते हैं।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़कर नये शब्दों की रचना कीजिए—समाज, इतिहास, नीति, भूगोल, साहस।

उत्तर—दिए गए शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नये शब्दों की रचना इस प्रकार है—

शब्द		प्रत्यय		बने हुए शब्द
समाज	+	इक	=	सामाजिक
इतिहास	+	इक	=	ऐतिहासिक
नीति	+	इक	=	नैतिक
भूगोल	+	इक	=	भौगोलिक
साहस	+	इक	=	साहसिक

प्रश्न 2. निम्नलिखित पदों में सविग्रह समास का नाम लिखिए—देशभक्ति, गंगा-यमुना, चन्द्रशेखर, रवीन्द्र-अरविन्द।

उत्तर—दिए गए शब्दों में सामाजिक विग्रह इस प्रकार है—

शब्द	—	विग्रह	—	समास
देशभक्ति	—	देश के लिए भक्ति	—	सम्प्रदान तत्पुरुष
गंगा-यमुना	—	गंगा और यमुना	—	द्वन्द्व समास
चन्द्रशेखर	—	चन्द्र है सिर पर जिसके अर्थात् शंकर	—	बहुब्रीहि समास
रवीन्द्र-अरविन्द	—	रवीन्द्र और अरविन्द	—	द्वन्द्व समास

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रत्ययों के योग से पाँच-पाँच शब्दों की रचना कीजिए—आई, ईय, त्व, प्रद, जन्य, आत्मक, पूर्वक।

उत्तर—

प्रत्यय	—	पाँच शब्द
आई	—	लिखाई, चढाई, पढ़ाई, पिटाई, खिंचाई
ईय	—	नगरीय, जातीय, भारतीय, मानवीय, आत्मीय
त्व	—	मनुष्यत्व, महत्त्व, प्रभुत्व, बंधुत्व, कवित्व
प्रद	—	कल्याणप्रद, लोभप्रद, हानिप्रद, लाभप्रद, भयप्रद
जन्य	—	आवेशजन्य, परिणामजन्य, भावजन्य, क्रोधजन्य, हेयजन्य
आत्मक	—	आलोचनात्मक, व्यंग्यात्मक, प्रश्नात्मक, भावात्मक, विचारात्मक
पूर्वक	—	शांतिपूर्वक, प्रेमपूर्वक, विनयपूर्वक, नियमपूर्वक, विचारपूर्वक

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों को उनके मूलशब्दों से पृथक् करके लिखिए—

प्रतिनिधित्व, प्रोत्साहित, अहिंसात्मक, प्रस्फुटित, प्रदर्शित, विभिन्नता, सुशोभित।

उत्तर—

शब्द		उपसर्ग		मूलशब्द		प्रत्यय
प्रतिनिधित्व	—	प्रति	—	निधि	—	त्व
प्रोत्साहित	—	प्र	—	उत्साह	—	इत
अहिंसात्मक	—	अ	—	हिंसा	—	आत्मक
प्रस्फुटित	—	प्र	—	स्फुट	—	इत
प्रदर्शित	—	प्र	—	दृश	—	इत
विभिन्नता	—	वि	—	भिन्न	—	ता
सुशोभित	—	सु	—	शोभा	—	इत

❑

5 ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से

(रामधारी सिंह 'दिनकर')

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'दिनकर' जी की कृतियाँ बताइए।

उत्तर—रामधारी सिंह 'दिनकर' की कृतियाँ निम्नलिखित हैं—ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से, रेणुका, हुँकार, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, अर्द्धनारीश्वर, उजली आग इत्यादि।

प्रश्न 2. 'रेती के फूल' व 'रश्मिरथी' की रचना-विधा बताइए।

उत्तर—'रेती के फूल', 'निबन्ध' की एक विधा है, जबकि रश्मिरथी काव्य की एक विधा है, जिसे 'खण्डकाव्य' कहा गया।

प्रश्न 3. 'उर्वशी' पर 'दिनकर' जी को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

उत्तर—उर्वशी रचना के लिए उन्हें वर्ष 1959 में 'पद्मभूषण' उपाधि से अलंकृत किया गया।

प्रश्न 4. ईर्ष्या का अनोखा वरदान क्या है?

उत्तर—ईर्ष्या का अनोखा वरदान यह है कि जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता जो उसके पास मौजूद हैं बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं।

प्रश्न 5. ईर्ष्यालु मनुष्य किस चिन्ता से ग्रस्त रहता है?

उत्तर—ईर्ष्यालु मनुष्य इस चिन्ता से ग्रस्त रहता है कि वह दूसरों की बुराई कैसे करे, दूसरों को सबकी नजरों में कैसे गिराए।

प्रश्न 6. 'चिन्ता को चिता' क्यों कहा गया है?

उत्तर—चिन्ता को चिता इसलिए कहा गया है, क्योंकि जिसे चिन्ता ने पकड़ लिया है उसकी जिन्दगी बेकार हो जाती है जो चिता से बढ़कर होती है।

प्रश्न 7. मनुष्य के पतन का मूल कारण क्या है?

उत्तर—मनुष्य के पतन का मूल कारण उसकी दूसरों के प्रति की गई ईर्ष्या है। इसलिए हमें ईर्ष्या से बचना चाहिए।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'दिनकर' जी का संक्षिप्त जीवन-परिचय एवं भाषा-शैली स्पष्ट कीजिए।

***या* रामधारी सिंह 'दिनकर' का जीवन-परिचय दीजिए एवं उनकी एक रचना का नामोल्लेख कीजिए।**

उत्तर—हिन्दी के प्रसिद्ध कवि व क्रान्ति-गीतों के अमर गायक श्री रामधारी सिंह हिन्दी-साहित्याकाश के दीप्तिमान् 'दिनकर' हैं। इन्होंने अपनी प्रतिभा की प्रखर किरणों से हिन्दी-साहित्य-गगन को आलोकित किया है। ये हिन्दी के महान् विचारक, निबन्धकार, आलोचक और भावुक कवि हैं। इनके द्वारा कई ऐसे ग्रन्थों की रचना की गयी है, जो हिन्दी-साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

जीवन-परिचय—दिनकर जी का जन्म **सन् 1908 ई०** में बिहार के मुँगेर जिले के 'सिमरिया' नामक ग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रवि सिंह तथा माता का नाम श्रीमती मनरूप देवी था। अल्पायु में ही इनके पिता का देहान्त हो गया था। इन्होंने पटना विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की और इच्छा होते हुए भी पारिवारिक कारणों से आगे न पढ़ सके और नौकरी में लग गये। कुछ दिनों तक इन्होंने माध्यमिक विद्यालय मोकामाघाट में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य किया। फिर सन् 1934 ई० में बिहार के सरकारी विभाग में

सब-रजिस्ट्रार की नौकरी की। इसके बाद प्रचार विभाग में उपनिदेशक के पद पर स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद तक कार्य करते रहे। सन् 1950 ई० में इन्हें मुजफ्फरपुर के स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिन्दी विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। सन् 1952 ई० में ये राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए। इसके बाद इन्होंने भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति, भारत सरकार के गृहविभाग में हिन्दी सलाहकार और आकाशवाणी के निदेशक के रूप में कार्य किया। सन् 1962 ई० में भागलपुर विश्वविद्यालय ने इन्हें डी० लिट्० की मानद उपाधि प्रदान की। सन् 1972 ई० में इनकी काव्य-रचना 'उर्वशी' पर इन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हिन्दी-साहित्य-गगन का यह दिनकर **24 अप्रैल, सन् 1974 ई०** को हमेशा के लिए अस्त हो गया।

रचनाएँ—साहित्य के क्षेत्र में 'दिनकर' जी का उदय कवि के रूप में हुआ था। बाद में गद्य के क्षेत्र में भी वे आगे आये। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नवत् हैं—

(1) **दर्शन एवं संस्कृति**—'धर्म', 'भारतीय संस्कृति की एकता', 'संस्कृति के चार अध्याय'—ये दर्शन और संस्कृति पर आधारित ग्रन्थ हैं। संस्कृति के चार अध्याय 'साहित्य अकादमी' द्वारा पुरस्कृत रचना है।

(2) **निबन्ध-संग्रह**—'अर्द्धनारीश्वर', 'वट-पीपल', 'उजली आग', 'मिट्टी की ओर', 'रेती के फूल' आदि इनके निबन्ध-संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित इनके अन्य निबन्ध भी हैं।

(3) **आलोचना-ग्रन्थ**—'शुद्ध कविता की खोज', इसमें कविता के प्रति शुद्ध और व्यापक दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है।

(4) **यात्रा-साहित्य**—'देश-विदेश'।

(5) **बाल-साहित्य**—'मिर्च का मजा', 'सूरज का ब्याह' आदि।

(6) **काव्य**—'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'कुरुक्षेत्र', 'सामधेनी', 'प्रणभंग' (प्रथम काव्य-रचना), 'उर्वशी' (महाकाव्य); 'रश्मिरथी' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' (खण्डकाव्य)—ये दिनकर जी के राष्ट्रप्रेम और क्रान्ति की ओजस्वी भावना से पूर्ण काव्य-गन्थ हैं।

(7) **शुद्ध कविता की खोज**—दिनकर जी का एक आलोचनात्मक ग्रन्थ है, जिसमें इन्होंने काव्य के सम्बन्ध में अपना व्यापक दृष्टिकोण व्यक्त किया है।

साहित्य में स्थान—क्रान्ति का बिगुल बजाने वाले दिनकर जी कवि ही नहीं अपितु एक सफल गद्यकार भी थे। इनकी कृतियों में इनका चिन्तक एवं मनीषी रूप प्रतिबिम्बित होता है। राष्ट्रीय भावनाओं से संकलित इनकी कृतियाँ हिन्दी-साहित्य की अमूल्य निधि हैं, जो इन्हें हिन्दी-साहित्याकाश का दिनकर सिद्ध करती हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(1) ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर, ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है।

(क) गद्यांश के पाठ व लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—पाठ का नाम—ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से,

पाठ के लेखक—रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रथम रेखांकित अंश की व्याख्या—प्रस्तुत अंश में लेखक ने बताया है कि ईर्ष्या अपने भक्त को एक विचित्र प्रकार का वरदान देती है और वह सदैव दुःखी रहने का वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या उत्पन्न हो जाती है, वह अकारण ही कष्ट भोगता है। वह अपने पास विद्यमान अनन्त सुख-साधनों के उपभोग द्वारा भी आनन्द नहीं उठा पाता; क्योंकि वह दूसरों की वस्तुओं को देख-देखकर मन में जलता रहता है।

द्वितीय रेखांकित अंशों की व्याख्या—लेखक श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का कहना है कि जब ईर्ष्यालु मनुष्य यह देखता है कि कोई वस्तु किसी अन्य के पास है लेकिन उसके पास नहीं है तो उसके मन में पनपी यह अभाव की भावना सदैव उसे डंक मारती रहती है। लेखक का कहना है कि डंक से उत्पन्न कष्ट को सहन करना उचित नहीं है। लेकिन ईर्ष्यालु मनुष्य कष्ट को सहन करने के अतिरिक्त और कुछ कर भी नहीं सकता।

(ग) ईर्ष्या का अनोखा वरदान क्या है?

उत्तर—ईर्ष्या का अनोखा वरदान यह है कि ईर्ष्यालु अपने पास की अपनी चीजों से आनन्द नहीं उठाता, बल्कि दूसरों के पास जो वस्तुएँ हैं, उनसे दुःख उठाता है।

(घ) ईर्ष्या की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?

उत्तर—ईर्ष्या की यह प्रमुख विशेषता है कि ईष्यालु व्यक्ति सदैव उन वस्तुओं के कारण दुःखी रहता है, जो दूसरों के पास है। ईर्ष्या की एक अन्य विशेषता यह है कि ईर्ष्याग्रस्त व्यक्ति दूसरों से अपनी तुलना में लगा रहात है और अन्य की तुलना में जो भी उसके पास नहीं है, उसके अभाव में दुःखी होता रहता है।

(2) एक उपवन को पाकर भगवान् को धन्यवाद देते हुए उसका आनन्द नहीं लेना और बराबर इस चिन्ता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, एक ऐसा दोष है, जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भंयकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन-रात सोचते-सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर व दूसरे को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

***अथवा* उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर—पाठ का नाम—ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से,

पाठ के लेखक—रामधारी सिंह 'दिनकर'।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' नामक पाठ लिया गया है। इसके लेखक 'रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं।

(ख) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—पहले रेखांकित अंश की व्याख्या—दिनकर जी कहते हैं कि जो व्यक्ति असन्तोषी प्रवृत्ति के होते हैं, उनमें ईर्ष्या की भावना अधिक पाई जाती है। असन्तोषी व्यक्ति इस बात से सन्तोष नहीं करते कि भगवान् ने हमें खुश रहने के लिए जो भी सुख-सुविधाएँ एक उपवन के रूप में उपहारस्वरूप दी हैं, भले ही वह उपवन बहुत छोटा हो अर्थात् सुख-सुविधाएँ अत्यल्प हैं, हम उनका उपयोग करते हुए आनन्द प्राप्त करें और ईश्वर को इसके लिए धन्यवाद दें कि उसने हमें वे सुविधाएँ प्रदान की

हैं। इसके विपरीत वे सदैव यही सोच-सोचकर बेचैन रहते हैं कि ईश्वर ने हमें इससे बड़ा उपवन अथवा अधिक सुख-सुविधाएँ क्यों प्रदान नहीं की हैं।

दूसरे रेखांकित अंश की व्याख्या—ईश्वर-प्रदत्त अभावों के विषय में सोचते-सोचते वह इतना जड़ (भावशून्य) हो जाता है कि अपनी स्वाभाविक सृजनात्मक क्षमता को भी भूल जाता है। वह यह भी नहीं सोच पाता कि जिन सुख-सुविधाओं का मेरे जीवन में अभाव है, उनको मैं अपने परिश्रम और सृजनात्मक शक्ति द्वारा प्राप्त कर सकता हूँ। वह सृजन की अपनी सकारात्मक क्षमता के विपरीत विनाश की नकारात्मक दिशा की ओर उन्मुख हो जाता है तथा अपनी उन्नति हेतु परिश्रम करना छोड़कर दूसरों को हानि पहुँचाने के उपक्रम में लग जाता है। वह इसे ही अपना श्रेय-प्रेम और पुनीत कर्तव्य मानने लगता है।

(ग) लेखक ने ईर्ष्यालु व्यक्ति के चरित्र के भंयकर होने का क्या कारण बताया है?

उत्तर—ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र तब भयंकर हो उठता है, जब वह स्वयं को मिले उपवन का आनन्द न लेते हुए इस चिन्ता में डूबा रहता है कि मुझे इससे बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला।

(घ) क्या भूलकर ईर्ष्यालु व्यक्ति विनाश में लग जाता है?

उत्तर—अपने अभाव पर ईर्ष्यालु व्यक्ति दिन-रात सोचते-सोचते सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है।

(ङ) व्यक्ति कब दूसरों की हानि करने को अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है?

उत्तर—अपनी उन्नति के उद्यम को छोड़कर ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।

(3) ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निन्दा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है। दूसरों की निन्दा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जाएँगे और जो स्थान रिक्त होगा उस पर मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—**संदर्भ**—उपर्युक्त गद्यांश हिन्दी की हमारी पाठ्य-पुस्तक से लिया गया है, जिससे पाठ का नाम 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन' से है। इसके से लेखक 'रामधारी सिंह दिनकर' हैं।

(ख) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—**व्याख्या**—दूसरे व्यक्तियों की निन्दा वह इसलिए भी करता है, जिससे वह व्यक्ति दूसरे लोगों की दृष्टि में गिर जाए। उसकी धारणा यह होती है कि जब वह व्यक्ति, जिसकी वह निन्दा कर रहा है, अपने मित्रों अथवा समाज के लोगों की नजरों से गिर जाएगा तो उसका ऊँचा स्थान स्वत: खाली हो जाएगा और वह उसके स्थान पर अधिकार कर लेगा। स्वयं को लोगों की नजरों में चढ़ाने के लिए वह उस व्यक्ति की बुराई करता है, जो पहले से ही उच्च आसन पर विराजमान् है। उसकी अभिलाषा यही रहती है कि कोई दूसरा व्यक्ति उन्नति न कर पाए। इस प्रकार ईर्ष्या और निन्दा का परम्पर गहन सम्बन्ध है।

(ग) ईर्ष्या की बेटी किसे कहा गया है?

उत्तर—ईर्ष्या की बेटी 'निन्दा' को कहा गया है।

(घ) ईर्ष्यालु और निन्दक का क्या सम्बन्ध है?

उत्तर—ईर्ष्या और निन्दक का घनिष्ठ सम्बन्ध है; क्योंकि जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है।

(ङ) ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों की निन्दा क्यों करता है?

उत्तर—ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों की निन्दा इसलिए करता है; क्योंकि उसका ऐसा मानना है कि निन्दा करने से दूसरे व्यक्ति जनता अथवा अपने मित्रों की दृष्टि से गिर जाएँगे और उससे जो स्थान रिक्त होगा, वह उस स्थान पर अधिकार प्राप्त कर लेगा।

(4) मगर ऐसा न आज तक हुआ है और न होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। यह बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निन्दा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण सद्गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निन्दा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाये तथा अपने गुणों का विकास करे।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—**गद्यांश का नाम**—ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से,

पाठ के लेखक—रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—**प्रथम रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखक कहता है कि वही व्यक्ति आगे बढ़ सकता है, जो वास्तव में आगे बढ़ने का सद्प्रयास करता है। दूसरे को गिराकर स्वयं उसके स्थान पर खड़े हो जाने की कोशिश को आगे बढ़ने का प्रयास कदापि नहीं कहा जा सकता। यह तो सरासर स्वयं को धोखा देना है। यहाँ यह भी भली-भाँति समझ लेना आवश्यक है कि कभी भी कोई आदमी निन्दा से नहीं गिरता; क्योंकि समाज का प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि अच्छों को भी बुरा कहने की संसार ही आदत है। व्यक्ति एक ही बात से समाज की नजरों से गिरता है और वह है उसके सद्गुणों में कमी होना। कहने का आशय यही है कि जब व्यक्ति अपने सद्गुणों को त्यागकर दुर्गुणों को गले लगाने लगता है, तभी उसका पतन होता है।

द्वितीय रेखांकित अंश की व्याख्या—अपनी उन्नति चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह बात भली-भाँति समझ लेनी चाहिए कि उसकी उन्नति तब ही हो सकती है, जब वह अपने चरित्र को निर्मल और पवित्र बनाएगा, साथ ही अने भीतर सद्गुणों को प्रचुर मात्रा में विकसित करेगा। ऐसा करने में सफल होने वाले व्यक्ति की उन्नति सुनिश्चित होती है, उसे कोई नहीं रोक सकता—न निन्दा, न ईर्ष्या, न द्वेष।

(ग) आज तक ऐसा क्या नहीं हुआ?

उत्तर—आज तक ऐसा नहीं हुआ कि किसी व्यक्ति की निन्दा करके उसे उसके स्थान पर अथवा लोगों की आँख से गिरा दिया गया हो।

(घ) किसी व्यक्ति की उन्नति कब हो सकती है?

उत्तर—किसी व्यक्ति की उन्नति तभी हो सकती है, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा अपने भीतर सद्गुणों का विकास करे।

(ङ) संसार में किसी व्यक्ति के पतन का क्या कारण होता है?

उत्तर—संसार के किसी व्यक्ति के पतन का कारण उसके सद्गुणों का ह्रास होता है।

(5) ईर्ष्या का काम जलाना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत-से लोगों का जानते होंगे, जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फिक्र में लगे रहते हैं कि कहाँ सुनने वाला मिले और अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। मगर जरा उनके अपने इतिहास को देखिये और समझने की कोशिश कीजिए कि जब से

उन्होंने इस सुकर्म का आरम्भ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि वे निन्दा करने में समय व शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो इनका स्थान कहाँ होता?

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—लेखक का कथन है कि जिसके मन में ईर्ष्या का भाव उत्पन्न हो जाता है, सबसे पहले ईर्ष्या के कारण उसी की हानि होती है। ऐसे लोग अपने दु:ख को दूसरों को सुनाने में ही रसमग्न रहते हैं। ईर्ष्यालु व्यक्ति सर्वव्यापक होते हैं। आप संसार के किसी भी कोने में चले जाइए, आपकी ऐसे लोगों से भेंट अवश्य हो जाएगी। ईर्ष्यालुओं की इसी सर्वव्यापकता के कारण लेखक कहता है कि आप भी ऐसे लोगों को अवश्य जानते होंगे, जो ईर्ष्या की साकार मूर्ति हैं।

(ग) ईर्ष्या का क्या काम है?

उत्तर—ईर्ष्या का काम जलाना है।

(घ) ईर्ष्या सबसे पहले किसे जलाती है?

उत्तर—ईर्ष्या सबसे पहले उस व्यक्ति को जलाती है, जिसके हृदय में उसका जन्म होता है।

(6) ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष ही नहीं है, प्रत्युत इससे मनुष्य के आनन्द में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, सामने का सुख उसे मद्धिम-सा दीखने लगता है। पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो ऐसे हो जाते हैं, मानों वह देखने के योग्य ही न हों। आप कहेंगे कि निन्दा के बाण से अपने प्रतिद्वन्द्वियों को बेधकर हँसने में एक आनन्द है और यह आनन्द ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—उपर्युक्त गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक से लिया गया है, जिसका शीर्षक 'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से' है। इसके लेखक रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रथम रेखांकितश अंश की व्याख्या—ईर्ष्या के कारण उसकी विवेकशक्ति नष्ट हो जाती है। वह दूसरों के सुख को देखकर ही दु:खी होने लगता है। यहाँ तक कि वह प्राकृतिक सौन्दर्य से भी ईर्ष्या करने लगता है और वह उसके लिए व्यर्थ की वस्तु बन जाता है। पक्षियों के कलरव अथवा उनके मधुर स्वर में उसे कोई आकर्षण नजर नहीं आता। उसे सुन्दर, खिले हुए पुष्पों से भी ईर्ष्या होने लगती है और उसे उनमें भी किसी प्रकार के सौन्दर्य के दर्शन नहीं हो पाते।

द्वितीय रेखांकितश अंश की व्याख्या—

(ग) ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या है?

उत्तर—'आनन्द' ही ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

(7) ईर्ष्या का सम्बन्ध प्रतिद्वन्द्विता से होता है; क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है; क्योंकि प्रतिद्वन्द्विता से मनुष्य का विकास होता है, किन्तु अगर आप संसारव्यापी सुयश चाहते हैं तो आप रसेल के मतानुसार शायद नेपोलियन से स्पर्द्धा करेंगे, मगर याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर सिकन्दर से तथा सिकन्दर हरकुलिस से।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

***अथवा* उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर—पाठ का नाम—ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से,

पाठ के लेखक—रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—लेखक के अनुसार ईर्ष्या का सम्बन्ध प्रतिद्वन्द्विता से होता है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है। कोई अत्यधिक धनी व्यक्ति किसी कंगाल की ईर्ष्या का पात्र नहीं बनता। ईर्ष्या का मनोवैज्ञानिक कारण प्रतिद्वन्द्विता है और प्रतिद्वन्द्विता समकक्षों में ही उत्पन्न होती है। लेखक ने यहाँ यह भी स्पष्ट किया है कि यह बात ईर्ष्या के पक्ष में जाती है; क्योंकि प्रतिद्वन्द्विता या स्पर्द्धा से ही मनुष्य का विकास होता है।

(ग) ईर्ष्या का सम्बन्ध किससे और कैसे है?

उत्तर—ईर्ष्या का सम्बन्ध प्रतिद्वन्द्विता से होता है; क्योंकि एक भिखमंगा कभी भी करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता।

(घ) मनुष्य का विकास किससे होता है?

उत्तर—मनुष्य का विकास प्रतिद्वन्द्विता (स्पर्द्धा) से होता है।

(ङ) किस ग्रामोफोन की बात गद्यांश में की गयी है?

उत्तर—गद्यांश में व्यक्ति के 'मुख' को ग्रामोफोन कहा गया है।

(च) श्रोता मिलते ही क्या होता है?

उत्तर—श्रोता मिलते ही ईर्ष्यालु व्यक्ति का ग्रोमोफोन बजने लगता है और वह बड़ी होशियारी के साथ दूसरों की निन्दा का एक-एक काण्ड उस प्रकार सुनाता है, मानो उससे बड़ा विश्व-कल्याण को कोई काम ही न हो।

(8) ईर्ष्या का एक पक्ष सचमुच ही लाभदायक हो सकता है, जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वन्द्वी का समकक्ष बनाना चाहता है, किन्तु यह तभी सम्भव है, जबकि ईर्ष्या से जो प्रेरणा आती हो, वह रचनात्मक हो। अक्सर तो ऐसा ही होता है कि ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करता है कि कोई चीज है जो उसके भीतर नहीं है, कोई वस्तु है, जो दूसरों के पास है, किन्तु वह यह नहीं समझ पाता कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिये और गुस्से में आकर वह अपने किसी पड़ोसी मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जबकि ये लोग भी अपने आपसे शायद वैसे ही असन्तुष्ट हों।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—उपर्युक्त गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक से लिया गया है जिसका शीर्षक 'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से' है। इसके लेखक रामधारी सिंह 'दिनकर' है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—ईर्ष्या का भाव अनेक दृष्टियों से हानिकारक है, परन्तु इसका एक लाभदायक पहलू भी है। वह लाभदायक पहलू यह है कि प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक जाति अथवा प्रत्येक दल में अपने प्रतिद्वन्द्वी को देखकर यह विचार उत्पन्न होता है कि वह भी अपने प्रतिद्वन्द्वी के ही समान बने और उसे इसके लिए जो भी प्रयास अपेक्षित हो, उन प्रयासों की तरफ प्रवृत्त होना चाहिए, परन्तु यह तब तक सम्भव नहीं हो सकता, जब तक ईर्ष्या से प्राप्त होने वाली प्रेरणा ध्वंसात्मक होने के स्थान पर रचनात्मक हो।

(ग) ईर्ष्या का कौन-सा पक्ष लाभदायक हो सकता है?

उत्तर—ईर्ष्या का वह पक्ष लाभदायक हो सकता है, जो प्रत्येक व्यक्ति, जाति और दल को अपने प्रतिद्वन्द्वी के समकक्ष बनने की प्रेरणा देता हो।

(घ) ईर्ष्या से उत्पन्न प्रतिद्वन्द्विता कब लाभदायक होती है?

उत्तर—ईर्ष्या से उत्पन्न प्रतिद्वन्द्विता तब लाभदायक होती है, जब उससे मिलने वाली प्रेरणा रचनात्मक हो।

(ङ) ईर्ष्यालु व्यक्ति क्या महसूस करता है?

उत्तर—ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों को देखकर यह महूसस करता है कि कोई वस्तु है जो दूसरों के पास है, किन्तु उसके पास नहीं है। वह यह नहीं समझ पाता कि वह उस वस्तु को कैसे प्राप्त करे और क्रोध में आकर वह उन सम्पन्न लोगों को स्वयं से श्रेष्ठ मानकर उनसे ईर्ष्या करने लगता है।

(9) तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है? नीत्से कहता है कि, ''बाजार की मक्खियों को छोड़कर एकान्त की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान् है, उसकी रचना और निर्माण बाजार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नये मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।'' जहाँ बाजार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं, वहाँ एकान्त है।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—गद्यांश का पाठ—ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से,

पाठ के लेखक—रामधारी सिंह 'दिनकर'।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक के 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक रामधारी सिंह दिनकर हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—जो लोग सामज के निर्माण और उत्थान के लिए नए-नए मूल्यों का निर्माण करते हैं, नए-नए सिद्धान्तों की रचना करते हैं और मानव-जीवन को नवीन दिशा और चेतना प्रदान करते हैं, वे लोग भीड़-भरे बाजार में रहकर नहीं, बाजार से दूर एकान्त में अपना कार्य करते हैं। उनके मन में मानव-कल्याण की भावना होती है, यश की कामना या लोभ नहीं। अन्त में लेखक का मत है कि एकान्त वहीं है, जहाँ बाजारु मक्खियाँ नहीं भिनभिनाती हैं। तात्पर्य यह है कि जहाँ पर किसी के यश और वैभव को देखकर जलने वाले और निन्दा करने वाले लोग नहीं रहते, वहीं एकान्त है।

(ग) ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है?

उत्तर—ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय एकान्त है।

(घ) नीत्से ने बाजार की मक्खियाँ किसे कहा है?

उत्तर—नीत्से ने ईर्ष्यालु लोगों को बाजार की मक्खियाँ कहा है।

(ङ) नये मूल्यों का निर्माण करने वालों की क्या विशेषता होती है?

उत्तर—नए मूल्यों का निर्माण करने वाले बाजारों और शोहरत से दूर रहते हैं।

(10) ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिये। उसे यह भी पता लगाना चाहिये कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है। जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा आयेगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक के 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—लेखक का मत है कि यदि हम स्वयं को ईर्ष्या जैसे दुष्ट-भाव से मुक्त रखना चाहते हैं तो हमें अपने मन को नियन्त्रित करना होगा। यदि हम मन को नियन्त्रित कर लेंगे, अर्थात् उसे अनुशासन में रखेंगे तो वह इधर-उधर नहीं भागेगा, दूसरों के धन-वैभव और यश को देखकर दु:खी नहीं होगा और ईर्ष्या नहीं करेगा। जिस व्यक्ति का यह स्वभाव बन गया है कि वह दूसरे व्यक्ति को सुखी अथवा सम्पन्न देखकर ईर्ष्या करने लगता है, उसे चाहिए कि वह केवल अपने विषय में ही सोचे कि उसे किस वस्तु का अभाव है, जिसके कारण उसे दूसरों को देखकर ईर्ष्या हो रही है।

(ग) मानसिक अनुशासन क्या है?

***अथवा* ईर्ष्या से बचने के लिए क्या उपाय करना चाहिए?**

उत्तर—ईर्ष्या से बचने का उपाय ही मानसिक अनुशासन है।

(घ) ईर्ष्यालु को क्या पता लगाना चाहिए?

उत्तर—ईर्ष्यालु को यह पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित के सविग्रह समास नाम लिखिए—धनहीन, चौराहा, पाप-पुण्य, चक्रधर,प्रत्यक्ष।

उत्तर—

शब्द		**सविग्रह समास**	
धनहीन	—	धन से हीन	(अपादान तत्पुरुष)
चौराहा	—	चार राहों को समाहार	(द्विगु समास)
पाप-पुण्य	—	पाप और पुण्य	(द्वन्द्व समास)
चक्रधर	—	चक्र को धारण करता है जो अर्थात् विष्णु	(बहुब्रीहि सामास)
प्रत्यक्ष	—	अक्षि के प्रति	(अव्ययीभाव समास)

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए—मृदुभाषिणी, वरदान, हानि, सुकर्म, अपव्यय, उदय, सन्तुष्ट।

उत्तर—

शब्द		**विलोम शब्द**
मृदुभाषिणी	—	कटुभाषिणी
वरदान	—	अभिशाप
हानि	—	लाभ
सुकर्म	—	कुकर्म
अपव्यय	—	अल्पव्यय
उदय	—	अस्त
सन्तुष्ट	—	असंतुष्ट

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और मूलशब्दों को पृथक् करके लिखिए—

निमग्न, निर्मल, अत्यन्त, दरअसल, साकार, दुर्भावना, अनुशासन, अपव्यय, समकक्ष।

उत्तर—

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
निमग्न	नि	मग्न
निर्मल	निर्	मल
अत्यन्त	अति	अन्त
दरअसल	दर	असल
साकार	स	आकार
दुर्भावना	दुर्	भावना
अनुशासन	अनु	शासन
अपव्यय	अप	व्यय
समकक्ष	सम	कक्ष

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्द-युग्मों का इस प्रकार वाक्य-प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए—

ईर्ष्या-ईर्ष्यालु, उद्यम-उद्यमी, निन्दा-निन्दक, चरित्र-चारित्रिक, जिज्ञासा-जिज्ञासु, प्रतिद्वन्द्वी-प्रतिद्वन्द्विता।

उत्तर—ईर्ष्या-ईर्ष्यालु—ईर्ष्या, हमें दूसरे के प्रति सशंकित करती है और ईर्ष्यालु बनाती है।

उद्यम-उद्यमी—अच्छा उद्यम, उद्यमी को सफल बना देता है।

निन्दा-निन्दक—दूसरे की निन्दा नहीं करनी चाहिए बल्कि अपनी बुराई जानने के लिए हमेशा अपने पास निंदक रखना चाहिए।

चरित्र-चारित्रिक—समाज के चारित्रिक विकास के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने चरित्र को पवित्र बनाए रखना चाहिए।

जिज्ञासा-जिज्ञासु—अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए जिज्ञासु पता नहीं कहाँ-कहाँ मारा-मारा फिरता है।

प्रतिद्वन्द्वी-प्रतिद्वन्द्विता—स्वस्थ प्रतिद्वन्द्विता उसे ही कहा जा सकता है, जिसमें प्रतिद्वन्द्वी एक-दूसरे से ईर्ष्या न करते हों।

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाकर लिखिए—

आलु, दायक, इक, आत्मक, कार, ता, दार।

उत्तर—

प्रत्यय		बने हुए शब्द
आलु	—	ईर्ष्यालु, दयालु
दायक	—	आनन्द दायक, फलदायक
इक	—	आत्मिक, वैयक्तिक
आत्मक	—	पवित्रात्मक, देशात्मक
कार	—	प्रतिकार, अहंकार
ता	—	एकता, अनेकता
दार	—	मालदार, हवलदार

❑

6

अजन्ता

(डॉ० भगवतशरण उपाध्याय)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भगवतशरण उपाध्याय किस प्रकार के साहित्य के लिए प्रसिद्ध हैं?

उत्तर—भगवतशरण उपाध्याय सशक्त शैलीकार, समर्थ आलोचक और पुरातत्त्व आचार्य के रूप में हिन्दी-साहित्य में प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न 2. डॉ० भगवतशरण उपाध्याय का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर—डॉ० भगवतशरण उपाध्याय का जन्म वर्ष 1910 में बलिया जिले के उजियारीपुर गाँव में हुआ था।

प्रश्न 3. भगवतशरण उपाध्याय की मृत्यु किस वर्ष में हुई?

उत्तर—भगवतशरण उपाध्याय की मृत्यु अगस्त वर्ष 1982 में हुई।

प्रश्न 4. भगवतशरण उपाध्याय की दो आलोचनात्मक रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—भगवतशरण उपाध्याय की दो आलोचनाओं के नाम हैं—
(1) विश्व साहित्य की रूपरेखा (2) मन्दिर और भवन।

प्रश्न 5. उपाध्याय जी की भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—उपाध्याय जी ने निबन्धों में विवेचनात्मक शैली, यात्रा-साहित्य में वर्णनात्मक शैली एवं भावात्मक शैली का प्रयोग किया है। उनकी शैली की विशेषताएँ—सरलता, सहजता, भाव का निरूपण, उत्कृष्टता, सजीवता इत्यादि हैं।

प्रश्न 6. 'विश्व को एशिया की देन' किसकी रचना है?

उत्तर—'विश्व को एशिया की देन' डॉ० भगवतशरण उपाध्याय की रचना है।

प्रश्न 7. यात्रा-साहित्य से सम्बन्धित भगवतशरण उपाध्याय की एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—यात्रा-साहित्य से सम्बन्धित भगवतशरण उपाध्याय की रचना 'कलकत्ता से पीकिंग' है।

प्रश्न 8. 'मन्दिर और भवन' की साहित्यिक विधा का नाम लिखिए।

उत्तर—'मन्दिर और भवन' डॉ० भगवतशरण उपाध्याय द्वारा रचित आलोचना विधा की एक रचना है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भगवतशरण उपाध्याय के जीवन-चरित्र एवं साहित्यिक रेखांकित कीजिए।

***या* भगवतशरण उपाध्याय के जीवन-परिचय एवं साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर—संस्कृत-साहित्य तथा पुरातत्त्व के समर्थ अध्येता एवं हिन्दी-साहित्य के प्रसिद्ध उन्नायक भगवतशरण उपाध्याय अपने मौलिक और स्वतन्त्र विचारों के लिए प्रसिद्ध हैं। ये प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के प्रमुख अध्येता और व्याख्याकार होते हुए भी रूढ़िवादिता एवं परम्परावादिता से ऊपर रहे हैं।

जीवन-परिचय—भगवतशरण उपाध्याय का जन्म **सन् 1910 ई०** में बलिया (उत्तर प्रदेश) जिले के 'उजियारपुर' नामक ग्राम में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम में हुई। उच्च शिक्षा-प्राप्ति के लिए ये बनारस आये और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राचीन इतिहास में एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। ये संस्कृत-साहित्य और पुरातत्त्व के अध्येता तथा हिन्दी-साहित्य के उन्नायक रहे हैं। ये प्रयाग एवं लखनऊ संग्रहालयों के पुरातत्त्व विभाग के अध्यक्ष भी रहे हैं। इन्होंने पिलानी स्थित बिड़ला महाविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर भी कार्य किया। तत्पश्चात् विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्राचीन इतिहास विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य करके अवकाश ग्रहण किया और देहरादून में स्थायी रूप से निवास करते हुए साहित्य-सेवा में जुट गये। **अगस्त, सन् 1982 ई०** में इस मनीषी साहित्यकार ने इस असार संसार से विदा ले ली।

रचनाएँ—उपाध्याय जी ने हिन्दी में तो विपुल साहित्य की रचना की ही है, किन्तु अंग्रेजी में भी इनकी कुछ एक प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनकी उल्लेखनीय रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) **पुरातत्त्व**—'मन्दिर और भवन', 'भारतीय मूर्तिकला की कहानी', 'भारतीय चित्रकला की कहानी', 'कालिदास का भारत'। इन पुस्तकों में प्राचीन भारतीय संस्कृति, साहित्य और कला का सूक्ष्म वर्णन हुआ है।

(2) **इतिहास**—'खून के छींटें', 'इतिहास साक्षी है', 'इतिहास के पन्नों पर', 'प्राचीन भारत का इतिहास', 'साम्राज्यों के उत्थान-पतन' आदि। इन पुस्तकों में प्राचीन इतिहास को साहित्यिक सरसता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

(3) **आलोचना**—'विश्व साहित्य की रूपरेखा', 'साहित्य और कला', 'कालिदास' आदि। इन ग्रन्थों में साहित्य के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

(4) **यात्रा-वृत्तान्त**—'कलकत्ता से पीकिंग', 'सागर की लहरों पर', 'मैंने देखा लाल चीन' आदि। इनमें इनकी विदेश-यात्राओं का सजीव विवरण है।

(5) **संस्मरण और रेखाचित्र**—'मैंने देखा', 'ठूँठा आम'। इनमें स्मृति के साथ-साथ संवेदना के रंगों से भरे सजीव शब्द-चित्र उभारे गये हैं।

(6) **अंग्रेजी ग्रन्थ**—'इण्डिया इन कालिदास', 'वीमेन इन ऋग्वेद' तथा 'एंशियेण्ट इण्डिया'।

साहित्य में स्थान—उपाध्याय जी पुरातत्त्व और संस्कृति के महान् विद्वान् हैं। उन्होंने अपने गम्भीर और सूक्ष्म अध्ययन को अपनी रचनाओं में साकार रूप प्रदान किया है। वे हिन्दी के पुरातत्त्वविद्, भारतीय संस्कृति के अध्येता, रेखाचित्रकार और महान् शैलीकार थे। विदेशों में दिए गये उनके व्याख्यान हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। इन्होंने सौ से भी अधिक पुस्तकें लिखकर हिन्दी-साहित्य में अपना उल्लेखनीय स्थान बनाया है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(1) जिन्दगी को मौत के पंजों से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए आदमी ने पहाड़ काटा है। किस तरह इन्सान की खूबियों की कहानी सदियों बाद आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचायी जाए, इसके लिए आदमी ने कितने ही उपाय सोचे और किए। उसने चट्टानों पर अपने सन्देश खोदे, ताड़ों से ऊँचे, धातुओं से चिकने पत्थर के खम्भे खड़े किए, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के मोती बिखेरे और उसके जीवन-मरण की कहानी सदियों के उतार पर सरकती चली आयी, चली आ रही है, जो आज हमारी अमानत-विरासत बन गयी है।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
***अथवा* उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर—गद्यांश का पाठ—अजन्ता।

पाठ के लेखक—डॉ० भगवतशरण उपाध्याय।

संदर्भ— उपर्युक्त गद्यांश, हिन्दी की हमारी पाठ्यपुस्तक से लिया गया है। यह गद्यांश 'अजन्ता' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—अपने जीवन को मृत्यु के चंगुल से स्वतन्त्र करके उसे अमर बना देने की कामना मनुष्य अनादिकाल से करता चला आ रहा है। वह केवल कामना ही करता नहीं आ रहा, वरन् इसके लिए निरन्तर अथक प्रयास भी करता रहा है। वह अपने शरीर को तो अमर न बना सका, किन्तु अपने जीवन के अविस्मरणीय पलों को अमर बनाने में अवश्य सफल रहा है। इसके लिए उसने पर्वत की गुफाओं को काटकर अपने जीवन के उन पलों को उनमें उकेरकर उन्हें सदैव के लिए अमर कर दिया। इसके अतिरिक्त भी मनुष्य ने अपनी विशेषताओं की कहानी से सदियों बाद आने वाली पीढ़ियों का परिचय कराने के लिए अनेक उपाय सोचे और उनको मूर्त रूप भी प्रदान किया।

(ग) आदमी ने पहाड़ क्यों काटा?

उत्तर—आदमी ने जिन्दगी को मौत के पंजों से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए पहाड़ काटा।

(घ) इंसान की खूबियों की कहानी को सदियों बाद आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए आदमी ने कौन-कौन से उपाय किए?

उत्तर—इंसान की खूबियों की कहानी सदियों बाद आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए आदमी ने चट्टानों पर अपने सन्देश खोदे, ताड़ों से ऊँचे, धातुओं से चिकने पत्थर के खम्भे खड़े किए; ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के मोती बिखेरे।

(ङ) क्या चीज आज हमारी विरासत बन गयी है?

उत्तर—सदियों पहले आदमी द्वारा चट्टानों पर खोदे गए सन्देश, ताड़ों से ऊँचे और धातुओं से चिकने खड़े किए चिकने पत्थर के खम्भे, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के बिखेरे गए मोती आज विरासत बन गए हैं।

(च) लेखक की दृष्टि में अजन्ता की गुफाओं के निर्माण का क्या उद्देश्य रहा है?

उत्तर—लेखक की दृष्टि में अजन्ता की गुफाओं के निर्माण का उद्देश्य यह है कि सैकड़ों-हजारों वर्षों के बाद आने वाली पीढ़ियाँ भी अपने पूर्वजों की विशेषताओं और अपने देश के इतिहास से परिचित हो सकें।

(2) जैसे संगसाजों ने उन गुफाओं पर रौनक बरसाई है, चितेरे जैसे रंग और रेखा में दर्द और दया की कहानी लिखते गए हैं, कलावन्त छेनी से मूरतें उभारते-कोरते गए हैं, वैसे ही अजन्ता पर कुदरत का नूर बरस पड़ा है, प्रकृति भी वहाँ थिरक उठी है। बम्बई के सूबे में बम्बई और हैदराबाद के बीच, विन्ध्याचल के पूरब-पश्चिम दौड़ती पर्वतमालाओं से निचौंधे पहाड़ों का एक सिलसिला उत्तर से दक्खिन चला गया है, जिसे सह्याद्रि कहते हैं।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—उपर्युक्त गद्यांश, हिन्दी की हमारी पाठ्यपुस्तक से लिया गया है। यह गद्यांश 'अजन्ता' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—रेखांकित अंश की व्याख्या—अजन्ता की गुफाओं को देखकर ऐसा लगता है जैसे पत्थर को सजीव बनाने वाले कलाकरों ने यहाँ सौन्दर्य की वर्षा कर दी हो। पत्थर को तराशने वाले कलाकरों ने अपनी छेनी और हथौडी से पत्थर में प्राण फूँख दिए हैं, पत्थरों को सजीव बना दिया है। चित्रकारों ने अपनी तूलिका के रंगों से सारी पीड़ा ओर दया के भाव को साकार करने वाले चित्र अंकित कर दिए है। मानव की कला यहाँ सजीव हो उठी है। इस सजीव कला में प्रकृति ने अपना भरपूर योग दिया है, जिससे अजन्ता के दृश्य बहुत ही मनोरम प्रतीत होते हैं। यहाँ ऐसा लगता है जैसे प्रकृति उल्लसित हो नृष्य कर रही हो।

(ग) अजन्ता की मूर्तिकला की कौन-सी विशेषाताएँ इस गद्यांश में बताई गई हैं?

उत्तर—अजन्ता की मूर्तिकला की जो विशेषताएँ यहाँ बताई गई हैं, उनमें मुख्य विशेषताएँ हैं कि अजन्ता की मूर्तिकला भावपूर्ण है, उसमें दया और पीड़ा स्पष्ट झलकती है। प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से यहाँ की मूर्तिकला उच्चकोटि की है। लगता है ईश्वर ने उन पर सौन्दर्य की वर्षा की है।

(3) पहले पहाड़ काटकर उसे खोखला कर दिया गया, फिर उसमें सुन्दर भवन बना लिये गये, जहाँ खम्भों पर उभारी मूरतें विहँस उठीं। भीतर की समूची दीवारें और छतें रगड़कर चिकनी कर ली गयीं और तब उनकी जमीन पर चित्रों की एक दुनिया ही बसा दी गयी। पहले पलस्तर लगाकर आचार्यों ने उन पर लहराती रेखाओं में चित्रों की काया सिरज दी, फिर उनके चेले कलावन्तों ने उनमें रंग भरकर प्राण फूँक दिए। फिर तो दीवारें उमग उठीं, पहाड़ पुलकित हो उठे।

***अथवा* पहले पहाड़ ..... प्राण फूँक दिए।**

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—उपर्युक्त गद्यांश, हिन्दी की हमारी पाठ्यपुस्तक से लिया गया है। यह गद्यांश 'अजन्ता' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रथम रेखांकित अंश की व्याख्या—प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कहते हैं कि सर्वप्रथम गुफाओं के अन्दर की दीवारों और छतों कों रगड़-रगड़कर अत्यधिक चिकना बना लिया गया। तत्पश्चात् उस चिकनी पृष्ठभूमि पर चित्रकारों के द्वारा अनेकानेक चित्र बना दिए गए, जिसको देखकर ऐसा लगता है कि चित्रों की एक नयी दुनिया ही निर्मित कर दी गयी हो।

द्वितीय रेखांकित अंश की व्याख्या—प्रस्तुत गद्यांश में लेखक का कहना है कि गुफा की भीतरी दीवारों पर चित्रकारों के द्वारा विभिन्न चित्रों को बाहरी रेखाओं के द्वारा प्रदर्शित किया गया और उसके बाद उनके शिष्यों ने उन चित्रों को रँगकर ऐसा बना दिया कि वे सजीव लगने लगे।

(ग) 'प्राण फूँक दिए' मुहावरे का अर्थ लिखिए।

उत्तर—सजीव लगना

(घ) पहाड़ों को किस प्रकार जीवन्त बनाया गया? गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—पहाड़ों को काटकर भवन का रूप दिया गया। दीवारों, छतों और खम्भों को चिकना कर उन पर सजीव चित्र निर्मित किए गए। चित्रों में रंग भी भरा गया। इस प्रकार पहाड़ों को जीवन्त बना दिया गया।

(4) कितना जीवन बरस पड़ा है इन दीवारों पर; जैसे फसाने-अजायब का भण्डार खुल पड़ा हो। कहानी-से-कहानी टकराती चली गयी है। बन्दरों की कहानी, हाथियों की कहानी, हिरनों की कहानी। कहानी क्रूरता और भय की, दया और त्याग की। जहाँ बेरहमी है वहीं दया का भी समुद्र उमड़ पड़ा है, जहाँ पाप है वहीं क्षमा का सोता फूट पड़ा है। राजा और कँगले, विलासी और भिक्षु, नर और नारी, मनुष्य और पशु सभी कलाकारों के हाथों सिरजते चले गये हैं। हैवान की हैवानी को इंसान की इंसानियत से कैसे जीता जा सकता है, कोई अजन्ता में जाकर देखे।

***अथवा* कितना जीवन बरस.....सिरजते चले गए हैं।**

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—उपर्युक्त गद्यांश, हिन्दी की हमारी पाठ्यपुस्तक से लिया गया है। यह गद्यांश 'अजन्ता' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने अजन्ता की गुफाओं में निर्मित चित्रों का भावात्मक वर्णन किया है। लेखक कहता है कि इन चित्रों की कलात्मक अभिव्यक्ति इतनी सजीव है, मानो वे मूर्ति न होकर जीत-जागते प्राणी हैं। उनमें संसार का जीवन बरस पड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो वे सांसारिक जीवन के विभिन्न पक्षों का अजायबघर हों और उसका दरवाजा खुला छोड़ दिया गया हो। उन चित्रों में बन्दरों, हाथियों और हिरनों आदि जीवों की अनेक कहानियाँ जीवन्त हैं।

द्वितीय रेखांक्ति अंश की व्याख्या—उन कहानियों में दया और त्याग की, क्रूरता तथा दया की, पाप और क्षमा की कहानियाँ हैं। इन कहानियों में परस्पर विरोधी भावों का अंकन सर्वत्र देखने को मिलता है। उनमें यदि कहीं क्रूरता का चित्र है तो वहीं दूसरे चित्र में दया का समुद्र उमड़ता दिखता है। वहाँ यदि पाप का चित्रण है तो समीप ही क्षमा का झरना भी कल-कल करता चित्रित है। राजाओं और कंगालों, विलासियों एवं भिक्षुओं, नर-नारियों, पशु एवं मनुष्यों के सजीव व्यक्तित्व कलाकार की सृजनात्मक अभिव्यक्ति में ढलते चले गए हैं। लेखक के अनुसार, ये चित्र निरुद्देश्य नहीं हैं। ये चित्र और मूर्तियाँ हमें सिखाती हैं कि हैवान की हैवानियत को इंसान की इंसानियत के किस प्रकार सरलता से जीता जा सकता है। ऐसी सीख अजन्ता की गुफाओं के अतिरिक्त और कहीं नहीं मिलती।

(ग) दीवारों पर बने चित्र किन-किन से सम्बन्धित हैं?

उत्तर—अजन्ता की दीवारों पर बंदर, हाथी, हिरनों, पशु-पक्षियों आदि के चित्र बने हैं।

(घ) 'जीवन बरस पड़ा है' मुहावरे का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'जीवन बरस पड़ा है' मुहावरे का अर्थ है—अजन्ता के चित्रों में जीवन की झाँकियाँ जीवन्त हो उठी हैं।

(ङ) अजन्ता की गुफाओं के चित्रों की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—अजन्ता की गुफाओं के चित्रों के विषय पशु-पक्षी, राजा-रंक, विलासी-भिक्षु, नर-नारी आदि हैं, जिनके माध्यम से दया, क्रूरता, भय, पाप, क्षमा आदि मनोभावों को चित्रित किया गया है। यही इसकी विशेषताएँ हैं।

(च) अजन्ता के चित्रों का सन्देश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—अजन्ता के चित्र हमें सन्देश देते हैं कि हैवान की हैवानियत को इंसान की इंसानियत से किस प्रकार जीता जा सकता है।

(5) और उधर वह बन्दरों का चित्र है, कितना सजीव-कितना गतिमान्। उधर सरोवर में जल विहार करता वह गजराज कमल-दण्ड

तोड़-तोड़कर हथिनियों को दे रहा है। वहाँ महलों में वह प्यालों के दौर चल रहे हैं, उधर वह रानी अपनी जीवन-यात्रा समाप्त कर रही है, उसका दम टूटा जा रहा है। खाने-खिलाने, बसने-बसाने, नाचने-गाने, कहने-सुनने, वन-नगर, ऊँच-नीच, धनी-गरीब के जितने नजारे हो सकते हैं सब आदमी अजन्ता की गुफाओं की इन दीवारों पर देख सकता है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—उपर्युक्त गद्यांश, हिन्दी की हमारी पाठ्यपुस्तक से लिया गया है। यह गद्यांश 'अजन्ता' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—प्रस्तुत गद्यांश में लेखक अजन्ता की गुफाओं में चित्रित चित्रों का वर्णन करते हुए लिख रहे हैं कि गुफा में एक ओर सरोवर में जल-क्रीड़ा करते हुए गजराज और हथिनियों को चित्रित किया गया है, जिसमें वह सरोवर में उगे हुए कमल-नाल को तोड़कर साथ में क्रीड़ा करने वाली हथिनियों को दे रहा है तो दूसरे चित्र में महलों में मनाये जाने वाले किसी उत्सव का चित्रण है।

(ग) आदमी अजन्ता की गुफाओं की दीवारों पर क्या देख सकता है?

उत्तर—व्यक्ति अजन्ता की गुफा की दीवारों पर खाने-खिलाने, बसने-बसाने, नाचने-गाने, कहने-सुनने, वन-नगर, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब से सम्बन्धित जितने भी सम्भव दृश्य हो सकते हैं, उन सभी को देख सकता है।

(घ) अजन्ता के चित्रों की किस मुख्य विशेषता का वर्णन गद्यांश में हुआ है?

उत्तर—अजन्ता के चित्रों की निम्न विशेषताएँ हैं—(1) सजीवता (2) पशु-पक्षियों का चित्रांकन (3) प्रकृति का चित्रण इत्यादि।

(6) इन पिछले जन्मों में बुद्ध ने गज, कपि, मृग आदि के रूप में विविध योनियों में जन्म लिया था और संसार के कल्याण के लिए दया और त्याग का आदर्श स्थापित करते वे बलिदान हो गये थे। उन स्थितियों में किस प्रकार पशुओं तक ने मानवोचित व्यवहार किया था, किस प्रकार औचित्य का पालन किया था, यह सब उन चित्रों में असाधारण खूबी से दर्शाया गया है। और उन्हीं को दर्शाते समय चितेरों ने अपनी जानकारी की गाँठ खोल दी है, जिससे नगरों और गाँवों, महलों और झोंपड़ियों, समुद्रों और पनघटों का संसार अजन्ता के उस पहाड़ी जंगल में उतर पड़ा है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—उपर्युक्त गद्यांश, हिन्दी की हमारी पाठ्यपुस्तक से लिया गया है। यह गद्यांश 'अजन्ता' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—प्रस्तु गद्यांश में लेखक ने अजन्ता की गुफाओं में चित्रित चित्रों का वर्णन किया है। बुद्ध के अनेक योनियों में जन्म लेने की कथा 'जातक' नामक ग्रन्थ में वर्णित है। वे लिखते हैं कि जब बुद्ध का जन्म विविध जानवरों की योनियों में हुआ था, उस समय विद्यमान अन्य जानवरों ने भी ऐसा व्यवहार किया था, जो कि मनुष्यों के लिए उचित हो। उन सभी ने किस प्रकार औचित्य अथवा उपयुक्तता का निर्वाह किया था यह सब कुछ अजन्ता के चित्रों में अत्यधिक खूबी के साथ चित्रित किया गया है। आशय है कि बुद्ध के पूर्वजन्मों के समस्त विवरणों का विशेष चित्रांकन किया गया है।

(ग) अपनी जानकारी की गाँठ खोलने का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अपनी जानकारी की गाँठ खोलने का आशय यह है कि अपने ज्ञान को विस्तार से प्रकट कर देना।

(7) अजन्ता संसार की चित्रकलाओं में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इतने प्राचीन काल के इतने सजीव, इतने गतिमान्, इतने बहुसंख्यक कथा-प्राण चित्र कहीं नहीं बने। अजन्ता के चित्रों ने देश-विदेश; सर्वत्र की चित्रकला को प्रभावित किया। उसका प्रभाव पूर्व के देशों की कला पर तो पड़ा ही, मध्य-पश्चिम एशिया भी उसके कल्याणकर प्रभाव से वंचित न रह सका।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—उपर्युक्त गद्यांश, हिन्दी की हमारी पाठ्यपुस्तक से लिया गया है। यह गद्यांश 'अजन्ता' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रथम रेखांकित अंश की व्याख्या—लेखक का कथन है कि अजन्ता की चित्रकला अद्भुत और बेजोड़ है। संसार में उसका उपमान नहीं है। निस्सन्देह, विश्व मे चित्रकला का यह सर्वोत्कृष्ट नमूना है। दुनिया मे कोई दूसरा ऐसा स्थान नहीं, जहाँ इतने प्राचीन और इतने सजीव चित्र पाए जाते हों। ऐसी कोई चित्रशाला नहीं, जहाँ ऐसे गतिशील तथा इतनी बड़ी संख्या में चित्र मिलते हों, जिसमें कथाओं को चित्रित कर दिया गया हो। ऐसे स्थान समस्त संसार में दुर्लभ हैं। इसीलिए देश और विदेश की चित्रकलाओं पर अजन्ता की चित्रकला का विशेष प्रभाव पड़ा है।

द्वितीय रेखांकित अंश की व्याख्या—प्रस्तुत गद्यांश में लेखक का कहना है कि अजन्ता की चित्रकला का विशेष प्रभाव अपने देश पर ही नहीं विदेश की चित्रकलाओं पर भी पड़ा है। चीन, जापान, इण्डोनेशिया आदि पूर्व के देशों में इसके जैसे प्रयोग स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं। साथ ही ईरान, मिस्र आदि मध्य-पश्चिमी एशिया के देशों की चित्रकला भी इसके प्रभाव से अपने को मुक्त नहीं कर सकी है।

(ग) अजन्ता की चित्रकला का बाहर के देशों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—अजन्ता की कला का प्रभाव चीन, जापान, इण्डोनेशिया आदि पूर्व के देशों के साथ-साथ ईरान, मिस्र आदि मध्य-पश्चिमी एशिया के देशों की चित्रकला पर भी पर्याप्त रूप से पड़ा।

(घ) संसार की चित्रकलाओं में अजन्ता का क्या स्थान है?

उत्तर—संसार की चित्रकलाओं में अजन्ता की चित्रकला अपना अद्वितीय स्थान रखती है।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और मूलशब्दों को पृथक् करके लिखिए—अभिराम, निहाल, सनाथ, विहँस, सन्देश, बेरहमी, अद्वितीय, प्रसिद्ध, असाधारण।

उत्तर—

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अभिराम	अभि	राम
निहाल	नि	हाल
सनाथ	स	नाथ
विहँस	वि	हँस

सन्देश	सम्	देश
बेरहमी	बे	रहमी
अद्वितीय	अ	द्वितीय
प्रसिद्ध	प्र	सिद्ध
असाधारण	अ	साधारण

प्रश्न 2. निम्नलिखित उपसर्गों से तीन-तीन शब्दों की रचना कीजिए—अ, परि, वि, सु, उप, अति।

उत्तर—

उपसर्ग		बने हुए शब्द (तीन-तीन)
अ	—	अविश्वास, असुविधा, अहिंसा
परि	—	परिणाम, परिपूर्ण, परिजन
वि	—	वियोग, विज्ञान, विषाद्
सु	—	सुकर्म, सुधार, सुमार्ग
उप	—	उपवन, उपकार, उपनाम
अति	—	अतिक्रमण, अत्याचार, अतिरिक्त

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्द-युग्मों में दिए शब्दों का अन्तर स्पष्ट कीजिए—सुरक्षा-सुरक्षित, कल्याण-कल्याणकर, कला-कलावन्त, इंसान-इंसानियत, हैवान-हैवानी।

उत्तर—सुरक्षा-सुरक्षित—कड़ी सुरक्षा के बाद भी मन्त्री जी सुरक्षित नहीं रह सके।

कल्याण-कल्याणकार—समाज का कल्याण, कल्याणकारी योजनाएँ बनाकर किया जा सकता है।

कला-कलावन्त—कला की उपासना को कलावन्त अपना धर्म मानते हैं।

इंसान-इंसानियत—इंसान को कभी भी इंसानियत नहीं छोड़नी चाहिए।

हैवान-हैवानी—हैवान की हैवानी के सम्मुख सभी विवश हो जाते हैं। ❑

7 पानी में चन्दा और चाँद पर आदमी

(जयप्रकाश भारती)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जयप्रकाश भारती का जन्म कब व कहाँ हुआ?

उत्तर—जयप्रकाश भारती का जन्म वर्ष 1936 में मेरठ, उत्तर प्रदेश में हुआ था।

प्रश्न 2. जयप्रकाश भारती की दो रचनाओं के नाम बताइए।

उत्तर—जयप्रकाश भारती की दो रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) हिमालय की पुकार (2) अथाह सागर।

प्रश्न 3. बाल पत्रिका 'नन्दन' के सम्पादक का नाम बताइए।

उत्तर—बाल पत्रिका 'नन्दन' के सम्पादक जयप्रकाश भारती थे।

प्रश्न 4. 'चलो चाँद पर चलें' के रचयिता कौन हैं?

उत्तर—'चलो चाँद पर चलें' के रचयिता जयप्रकाश भारती जी हैं।

प्रश्न 5. नील आर्मस्ट्रांग ने चन्द्रतल से पृथ्वी का वर्णन करते हुए क्या कहा?

उत्तर—नील आर्मस्ट्रांग ने चन्द्रतल से पृथ्वी का वर्णन करते हुए कहा कि यह बहुत बड़ी, चमकीली और सुन्दर (बिग, ब्राइट एण्ड ब्यूटीफुल) दिखाई देती है।

प्रश्न 6. कवियों की कल्पना के सलोने चाँद को वैज्ञानिकों ने क्या कहा?

उत्तर—कवियों की कल्पना के सलोने चाँद को वैज्ञानिकों ने बदसूरत और जीवनहीन करार दिया।

प्रश्न 7. अन्तरिक्ष युग का सूत्रपात कब माना जाता है?

उत्तर—अन्तरिक्ष युग का सूत्रपात 4 अक्टूबर, 1957 को हुआ, जब सोवियत रूस ने अपना पहला 'स्पुतनिक' जहाज छोड़ा।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'भारती' जी का जीवन-परिचय एवं भाषा-शैली स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—पत्रकार एवं हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री जयप्रकाश भारती ने साहित्यिक शैली में वैज्ञानिक लेख लिखने और साक्षरता प्रसार के कार्य में विशेष ख्याति प्राप्त की है। ये सफल निबन्धकार, कहानीकार एवं रिपोर्ताज लेखक हैं। गम्भीर विषय को भी रुचिकर और बोधगम्य बनाकर प्रस्तुत करने में आप सिद्धहस्त हैं।

जीवन-परिचय—श्री जयप्रकाश भारती का जन्म **मेरठ नगर** के मध्यमवर्गीय प्रतिष्ठित परिवार में **2 जनवरी, सन् 1936 ई०** को हुआ था। इनके पिता श्री रघुनाथ सहाय मेरठ के प्रसिद्ध वकील, पुराने कांग्रेसी और समाज-सेवी व्यक्ति थे। इन्होंने मेरठ में अध्ययन कर बी० एस-सी० की परीक्षा उत्तीर्ण की और छात्र-जीवन से ही समाज-सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि के रूप में समाज-सेवा की। मेरठ में साक्षरता-प्रसार के लिए इन्होंने कई वर्षों तक प्रौढ़ रात्रि-पाठशाला का नि:शुल्क संचालन कर उल्लेखनीय कार्य किया। इन्होंने 'सम्पादन कला-विशारद' की परीक्षा उत्तीर्ण करके मेरठ से प्रकाशित होने वाले 'दैनिक प्रभात' और दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'नवभारत टाइम्स' में व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा 'साक्षरता-निकेतन' लखनऊ में नवसाक्षर साहित्य के लेखन का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्होंने कई वर्षों तक दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में सह-सम्पादक के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् दिल्ली में हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा संचालित सुप्रसिद्ध बाल पत्रिका 'नन्दन' के सम्पादक के रूप में कार्य करते रहे। **दिनांक 5 फरवरी, 2005** को श्री भारती जी का देहावसान हो गया।

रचनाएँ—भारती जी की अनेक मौलिक एवं लगभग सौ सम्पादित पुस्तकें हैं। इनकी उल्लेखनीय रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) **मौलिक रचनाएँ**—'हिमालय की पुकार', 'अनन्त आकाश : अथाह सागर' (ये दोनों पुस्तकें यूनेस्को द्वारा पुरस्कृत हैं); 'विज्ञान की विभूतियाँ', 'देश हमारा', 'चलो चाँद पर चलें' (ये तीनों पुस्तकें भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं), 'सरदार भगत सिंह', 'हमारे गौरव के

प्रतीक', 'अस्त्र-शस्त्र', 'आदिम युग से अणु युग तक', 'उनका बचपन यूँ बीता', 'ऐसे थे हमारे बापू', 'लोकमान्य तिलक', 'बर्फ की गुड़िया', 'संयुक्त राष्ट्र संघ', 'भारत का संविधान', 'दुनिया रंग-बिरंगी' आदि।

(2) **सम्पादित रचनाएँ**—'भारत की प्रतिनिधि लोककथाएँ तथा किरणमाला' (तीन भागों में) आदि।

(3) **सम्पादन-कार्य**—'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में सह-सम्पादक एवं 'नंदन' (बाल-पत्रिका) के सम्पादक।

साहित्य में स्थान—बालोपयोगी साहित्य के प्रणयन, वैज्ञानिक लेखों के साहित्यिक शैली में प्रस्तुतीकरण एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में जयप्रकाश भारती का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने साहित्य में वैज्ञानिक लेखन के अभाव की पूर्ति कर हिन्दी-साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(1) दुनिया के सभी भागों में स्त्री-पुरुष और बच्चे रेडियो से कान सटाए बैठे थे, जिनके पास टेलीविजन थे, वे उसके पर्दे पर आँखें गड़ाए थे। मानवता के सम्पूर्ण इतिहास की सर्वाधिक रोमांचक घटना के एक-एक क्षण के वे भागीदार बन रहे थे-उत्सुकता और कुतूहल के कारण अपने अस्तित्व से बिल्कुल बेखबर हो गए थे।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के 'पानी में चन्दा और चाँद पर आदमी' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक 'जयप्रकाश भारती' हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—21 जुलाई, 1869 को अमेरिका के केप केनेडी अन्तरिक्ष-स्टेशन से 16 जुलाई, 1969 को प्रक्षेपित अपोलो-11 को चन्द्रमा के धरात पर उतरना था। इस दिन सारी दुनिया के लोग रेडियो और टेलीविजन के सामने बैठे इस रोमोचकारी घटना के एक-एक क्षण के भागीदार बन रहे थे, जो मानव जाति के इतिहास की सर्वाधिक रोमांचक घटना थी; अर्थात् मानव का चन्द्रमा के धरातल पर पहली बार पहुँचना। चन्द्रमा के धरातल पर अपोलो-11 के उतरने के समाचार की प्रतीक्षा में सारे संसार के लोग उत्सकुता और आश्चर्ययुक्त जिज्ञसा के फलस्वरूप इतने तल्लीन थे कि उन्हें अपने अस्तित्व का लेशमात्र भी बोध नहीं था।

(ग) रोमांचक घटना के भागीदार कौन बन रहे थे?

उत्तर—दुनिया के सभी भागों के स्त्री-पुरुष और बच्चे इस रोमांचक घटना के भागीदार बन रहे थे।

(2) मानव को चन्द्रमा पर उतारने का यह सर्वप्रथम प्रयास होते हुए भी असाधारण रूप से सफल रहा, यद्यपि हर क्षण, हर पग पर खतरे थे। चन्द्रतल पर मानव के पाँव के निशान, उसके द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में की गयी असाधारण प्रगति के प्रतीक हैं। जिस क्षण डगमग-डगमग करते मानव के पग उस धूलि-धूसरित अनछुई सतह पर पड़े तो मानो वह हजारों-लाखों साल से पालित-पोषित सैकड़ों अन्धविश्वासों तथा कपोल-कल्पनाओं पर पद-प्रहार ही हुआ। कवियों की कल्पना के सलोने चाँद को वैज्ञानिकों ने बदसूरत और जीवनहीन करार दे दिया-भला अब चन्द्रमुखी कहलाना किसे रुचिकर लगेगा। (2013)

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए। (2013)

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के 'पानी में चन्दा और चाँद पर आदमी' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक 'जयप्रकाश भारती' हैं।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—जब से मानव ने चाँद को देखा है, वह उसके बारे में तरह-तरह की कल्पनाएँ अपने मन में सँजोता है। यह बात अब की नहीं, हजारों-लाखों वर्ष पुरानी है। इतनी पुरानी, जितना कि स्वयं मानव है। पृथ्वी पर रहने वाली अनेक मानव-जातियाँ प्राचीन काल से अब तक चन्द्रमा को लेकर तरह-तरह के अन्धविश्वास पालती रही हैं, किन्तु जब संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा निर्मित चन्द्रयान के सफलतापूर्वक चन्द्रमा की सतह पर उतर जाने से मनुष्य ने पहली बार डगमगाते कदम चन्द्रमा की सतह पर रखे तो अमेरिका के इन अन्तरिक्ष-यात्रियों के चन्द्र-तल पर चरण-प्रहार से सैकड़ों अन्धविश्वासों और निराधार कल्पनाओं का ढाँचा चरमराकर टूट गया। कविगण अपने काव्य में चन्द्रमा के सम्बन्ध में सुन्दर-सुन्दर कल्पनाओं को चित्रित करते रहे हैं। चन्द्रमा के सौन्दर्य को लेकर न जाने कितनी उपमाएँ दी गई हैं। अनेक कविताएँ चन्द्रमा के सौन्दर्य को लेकर रची गई हैं, परन्तु मानव के चन्द्रतल पर पहुँचने से वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि चन्द्रमा बहुत ही ऊबड़-खाबड़ और कुरुप है, चन्द्रमा पर कोई जीव नहीं है; अर्थात् अब चन्द्रमा कोई सुन्दर-सजीव उपमान नहीं रह गया है। यदि कोई कवि अब किसी सुन्दरी के मुख का सौन्दर्य-वर्णन करते समय उसे चन्द्रमा के समान बताए तो भला उस सुन्दरी को यह उपमा कैसे अच्छी लगेगी। 'चन्द्रमुखी' कहलाना उसे अब अरुचिकर ही लगेगा।

(ग) चन्द्रतल पर मानव के पाँव के निशान किस बात के प्रतीक थे?

उत्तर—चन्द्रतल पर मानव के पाँव के निशान उसके द्वारा वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में की गई असाधारण तथा अलौकिक प्रगति के प्रतीक थे।

(3) हमारे देश में ही नहीं, संसार की प्रत्येक जाति ने अपनी भाषा में चन्द्रमा के बारे में कहानियाँ गढ़ी हैं और कवियों ने कविताएँ रची हैं। किसी ने उसे रजनीपति माना तो किसी ने उसे रात्रि की देवी कहकर पुकारा। किसी विरहिणी ने उसे अपना दूत बनाया तो किसी ने उसके पीलेपन से क्षुब्ध होकर उसे बूढ़ा और बीमार ही समझ लिया। बालक श्रीराम चन्द्रमा को खिलौना समझकर उसके लिए मचलते हैं तो सूर के श्रीकृष्ण भी उसके लिए हठ करते हैं। बालक को शान्त करने के लिए एक ही उपाय था-चन्द्रमा की छवि को पानी में दिखा देना। लेकिन मानव की प्रगति का चक्र कितना घूम गया है। इस लम्बी विकास-यात्रा को श्रीमती महादेवी वर्मा ने एक ही वाक्य में बाँध दिया है-''पहले पानी में चन्दा को उतारा जाता था और आज चाँद पर मानव पहुँच गया है।''

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—गद्यांश का पाठ—'पानी में चन्दा और चाँद पर आदमी',

पाठ के लेखक—जयप्रकाश भारती।

(ख) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—चन्द्रमा से सम्बन्धित अन्धविश्वास और कल्पनाएँ केवल हमारे देश में ही प्रचलित नहीं रहे हैं, बल्कि संसार की प्रत्येक देश-जाति ने उससे सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की कहानियों की रचना की है। कवियों द्वारा उपमा देने के लिए वह सर्वाधिक उपयुक्त वस्तु रहा है। इसलिए प्रकृति के उपादानों में चन्द्रमा ही अकेला ऐसा उपादान है, जिसका कविता में सर्वाधिक वर्णन किया गया है। यह वर्णन संसार की सभी भाषाओं में एकसमान रूप से

मिलता है। किसी कवि ने उसे रात्रि का अधिपति माना है तो किसी ने उसको निशादेवी के रूप में भी प्रतिस्थापित किया है। प्रेमी के वियोग में दु:खित नायिका ने उसे दूत बनाकर अपने दु:ख को अपने प्रियतम तक पहुँचाने का असफल प्रयास किया है।

लेखक का कहना है उनके सामने बालक राम अथवा कृष्ण को शान्त करने का एक ही उपाय था कि चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को पानी में दिखा दिया जाए। उस समय उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि एक दिन वास्तव में किसी को चन्द्रमा दिया जाना अर्थात् उसके पास पहुँचना सम्भव हो सकेगा। राम और कृष्ण के समय ले लेकर आज तक मानव ने इतनी प्रगति कर ली है कि उसने उस समय के असम्भव को सम्भव करके दिखा दिया है।

(ग) 'रजनीपति' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'रजनीपति' की अर्थ है—रात का पति (स्वामी)।

(4) मानव मन सदा से ही अज्ञात के रहस्यों को खोलने और जानने-समझने को उत्सुक रहा है। जहाँ तक वह नहीं पहुँच सकता था, वहाँ वह कल्पना के पंखों पर उड़कर पहुँचा। उसकी अनगढ़ और अविश्वसनीय कथाएँ उसे सत्य के निकट पहुँचाने में प्रेरणा-शक्ति का काम करती रहीं। अन्तरिक्ष युग का सूत्रपात 4 अक्टूबर, 1957 को हुआ था, जब सोवियत रूस ने अपना पहला स्पुतनिक छोड़ा। प्रथम अन्तरिक्ष यात्री बनने का गौरव यूरी गागरिन को प्राप्त हुआ। अन्तरिक्ष युग के आरम्भ के ठीक 11 वर्ष 9 मास 17 दिन बाद चन्द्रतल पर मानव उतर गया।

(क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—गद्यांश का पाठ—'पानी में चंन्दा और चाँद पर आदमी',

पाठ के लेखक—जयप्रकाश भारती।

(ख) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह नई चीजों और नए विषयों को जानने के लिए उत्सुक रहता है। अनजाने रहस्यों को सुलझाने और उन्हें समझने की प्रवृत्ति उसमें सदैव से रही है। इस प्रवृत्ति के कारण ही मनुष्य किसी सीमा तक प्रकृति के अन्दर छिपे रहस्यों को जानने और उन्हें सुलझाने में सफल रहा है। जहाँ तक उसकी शक्ति और सामर्थ्य रहती है वहाँ तक वह अनजान रहस्यों पर पड़े परदे को हटाने का प्रयास बराबर करता रहा है और जो बात उसकी सामर्थ्य से बाहर है, वहाँ वह कल्पना का सहारा लेकर उस अज्ञात को जानने का प्रयास करता है।

(ग) किसके रहस्यों को खोलने के लिए मानव-मन सदैव उत्सुक रहा है?

उत्तर—मानव-मन सदैव अज्ञात के रहस्यों को खोलने, उन्हें जानने-समझने के लिए उत्सुक रहा है।

(घ) जहाँ मानव की पहुँच सम्भव नहीं थी, वहाँ तक वह कैसे पहुँचा?

उत्तर—जहाँ तक मानव की पहुँच सम्भव नहीं है, वहाँ वह अपनी कल्पना के पंख लगाकर उड़कर पहुँचता है।

(ङ) क्या चीजें मनुष्य में प्रेरणा-शक्ति का काम करती रहीं?

उत्तर—अनगढ़ और अविश्वसनीय कथाओं से मनुष्य सत्य को जानकर उसका उद्‌घाटन करने के लिए प्रेरणा प्राप्त करता है। यही कारण है कि आज मनुष्य चन्द्रमा तक पहुँच गया है। यदि चन्द्रमा के विषय में असंख्य अनगढ़ और अविश्वसनीय कथाएँ लोक में प्रचलित न होतीं तो आज मनुष्य का चन्द्रमा तक पहुँचना सम्भव न होता।

(च) मानव-मन किसके लिए उत्सुक रहा?

उत्तर—मानव-मन अज्ञात के रहस्यों को बोलने और जानने-समझने के लिए उत्सयुक रहा है।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित में सविग्रह समास-नाम लिखिए—स्त्री-पुरुष, चन्द्रतल, भूकम्पमापी, चन्द्रमुखी, रजनीपति, जीवनहीन।

उत्तर—

समस्तपद		समास-विग्रह		समास का नाम
स्त्री-पुरुष	—	स्त्री और पुरुष	—	(द्वन्द्व समास)
चन्द्रतल	—	चन्द्र का तल	—	(षष्ठी तत्पुरुष)
भूकम्पमापी	—	भूकम्प को मापने वाला	—	(तत्पुरुष)
चन्द्रमुखी	—	चन्द्रमा के समान मुखवाली है जो	—	(बहुब्रीहि)
रजनीपति	—	रजनी (रात्रि) का पति	—	(तत्पुरुष)
जीवनहीन	—	जीवन से हीन	—	(अपादान तत्पुरुष)

प्रश्न 2. निम्नलिखित में नियम-निर्देशपूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—शयनागार, सर्वाधिक, दुस्साहस, मरणोपरान्त, प्राणोदक, पूर्वाभिनय।

उत्तर—

शब्द	सन्धि		विच्छेद	सन्धि नियम					सन्धि का नाम
शयनागार	शयन	+	आगार	अ	+	अ	=	आ	दीर्घ सन्धि
सर्वाधिक	सर्व	+	अधिक	अ	+	अ	=	आ	दीर्घ सन्धि
दुस्साहस	दु:	+	साहस	विसर्ग	+	स	=	सा	विसर्ग सन्धि
मरणोपरान्त	मरण	+	उपरान्त	अ	+	उ	=	ओ	गुण सन्धि
प्रणोदक	प्राण	+	उदक	अ	+	उ	=	ओ	गुण सन्धि
पूर्वाभिनय	पूर्व	+	अभिनय	अ	+	अ	=	आ	दीर्घ सन्धि

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर नये शब्दों की रचना कीजिए-चमक, दुर्घटना, अस्ति, विज्ञान, काल, स्थापना, स्थगन, पालन, पीत, विश्वास, निष्कासन।

उत्तर—

शब्द	प्रत्यय	नए बने शब्द
चमक	दार	चमकदार
दुर्घटना	ग्रस्त	दुर्घटनाग्रस्त
अस्ति	त्व	अस्तित्व
विज्ञान	इक	वैज्ञानिक
काल	ईन	कालीन
स्थापना	काल	स्थापना-काल
स्थगन	काल	स्थगन-काल
पालन	हार	पालनहार
पीत	अम्बर	पीताम्बर
विश्वास	अनीय	विश्वसनीय
निष्कासन	इत	निष्कासित

❑

हिन्दी गद्य

भूमिका

अभ्यास प्रश्न

हिन्दी काव्य-साहित्य के इतिहास पर आधारित कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. कविता किसे कहते हैं?

उत्तर—ऐसी छन्दयुक्त साहित्यिक रचना जो संगीतमय हो अर्थात् लय व तुक से युक्त व गेय हो तथा जिसे पढ़ते या सुनते समय पाठक का श्रोता आनन्दमय जगत् में विचरण करने लगे, कविता कहलाती है।

प्रश्न 2. हिन्दी के पद्य-प्रकारों में से किन्हीं दो के नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी के पद्य-प्रकारों में से दो के नाम हैं—(1) प्रबन्ध काव्य (2) मुक्तकाव्य।

प्रश्न 3. प्रबन्ध-काव्य के प्रमुख भेद कौन-कौन से हैं? इसका अन्तर स्पष्ट कीजिए।

***अथवा,* खण्डकाव्य की परिभाषा तथा एक रचना का नाम लिखिए।**

उत्तर—प्रबन्ध काव्य के प्रमुख भेद हैं—(1) महाकाव्य (2) खण्डकाव्य (3) आख्यानक गीतियाँ। इनके बीच प्रमुख अन्तर इस प्रकार है—महाकाव्य में किसी विशिष्ट व्यक्ति (पात्र) के सम्पूर्ण जीवन का विस्तार से वर्णन होता है।

खण्डकाव्य में सम्पूर्ण जीवन का वर्णन न होकर जीवन के किसी अंश या खण्ड का वर्णन होता है। आख्यान गीतियाँ वह होती है जिनमें महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न पद्यबद्ध कहानी होती है।

प्रश्न 4. हिन्दी काव्य-साहित्य के इतिहास को कितने भागों में बाँटा गया है?

उत्तर—हिन्दी काव्य-साहित्य के इतिहास को चार भागों में बाँटा गया है—(1) आदिकाल (2) भक्तिकाल (3) रीतिकाल (4) आधुनिक काल।

प्रश्न 5. आदिकाल को वीरगाथाकाल नाम क्यों दिया गया है?

उत्तर—आदिकाल को वीरगाथाकाल इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इसमें अधिकांशत: वीरों की गाथाओं का वर्णन किया गया है।

प्रश्न 6. आदिकाल को वीरगाथाकाल नाम किसने दिया?

उत्तर—आदिकाल को वीरगाथाकाल का नाम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने दिया है।

प्रश्न 7. डॉ० रामकुमार वर्मा ने आदिकाल को किस नाम से पुकारा?

उत्तर—डॉ० रामकुमार वर्मा ने आदिकाल को सन्धिकाल व चारण-काल कहा है, क्योंकि इस काल में अधिकांश कवि चारण (भाट) थे।

प्रश्न 8. वीरगाथाकाल तथा चारणकाल के अतिरिक्त आदिकाल को और किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर—वीरगाथाकाल और चारणकाल के अतिरिक्त आदिकाल को 'आरम्भिक काल' तथा सिद्ध-सामन्त युग का हिन्दी का प्रथम उत्थान काल कहा जाता है।

प्रश्न 9. आदिकाल की किन्हीं दो प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—आदिकाल की दो रचनाएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) पृथ्वीराज रासो (2) नरपति नाल्ह।

प्रश्न 11. वीरगाथाकाल की रचनाएँ किस भाषा में लिखी गईं?

उत्तर—वीरगाथाकाल काल की रचनाएँ प्राकृत, अपभ्रंश, पंजाबी, अरबी, फारसी, ब्रज व संस्कृत भाषा में लिखी गईं।

प्रश्न 12. आदिकाल (वीरगाथाकाल) के दो कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—आदिकाल (वीरगाथाकाल) के दो कवि हैं—(1) बीसलदेव (2) चन्दबरदाई।

प्रश्न 13. चन्दबरदाई की रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—चन्दबरदाई की रचना का नाम 'पृथ्वीराज रासो' है।

प्रश्न 14. आदिकाल के एक महाकाव्य का नाम लिखिए।

उत्तर—आदिकाल का एक महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' है।

प्रश्न 15. भक्तिकाल का समय कब-से-कब तक माना जाता है?

उत्तर—भक्तिकाल का समय 1343 ई० से 1643 ई० तक माना जाता है। इसे पूर्वमध्यकाल भी कहते हैं।

प्रश्न 16. भक्तिकाल के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए और उनकी एक-एक प्रसिद्ध कृति का नाम लिखिए।

उत्तर—भक्तिकाल के दो प्रमुख कवि व उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं—

कवि		**रचनाएँ**
तुलसीदास	—	श्रीरामचरितमानस
सूरदास	—	सूर सारावली

प्रश्न 17. निर्गुण भक्तिधारा के दो कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर—निर्गुण भक्तिधारा के दो कवि हैं—(1) कबीरदास (2) मलिक मुहम्मद जायसी।

प्रश्न 18. ज्ञानमार्गी निर्गुण भक्ति शाखा के प्रमुख सन्त कवि कौन थे?

उत्तर—ज्ञानमार्गी निर्गुण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास थे।

प्रश्न 19. प्रेममार्गी दो प्रमुख कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—प्रेममार्गी शाखा के दो कवि हैं—(1) मलिक मुहम्मद जायसी (2) कुतुबन।

प्रश्न 20. सगुण भक्तिधारा के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर—सगुण भक्तिधारा के दो प्रमुख कवि हैं—(1) तुलसीदास (2) सूरदास।

प्रश्न 21. मुक्तक काव्य के अन्तर्गत काव्य के कौन-कौन से भेद आते हैं?

उत्तर—मुक्तक काव्य के दो भेद हैं—(1) पाठ्य-मुक्तक (2) गेय मुक्तक।

प्रश्न 22. भक्तिकालीन किसी एक महाकाव्य और उसके लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—भक्तिकालीन महाकाव्य श्रीरामचरितमानस है। इसके लेखक गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रश्न 23. बीजक के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर—'बीजक' के रचनाकार कबीरदास जी हैं।

प्रश्न 24. प्रेममाधुरी एवं 'प्रेम तरंग' किसकी रचनाएँ हैं।

उत्तर—'प्रेममाधुरी' व 'प्रेम तरंग' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाएँ हैं।

प्रश्न 25. मुक्तक काव्य के दो कवियों के नाम लिखिए और उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—मुक्तक काव्य के दो कवि हैं—(1) कबीर दास (2) बिहारी- इनकी रचनाएँ हैं क्रमश; बीजक एवं सतसई।

प्रश्न 26. आदिकाल की समय-सीमा लिखिए।

उत्तर—आदिकाल की समय-सीमा 743 ई० से 1343 ई० तक थी।

प्रश्न 27. आदिकाल का सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय काव्य कौन-सा है?

उत्तर—आदिकाल का सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय काव्य 'आल्हाखण्ड' है। इसे 'परमाल रासो' भी कहते हैं।

प्रश्न 28. 'खुमाण रासो' अथवा 'बीसलदेव रासो' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

उत्तर—खुमाण रासो के रचयिता दलपति विजय तथा बीसलदेव रासो के रचयिता नरपति नाल्ह हैं।

प्रश्न 29. रासो ग्रन्थों की भाषा का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—रासो ग्रन्थों की रचना प्राकृत भाषा एवं संस्कृत भाषा में की गई, जिसे रासो साहित्य कहा जाता है।

प्रश्न 30. निर्गुण भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा की मुख्य विशेषतायें स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—निर्गुण भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं—(1) जातिवाद का विरोध (2) खिचड़ी भाषा का प्रयोग (3) सामाजिक एकता पर बल आदि।

प्रश्न 31. रीतिमुक्त काव्यधारा के किन्हीं दो कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—रीतिमुक्त काव्यधारा के दो कवि हैं—(1) बिहारी (2) घनानन्द।

प्रश्न 32. घनानन्द और भूषण रीतिकाल की किस धारा के कवि हैं?

उत्तर—घनानन्द रीतिकाल के लाक्षणिक भाषा के कवि थे तथा भूषण वीर रस एवं अलंकारवादी कवि हैं।

प्रश्न 33. केशवदास की दो प्रसिद्ध रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?

उत्तर—केशवदास की दो प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—(1) रामचन्द्रिका (2) कविप्रिया।

प्रश्न 34. 'शिवा बावनी' एवं 'छत्रशाल दशक' किस कवि की रचनाएँ हैं?

उत्तर—'शिवा बावनी' एवं 'छत्रशाल दशक' की रचना भूषण ने की है।

प्रश्न 35. अधिकतर विद्वानों ने हिन्दी-साहित्य के आधुनिक काल का आरम्भ कब से माना है?

उत्तर—अधिकतर विद्वानों ने हिन्दी-साहित्य के आधुनिक काल का आरम्भ वर्ष 1900 विक्रमी से माना है।

प्रश्न 36. रीतिकाल की दो प्रमुख प्रवृत्तियों (विशेषताओं) पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—रीतिकाल की दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं—

(1) इस काल में राजाओं की प्रशंसा में प्रशस्ति-पत्र लिखे गए।

(2) इस समय श्रृंगार रस को प्रमुखता मिली तथा ब्रजभाषा की प्रतिष्ठा हुई।

प्रश्न 37. आधुनिक काल के दो अन्य मुख्य नाम लिखिए।

उत्तर—आधुनिक काल को नवीन विकास का काल तथा पुनर्जागरण काल कहा जाता है।

प्रश्न 38. आधुनिक साहित्य का जनक किसे माना जाता है?

उत्तर—आधुनिक साहित्य का जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को माना जाता है।

प्रश्न 39. हिन्दी काव्य के आधुनिक काल को कितने भागों में विभाजित किया गया है?

उत्तर—हिन्दी काव्य के आधुनिक काल को पाँच भागों में बाँटा गया है।

प्रश्न 40. आधुनिक काल के प्रथम युग और उसके प्रवर्त्तक का नाम लिखिए।

उत्तर—आधुनिक काल के प्रथम युग को भारतेन्दु युग कहा जाता है। इसके प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे।

प्रश्न 41. 'प्रियप्रवास' किस प्रकार का काव्य है? इसके रचयिता कौन हैं?

उत्तर—'प्रियप्रवास' खड़ीबोली की एक काव्य रचना है। इसके लेखक अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हैं।

प्रश्न 42. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं? उनकी एक रचना का नाम लिखिए।

***या* मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित एक महाकाव्य का नाम लिखिए।**

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के कवि हैं। उनकी प्रमुख रचना 'साकेत' है।

प्रश्न 43. छायावादी काव्य की दो मुख्य विशेषताएँ (प्रवृत्तियाँ) लिखिए।

उत्तर—वैयक्तिक अनुभूति की प्रबलता, सौन्दर्य भावना, श्रृंगार और प्रेम, वेदना, करुण तथा नैराभ्य की भावना, प्रकृति का मानवीकरण एवं रहस्य-भावना छायावाद युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

प्रश्न 44. जयशंकर प्रसाद के दो प्रमुख काव्यग्रन्थों के नाम लिखिए।

उत्तर—जयशंकर प्रसाद की दो काव्य रचनाएँ हैं—(1) कामायनी (2) आँसू।

प्रश्न 45. कवि गोरेलाल की एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—कवि गोरेलाल की एक रचना का नाम 'छत्र प्रकाश' है। ❑

1 पद (सूरदास)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सूरदास के पिता का नाम लिखिए।

उत्तर—सूरदास के पिता का नाम पण्डित रामदास था।

प्रश्न 2. सूरदास का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर—सूरदास का जन्म 1478 ई० में रुनकता नामक ग्राम में हुआ था।

प्रश्न 3. सूरदास के गुरु कौन थे और वे कहाँ रहते थे?

उत्तर—सूरदास के गुरु श्री बल्लभाचार्य थे, जो मथुरा के गऊघाट पर श्रीनाथजी के मन्दिर में रहते थे।

प्रश्न 4. सूरदास के पदों की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—सूरदास के पदों की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं—
(1) सभी पद गेय हैं। (2) पदों में माधुर्य गुण की प्रधानता है। (3) पदों में मुख्यत: कृष्णलीलाओं का वर्णन है।

प्रश्न 5. वल्लभाचार्य के सम्पर्क में आने से पूर्व सूरदास किस प्रकार के पद गाया करते थे?

उत्तर—'बल्लभाचार्य' के सम्पर्क में आने से पूर्व सूरदास जी 'दीनता' के पद गाया करते थे।

प्रश्न 6. सूरदास की मृत्यु कब और कहाँ हुई?

उत्तर—सूरदास की मृत्यु 1583 ई० के लगभग गोवर्द्धन के समीप परसौली नामक ग्राम में हुई थी।

प्रश्न 7. सूरदास जी की प्रसिद्ध काव्य-रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—सूरदास की प्रसिद्ध काव्य-रचना का नाम है—सूरसागर।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सूरदास के जीवन-परिचय और रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—सूरदास हिन्दी-साहित्य-गगन के ज्योतिर्मान नक्षत्र और भक्तिकाल की सगुणधारा के कृष्णोपासक कवि हैं। इन्होंने अपनी संगीतमय वाणी से कृष्ण की भक्ति तथा बाल-लीलाओं के रस का ऐसा सागर प्रवाहित कर दिया है, जिसको मथकर भक्तजन भक्ति-सुधा और आनन्द-मौक्तिक प्राप्त करते हैं।

जीवन-परिचय—सूरदास जी का जन्म **सन् 1478 ई०** (वैशाख शुक्ल पंचमी, सं० 1535 वि०) में आगरा-मथुरा मार्ग पर स्थित **रुनकता** नामक ग्राम में हुआ था। कुछ विद्वान् दिल्ली के निकट 'सीही' ग्राम को भी इनका जन्म-स्थान मानते हैं। सूरदास जी जन्मान्ध थे, इस विषय में भी विद्वानों में मतभेद हैं। इन्होंने कृष्ण की बाल-लीलाओं का, मानव-स्वभाव का एवं प्रकृति का ऐसा सजीव वर्णन किया है, जो आँखों से प्रत्यक्ष देखे बिना सम्भव नहीं है। इन्होंने स्वयं अपने आपको जन्मान्ध कहा है। ऐसा इन्होंने आत्मग्लानिवश, लाक्षणिक रूप में अथवा ज्ञान-चक्षुओं के अभाव के लिए भी कहा हो सकता है।

सूरदास की रुचि बचपन से ही भगवद्भक्ति के गायन में थी। इनसे भक्ति का एक पद सुनकर पुष्टिमार्ग के संस्थापक महाप्रभु वल्लभाचार्य ने इन्हें अपना शिष्य बना लिया और श्रीनाथजी के मन्दिर में कीर्तन का भार सौंप दिया। श्री वल्लभाचार्य के पुत्र बिट्ठलनाथ ने 'अष्टछाप' नाम से आठ कृष्णभक्त कवियों का जो संगठन किया था, सूरदास जी इसके सर्वश्रेष्ठ कवि थे। वे गऊघाट पर रहकर जीवनपर्यन्त कृष्ण की लीलाओं का गायन करते रहे।

सूरदास जी का गोलोकवास (मृत्यु) **सन् 1583 ई०** (सं० 1640 वि०) में गोसाईं बिट्ठललनाथ के सामने गोवर्द्धन की तलहटी के पारसोली नामक ग्राम में हुआ। 'खंजन नैन रूप रस माते' पद का गान करते हुए इन्होंने अपने भौतिक शरीर का त्याग किया।

कृतियाँ (रचनाएँ)—महाकवि सूरदास की निम्नलिखित तीन रचनाएँ ही उपलब्ध हैं—

(1) **सूरसागर**—श्रीमद्भागवत् के आधार पर रचित 'सूरसागर' के सवा लाख पदों में से अब लगभग दस हजार पद ही उपलब्ध बताये जाते हैं, जिनमें कृष्ण की बाल-लीलाओं, गोपी-प्रेम, गोपी-विरह, उद्धव-गोपी संवाद का बड़ा मनोवैज्ञानिक और सरस वर्णन है। सम्पूर्ण 'सूरसागर' एक गीतिकाव्य है। इसके पद तन्मयता के साथ गाये जाते हैं तथा यही ग्रन्थ सूरदास की कीर्ति का स्तम्भ है।

(2) **सूर-सारावली**—इसमें 1,107 पद हैं। यह 'सूरसागर' का सारभाग है।

(3) **साहित्य-लहरी**—इसमें 118 दृष्टकूट पदों का संग्रह है। इस ग्रन्थ में किसी एक विषय की विवेचना नहीं हुई है, वरन् मुख्य रूप से नायिकाओं एवं अलंकारों की विवेचना की गयी है। इसमें कहीं-कहीं पर श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं का वर्णन हुआ है तो एकाध स्थलों पर महाभारत की कथा के अंशों की झलक भी मिलती है।

साहित्य में स्थान—भक्त कवि सूरदास का स्थान **हिन्दी-साहित्याकाश में सूर्य के समान** ही है। इसीलिए कहा गया है—

सूर सूर तुलसी ससी, उडुगन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकास॥

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए—

(क) चरण-कमल बंदौ हरि राइ।
जाकि कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे कौं सब कुछ दरसाइ॥
बहिरौ सुनै, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बंदौ तिहिं पाइ॥

उत्तर—**सन्दर्भ** प्रस्तुत वन्दना-पद **महाकवि सूरदास** द्वारा रचित **'सूरसागर'** महाकाव्य से उद्धृत है। यह हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में **'पद'** शीर्षक के अन्तर्गत संकलित है।

[विशेष—*इस शीर्षक के शेष सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—प्रस्तुत पद में महाकवि सूरदास ने अपने आराध्य के चरणों की वन्दना की है।

व्याख्या—भक्त सूरदास कहते हैं कि हे प्रभु! मैं आपके कमलरूपी चरणों की वन्दना करता हूँ, जिनकी कृपा से लँगड़ा व्यक्ति पर्वतों को लाँघ जाता है, अन्धे व्यक्ति को सबकुछ दिखाई देने लगता है, बहरा सुनने लगता है, गूँगा फिर से बोलने लगता है, भिखारी मुकुटधारी राजा बन जाता है। सूरदास जी कहते हैं कि हे करुणामय और दयामय स्वामी! मैं ऐसे अद्‌भुत चरणों की बार-बार वन्दना करता हूँ।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** ईश्वर के चरणों के महिमा व्यक्त करते हुए उनके प्रति भक्ति-भाव की शक्ति का महत्त्व बताया गया है। **(2) भाषा** —ब्रज। **(3) रस**—भक्ति। **(4) गुण**—प्रसाद। **(5) अलंकार**—रूपक, अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश। **(6) छन्द**—गेय-पद।

(ख) अबिगत-गति कछु कहत न आवै।
ज्यो गूँगै मीठे फल कौ रस अंतर गत ही भावै।।
परम स्वाद सबही सु निरंतर अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौं अगम-अगोचर सो जानै जो पावै।।
रूप-रेख-गुन-जुगति-बिनु निरालंब कित धावै।
सब बिधि अगम बिचारहिं तातै सूर सगुन-पद गावै।।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पद में महाकवि सूरदास ने निराकार ब्रह्म की साधना को अत्यधिक कठिन बताया है। इसी के साथ साकार ब्रह्म की उपासना को सर्वसाधारण के लिए सरल बताते हुए उसी का समर्थन भी किया है।

व्याख्या—निराकार ब्रह्म की स्थिति का वर्णन नहीं किया जा सकता अर्थात् वह अनिर्वचनीय है। जिस प्रकार गूँगा व्यक्ति मीठे फल का स्वाद अपने हृदय में ही अनुभव करता है, उसका वर्णन नहीं कर सकता, उसी प्रकार आनन्द से भरे हुए और रसमय ईश्वर को प्राप्त करने का अलौकिक आनन्द सभी को निरन्तर अत्यधिक सन्तोष प्रदान करता है। मन और वाणी द्वारा उस परब्रह्म परमात्मा तक नहीं पहुँचा जा सकता। इन्द्रियाँ भी उसको पाने में असमर्थ हैं। उसे वही जान सकता है, जो उसे प्राप्त कर लेता है। उस निराकार ब्रह्म का न कोई रूप है, न पहचान है और न हमें उसके गुणों का ही ज्ञान है। अत: बिना किसी आधार के कहाँ-कहाँ दौड़ते रहें। अन्त में सूरदास जी कहते हैं कि निर्गुण को सब प्रकार से अगम्य मानकर मैं सगुण ब्रह्म की लीलाओं का वर्णन करता हूँ।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** निर्गुण ब्रह्म की उपासना की कठिनाइयों की भावात्मक अभिव्यक्ति करते हुए सगुण ब्रह्म की उपासना को सरल बताया गया है। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3) रस**—शान्त। **(4) गुण**—प्रसाद। **(5) अलंकार**—यमक, दृष्टान्त, हेतु और अनुप्रास। **(6) छन्द**—गेय-पद।

(ग) किलकत कान्ह घुटरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कैं आँगन, बिम्ब पकरिबैं धावत।।
कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौं, कर सौं पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।।
कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति।
करि-करि पतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।।
बाल-दास-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति।
अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौ दूध पियावति।।

उत्तर—प्रसंग—बाल-वर्णन के क्षेत्र में कवि सूर की तुलना कोई नहीं कर सका है। बाल-वर्णन का एक-एक पद सूर की अद्‌भुत प्रतिभा का परिचायक है। प्रस्तुत पद में घुटनों के बल चलते हुए श्रीकृष्ण की शोभा का वर्णन हुआ है।

व्याख्या—किलकारी मारते हुए श्रीकृष्ण घुटनों के बल आ रहे हैं। नन्द जी के स्वर्ण से बनाए गए और मणियों से युक्त आँगन में श्रीकृष्ण अपनी परछाईं को पकड़ने के लिए दौड़ते हैं। अपनी परछाईं को देखकर वे उसे अपने हाथ से पकड़ना चाहते हैं। किलकारियाँ मारते समय उनके आगे के दो दाँत सुशोभित हो रहे हैं। बार-बार वे उन्हें दिखलाते हैं। स्वर्ण-निर्मित आँगन में श्रीकृष्ण की छाया को देखकर मन में यह उपमान प्रस्तुत होता है कि मानो प्रत्येक मणि में उनके बैठने के लिए पृथ्वी ने कमल का आसन सजा दिया हो। श्रीकृष्ण की बाललीला के सुख को देखकर यशोदा बार-बार नन्द जी को बुलाती हैं और अपने आँचल से ढककर सूरदास के स्वामी श्रीकृष्ण को दूध पिलाती हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कृष्ण की बाललीला की सजीव अभिव्यक्ति हुई है। **(2)** बालकों की क्रीड़ा से सम्बन्धित कवि की कल्पना प्रशंसनीय है। **(3) भाषा**—ब्रज। **(4) रस**—वात्सल्य। **(5) गुण**—प्रसाद और माधुर्य। **(6) अलंकार**—उत्प्रेक्षा, पुनरुक्तिप्रकाश, वीप्सा और अनुप्रार। **(7) छन्द** —गेय-पद।

(घ) मैया हौं न चरैहौं गाइ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसो, मेरे पाइ पिराइ।।
जौं न पत्याहि पुछि बलदाउहिं, अपनी सौंहँ दिवाइ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालनि, गारी देति रिसाइ।।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ।।

उत्तर—प्रसंग—श्रीकृष्ण ने गायों को चराने की हठ की। माता ने उन्हें बालकों के साथ भेज दिया, किन्तु वन में बालकों ने उन्हें परेशान किया। इस पद में श्रीकृष्ण ने माँ यशोदा से ग्वालों की शिकायत की है।

व्याख्या—श्रीकृष्ण कहते हैं कि मैं गाय चराने नहीं जाऊँगा। सभी ग्वाले मुझसे गायों को घिरवाते हैं, जिससे मेरे पैर दु:खने लगते हैं। हे माता! यदि आपको मेरी बात पर विश्वास न हो तो अपनी सौगन्ध दिलाकर बलराम भैया से पूछ लो। श्रीकृष्ण द्वारा ऐसा कहने पर माता यशोदा क्रोधित होकर ग्वालों को गाली देती हैं और कहती हैं कि मैं अपने पुत्र को वन में इसलिए भेजती हूँ कि वह अपना मन बहलाकर आ जाए। मेरा श्रीकृष्ण अभी छोटा-सा बालक है। ये ग्वाले उसे घुमा-घुमाकर मार डालेंगे।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** प्रस्तुत पद में बालक के स्वभाव का और माता के मनोविज्ञान का हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है। **(2)** सरल और स्वाभाविक ब्रजभाषा का सौन्दर्य द्रष्टव्य है। **(3) रस**—वात्सल्य। **(4) गुण**—माधुर्य। **(5) अलंकार**—अनुप्रास। **(6) छन्द**—गेय-पद।

(ङ) सखी री, मुरली लीजौ चोरि।
जिनि गुपाल कीन्हे अपनैं बस, प्रीति सबनि की तोरि।।
छिन इक घर-भीतर, निसि-बासर, धरत न कबहूँ छोरि।
कबहूँ कर, कबहूँ अधरनि, कटि कबहूँ खोंसत जोरि।।
ना जानौं कछु मेलि मोहिनी, राखे अँग-अँग भोरि।
सूरदास प्रभु कौ मन सजनी, बँध्यौ राग की डोरि।।

उत्तर—प्रसंग—इस पद में सूरदास जी ने वंशी के प्रति गोपियों के ईर्ष्या-भाव को व्यक्त किया है।

व्याख्या—गोपियाँ श्रीकृष्ण की वंशी को अपनी वैरी सौतन समझती हैं। एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि हे सखी! अब हमें श्रीकृष्ण की यह मुरली चुरा लेनी चाहिए; क्योंकि इस मुरली ने गोपाल को अपनी ओर आकर्षित कर अपने वश में कर लिया है और श्रीकृष्ण ने भी मुरली के वशीभूत होकर हम सभी को भुला दिया है। कृष्ण घर के भीतर हों या बाहर,

कभी क्षणभर को भी मुरली नहीं छोड़ते। कभी हाथ में रखते हैं, तो कभी होंठों पर और कभी कमर में खोंस लेते हैं। इस तरह से श्रीकृष्ण उसे कभी भी अपने से दूर नहीं होने देते हैं। यह हमारी समझ में नहीं आ रहा हैं कि वंशी ने कौन-सा मोहिनी मन्त्र श्रीकृष्ण पर चला दिया है, जिससे श्रीकृष्ण पूर्णरूप से उसके वश में हो गए हैं। सूरदास जी कहते हैं कि गोपी कह रही हैं कि हे सजनी ! इस वंशी ने श्रीकृष्ण का मन प्रेम की डोरी से बाँधकर कैद कर लिया है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** प्रेम में प्रिय पात्र के दूसरे प्रिय के प्रति ईर्ष्या का भाव होना एक स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक तथ्य है। इसी तथ्य का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है। **(2) भाषा**—सहज-सरल ब्रज **(3) शैली**—मुक्तक और गीतात्मक **(4) छन्द**—गेय पद **(5) रस**—शृंगार **(6) शब्दशक्ति**— 'बँध्यौ राग की डोरि' में लक्षणा **(7) गुण**—माधुर्य **(8) अलंकार**—'राग की डोरि' में **रूपक**—तथा सम्पूर्ण पद में **अनुप्रास**।

(च) ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहिं।
बृन्दाबन गोकुल बन उपवन, सघन कुंज की छाँही।।
प्रात समय माता जसमुति, अरु नंद देखि सुख पावत।
माखन रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत।।
गोपी ग्वाल बाल संग खेलत, सब दिन हँसत सिरात।
सूरदास धनि-धनि ब्रजबासी, जिनसौं हित जदु-तात।।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पद में उद्धव ने मथुरा पहुँचकर श्रीकृष्ण को वहाँ की सारी स्थिति बतायी, जिसे सुनकर श्रीकृष्ण भाव-विभोर हो गये। इस पर वे उद्धव से अपनी मनोदशा व्यक्त करते हैं।

व्याख्या—श्रीकृष्ण ने उद्धव से ब्रजवासियों की दीन दशा सुनी और उन्हीं के ध्यान में खो गए। वे उद्धव से कहते हैं कि मैं ब्रज को भूल नहीं पाता हूँ। वृन्दावन और गोकुल के वन-उपवन सभी मुझे याद आते रहते हैं। वहाँ के घने कुंजों की छाया को भी मैं भूल नहीं पाता हूँ। नन्द बाबा और यशोदा मैया को देखकर मुझे जो सुख मिलता था, वह मुझे रह-रहकर स्मरण हो आता है। वे मुझे मक्खन, रोटी और भली प्रकार जमाया हुआ दही कितने प्रेम से खिलाते थे? ब्रज की गोपियों और ग्वाल-बालों के साथ खेलते हुए मेरे सभी दिन हँसते हुए बीता करते थे। ये सभी बातें मुझे बहुत याद आती हैं। सूरदास जी ब्रजवासियों को धन्य मानते हैं और उनके भाग्य की सराहना करते हैं; क्योंकि श्रीकृष्ण को उनके हित की चिन्ता है और श्रीकृष्ण इन ब्रजवासियों का प्रतिक्षण ध्यान करते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** यद्यपि कृष्ण का व्यक्तित्व अलौकिक है, किन्तु प्रेमवश वह भी प्रियजनों की याद में साधारण मनुष्य की भाँति द्रवित हो रहे हैं। ब्रज की स्मृति उन्हें अत्यधिक भाव-विह्वल कर रही है। **(2) भाषा**—सरल-सरस ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) छन्द**—गेय पद। **(5) रस**—शृंगार। **(6) शब्द-शक्ति**—अभिधा और व्यंजना। **(7) गुण** —माधुर्य। **(8) अलंकार**—'ब्रज बिसरत', 'वृन्दावन गोकुल वन उपवन' में अनुप्रास, उद्धव के द्वारा योग का सन्देश भेजने तथा यह कहने में कि 'मुझसे ब्रज नहीं भूलता' में **विरोधाभास** है।

(छ) ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस।।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देहि बिनु सीस।
आसा लागि रहित तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तै सखा स्याम सुन्दर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारे नंद-नंदन बिनु, और नहीं जगदीस।।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पद भ्रमर-गीत प्रसंग का एक सरस अंश है। श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ अत्यधिक व्याकुल हैं। उद्धव जी गोपियों को योग का सन्देश देने मथुरा से गोकुल आये हैं। गोपियाँ योग की शिक्षा ग्रहण करने में अपने को असमर्थ बताती हैं और अपनी मनोव्यथा को उद्धव के समक्ष व्यक्त करती हैं।

व्याख्या—गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे पास दस-बीस मन नहीं हैं। हमारे पास तो एक ही मन था, वह श्रीकृष्ण के साथ चला गया। अब हम किस मन से तुम्हारे निर्गुण ब्रह्म की आराधना करें? श्रीकृष्ण के बिना हमारी इन्द्रियाँ उसी प्रकार शिथिल अर्थात् शक्तिहीन और निर्बल हो गई ह। जैसे बिना सिरवाला धड़ शिथिल और बेकार हो जाता है। श्रीकृष्ण के लौटने की आशा में ही हमारे शरीर में श्वास चल रही है और इसी आशा में हम करोड़ों वर्षों तक जीवित रह सकती हैं। हे उद्धव! आप तो परम सुन्दर श्रीकृष्ण के मित्र हो और सभी प्रकार के योग (संयोग; मिलन) के स्वामी हो अर्थात् आप ही श्रीकृष्ण से हमारा मिलन करा सकते हैं। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियों ने उद्धव को स्पष्ट रूप से बता दिया है कि नन्द जी के पुत्र श्रीकृष्ण के अतिरिक्त हमारा कोई और ईश्वर नहीं है अर्थात् श्रीकृष्ण ही हमारे एकमात्र आराध्य हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** यहाँ गोपियों के कृष्ण-प्रेम की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति करते हुए सूरदास ने सगुण भक्ति की श्रेष्ठता स्थापित की है। **(2)** गोपियों की भक्ति-भावना में स्वाभाविक मानसिक उद्वेगों का चित्रण हुआ है। **(3) भाषा**—वियोग शृंगार। **(4) गुण**—माधुर्य। **(5) अलंकार**—उपमा, श्लेष तथा अनुप्रास। **(6) छन्द**—गेय-पद।

(ज) निरगुन कौन देस कौ बासी?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझति साँच न हाँसी।।
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी?
कैसो बरन, भेष है कैसो, किहिं रस मैं अभिलाषी?
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जो रे करैगो गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बाबरौ, सूर सबै मति नासी।।

उत्तर—प्रसंग—इस पद में सूरदास ने गोपियों के माध्यम से निर्गुण ब्रह्म की उपासना का खण्डन तथा सगुण कृष्ण की भक्ति का मण्डन किया है।

व्याख्या—गोपियाँ 'भ्रमर' की अन्योक्ति से उद्धव को सम्बोधित करती हुई पूछती हैं कि हे उद्धव! तुम यह बताओ तुम्हारा वह निर्गुण ब्रह्म किस देश का रहने वाला है? हम तुमको शपथ दिलाकर सच-सच पूछ रही हैं, कोई हँसी (मजाक) नहीं कर रही हैं। तुम यह बताओ कि उस निर्गुण का पिता कौन है? उसकी माता का क्या नाम है? उसकी पत्नी और दासियाँ कौन-कौन हैं? उस निर्गुण ब्रह्म का रंग कैसा है, उसकी वेश-भूषा कैसी है और उसकी किस रस में रुचि है? गोपियाँ उद्धव को चेतावनी देती हुई कहती हैं कि हमें सभी बातों का ठीक-ठीक उत्तर देना। यदि सही बात बताने में जरा भी छल-कपट करोगे तो अपने किए का फल अवश्य पाओगे। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियों के ऐसे प्रश्नों को सुनकर ज्ञानी उद्धव ठगे-से रह गए और उनका सारा ज्ञान-गर्व अनपढ़ गोपियों के सामने नष्ट हो गया।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** सगुणोपासक सूर ने गोपियों के माध्यम से निर्गुण ब्रह्म का उपहासपूर्वक खण्डन कराया है। **(2)** गोपियों के प्रश्न सीधे-सादे होकर भी व्यंग्यपूर्ण हैं। यहाँ कवि की कल्पना-शक्ति और स्त्रियों की अन्योक्ति में व्यंग्य करने की स्वभावगत प्रवृत्ति का बड़ा ही मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। **(3) भाषा**—सरल ब्रज। **(4) शैली** —मुक्तक। **(5) रस**—वियोग शृंगार एवं हास्य। **(6) छन्द**—गेय पद। **(7) गुण** —माधुर्य। **(8) अलंकार**—'समुझाइ सौंह दै', 'पावैगो पुनि' में **अनुप्रास,**

मानवीकरण तथा 'मधुकर' के माध्यम से उद्धव को सम्बोधन करने में **अन्योक्ति**।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम बताते हुए उसका स्थायी भाव लिखिए–

(क) अबिगत गति कछु कहन न आवै।

उत्तर—दी गई पंक्ति में भक्ति रस का वर्णन है।

(ख) निरगुन कौन देस कौ बासी।

उत्तर—दी गई पंक्ति में वियोग श्रृंगार रस है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम और देशज शब्द छाँटकर अलग-अलग लिखिए–

चरन, पंगु, कान्ह, अँचरा, छोटा, गृह, करि, नैन, पानि, सखा, जोग, साँच, जननी, गाँसी, धाई, टेव, अलक-लड़ैतों, ठादे, ग्वाल, बिम्ब, यति, विधु, इंद्री।

उत्तर—दिए गए शब्दों में तत्सम, तद्भव, तथा देशज शब्द इस प्रकार हैं—

तत्सम—पंगु, गृह, करि, जननी, ग्वाल, बिम्ब, यति, विधु।

तद्भव—चरन, अँचरा, नैन, पानि, सखा, जोग, इंद्री।

देशज—कान्ह, साँच, छोटा, गाँसी, धाई, टेव, अलक-लड़ैतो, ठाढ़े।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार को पहचानकर लक्षण सहित उसका नाम लिखिए—

(क) चरन-कमल बंदौ हरि राइ।

उत्तर—रूपक अलंकार।

(ख) करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।

उत्तर—अनुप्रास एवं पुररुक्तिप्रकाश अलंकार।

(ग) जोइ-जोइ माँगत, सोइ-साई देती, क्रम-क्रम करि के न्हाते।

उत्तर— अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार।

❑

2 धनुष–भंग, वन–पथ पर

(गोस्वामी तुलसीदास)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. तुलसीदास जी का जन्म कब व कहाँ हुआ?

उत्तर—तुलसीदास जी का जन्म 1532 ई० में बाँदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ था।

प्रश्न 2. तुलसीदास जी की रचनाएँ बताइए।

उत्तर—'तुलसीदास' जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—
(1) श्री रामचरितमानस (2) जानकी मंगल (3) पार्वती मंगल (4) रामलला नहछू (5) बरवै रामायण (6) दोहावली (7) कवितावली (8) गीतावली (9) विनय-पत्रिका।

प्रश्न 3. 'श्रीरामचरितमानस' की रचना विधा क्या है?

उत्तर—'श्रीरामचरितमानस' की रचना विधा 'काव्य' है। यह अवधी भाषा में रचित है। इसे 'महाकाव्य' का दर्जा प्राप्त है।

प्रश्न 4. तुलसीदास जी का नाम बचपन में क्या था?

उत्तर—तुलसीदास जी के बचपन का 'रामबोला' था।

प्रश्न 5. तुलसीदास किस काल के कवि हैं?

उत्तर—तुलसीदास 'भक्तिकाल' के प्रमुख कवि थे, जो रामभक्ति शाखा से सम्बन्धित थे।

प्रश्न 6. तुलसीदास किसके भक्त हैं?

उत्तर—तुलसीदास 'श्रीराम' के भक्त हैं।

प्रश्न 7. वनवास के लिए जाते समय अयोध्या से कुछ ही दूर पहुँचने पर सीता जी ने श्रीराम से क्या कहा?

उत्तर—वनवास के लिए जाते समय अयोध्या से कुछ ही दूर पहुँचने पर सीता जी ने राम से कहा—'चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौ कित है? अर्थात् अभी कितनी दूर चलना है, पर्णकुटी कहाँ बनाएँगे?

प्रश्न 8. 'वन पथ पर' शीर्षक के चौथे पद्यांश में ग्रामीण स्त्रियाँ सीता जी से क्या पूछती हैं?

उत्तर—'वन पथ पर' शीर्षक के चौथे पद्यांश में ग्रामीण स्त्रियाँ सीता जी से पूछती हैं कि—सिर पर जटा धारण किए, लम्बी बाहु वाले, तिरछी सी भौंहां वोले, धनुष-बाण लिए हुए, वन में अति सुशोभित होने वाले, चित्त को मोह लेने वाले, यह कौन हैं?

प्रश्न 9. तुलसीदास जी ने 'श्रीरामचरितमानस' की रचना किस भाषा में की?

उत्तर—तुलसीदास जी ने 'श्रीरामचरितमानस' की रचना 'अवधी' भाषा में की।

प्रश्न 10. 'धनुष भंग' शीर्षक के तीसरे पद्यांश में सीता जी ने शिव-पार्वती से क्या प्रार्थना की?

उत्तर—'धनुष भंग' शीर्षक के तीसरे पद्यांश में सीता जी ने शिव—पार्वती से यह प्रार्थना की कि 'आप मुझ पर कृपा करें, अपनी सेवा का फल मुझे दें, मेरा मन राम के प्रति प्रीति से भर गया है, वे धनुष का भंजन कर सकें, ऐसा वरदान दें।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. तुलसीदास जी का जीवन-परिचय और रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल की रामभक्ति काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि थे। इनकी भक्ति दास्य भाव की थी। इन्होंने श्रीराम के शील, शक्ति और सौन्दर्य के समन्वित रूप की अवतारणा की। ये एक सिद्ध कवि थे जो देश और काल की सीमाओं को लाँघ चुके थे। मानव प्रकृति के जितने रूपों का हृदयग्राही वर्णन इनके काव्य में मिलता है, वैसा अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। इनका 'श्रीरामचरितमानस' मानव संस्कृति का अमर-काव्य है।

जीवन-परिचय—गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म **सन् 1532 ई०** (भाद्रपद, शुक्ल पक्ष, एकादशी, सं० 1589 वि०) में बाँदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ था। कुछ विद्वान् इनका जन्म एटा जिले के 'सोरो' ग्राम में मानते

हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने राजापुर का ही समर्थन किया है। तुलसी सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनके पिता आत्माराम दुबे और माता हुलसी ने अभुक्त मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण इन्हें त्याग दिया था। इनका बचपन अनेकानेक आपदाओं के बीच व्यतीत हुआ। सौभाग्य से इनको बाबा नरहरिदास जैसे गुरु का वरदहस्त प्राप्त हो गया। इन्हीं की कृपा से इनको शास्त्रों के अध्ययन-अनुशीलन का अवसर मिला। स्वामी जी के साथ ही ये काशी आये थे, जहाँ परम विद्वान् महात्मा शेष सनातन जी ने इन्हें वेद-वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण आदि में निष्णात कर दिया।

तुलसी का विवाह दीनबन्धु पाठक की सुन्दर और विदुषी कन्या रत्नावली से हुआ था। इन्हें अपनी रूपवती पत्नी से अत्यधिक प्रेम था। एक बार पत्नी द्वारा बिना कहे मायके चले जाने पर अर्द्धरात्रि में आँधी-तूफान का सामना करते हुए ये अपनी ससुराल जा पहुँचे। इस पर पत्नी ने इनकी भर्त्सना की—

अस्थि चर्म मय देह मम, तामें ऐसी प्रीति।
तैसी जो श्रीराम महँ, होति न तौ भवभीति॥

अपनी पत्नी की फटकार से तुलसी को वैराग्य हो गया। अनेक तीर्थों का भ्रमण करते हुए ये राम के पवित्र चरित्र का गायन करने लगे। अपनी अधिकांश रचनाएँ इन्होंने चित्रकूट, काशी और अयोध्या में ही लिखी हैं। काशी के **असी घाट** पर **सन् 1623 ई०** (श्रावण, शुक्ल पक्ष, सप्तमी, सं० 1680 वि०) में इनकी पार्थिव लीला का संवरण हुआ। इनकी मृत्यु के सम्बन्ध में निम्नलिखित दोहा प्रसिद्ध है—

संवत सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर॥

कृतियाँ (रचनाएँ)—तुलसीदास जी द्वारा रचित **बारह ग्रन्थ** प्रामाणिक माने जाते हैं, जिनमें **श्रीरामचरितमानस** प्रमुख है। इनकी रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

(1) **श्रीरामचरितमानस**—तुलसीदास जी का यह सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पावन चरित्र के द्वारा हिन्दू जीवन के सभी महान् आदर्शों की प्रतिष्ठा हुई है।

(2) **विनयपत्रिका**—इसमें तुलसीदास जी ने कलिकाल के विरुद्ध रामचन्द्र जी के दरबार में पत्रिका प्रस्तुत की है। यह काव्य तुलसी के भक्त हृदय का प्रत्यक्ष दर्शन है।

(3) **कवितावली**—यह कवित्त-सवैया में रचित श्रेष्ठ **मुक्तक काव्य** है। इसमें रामचरित के मुख्य प्रसंगों का मुक्तकों में क्रमपूर्वक वर्णन है। यह **ब्रजभाषा** में रचित ग्रन्थ है।

(4) **गीतावली**—यह गेय पदों में ब्रजभाषा में रचित सुन्दर काव्य है। इसमें प्राय: सभी रसों का सुन्दर परिपाक हुआ है तथा अनेक राग-रागिनियों का प्रयोग मिलता है। यह रचना 230 पदों में निबद्ध है।

(5) **कृष्ण गीतावली**—यह कृष्ण की महिमा को लेकर 61 पदों में लिखा गया **ब्रजभाषा** का काव्य है।

(6) **बरवै रामायण—बरवै छन्दों** में रामचरित का वर्णन करने वाला यह एक लघु काव्य है। इसमें **अवधी भाषा** का प्रयोग किया गया है।

(7) **रामलला नहछू**—यह लोकगीत शैली में सोहर छन्दों की लघु पुस्तिका है, जो इनकी प्रारम्भिक रचना मानी जाती है।

(8) **वैराग्य संदीपनी**—इसमें सन्तों के लक्षण दिये गये हैं। इसमें तीन प्रकाश हैं। पहले प्रकाश के 6 छन्दों में **मंगलाचरण** है। दूसरे प्रकाश में **संत-महिमा** का वर्णन और तीसरे में **शान्तिभाव** का वर्णन है।

(9) **जानकी-मंगल**—इसमें सीताजी और श्रीराम के शुभविवाह के उत्सव का वर्णन है।

(10) **पार्वती-मंगल**—इसमें पूर्वी अवधी में शिव-पार्वती के विवाह का काव्यमय वर्णन है।

(11) **दोहावली**—इसमें दोहा शैली में नीति, भक्ति, नाम-माहात्म्य और राम-महिमा का वर्णन है।

(12) **रामाज्ञा प्रश्न**—यह **शकुन-विचार** की उत्तम पुस्तक है। इसमें **सात सर्ग** हैं।

साहित्य में स्थान—गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इनके द्वारा हिन्दी कविता की सर्वतोमुखी उन्नति हुई। इन्होंने अपने काल के समाज की विसंगतियों पर प्रकाश डालते हुए उनके निराकरण के उपाय सुझाये। साथ ही अनेक मतों और विचारधाराओं में समन्वय स्थापित करके समाज में पुनर्जागरण का मन्त्र फूँका। इसीलिए इन्हें समाज का पथ-प्रदर्शक कवि कहा जाता है। इनके सम्बन्ध में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने उचित ही लिखा है—

कविता करके तुलसी न लसे।
कविता लसी पा तुलसी की कला॥

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए—

धनुष-भंग

(क) उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग॥
नृपन्ह केरि आसा निसि नासी।
बचन नखत अवली न प्रकासी॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने।
कपटी भूप उलूक लुकाने॥
भए बिसोक कोक मुनि देवा।
बरसहिं सुमन जनावहिं सेवा॥
गुर पद बंदि सहित अनुरागा।
राम मुनिन्ह सन आयसु मागा॥
सहजहिं चले सकल जग स्वामी।
मत्त मंजु बर कुंजर गामी॥
चलत राम सब पुर नर नारी।
पुलक पूरि तन भए सुखारी॥
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे।
जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे॥
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं।
तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं॥

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **गोस्वामी तुलसीदास** द्वारा रचित **'कवितावली'** से संकलित है और हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' **'धनुष-भंग'** शीर्षक कविता से अद्धृत है।

[विशेष—*इस शीर्षक के शेष सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—प्रस्तुत पद्य में सभा में उपस्थित कतिपय राजाओं की स्थिति, राम की विनम्रता तथा सम्पूर्ण नगरवासियों की मनोवृत्ति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र जी के मंच पर चढ़ते ही सभा में उपस्थित अन्य राजाओं की आशारूपी रात्रि नष्ट हो गई और उनके वचनरूपी तारों के समूह का चमकना बन्द हो गया, अर्थात् वे मौन हो गए। अभिमानी राजारूपी कुमुद संकुचित हो गए और कपटी राजारूपी उल्लू छिप गए। मुनि और देवतारूपी चकवे शोकरहित अर्थात् प्रसन्न हो गए। वे फूलों की वर्षा करके अपनी सेवा-अनुग्रह प्रकट करने लगे। इसके पश्चात् श्रीरामचन्द्र जी ने अत्यधिक स्नेह के साथ अपने गुरु विश्वामित्र के चरणों की वन्दना करने के बाद वहाँ उपस्थित अन्य मुनियों से भी आज्ञा माँगी।

पुन: गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि समस्त चराचर जगत के स्वामी श्रीरामचन्द्र जी सुन्दर, मतवाले और श्रेष्ठ हाथी की चाल से चले जो कि उनकी स्वाभाविक चाल थी। श्रीरामचन्द्र जी के चलते ही सभा में उपस्थित नगर के सभी स्त्री-पुरुष प्रसन्न हो गये और उनके शरीर रोमांच से पुलकित हो गये। समस्त स्त्री-पुरुषों ने अपने पूर्वजों की वन्दना की और अपने पुण्य कर्मों का स्मरण करते हुए कहा कि हे गणेश जी! यदि हमारे किये हुए पुण्य कर्मों का किंचित् भी फल मिलता हो तो श्रीरामचन्द्र जी शिवजी के इस प्रचण्ड धनुष को कमल की नाल (दण्ड) के समान तोड़ डालें। आशय यह है कि सभा में उपस्थित कुटिल और अभिमानी राजाओं के अतिरिक्त सभी व्यक्ति यह चाहते थे कि श्रीराम इस धनुष को तोड़ दें।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** प्रस्तुत पद्यांश में इस बात का स्पष्ट वर्णन किया गया है कि नगर के समस्त नर-नारी चाहते थे कि सीता को वर रूप में राम ही प्राप्त हों। **(2) भाषा**—अवधी। **(3) शैली**—प्रबन्ध और वर्णनात्मक। **(4) रस**—भक्ति। **(5) छन्द**—दोहा। **(6) अलंकार**—रूपक और अनुप्रास अलंकार का मनमोहक प्रयोग। **(7) गुण**—प्रसाद। **(8) शब्दशक्ति**—अभिधा और व्यंजना।

(ख) सखि सब कौतुकु देखनिहारे।
जेउ कहावत हितू हमारे॥
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं।
ए बालक असि हठ भलि नाहिं॥
रावन बान छुआ नहिं चापा।
हारे सकल भूप करि दापा॥
सो धनु राजकुअँर कर देहीं।
बाल मराल कि मंदर लेहीं॥
भूप सयानप सकल सिरानी।
सखि बिधि गति कछु जाति न जानी॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी।
तेजवंत लघु गनिअ न रानी॥
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा।
सोषेउ सुजसु सकल संसारा॥
रबि मंडल देखत लघु लागा।
उदय तासु त्रिभुवन तम भागा॥

प्रसंग—प्रस्तुत पद्य में सीताजी की माता का राम के प्रति चिन्ता तथा उनकी सखी के द्वारा उन्हें समझाए जाने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि सीताजी की माता अपनी सखी से कह रही हैं कि हे सखी! ये जो हमारे हित की चिन्ता करने वाले लोग हैं, वे सब भी तमाशा ही देखने वाले हैं। कोई भी इनके गुरु (विश्वामित्र) को समझाकर यह नहीं कहता है कि ये श्रीराम बालक हैं और इनके लिए ऐसा हठ करना उचित नहीं है। रावण और बाण जैसे असुरों ने भी जिस धनुष को छुआ तक नहीं और यहाँ उपस्थित सभी राजा घमण्ड करके पराजित हो गये, वही धनुष इस सुकुमार रामचन्द्र के हाथ में दे रहे हैं। कोई इन्हें यह क्यों नहीं समझाता कि हंस के बच्चे भी कहीं मन्दराचल पर्वत को उठा सकते हैं। आशय यह है कि महादेव के जिस धनुष को रावण और बाण जैसे जगद्विजयी वीरों ने छुआ तक नहीं और दूर से ही प्रणाम करके चल दिये, उसे तोड़ने के लिए विश्वामित्र का श्रीराम को आज्ञा देना और उनका उसे तोड़ने के लिए आगे बढ़ना उनका बाल-हठ जान पड़ा। इसीलिए वे कहती है कि गुरु विश्वामित्र को कोई समझाता क्यों नहीं है।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि सीताजी की माता कहती हैं कि दूसरों की क्या कही जाए, राजा जनक तो स्वयं बड़े समझदार और ज्ञानी हैं, उन्हें तो गुरु विश्वामित्र को समझाने की चेष्टा करनी चाहिए थी, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उनका भी समस्त ज्ञान और सयानापन समाप्त हो गया है। हे सखी ! क्या करूँ, विधाता (ब्रह्मा) की गति; अर्थात् वे क्या चाहते हैं; कुछ समझ में नहीं आ रही है। इतना कहकर जब वे चुप हो जाती हैं तब उनकी एक चतुर; अर्थात् श्रीरामचन्द्र जी के महत्त्व को जानने वाली; सखी कोमल वाणी में उनसे कहती है कि "हे रानी ! देखने में छोटा होने पर भी तेज से युक्त मनुष्य को छोटा नहीं मानना चाहिए। कहाँ कुम्भज अर्थात् घड़े से उत्पन्न होने वाले छोटे से मुनि अगस्त्य और कहाँ विशाल समुद्र। लेकिन उन्होंने उस समुद्र को सोख लिया। इस कारण से उनका सुयश सम्पूर्ण संसार में छाया हुआ है। पुन: सूर्यमण्डल भी देखने में कितना छोटा लगता है, लेकिन उसके उदय होते ही तीनों लोकों (भूलोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक) का अन्धकार भाग जाता है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** छोटा जानकर योग्यता पर सन्देह नहीं किया जाना चाहिए, इसकी कवि ने तर्कयुक्त अभिव्यक्ति की है। **(2) भाषा**—अवधी। **(3) शैली**—प्रबन्ध और विवेचनात्मक। **(4) रस**—वात्सल्य। **(5) छन्द**—चौपाई। **(6) अलंकार**—अनुप्रास। **(7) गुण**—प्रसाद।

(ग) नीकें निरखि नयन भरि सोभा।
पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा॥
अहह तात दारुनि हठ ठानी।
समुझत नहिं कछु लाभु न हानी॥
सचिव सभय सिख देहि न कोई।
बुध समाज बड़ अनुचित होई॥
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा।
कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा॥
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा।
सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा॥
सकल सभा कै मति भै भोरी।
अब मोहि संभुचाप गति तोरी॥
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी।
होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी॥
अति परिताप सीय मन माहीं।
लव निमेष जुग सय सम जाहीं॥

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पद में श्रीराम के प्रति सीता जी की अनुरक्ति का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है।

व्याख्या—गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र जी की शोभा-सौन्दर्य को जी भरकर देख लेने के पश्चात् और पिताश्री के प्रण का स्मरण करके सीता जी का मन दु:खी हो जाता है। वे मन-ही-मन विचार करने लगती हैं अर्थात् स्वयं से ही कहने लगती हैं कि "ओह! पिताजी ने बहुत ही कठोर हठ ठान ली है और वे इसका कुछ भी लाभ-हानि समझ

नहीं पा रहे हैं। भयभीत होने के कारण (राजपद से) कोई भी मन्त्री उन्हें उचित सलाह नदीं दे रहा है। वस्तुत: विद्वानों की सभा में यह बड़ा ही अनुचित कार्य हो रहा है। यह धनुष तो वज्र से भी अधिक कठोर है, जिसके समक्ष ये कोमल शरीर वाले श्याम वर्ण किशोर की क्या तुलना; अर्थात् कोई समानता ही नहीं है।''

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि, जनकनन्दिनी सीता जी ब्रह्मा से कहती हैं कि ''भाग्य को लिखने वाले हे विधाता! मैं अपने हृदय में किस तरह से धैर्य धारण करूँ अर्थात् मैं धैर्य भी धारण नहीं कर सकती, क्योंकि सारी सभा की बुद्धि ही फिर गई है। वे यह भी नहीं समझ पा रहे हैं कि कहीं शिरीष के फूल के कण से हीरे को छेदा जा सकता है।'' अत: सब ओर से निराश होकर हे शिवजी के धनुष! अब मुझे केवल तुम्हारा ही सहारा है। अब तुम अपनी कठोरता लोगों पर डाल दो और श्रीरामचन्द्र जी के सुकुमार शरीर को देखकर उतने ही हल्के हो जाओ। इस प्रकार विचार करते-करते सीता जी के मन में इतना सन्ताप हो रहा है कि पलक झपकने में लगने वाले समय (निमेष) का एक अंश भी सौ युगों (समय-मापन का अत्यधिक दीर्घ परिमाण) के समान व्यतीत हो रहा है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** राम के शरीर की कोमलता का अनुभव कर ईश्वर से उन पर अनुग्रह करने की प्रार्थना की गई है। **(2) भाषा** —अवधी। **(3) शैली**—प्रबन्ध। **(4) रस**—शृंगार और भक्ति। **(5) छन्द** —दोहा। **(6) अलंकार**—अनुप्रास और उपमा। **(7) गुण**— माधुर्य और प्रसाद।

(घ) गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी।
प्रगट न लाज निसा अवलोकी॥
लोचन जलु रह लोचन कोना।
जैसे परम कृपन कर सोना॥
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानि।
धरि धीरजु प्रतीति उर आनी॥
तन मन बचन मोर पनु साचा।
रघुपति पद सरोज चितु राचा॥
तौ भगवानु सकल उर बासी।
करिहि मोहि रघुबर कै दासी॥
जैहि कें जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू॥
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना।
कृपानिधि राम सबु जाना॥
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें।
चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसें॥

उत्तर—**प्रसंग**—प्रस्तुत पद में सीताजी की राम के प्रति प्रगाढ़ प्रेमानुरक्ति का अत्यधिक सजीव वर्णन किया गया है।

व्याख्या—गोस्वामी तुलसीदास जी सीताजी की वाणी की असमर्थता को व्यक्त करते हुए आलंकारिक रूप में कह रहे हैं कि सीता जी की वाणी रूपी भ्रमरी को उनके मुख रूपी कमल ने रोक रखा है। आशय यह है कि उनके मुख से आवाज ही नहीं निकल पा रही है। लज्जा रूपी रात्रि को सम्मुख देखकर भी वह प्रकट नहीं हो पा रही है। नेत्रों का जल नेत्रों के कोने में उसी प्रकार रुक गया है जैसे अत्यधिक कंजूस का गड़ा हुआ सोना गड़ा ही रह जाता है। आशय यह है कि सीता जी अपनी असमर्थता को आँसुओं के द्वारा प्रकट करने में भी अक्षम हैं। अपनी इस बढ़ी हुई व्याकुलता को समझकर सीता जी प्रीतिपूर्वक संकोच करने लगीं। तत्पश्चात् उन्होंने हृदय में धैर्य धारण करके मन में विश्वास किया कि यदि तन, मन और वचन स्त्रे मेरा प्रण सच्चा है और श्रीरामचन्द्र जी के चरण-कमलों में मेरा हृदय वास्तव में अनुरक्त है, तो सभी के हृदय में निवास करने वाले ईश्वर मुझे उन रघुकुल श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र जी की दासी अवश्य ही बनाएँगे; क्योंकि जिस किसी पर भी जिस किसी का सच्चा स्नेह होता है, वह उसे मिलता ही है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि प्रभु श्रीरामचन्द्र जी की ओर देखकर सीता जी ने शरीर के द्वारा अपने प्रेम का निश्चय कर लिया अर्थात् अब यह शरीर या तो इन्हीं (श्रीराम) का होकर रहेगा या रहेगा ही नहीं। उनके इस निश्चय को कृपानिधान श्रीरामचन्द्र जी तुरन्त जान गए। इसके पश्चात् उन्होंने सीता जी की ओर देखकर धनुष की ओर इस प्रकार देखा जैसे गरुड़ छोटे से सर्प की ओर देखता है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** राम के प्रति सीता की अनुरक्ति का आलंकारिक वर्णन है। **(2) भाषा**—अवधी। **(3) शैली**— प्रबन्ध और चित्रात्मक। **(4) रस**—शृंगार व भक्ति। **(5) छन्द**—दोहा। **(6) अलंकार** —सर्वत्र अनुप्रास, रूपक व उपमा का मंजुल प्रयोग। **(7) गुण**—माधुर्य और प्रसाद।

(ङ) दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला।
धरहु धरनि धरि धीर न डोला॥

राम चहहिं संकर धनु तोरा।
होहु सजग सुनि आयसु मोरा॥
चाप समीप रामु जब आए।
नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए॥
सब कर संसउ अरु अग्यानू।
मंद महीपन्ह कर अभिमानू॥
भृगुपति केरि गरब गरु आई ।
सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई॥
सिय कर सोचु जनक पछितावा।
रानिन्ह कर दारुन दुख दावा॥
संभुचाप बड़ बोहितु पाई।
चढ़े जाइ सब संगु बनाई॥
राम बाहुबल सिंधु अपारू।
चहत पारु नहिं कोउ कड़हारू॥

प्रसंग—प्रस्तुत पद में लक्ष्मण की सामर्थ्य और राम के ईश्वरत्व गुणों से युक्त होने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—गोस्वामी तुलसीदास जी कह रहे हैं कि लक्ष्मण जी ने कहा—हे दिग्गजो ! हे कच्छप ! हे शेषनाग ! हे वाराह ! धैर्य धारण करके इस पृथ्वी को इस प्रकार पकड़े रखो, जिससे यह हिलने न पाये। श्रीरामचन्द्र जी शंकर जी के धनुष को तोड़ना चाहते हैं, इसलिए आप सभी लोग मेरी इस आज्ञा को सुनकर सावधान हो जाइए। श्रीरामचन्द्र जी जब शंकर जी के धनुष के समीप आये तब सभी उपस्थित स्त्री-पुरुषों ने देवताओं और अपने पुण्यों को मनाया अर्थात् उनका स्मरण किया। सभी का सन्देह और अज्ञान, मामूली अर्थात् तुच्छ राजाओं का अभिमान, परशुराम जी के गर्व की गुरुता, देवताओं और श्रेष्ठ मुनियों की भय कातरता, सीता जी का विचार, जनक का पश्चात्ताप और समस्त रानियों के दारुण दु:ख का दावानल; ये सभी शिवजी के धनुष रूपी बड़े जहाज को प्राप्त करके समूह बनाकर उसके ऊपर चढ़कर और श्रीरामचन्द्र जी की भुजाओं के बल रूपी अपार समुद्र के पार जाना चाहते हैं, लेकिन उनके साथ कोई नाविक नहीं है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** राम-लक्ष्मण देवत्व के गुणों से युक्त थे, इसका आभास कराया गया है। **(2) भाषा**—अवधी। **(3) शैली**—प्रबन्ध। **(4) रस**—वीर और शान्त। **(5) छन्द**—चौपाई। **(6) अलंकार**—अनुप्रास। **(7) शब्द-शक्ति**—अभिधा और लक्षणा। **(8) गुण**—ओज और प्रसाद।

(च) देखि बिपुल बिकल बैदेहि।
निमिष बिहात कलप सम तेही॥
तृषित बारि बिन जो तनु त्यागा।
मुएँ करइ का सुधा तड़ागा॥
का बरषा सब कृषी सुखानें।
समय चुकें पुनि का पछितानें॥
अस जियँ जानि जानकी देखी।
प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी॥
गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा।
अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा॥
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ।
पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें।
काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें॥
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा।
भरे भुवन धुनि घोर कठोरा॥

प्रसंग—प्रस्तुत पद में सीता जी का राम के प्रति प्रेम और शिव-धनुष के टूटने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र जी ने सीताजी को बहुत ही व्याकुल देखा। उन्होंने अनुभव किया कि उनका एक-एक क्षण एक-एक कल्प (चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष : 4,32,00,00,000) के समान व्यतीत हो रहा था। यदि प्यासा व्यक्ति पानी न मिलने पर अपना शरीर छोड़ दे, तो उसके चले जाने पर अमृत का तालाब भी क्या करेगा, सारी खेती के सूख जाने पर वर्षा किस काम की, समय के बीत जाने पर फिर पछताने से क्या लाभ। आशय यह है कि समय के व्यतीत होने पर सब कुछ व्यर्थ हो जाता है। अपने हृदय में ऐसा विचार करके श्रीरामचन्द्र जी ने सीताजी की ओर देखा और उनका अपने प्रति विशेष प्रेम देखकर वे हर्ष से विह्वल हो उठे। मन-ही-मन उन्होंने गुरु विश्वामित्र को प्रणाम किया और अत्यधिक स्फूर्ति के साथ धनुष को उठा लिया। जैसे ही उन्होंने धनुष को अपने हाथ में उठाया, वह उनके हाथ में बिजली की तरह चमका और आकाश में मण्डलाकार हो गया। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि सभा में उपस्थित लोगों में से किसी ने भी श्रीरामचन्द्र जी को धनुष उठाते, चढ़ाते और जोर से खींचते हुए नहीं देखा; अर्थात् ये तीनों ही काम इतनी शीघ्रता से हुए कि इसका किसी को पता ही नहीं लगा। सभी ने श्रीरामचन्द्र जी को मात्र खड़े देखा और उसी क्षण उन्होंने धनुष को बीच से तोड़ डाला। धनुष के टूटने की ध्वनि इतनी भयंकर हुई कि वह तीनों लोकों को व्याप्त हो गयी।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** राम-सीता के पारस्परिक प्रेम की सार्थक अभिव्यक्ति हुई है। **(2) भाषा**—अवधी। **(3) शैली** —प्रबन्ध और सूक्तिपरक। **(4) रस**— शृंगार और अद्‌भुत। **(5) छन्द**—दोहा। **(6) अलंकार**—अनुप्रास और उत्प्रेक्षा। **(7) गुण**—माधुर्य। **(8) शब्दशक्ति**—अभिधा और लक्षणा।

(छ) भरे भुवन घोर रव रबि बाजि ताजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं॥
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारही॥

उत्तर—**प्रसंग**—प्रस्तुत पद में तुलसीदास जी ने धनुष टूटने के बाद उत्पन्न हुई स्थिति का अत्यधिक आलंकारिक वर्णन किया है।

व्याख्या—गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि धनुष टूटने का घोर-कठोर शब्द त्रैलोक्य में व्याप्त हो गया जिससे सूर्य के घोड़े अपना नियत मार्ग छोड़कर चलने लगे, आठों दिशाओं में स्थित आठ दिग्गज अर्थात् दिशाओं की रक्षा करने वाले आठ हाथी चिंघाड़ने लगे, सम्पूर्ण पृथ्वी डोलने लगी; शेषनाग, वाराह और कछुआ भी बेचैन हो उठे; देवता, राक्षसगण और मुनिजन कानों पर हाथ रखकर (जिससे ध्वनि सुनाई न पड़े) व्याकुल होकर विचार करने लगे कि यह क्या हो रहा है। अन्ततः जब सभी को इस बात का निश्चय हो गया कि श्रीरामचन्द्र जी ने शंकर जी के धुनष को तोड़ दिया है, तब सब उनकी जय-जयकार करने लगे।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** धनुष टूटने के बाद की स्थिति का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है। **(2) भाषा** —अवधी। **(3) शैली** —प्रबन्ध व चित्रात्मक। **(4) रस**—अद्‌भुत। **(5) छन्द**—सवैया। **(6) अलंकार**—अनुप्रास और अतिशयोक्ति। **(7) गुण**—ओज। **(8) शब्दशक्ति**—अभिधा और लक्षणा।

वन-पथ पर

(क) पुर ते निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै॥
फिरि बूझति हैं- ''चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौ कित ह्वै?''
तिय कि लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै॥

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्यांश **गोस्वामी तुलसीदास** द्वारा रचित **'कवितावली'** से संकलित है और हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' 'वन-पथ पर' शीर्षक कविता से उद्‌धृत है।

प्रसंग—कवि ने इन पंक्तियों में अयोध्या से पैदल ही वन को जाती हुई सीता जी की थकावट का मार्मिक वर्णन किया है।

व्याख्या—राम, लक्ष्मण और सीता बड़े धीरज के साथ शृंगवेरपुर से आगे दो कदम ही चले थे कि सीता जी के माथे पर पसीने की बूँदें झलकने लगीं और उनके सुन्दर होंठ थकान के कारण सूख गए। तब सीता जी ने अपने प्रियतम राम से पूछा—अभी हमें कितनी दूर और चलना पड़ेगा? कितनी दूरी पर पत्तों की कुटिया बनाकर रहेंगे? अन्तर्यामी श्रीराम, सीता जी की व्याकुलता का कारण तुरन्त समझ गए कि वे बहुत थक चुकी हैं और विश्राम करना चाहती हैं। राजमहल का सुख भोगने वाली अपनी पत्नी की ऐसी दशा देखकर श्रीराम के सुन्दर नेत्रों से आँसू टपकने लगे।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** प्रस्तुत पद में सीता जी की सुकुमारता का मार्मिक वर्णन किया गया है। **(2)** सीता के प्रति राम के प्रेम की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। **(3) भाषा**—सरस एवं मधुर ब्रज। 'दये मग में डग द्वै' मुहावरे का उत्कृष्ट प्रयोग है। इसी के कारण अत्युक्ति अलंकार भी है। **(4) शैली**—चित्रात्मक और मुक्तक। **(5) छन्द**—सवैया। **(6) अलंकार** —माथे पर पसीने की बूँदों के आने, होंठों के सूख जाने में **स्वभावोक्ति** तथा 'केतिक पर्णकटी करिहौ कित' में **अनुप्रास**। **(7) शब्दशक्ति**—लक्षणा एवं व्यंजना। **(8) रस**—शृंगार। **(9) गुण** —प्रसाद एवं माधुर्य।

(ख) ''जल को गए लक्खन हैं लरिका,
परिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं,
अरु पायँ पखरिहौं भूभुरि डाढ़े॥''
तुलसी रघुवीर प्रिया स्रम जानी कै,

बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकी नाह को नेह लख्यौ,
पुलको तनु बारि बिलोचन बाढ़े॥

प्रसंग—इन पंक्तियों में गोस्वामी जी ने सीताजी की सुकुमारता और उनके प्रति राम के असीम प्रेम का सहज चित्रण किया है।

व्याख्या—सीताजी शृंगवेरपुर से आगे चलने पर थक जाती हैं। वे विश्राम करने की इच्छा करती हैं। वे श्रीराम से कहती हैं कि लक्ष्मण पानी लेने गए हैं, इसलिए घड़ी भर किसी पेड़ की छाया में खड़े होकर उनकी प्रतीक्षा कर लेनी चाहिए। इतनी देर मैं आपका पसीना पोंछकर हवा कर दूँगी तथा गर्म रेत पर चलने से आपके पाँव जल गये होंगे, उन्हें मैं धो दूँगी। श्री रामचन्द्र जी यह सुनकर समझ गए कि सीताजी थक चुकी हैं और स्वयं विश्राम करने के लिए कहने में सकुचा रही हैं। इसलिए वे बैठ गए और बड़ी देर तक (सीताजी को अधिक समय विश्राम देने के उद्देश्य से) बैठकर उनके पैरों में चुभे हुए काँटे निकालते रहे। अपने प्रति पति का ऐसा प्रेम देखकर सीताजी पुलकित हो गयीं और उनकी आँखों से प्रेम के आँसू टपकने लगे।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** तुलसीदास जी ने विपत्ति के समय श्रीराम और सीता के एक-दूसरे के प्रति प्रेम और समर्पित भाव का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है, जो कि दाम्पत्य जीवन का एक आदर्श उपस्थित करता है। **(2)** गोस्वामी जी ने सीताजी और श्रीराम की भावनाओं का पारस्परिक आदान-प्रदान बहुत दक्षता से प्रस्तुत किया है। **(3) भाषा**—ब्रज। **(4) शैली**—मुक्तक। **(5) छन्द**—सवैया। **(6) रस**—शृंगार। **(७) अलंकार**—अनुप्रास। **(8) गुण**—माधुर्य। **(9) शब्दशक्ति**—लक्षणा एवं व्यंजना।

(ग) रानी मैं जानी अजानी महा,
पबि पाहन हूँ ते कठोर हियो है।
राजहु काज अकाज न जान्यो, काह्यो
तिय को जिन कान कियो है॥
ऐसी मनोहर मूरति ये, बिछुरे कैसे
प्रीतम लोग जियो है?
आँखिन में सखि! राखिबे जोग, इन्हें
किमि कै बनबास दियो है?॥

उत्तर—**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवि ने ग्रामीण स्त्रियों के द्वारा कैकेयी और राजा दशरथ की निष्ठुरता पर व्यक्त प्रतिक्रिया को चित्रित किया है।

व्याख्या—वन-गमन के समय रास्ते में स्थित एक गाँव की स्त्रियाँ राम, लक्ष्मण और सीता के सौन्दर्य तथा कोमलता को देखकर रानी कैकेयी को अज्ञानी और वज्र तथा पत्थर से भी कठोर हृदय वाली नारी बताती हैं; क्योंकि उसे सुकुमार राजकुमारों को वनवास देते समय तनिक भी दया न आई। वे राजा दशरथ को भी विवकहीन समझकर पत्नी के कहे अनुसार कार्य करने वाला ही समझती हैं और राजा में उचित-अनुचित के ज्ञान की कमी मानती हैं। उन्हें आश्चर्य है कि इन सुन्दर मूर्तियों से बिछुड़कर इनके प्रियजन कैसे जीवित रहेंगे? हे सखी! ये तीनों तो आँखों में बसाने योग्य हैं, तब इन्हें किस कारण वनवास दिया गया है?

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** यहाँ कवि ने ग्रामीण बालाओं की श्रीराम के प्रति सहृदयता का सुन्दर चित्रण किया है। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3)**' कान भरना' और 'आँखों में रखना' जैसे मुहावरों का समावेश। **(4) शैली**—मुक्तक। **(5) छन्द**— सवैया। **(6) रस**—करुण एवं शृंगार। **(7) अलंकार**—'जानी अजानी महा' में **अनुप्रास,** 'काज अकाज' में **सभंगपद यमक**। **(8) गुण**—माधुर्य। **(9) शब्दशक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना।

(घ) सीस जटा, उर बाहु बिसाल, बिलोचन लाल तिरछी सी भौहें।
तून सरासन बान धरे, तुलसी बन-मारग में सुठि सोहैं॥
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यों हमरो मन मोहँ।
पूछति ग्राम बधू सिय सो 'कहौ साँवरै से, सखि रावरे को हैं?॥

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्यांश **गोस्वामी तुलसीदास** द्वारा रचित **'कवितावली'** से संकलित है और हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' 'वन-पथ पर' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में ग्रामवधुएँ सीता जी को घेरकर एक ओर बैठे हुए श्रीराम के विषय में विनोद करती हुई उनसे प्रश्न पूछ रही हैं।

व्याख्या—ग्रामवधुएँ सीता जी से पूछ रही हैं कि जो सिर पर जटा धारण किए हुए हैं, जिनके वक्षस्थल और भुजाएँ विशाल हैं, नेत्र लाल हैं तथा भौंहें तिरछी-सी हैं, जो तरकस, धनुष और बाण धारण किए हुए इस वन-मार्ग में बहुत शोभायमान हो रहे हैं, जो सहज-स्वाभाविक रूप में बड़े सम्मान के साथ बार-बार तुम्हारी ओर देखते हुए हमारा मन भी आकर्षित कर रहे हैं, हे सखी! तुम हमें यह बताओ कि ये सुन्दर साँवले रूप वाले (राम) तुम्हारे कौन लगते हैं?

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** ग्रामवधुओं ने सीता जी से बहुत सात्विक विनोद से परिपूर्ण स्वाभाविक प्रश्न किया है। ग्राम-वधुओं का वाक्-चातुर्य दर्शनीय है। स्त्रियों की बातों में जो स्वाभाविक व्यंजना होती है, उसका बड़ा ही मनोवैज्ञानिक चित्रण है। **(2)** यहाँ श्रीराम के रूप और मुद्रा का सुन्दर वर्णन हुआ है। **(3) भाषा**—सुकोमल ब्रज। **(4) शैली**—मुक्तक। **(5) छन्द**—सवैया। **(6) रस**—शृंगार। **(7) अलंकार**—सर्वत्र अनुप्रास। **(8) गुण**—माधुर्य। **(9) शब्दशक्ति**—व्यंजना।

(ङ) सुनि सुन्दर बैन सुधारस-साने,
सयानी हैं जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन दै सैन तिन्हें
समुझाई कछू मुसकाइ चली॥
तुलसी तेहि औसर सोहै सबै
अवलोकित लोचन-लाहु अली॥
अनुराग-तड़ाग में भानु उदै
बिगसीं मनो मजुल कंज-कली॥

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्यांश **गोस्वामी तुलसीदास** द्वारा रचित **'कवितावली'** से संकलित है और हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' 'वन-पथ पर' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में ग्रामवधुाओं के प्रश्न का उत्तर देती हुई सीता जी अपने हाव-भावों से ही राम के विषय में सबकुछ बता देती हैं।

व्याख्या—ग्रामवधुओं ने राम के विषय में सीता जी से पूछा कि 'ये साँवले और सुन्दर रूप वाले तुम्हारे क्या लगते हैं?' ग्रामवधुओं के अमृत जैसे मधुर वचनों को सुनकर चतुर सीता जी उनके मनोभावों को समझ गई। सीता जी ने उनके प्रश्न का उत्तर अपनी मुस्कराहट तथा संकेतभरी दृष्टि से ही दे दिया, उन्हें मुख से कुछ बोलने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। उन्होंने स्त्रियोचित लज्जा के कारण केवल संकेत से ही राम के विषय में यह समझा दिया कि ये मेरे पति हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि सीता जी के संकेत को समझकर सभी सखियाँ राम के सौन्दर्य को एकटक देखती हुई अपने नेत्रों का लाभ प्राप्त करने लगीं। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो प्रेम के सरोवर में रामरूपी सूर्य का उदय हो गया हो और ग्रामवधुओं के नेत्ररूपी कमल की सुन्दर कलियाँ खिल गई हों।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** सीता जी का संकेतपूर्ण उत्तर भारतीय नारी की मर्यादा तथा 'लब्ध: नेत्र निर्वाण:' की भावना के अनुरूप है। **(2)** प्रस्तुत पद में 'नाटकीयता और काव्य' का सुन्दर योग है। **(3) भाषा** —सुललित ब्रज। **(4) शैली**— चित्रात्मक व मुक्तक। **(5) छन्द**—सवैया। **(6) रस**—श्रृंगार। **(7) अलंकार**—'सुनि सुन्दर बैन सुधारस साने, सयानी हैं जानकी जानी भली' में **अनुप्रास,** 'अनुराग-तड़ाग में भानु उदै बिगसीं मनो मंजुल कंज कली' में **रूपक, उत्प्रेक्षा** और **अनुप्रास** की छटा है। **(8) गुण** —माधुर्य। **(9) शब्दशक्ति**—व्यंजना।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पदों में सनाम समास-विग्रह कीजिए—

पद कमल, चारिभुज, सुलोचनि, मखशाला, त्रिभुवन, दस बदन, राम-लषन।

उत्तर—

समस्तपद	समास-विग्रह	समास-नाम
पद कमल	पदरूपी कमल	कर्मधारय
चारिभुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात् विष्णु	बहुब्रीहि
सुलोचनि	सुन्दर लोचन वाली है जो अर्थात् सीता	बहुब्रीहि
मखशाला	मख (यज्ञ) के लिए शाला	चतुर्थी तत्पुरुष
त्रिभुवन	त्रि (तीन) भुवनों का समूह	द्विगु
दस बदन	दस वदन (मुख) हैं, जिसके अर्थात् रावण	बहुब्रीहि
राम-लषन	राम और लषन (राम और लक्ष्मण)	द्वन्द्व

प्रश्न 2. 'वन-पथ पर' कविता किस छन्द में लिखी गई है? सलक्षण लिखिए।

उत्तर—यह कविता सवैया छन्द में लिखी गई है। 22 से 26 तक के वर्णवृत्त 'सवैया' कहलाते हैं। मत्तगयन्द तथा सुन्दरी इसके भेद हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस और उसका स्थायी भाव लिखिए—

(क) देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिचोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर।।

उत्तर—**(क) रस**—श्रृंगार, **स्थायी भाव**—रति।

(ख) भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं।।

उत्तर—**(ख) रस**—अद्‌भुत, **स्थायी भाव**—आश्चर्य।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखकर उनका स्पष्टीकरण भी दीजिए—

(क) भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बवन उचारहीं।।

उत्तर—विभिन्न वर्णों; जैसे—भ, र, ज, ह, क, ल आदि; की आवृत्ति होने के कारण इस पद में सर्वत्र अनुप्रास अलंकार है। मात्र धनुष टूटने के कारण त्रैलोक्य में खबलबली मच गई। इस वर्णन को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने के कारण अतिशयोक्ति अलंकार है।

(ख) सुनि सुन्दर बैन सुधारस-साने,
सयानी हैं जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन दै सैन, तिन्हैं,
समुझाई कछू मुसकाइ चली।।
तुलसी तेहि औसर सोहैं, सबै
अवलोकति लोचन-लाहु अली।
अनुराग-तड़ाग में भानु उदै,
बिगसीं मनों मंजुल कंज-कली।।

उत्तर—विभिन्न वर्णों; जैसे—स, न, ज, ल, त आदि; की आवृत्ति होने के कारण इस पद में पर्वत्र अनुप्रास अलंकार है। ''अनुराग-तड़ाग में भानु उदै'' में उपमेय और उपमान की अभिन्नता के कारण **रूपक** तथा ''बिगसी मनो मंजुल'' में उपमेय की उपमान के रूप में सम्भावना के कारण **उत्प्रेक्षा** अलंकार है।

❑

3 सवैये, कवित्त

(रसखान)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. डॉ० नगेन्द्र ने रसखान के जन्म के समय और स्थान के विषय में क्या प्रमाण प्रस्तुत किए हैं?

उत्तर—डॉ० नगेन्द्र के अनुसार, रसखान का जन्म 1533 ई० के आस-पास दिल्ली के समीपवर्ती क्षेत्र में हुआ था।

प्रश्न 2. रसखान किस भक्तिशारा के कवि थे?

उत्तर—रसखान कृष्णभक्ति शाखा के कवि थे।

प्रश्न 3. रसखान का वास्तविक नाम क्या था?

उत्तर—रसखान का वास्तविक नाम सैयद इब्राहिम था।

प्रश्न 4. रसखान ने सुजान किसे कहा है?

उत्तर—रसखान ने जीवन को सुजान कहा है।

प्रश्न 5. रसखान की मुख्य कृतियों के नाम लिखिए।

उत्तर—रसखान की मुख्य कृतियाँ हैं—

(1) प्रेमवाटिका (2) सुजान-रसखान।

प्रश्न 6. रसखान की मृत्यु कब हुई?

उत्तर—रसखान की मुत्यु 1618 ई० के लगभग हुई।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रसखान का जीवन-परिचय और रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—हिन्दी काव्य की श्रीवृद्धि न जाने कितने ही मुसलमान कवियों के द्वारा की गयी, किन्तु इन सभी कवियों में रसखान जैसा सुकोमल, सरस

और ललित काव्य किसी का भी नहीं है। इन्हें अत्यधिक भावुक कवि-हृदय मिला था, जिसके कारण ये श्रीकृष्ण के दीवाने हो गए थे। इनके हृदय से निकला हुआ समस्त काव्य रस और भाव से आकुल कर देने वाला है। कृष्ण-भक्ति शाखा के ये अद्वितीय कवि माने जाते हैं।

डॉ० नगेन्द्र के 'हिन्दी-साहित्य के इतिहास' के अनुसार इन पंक्तियों में उल्लिखित 'गदर' और 'दिल्ली' के श्मशान बन जाने का समय विद्वानों ने 1555 ई० अनुमानित किया है; क्योंकि इसी वर्ष मुगल-सम्राट् हुमायूँ ने दिल्ली के सूरवंशीय पठान शासकों से अपना खोया हुआ शासनाधिकार पुन: हस्तगत किया था। इस अवसर पर भयंकर नर-संहार और विध्वंस होना स्वाभाविक था और कवि-प्रकृति के कोमलहृदय रसखान द्वारा उस 'गदर' के ताण्डव रूप को देखकर विरक्त हो जाना भी अस्वाभाविक नहीं। कवि ने जिस 'बादशाह-वंश' की 'ठसक' का त्याग किया, वह वही पठान (सूर) वंश प्रतीत होता है, जिसके शासन का उदय शेरशाह सूरी के साथ 1528 ई० में हुआ और अन्त इब्राहीम खाँ तथा अहमद खाँ की पारस्परिक कलह के कारण 1555 ई० में हुआ। इस 'गदर' के समय रसखान की आयु यदि बीस-बाईस वर्ष मान ली जाए तो उनका जन्म 1533 ई० के आस-पास स्वीकार किया जा सकता है। कुछ समय पहले तक यह माना जाता रहा है कि 'रसखान' पिहानी के सैयद इब्राहीम का ही उपनाम था, किन्तु परवर्ती अनुसन्धानों के आधार पर यह धारणा मिथ्या सिद्ध हो चुकी है। 'प्रेमवाटिका' में स्वयं कवि द्वारा दिल्ली छोड़कर गोवर्धन-धाम जाने के उल्लेख से उनका जन्मस्थान एवं प्रारम्भिक निवास दिल्ली अथवा उसके आस-पास ही मानना उपयुक्त है। इनका अधिकांश जीवन ब्रजभूमि में व्यतीत हुआ। यही कारण है कि ये कंचन धाम को भी वृन्दावन के करील-कुंजों पर न्योछावर करने और अपने लगले जन्मों में ब्रज में शरीर धारण करने की कामना करते थे। कृष्णभक्त कवि रसखान की मृत्यु सन् 1618 ई० (सं० 1675 वि०) के लगभग हुई।

कृतियाँ (रचनाएँ)—रसखान की निम्नलिखित दो रचनाएँ प्रसिद्ध हैं—

(1) सुजान रसखान—इसकी रचना कवित्त और सवैया छन्दों में की गयी है। यह भक्ति और प्रेम-विषयक मुक्तक काव्य है। इसमें 139 भावपूर्ण छन्द हैं।

(2) प्रेमवाटिका—इसमें 25 दोहों में प्रेम के त्यागमय और निष्काम स्वरूप का काव्यात्मक वर्णन है तथा प्रेम का पूर्ण परिपाक हुआ है।

साहित्य में स्थान—रसखान का स्थान भक्त-कवियों में विशेष महत्त्वपूर्ण है। इनके बारे में **डॉ० विजयेन्द्र स्नातक** ने लिखा है, ''इनके भक्ति हृदय की मुक्त साधना है और इनका शृंगार वर्णन भावुक हृदय की उन्मुक्त अभिव्यक्ति है। इनके काव्य इनके स्वच्छन्द मन के सहज उद्‌गार हैं।'' यही कारण है कि इन्हें स्वच्छन्द काव्य-धारा का प्रवर्तक भी कहा जाता है। इनके काव्य में भावनाओं की तीव्रता, गहनता और तन्मयता को देखकर भारतेन्दु जी ने कहा था—'**इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिन्दू वारिये।**'

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए–

सवैये

(क) मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौ ब्रज गोकुल के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरौ, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धरयौ कर छत्र पुरंदर-धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कांलिदी-कदंब की डारन।।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत सवैया कविवर **रसखान** द्वारा रचित '**रसखानि-ग्रन्थावली**' से हमारी पाठ्य-पुस्तक के '**काव्य-खण्ड**' में संकलित '**सवैये**' शीर्षक से उद्‌धृत है।

[विशेष—*इस शीर्षक के शेष सभी पद्यों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—इस छन्द में भक्तकवि रसखान ने श्रीकृष्ण की निकटता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा प्रकट की है।

व्याख्या—कवि रसखान कहते हैं कि मृत्यु के पश्चात् यदि मेरा जन्म फिर से मनुष्य के रूप में हो तो मेरी कामना यही है कि मैं ब्रज और गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच में निवास करूँ। यदि मेरा जन्म पशु के रूप में हो तो मेरा कोई वश नहीं होगा, किन्तु मेरी इच्छा है कि मैं सदैव नन्द जी की गायों के बीच में चरा करूँ। यदि मेरा पुनर्जन्म एक पत्थर के रूप में हो तो मैं उसी गोवर्द्धन पर्वत का पत्थर बनूँ, जिसे श्रीकृष्ण ने इन्द्र के गर्व को चूर करने के लिए छत्र की तरह उठा लिया था। यदि मेरा जन्म एक पक्षी के रूप में हो तो मेरी इच्छा है कि मैं यमुना के किनारे पर स्थित, कदम्ब की डाल पर बसेरा करूँ। तात्पर्य यह है कि रसखान, किसी भी रूप में श्रीकृष्ण की समीपता प्राप्त करना चाहते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) रसखान ने यहाँ अपने कृष्ण-प्रेम की अद्‌भुत अभिव्यक्ति की है। वे अगले जन्म में कृष्ण की प्रिय वस्तुओं एवं गोकुल के निर्जीव पत्थर तक के रूप में प्राप्त करने की कामना करते हैं। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3) रस**—शान्त। **(4) गुण**—प्रसाद। **(5) अलंकार**—अनुप्रास। **(6) छन्द**—सवैया।

(ख) आजु गयी हुती भोर ही हौं, रसखानि रई वहि नंद के भौनहिं।
वाको जियौ जुग लाख करोर, जसोमति को सुख जात कह्यौ नहिं।।
तेल लगाइ लगाइ कै अंजन, भौंहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं।
डारि हमेलनि हार निहारत, वारत ज्यौं पुचकारत छौनहिं।।

प्रसंग—इस पद्य में कवि ने श्रीकृष्ण के प्रति यशोदा के वात्सल्य भाव का चित्रण किया है।

व्याख्या—एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि हे सखी ! आज प्रात:काल के समय श्रीकृष्ण के प्रेम में मग्न हुई मैं नन्द जी के घर गयी थी। मेरी कामना है कि उनका पुत्र श्रीकृष्ण लाखों-करोड़ों युगों तक जीवित रहे। यशोदा के सुख के बारे में कुछ कहते नहीं बनता है अर्थात् उनको अवर्णनीय सुख की प्राप्ति हो रही है। वे अपने पुत्र का शृंगार कर रही थीं। वे श्रीकृष्ण के शरीर में तेल लगाकर आँखों में काजल लगा रही थीं। उन्होंने उनकी सुन्दर-सी भौंहें सँवारकर बुरी नजर से बचाने के लिए माथे पर टीका (डिठौना) लगा दिया था। वे उनके गले में सोने का हार डालकर और एकाग्रता से उनके रूप को निहारकर अपने जीवन को न्योछावर कर रही थीं और प्रेमावेश में बार-बार अपने पुत्र को पुचकार रही थीं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) प्रस्तुत छन्द में माता यशोदा के वात्सल्य-भाव और श्रीकृष्ण के प्रात:कालीन शृंगार का अनुपम वर्णन किया गया है। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3) शैली**—चित्रात्मक और मुक्तक। **(4) रस**—वात्सल्य। **(5) छन्द**—सवैया। **(6) अलंकार**—यमक, अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश। **(7) गुण**—प्रसाद।

(ग) धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैंजनी बाजति पीरी कछोटी।।
वा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बडे सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत सवैये में कविवर रसखान ने कृष्णा के बाल-सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन किया है।

व्याख्या—एक सखी दूसरी सखी से श्रीकृष्ण के बाल-सौन्दर्य का वर्णन करती हुई कहती है कि श्रीकृष्ण धूल से भरे हुए अत्यधिक सुन्दर लग रहे हैं। उनके सिर पर सुन्दर चोटी बनी हुई है। वे अपने घर के आँगन में खेलते और खाते हुए घूम रहे हैं। उनके पैरों में पायल बज रही है। उन्होंने पीला कच्छा पहला हुआ है। श्रीकृष्ण की इस सुन्दरता को देखकर कामदेव भी अपनी करोड़ों कलाओं को न्यौछावर कर देता है। हे सखी! उस कौए के भाग्य की कितनी सराहना की जाए (वह कौआ तो बड़ा भाग्यवान् है) जो श्रीकृष्ण के हाथ से मक्खन और रोटी छीनकर ले गया।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** प्रस्तुत पंक्तियों में रसखान ने श्रीकृष्ण के बाल रूप का अत्यधिक मोहक चित्र प्रस्तुत किया है। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3) रस**—शृंगार। **(4) गुण**—माधुर्य। **(5) अलंकार**—अनुप्रास। **(6) छन्द**—सवैया।

(घ) कान्ह भये बस बाँसुरी के, अब कौन सखी, हमको चहिहै।
निसद्यौस रहै संग-साथ लगी, यह सौतिन तापन क्यौ सहिहै॥
जिन मोहि लियौ मनमोहन कौं, रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आओ सबै सखी, भागि चलैं अब तो ब्रज मैं बाँसुरी रहिहै॥

उत्तर—**प्रसंग**—प्रस्तुत पद में गोपियों का श्रीकृष्ण की बाँसुरी के प्रति सौतिया डाह प्रकट हुआ है।

व्याख्या—एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि हे सखी! श्रीकृष्ण तो बाँसुरी के वश में हो गए हैं, अब हमें कौन चाहेगा और कौन प्रेम करेगा? यह बाँसुरी तो रात और दिन श्रीकृष्ण के साथ लगी रहती है। इस सौतन के द्वारा दिए गए दु:खों को हम कैसे सहन करेंगे? जिस बाँसुरी ने मनमोहन श्रीकृष्ण को भी मोहित कर लिया है, वही बाँसुरी हमें सदैव जलाती रहती है। हे सखी! आओ हम सब मिलकर इस ब्रज से भाग चलें; क्योंकि अब तो ब्रज में श्रीकृष्ण के साथ केवल यह बाँसुरी ही रहेगी।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** यहाँ रसखान ने बाँसुरी के प्रति गोपियों के सौतिया डाह का सुन्दर वर्णन किया है। **(2) भाषा**—मुहावरेदार ब्रज। **(3) रस**—शृंगार। **(4) गुण**—माधुर्य। **(5) छन्द**—सवैया। **(6) अलंकार**—रूपक और अनुप्रास। **(7) भावसाम्य**—सूरदास ने भी मुरली के प्रति गोपियों की ईर्ष्या के अनेक सुन्दर चित्र खींचे हैं।

(ङ) मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी, बन गोधन ग्वारन संग फिरौंगी॥
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो तेरे कहैं सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

उत्तर—**प्रसंग**—प्रस्तुत सवैया अत्यधिक मार्मिक अनुभूतियों को सँजोए हुए है। श्रीकृष्ण के वियोग में व्याकुल गोपियों ने श्रीकृष्ण का रूप धारण किया हुआ है। इस प्रकार वे स्वयं को धैर्य और सान्त्वना देने का प्रयास कर रहीं हैं।

व्याख्या—एक गोपी कहती है कि मैं तुम्हारे संकेत पर मोर के पंख को अपने सिर पर धारण कर लूँगी, गुंजाओं की माला को अपने गले में पहन लूँगी। पीताम्बर को ओढ़कर, लकड़ी को लेकर मैं जंगल में गायों और ग्वालों के साथ भी घूमूँगी। तुम्हारे कहने पर मैं उन सारी लीलाओं को करने के लिए तैयार हूँ, जो रस की खान श्रीकृष्ण को अच्छी लगती थीं, किन्तु मैं श्रीकृष्ण के अधरों पर सुशोभित होने वाली बाँसुरी को अपने होठों पर नहीं रखूँगी। तात्पर्य यह है कि गोपियाँ मुरली से सौतिया डाह रखती थीं। अत: वे श्रीकृष्ण की और सभी लीलाओं का अनुकरण करने को तो तैयार हैं, किन्तु बाँसुरी को अपने अधरों पर नहीं रखता चाहतीं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** यहाँ रसखान के कृष्ण-प्रेम में व्याकुल गोपियों की मनोदशा का अत्यन्त हृदयग्राही और मार्मिक चित्रण किया है। वे कृष्ण की अनुपस्थिति में उनके रूप बनाकर अपने व्याकुल मन को सन्तोष देती हैं, किन्तु बाँसुरी को अपने होंठों से नहीं लगातीं; क्योंकि बाँसुरी से उन्हें ईर्ष्या है। ईर्ष्या का कारण कृष्ण का उसे हर समय होठों से लगाए रखना है। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3) रस**—शृंगार। **(4) गुण**— माधुर्य। **(5) अलंकार**—यमक, श्लेष और अनुप्रास। **(6) छन्द**—सवैया।

कवित्त

(क) गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल
आगे गैयाँ पाछें ग्वाल गावै मृदु बानि री।
तैसी धुनि बाँसुरी की मधुर-मधुर जैसी
बंक चितवनि मंद मंद मुसकानि री॥
कदम बिटप के निकट तटिनी के तट
अटा चढ़ि चाहि पीत पट फहरानि री।
रस बरसावै तन-तपनि बुझावै नैन
प्राननि रिझावै वह आवै रसखानि री॥

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत कवित्त प्रसिद्ध भक्तकवि **रसखान** द्वारा रचित **'रसखानि-ग्रन्थावली'**से हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित **'कवित्त'** शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—इसमें कवि ने श्रीकृष्ण के वन से लौटते हुए उनके सुन्दर रूप का चित्रण किया है।

व्याख्या—एक गोपी दूसरी गोपी से श्रीकृष्ण के रूप का वर्णन करती है कि श्रीकृष्ण के माथे पर गोरज अर्थात् गायों के खुरों से उड़ी हुई धूल सुशोभित हो रही है। उनके वक्षस्थल पर वन के फूलों की माला लहरा रही ही। उनके आगे-आगे गाएँ चल रही हैं और पीछे-पीछे ग्वाले चल रहे हैं। वे मधुर स्वरों में गीत गा रहे हैं। जितनी मधुर और बाँकी उनकी चितवन है, उतनी ही बाँकी उनकी धीमी-धीमी मधुर मुस्कान है और उनकी मधुर छवि के अनुरूप ही उनकी बाँसुरी की ध्वनि भी मधुर-मधुर है। तात्पर्य यह है कि उनका रूप और उनके देखने का ढंग तथा उनकी बाँसुरी की ध्वनि सब मधुरता से परिपूर्ण हैं।

हे सखी! तू अट्टालिका पर चढ़कर कदम्ब के वृक्ष के निकट, यमुना के किनारे पर श्रीकृष्ण के पीले वस्त्रों का फहराना तो देख। वह रस की खान श्रीकृष्ण—रस को बरसाता हुआ, तन की तपन को बुझाता हुआ और प्राणों को मोहित करता हुआ—इधर ही आ रहा है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** इस कवित्त में रसखान ने कृष्ण के मनोहारी रूप का सजीव चित्रण किया है। **(2)** कृष्ण के रूप पर मुग्ध गोपियों की दशा का भी सजीव अंकन हुआ है। **(3) भाषा**—ब्रज। **(4) रस**—शृंगार। **(5) गुण**—माधुर्य। **(6) अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास और श्लेष। **(7) छन्द**—कवित्त।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के खड़ीबोली रूप लिखिए—
करोर, सिगरी, दूति, लकुटी, काम, अँगुरी, भाजति, संजम।

उत्तर—

शब्द	खड़ीबोली का रूप	शब्द	खड़ीबोली का रूप
करोर	करोड़	काग	कौआ
सिगरी	सभी	अँगुरी	अँगुली
दुति	द्युति	भाजति	भागती
लकुटी	लाठी	संजम	संयम

प्रश्न 2. सवैये और कवित्त का लक्षण लिखिए।

उत्तर—सवैये—बाइस से छब्बीस तक के वर्णवृत्त सवैया कहलाते हैं।

कवित्त—यह दण्डक वृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं। 16-15 वर्णों पर यति होती है। अन्त में एक गुरु वर्ण होता है। इसे मनहरण कवित्त भी कहते हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताते हुए उसका स्पष्टीकरण दीजिए—

(क) वा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निज कोटी।

उत्तर—अनुप्रास—'क' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

प्रतीप—''वारत काम कला निज कोटी'' यहाँ कृष्ण के सौन्दर्य को देखकर कामदेव स्वयं अपनी करोड़ों कलाएँ निछावर कर रहा है। उपमान का उपमेय बना देने के कारण यहाँ प्रतीप अलंकार है।

(ख) या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।

उत्तर—अनुप्रास, यमक—'म', 'ध', 'र' वर्णों की आवृत्ति के कारण अनुप्रास तथा एक 'अधरान' का अर्थ 'होंठों पर ' एवं दूसरे 'अधरा न' का अर्थ 'होंठों पर नहीं' होने के कारण यमक है।

(ग) रस बरसावै तन-तपनि बुझावै नैन,
प्राननि रिझावै वह आवै रसखानि री॥

उत्तर—श्लेष—यहाँ 'रसखानि री' के दो अर्थ—रस की खान श्रीकृष्ण तथा कवि रसखान हैं। अत: इसमें श्लेष है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है? उसके स्थायी भाव का नाम लिखिए—

(क) तेल लगाइ लगाइ कै अंजन, भौंहें बनाइ बनाइ डिठौनहिं।

उत्तर—रस—वात्सल्य, **स्थायी भाव**—स्नेह (रति)।

(ख) जिन मोहि लियौ मनमोहन कौं,
रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आओ सबै सखि भागि चलैं
अब तो ब्रज में बँसुरी रहिहै॥

उत्तर—रस—शृंगार, **स्थायी भाव**—रति।

❑

4 भक्ति, नीति (बिहारीलाल)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. बिहारीलाल का जन्म कब व कहाँ हुआ था? उनकी एक रचना का नाम बताइए।

उत्तर—बिहारीलाल का जन्म 1595 ई० में बसुआ, गोविन्दपुर (ग्वालियर) में हुआ था। उनकी एक रचना 'बिहारी सतसई' है।

प्रश्न 2. मन रूपी मन्दिर में भगवान कब तक प्रवेश नहीं कर सकते हैं?

उत्तर—मन रूपी मन्दिर में भगवान तब तक प्रवेश नहीं कर सकते, जब तक हम स्वार्थी हैं तथा दूसरे की बुराई करते हैं।

प्रश्न 3. बिहारीलाल किस काल के कवि थे?

उत्तर—बिहारीलाल रीतिकाल के प्रमुख कवि थे।

प्रश्न 4. बिहारीलाल किस राजा के दरबारी कवि थे?

उत्तर—बिहारीलाल जयपुर के राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे।

प्रश्न 5. बिहारीलाल को 'गागर में सागर' भरने वाला कवि क्यों कहा जाता है?

उत्तर—बिहारीलाल कम शब्दों में अत्यधिक गहन बात कह देते थे इसलिए ये 'गागर में सागर' भरने वाले कवि कहे जाते हैं।

प्रश्न 6. आँखें किसे नहीं देख पाती हैं?

उत्तर—बिहारीलाल के अनुसार 'हरि' को आँखें नहीं देख पातीं और न ही जगत की सच्चाई को।

प्रश्न 7. श्रीकृष्ण की हरे बाँस की बाँसुरी इन्द्रधनुष के रंगों जैसी किस कारण हो जाती थी?

उत्तर—श्रीकृष्ण की हरे बाँस की बाँसुरी इन्द्रधनुष के रंगों जैसी तब हो जाती थी, जब श्रीकृष्ण उसे अपने होंठो से लगाते थे।

प्रश्न 8. श्याम रंग में डूबने पर चित्त किस प्रकार उज्ज्वल हो जाता है?

उत्तर—श्याम रंग में डूबने पर चित्त इस प्रकार उज्ज्वल हो जाता है कि उसमें 'अनुराग' की जगह 'विराग' की भावना उत्पन्न हो जाती है अर्थात् वह सांसारिक मोह-माया से छुटकारा पाकर ईश्वर में विलीन हो जाता है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. बिहारीलाल का जीवन-परिचय एवं रचना बताइए।

उत्तर–कविवर बिहारी एक शृंगारी कवि हैं। इन्होंने दोहे जैसे लघु आकार वाले छन्द में गागर में सागर भर देने का कार्य किया है। प्रख्यात आलोचक **श्री पद्मसिंह शर्मा** ने इनकी प्रशंसा में लिखा है कि, ''बिहारी के दोहों का अर्थ गंगा की विशाल जल-धारा के समान है, जो शिव की जटाओं में समा तो गयी थी, परन्तु उसके बाहर निकलते ही वह इतनी असीम और विस्तृत हो गयी कि लम्बी-चौड़ी धरती में भी सीमित न रह सकी। बिहारी के दोहे रस के सागर हैं, कल्पना के इन्द्रधनुष हैं, भाषा के मेघ हैं। उनमें सौन्दर्य के मादक चित्र अंकित हैं।''

जीवन-परिचय—रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी शृंगार रस के अद्वितीय कवि थे। इनका जन्म सन् 1595 ई० में लगभग ग्वालियर के निकट बसुवा गोविन्दपुर ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। इन्हें मथुरा का चौबे ब्राह्मण माना जाता है। अनेक विद्वानों ने इनको आचार्य केशवदास ('रामचन्द्रिका' के रचयिता) का पुत्र स्वीकार किया है और

तत्सम्बन्धी प्रमाण भी प्रस्तुत किए हैं। इन्होंने निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुयायी स्वामी नरहरिदास से संस्कृत, प्राकृत आदि का अध्ययन किया था। इन्होंने युवावस्था अपनी ससुराल मथुरा में बितायी थी। मुगल बादशाह शाहजहाँ के निमन्त्रण पर ये आगरा चले गए और उसके बाद जयपुर के राजा जयसिंह के दरबारी कवि हो गए। राजा जयसिंह अपनी नवविवाहिता पत्नी के प्रेम-पाश में फँसकर जब राजकार्य को चौपट कर बैठे थे, तब बिहारी ने राजा की मोहनिद्रा भंग करने के लिए निम्नलिखित अन्योक्तिपूर्ण दोहा लिखकर उनके पास भेजा—

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।
अली कली ही सौं बँध्यो, आगे कौन हवाल।

इस दोहे को पढ़कर राजा की आँखें खुल गयीं और वे पुन: कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर हो गए। राजा जयसिंह की प्रेरणा पाकर बिहारी सुन्दर-सुन्दर दोहों की रचना करते थे और पुरस्कारस्वरूप प्रत्येक दोहे पर एक स्वर्ण-मुद्रा प्राप्त करते थे। बाद में पत्नी की मृत्यु के कारण श्रृंगारी कवि बिहारी का मन भक्ति और वैराग्य की ओर मुड़ गया। 723 दोहों की सतसई **सन् 1662 ई०** में समाप्त हुई मानी जाती है। **सन् 1663 ई०** (सं० 1720 वि०) में इनकी मृत्यु हो गयी।

रचनाएँ—बिहारी की एकमात्र रचना '**बिहारी सतसई**' है। यह श्रृंगार रसप्रधान मुक्तक काव्य-ग्रन्थ है। श्रृंगार की अधिकता होने के कारण बिहारी मुख्य रूप से श्रृंगार रस के कवि माने जाते हैं। इन्होंने छोटे-से दोहे में प्रेम-लीला के गूढ़-से-गूढ़ प्रसंगों को अंकित किया है। इनके दोहों के विषय में कहा गया है—

सतसैया के दोहरे, ज्यौं नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गम्भीर॥

साहित्य में स्थान—रीतिकालीन कवि बिहारी अपने ढंग के अद्वितीय कवि हैं। इनकी विलक्षण सृजन-प्रतिभा के कारण काव्य-संसार ने इन्हें महाकवि के पद पर प्रतिष्ठित किया है। **आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र** का कहना है कि, ''प्रेम के भीतर उन्होंने सब प्रकार की सामग्री, सब प्रकार के वर्णन प्रस्तुत किए हैं और वह भी इन्हीं सात-सौ दोहों में। यह उनकी एक विशेषता ही है। नायिका-भेद या श्रृंगार का लक्षण-ग्रन्थ लिखने वाले भी किसी नायिका या अलंकारादि का वैसा उदाहरण प्रस्तुत करने में समर्थ नहीं हुए जैसा बिहारी ने किया है। हमें यह भी मान लेने में आनाकानी नहीं करनी चाहिए कि उनके जोड़ का हिन्दी में कोई दूसरा कवि नहीं हुआ।''

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या कीजिए—

भक्ति

(क) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाईं परै, स्यामु हरित-दुति होइ॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य-पुस्तक '**हिन्दी**' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित रीतिकाल के रससिद्ध कवि **बिहारी** द्वारा रचित '**बिहारी सतसई**' के '**भक्ति**' शीर्षक से अवतरित है।

[विशेष—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी दोहों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—कवि ने अपने ग्रन्थ के प्रारम्भ में राधा जी की वन्दना की है।

व्याख्या—(1) वह चतुर राधिका जी मेरे सांसारिक कष्टों को दूर करें, जिनके पीली आभा वाले (गोरे) शरीर की झाँईं (प्रतिबिम्ब) पड़ने से श्याम वर्ण के श्रीकृष्ण हरित वर्ण की द्युति वाले अर्थात् हरे रंग के हो जाते हैं।

(2) वे चतुर राधिका जी मेरी सांसारिक बाधाओं को दूर करें, जिनके शरीर की झलक पड़ने से भगवान् कृष्ण भी प्रसन्नमुख (हरित-कान्ति) हो जाते हैं।

(3) हे चतुर राधिका जी! आप मेरे सांसारिक कष्टों को दूर करें, जिनके ज्ञानमय (गौर) शरीर की झलकमात्र से मन की श्यामलता (पाप) नष्ट हो जाती है।

(4) वह चतुर राधिका जी मेरी सांसारिक बाधाओं को दूर करें, जिनके गौरवर्ण शरीर की चमक पड़ने से श्रीकृष्ण भी फीकी कान्ति वाले हो जाते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि ने प्रस्तुत दोहे में मंगलाचरण रूप में राधा की वन्दना की है। **(2)** नील और पीत वर्ण मिलकर हरा रंग हो जाता है। यहाँ बिहारी का चित्रकला-ज्ञान प्रकट हुआ है। **(3) भाषा**—ब्रज। **(4) शैली**—मुक्तक। **(5) रस**—श्रृंगार और भक्ति। **(6) छन्द**—दोहा। **(7) अलंकार**— 'हरौ, राधा नागरि' में **अनुप्रास**, 'भव-बाधा', 'झाईं' तथा 'स्यामु हरित-दुति' के अनेक अर्थ होने से **श्लेष** अलंकार की छटा मनमोहक बन पड़ी है। **(8) गुण**—प्रसाद और माधुर्य। **(9)** बिहारी ने निम्नलिखित दोहे में भी अपने रंगों के ज्ञान का परिचय दिया है—

अधर धरत हरि कै परत, ओठ डीठि पट जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्रधनुष रँग होति॥

(ख) मोर-मुकुट की चंद्रिकनु, यौं राजत नँदनंद।
मनु ससि सेखर की अकस, किय सेखर सत चंद॥

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में श्रीकृष्ण के सिर पर लगे मोर-मुकुट की चन्द्रिकाओं का सुन्दर चित्रण किया गया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि भगवान् श्रीकृष्ण के सिर पर मोर पंखों का मुकुट शोभा दे रहा है। उन मोर पंखों के बीच में बनी सुनहरी चन्द्राकार चन्द्रिकाएँ देखकर ऐसा लगता है, जैसे मानो भगवान् शंकर से प्रतिस्पर्द्धा करने के लिए उन्होंने सैकड़ों चन्द्रमा सिर पर धारण कर लिये हों।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ श्रीकृष्ण के अनुपम सौन्दर्य का मोहक वर्णन हुआ है। **(2)** मोर-मुकुट की चन्द्रिकाओं की तुलना भगवान् शंकर के सिर पर विराजमान चन्द्रमा से करके कवि ने अपनी अद्भुत काव्य-कल्पना का परिचय दिया है। **(3) भाषा**—ब्रज। **(4) शैली** —मुक्तक। **(5) छन्द** —दोहा। **(6) रस**—श्रृंगार। **(7) अलंकार**—'मोर-मुकुट' तथा 'ससि सेखर' में **अनुप्रास** एवं 'मनु ससि सेखर की अकस', 'किय सेखर सत चंद' में **उत्प्रेक्षा** तथा 'ससि सेखर' और 'सेखर' में **सभंग श्लेष**। **(8) गुण** —माधुर्य।

(ग) सोहत ओढ़ै पीतु पटु, स्याम सलौने गात।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात॥

प्रसंग—इस दोहे में पीला वस्त्र ओढ़े हुए श्रीकृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—श्रीकृष्ण का श्याम शरीर अत्यन्त सुन्दर है। वे अपने शरीर पर पीले वस्त्र पहने इस प्रकार शोभा पा रहे हैं, मानो नीलमणि के पर्वत पर प्रात:काल की पीली-पीली धूप पड़ रही हो। यहाँ श्रीकृष्ण के श्याम वर्ण के उज्ज्वल मुख में नीलमणि शैल की और उनके पीले वस्त्रों में प्रात:कालीन धूप की सम्भावना की गयी है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) श्रीकृष्ण के श्याम शरीर पर पीले वस्त्रों के सौन्दर्य का अद्भुत वर्णन है। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) रस**—श्रृंगार और भक्ति। **(5) छन्द**—दोहा। **(6) अलंकार**—'पीतु पटु', 'स्याम सलौने', 'पर्‌यौ प्रभात' में **अनुप्रास** तथा 'मनौ नीलमनि-सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात' में **उत्प्रेक्षा** की छटा। **(7) गुण**—माधुर्य।

(घ) अधर धरत हरि कै परत, ओठ-डीठि-पट जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्रधनुष-रँग होति॥

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में बाँसुरी बजाते हुए कृष्ण की हरे रंग की बाँसुरी का इन्द्रधनुषी रूप वर्णित किया गया है।

व्याख्या—श्रीकृष्ण अपने रक्त वर्ण के होठों पर हरे रंग की बाँसुरी रखकर बजा रहे हैं। उस समय उनकी दृष्टि के श्वेत वर्ण, वस्त्र के पीत वर्ण तथा शरीर के श्याम वर्ण की कान्ति रक्त वर्ण के होठों पर रखी हुई हरे रंग की बाँसुरी पर पड़ने से वह (बाँसुरी) इन्द्रधनुष के समान बहुरंगी शोभा वाली हो गयी है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** बिहारी के रंगों के संयोजन का अद्‌भुत ज्ञान प्रस्तुत दोहे में परिलक्षित होता है। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) रस**—भक्ति। **(5) छन्द**—दोहा। **(6) अलंकार** —दोहे में सर्वत्र **अनुप्रास**, 'अधर धरत' में **यमक** तथा बाँसुरी के रंगों से इन्द्रधनुष के रंगों की तुलना में **उपमा**। **(7) गुण**—प्रसाद।

(ङ) या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यौं-ज्यौं बूड़े स्याम रँग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होइ॥

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कवि ने बताया है कि श्रीकृष्ण के प्रेम से मन की म्लानता एवं कलुषता दूर हो जाती है।

व्याख्या—कवि का कहना है कि श्रीकृष्ण से प्रेम करने वाले मेरे मन की दशा अत्यन्त विचित्र है। इसकी दशा को कोई नहीं समझ सकता है; क्योंकि प्रत्येक वस्तु काले रंग में डूबने पर काली हो जाती है। श्रीकृष्ण भी श्याम वर्ण के हैं, किन्तु कृष्ण के प्रेम में मग्न यह मेरा मन जैसे-जैसे श्याम रंग (कृष्ण की भक्ति, ध्यान आदि) में मग्न होता है वैसे-वैसे श्वेत (पवित्र) होता जाता है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कृष्ण की भक्ति में लीन होकर मन पवित्र हो जाता है। इस भावना की बड़ी ही उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की गयी है। **(2) भाषा**— ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) रस**—शान्त। **(5) छन्द**—दोहा। **(6) अलंकार**—'ज्यौं-ज्यौं बूड़े स्याम रँग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होय' में **श्लेष, पुनरुक्तिप्रकाश** तथा **विरोधाभास**। **(7) गुण**—माधुर्य।

(च) तौ लगु या मन-सदन मैं, हरि आवैं किहिं बाट।
विकट जटे जौ लगु निपट, खुटैं न कपट-कपाट॥

प्रसंग—इस दोहे में कवि ने ईश्वर को हृदय में बसाने के लिए कपट का त्याग करना आवश्यक बताया है।

व्याख्या—कविवर बिहारी का कहना है कि इस मनरूपी घर में तब तक ईश्वर किस मार्ग से प्रवेश कर सकता है, जब तक मनरूपी घर में दृढ़ता से बन्द किये हुए कपटरूपी किवाड़ पूरी तरह से नहीं खुल जाते अर्थात् हृदय से कपट निकाल देने पर ही हृदय में ईश्वर का प्रवेश व निवास सम्भव है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** ईश्वर की प्राप्ति निर्मल मन से ही सम्भव है। इस भावना की कवि ने यहाँ उचित अभिव्यक्ति की है। **(2) भाषा** —ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) रस**—भक्ति। **(5) छन्द**—दोहा। **(6) अलंकार**—'मन-सदन', 'कपट-कपाट' में **रूपक** तथा **अनुप्रास**। **(7) गुण**—प्रसाद।

(छ) जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँहि।
ज्यौं आँखिनु सबु देखिये, आँखि न देखी जाँहि॥

प्रसंग—इस दोहे में कवि बिहारी ने ईश्वर-भक्ति करने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि जिस ईश्वर ने तुम्हें समस्त संसार का ज्ञान कराया है, उसी ईश्वर को तुम नहीं जान पाए। जैसे आँखों से सब कुछ देखा जा सकता है, परन्तु आँखें स्वयं अपने को नहीं देख सकतीं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** सम्पूर्ण संसार का ज्ञान कराने वाले ईश्वर की स्थिति से अनभिज्ञ मनुष्य का सजीव चित्रण किया गया है। **(2) भाषा** —ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) छन्द**—दोहा। **(5) रस**—शान्त। **(6) गुण**— प्रसाद। **(7) अलंकार** —अनुप्रास एवं दृष्टान्त।

(ज) जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु॥

प्रसंग—कविवर बिहारी द्वारा रचित प्रस्तुत दोहे में बाह्याडम्बरों की निरर्थकता बताकर भगवान् की सच्ची भक्ति पर बल दिया गया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि जप करने, माला फेरने, चन्दन का तिलक लगाने आदि बाह्य क्रियाओं से कोई काम पूरा नहीं होता। इन बाह्य आचरणों से सच्ची भक्ति नहीं होती है। जिनका मन ईश्वर की भक्ति करने से कतराता है, भक्ति करने में कच्चा है, वह व्यर्थ ही इधर-उधर की क्रियाओं में मारा-मारा फिरता है। ईश्वर तो केवल सच्चे मन की भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवि ईश्वर की सच्ची भक्ति पर बल देता है तथा स्पष्ट करता है कि बाह्य आचरणों में भक्ति का सच्चा स्वरूप नहीं है। **(2) भाषा**—साहित्यिक ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) रस**—शान्त। **(5) छन्द**—दोहा। **(6) अलंकार**—अनुप्रास। **(7) गुण**—प्रसाद। **(8) भाव-साम्य**—कबीर का भी यही मत है—

माला तो कर में फिरै, जिह्वा मुख में माँहि।
मनुवा तो दस दिस फिरै, ये तो सुमिरन नाहिं॥

नीति

(झ) दुसह दुराज प्रजानु कौं, क्यौं न बढ़ै दुख-दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत, मिलि मावस रबि-चंदु॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा कविवर **बिहारी** द्वारा रचित **'बिहारी सतसई'** से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' में संकलित **'नीति'** शीर्षक से उद्‌धृत है।

[विशेष—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी दोहों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में दो राजाओं के शासन से उत्पन्न कष्टों का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि एक ही देश में दो राजाओं के शासन से प्रजा के दु:ख और संघर्ष अत्यधिक बढ़ जाते हैं। दुहरे शासन में प्रजा उसी प्रकार दु:खी हो जाती है, जिस प्रकार अमावस्या की रात्रि में सूर्य और चन्द्रमा एक ही राशि में मिलकर संसार को गहन अन्धकार से पूर्ण कर देते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** अमावस्या की रात्रि को सूर्य और चन्द्रमा (दो राजा) एक ही राशि में आ जाते हैं। ऐसा सूर्य-ग्रहण के समय में होता है। यह कवि के ज्योतिष-ज्ञान का परिचायक है। **(2)** दुहरा शासन प्रजा के लिए कष्टप्रद होता है। इस नीति के निर्धारण में कवि ने अपने ज्योतिष-ज्ञान का व्यावहारिक रूप में अच्छा प्रयोग किया है। **(3) भाषा** —ब्रज। **(4) शैली**—मुक्तक। **(5) छन्द**—दोहा। **(6) रस**—शान्त। **(7) अलंकार**—श्लेष और दृष्टान्त। **(8) गुण**—प्रसाद।

(ञ) बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु।
भलौ-भलौ कहि छोड़िये, खोटैं गृह जपु दानु॥

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में इस सत्य को उद्घाटित किया गया है कि संसार में दुष्ट व्यक्ति की बहुत आवभगत (आदर) होती है, जिससे उसके अनिष्ट कार्यों से बचा जा सके।

व्याख्या—कवि का मत है कि जिसके पास अनिष्ट करने की शक्ति (बुराई) है, उसका संसार में बहुत आदर होता है। भले को हानि न पहुँचाने वाला समझकर अर्थात् भला कहकर सब छोड़ देते हैं अर्थात् उसकी उपेक्षा करते हैं, लेकिन अनिष्ट ग्रह के आने पर जप-दान आदि करके उसे शान्त करते हैं। तात्पर्य यह है कि जिसमें बुराई या दुष्टता होती है, लोग उसी का सम्मान करते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवि ने अनिष्ट ग्रहों के आने पर जप, दान आदि से उन्हें शान्त करने के कार्यों के माध्यम से इस यथार्थ का सुन्दर चित्रण किया है कि लोग दुष्ट लोगों का सम्मान भयवश करते हैं। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) छन्द**—दोहा। **(5) रस**—शान्त। **(6) गुण**—प्रसाद; व्यंजना से ओज भी है। **(7) अलंकार**—'बसै बुराई' में **अनुप्रास**, 'भलौ-भलौ' में **पुनरुक्तिप्रकाश** तथा खोटे ग्रह का उदाहरण देने के कारण **दृष्टान्त**। **(8) भावसाम्य**—महाकवि गोस्वामी तुलसीदास ने भी ऐसे ही विचार अपने काव्य में व्यक्त किये हैं—

टेढ़ जानि सब बंदइ काहू। बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू॥

(ट) नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ।
जैतौ नीचौ ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ॥

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में बताया गया है कि मनुष्य जितना नम्र होता है, उतना ही ऊपर उठता है।

व्याख्या—कविवर बिहारी का कथन है कि मनुष्य की और नल के जल की समान स्थिति होती है। जिस प्रकार नल का जल जितना नीचे होकर बहता है, उतना ही ऊँचा उठता है; उसी प्रकार मनुष्य जितना नम्रता का व्यवहार करता है, उतनी ही अधिक उन्नति करता है। इस प्रकार मनुष्य और नल का पानी जितना नीचे होकर चलते हैं, उतना ही ऊँचे उठते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** मनुष्य नम्रता से उन्नति करता है। यहाँ विनम्रता से महान् बनने का रहस्य समझाया गया है। **(2) भाषा** —ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) रस**—शान्त। **(5) छन्द**—दोहा। **(6) गुण** —प्रसाद। **(7) अलंकार**—'नर की ····· करि जोइ' में **उपमा**, 'जेतौ नीचो ····· ऊँचौ होइ' में **विरोधाभास**, दो वस्तुओं (नल-नीर और नर) का एक समान धर्म होने के कारण **दीपक** तथा 'गति', 'नीचो', 'ऊँचौ' में **श्लेष** का मंजुल प्रयोग द्रष्टव्य है।

(ठ) बढ़त-बढ़त संपति-सलिलु, मन-सरोजु बढ़ि जाइ।
घटत-घटत सु न फिरि घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ॥

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कवि ने धन के बढ़ने पर मन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि धनरूपी जल के बढ़ जाने के साथ-साथ मनरूपी कमल भी बढ़ता चला जाता है, किन्तु धनरूपी जल के घटने के साथ-साथ मनरूपी कमल नहीं घटता, अपितु समूल नष्ट हो जाता है अर्थात् धन के बढ़ जाने पर मन की इच्छाएँ भी बढ़ जाती हैं, परन्तु धन के घट जाने पर मन की इच्छाएँ नहीं घटती हैं। तब परिणाम यह होता है कि मनुष्य यह सह नहीं पाता और दु:ख से मरे हुए के समान हो जाता है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** जिस तालाब में कमल होते हैं, जब उस तालाब में पानी बढ़ता है तो उसके साथ-साथ कमल की नाल भी बढ़ती जाती है, किन्तु जब पानी उतरता है तो वह बढ़ी हुई नाल छोटी नहीं होती। पानी के समाप्त होने पर वह स्वयं नष्ट होती है और कमल को भी नष्ट कर देती है। कमल का उदाहरण देते हुए कवि ने यह स्पष्ट किया है कि धन के बढ़ने पर मन को नियन्त्रित रखना चाहिए। अन्यथा धन न रहने पर बहुत कष्ट होता है। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) छन्द**—दोहा। **(5) रस** —शान्त। **(6) अलंकार**—'बढत-बढत', 'घटत-घटत' में **पुनरुक्तिप्रकाश** और 'संपति-सलिलु, मन-सरोज' में **रूपक** तथा **अनुप्रास** काव्यश्री में वृद्धि कर रहे हैं। **(7) गुण**—प्रसाद।

(ड) जौ चाहत चटक न घटै, मैलौ होइ न मित्त।
रज राजसु न छुवाइ तौ, नेह-चीकने चित्त॥

प्रसंग—इस दोहे में कवि ने मित्रता के मध्य धन और वैभव को न आने देने का परामर्श दिया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि यदि आप चाहते हैं कि मित्रता की चटक अर्थात् चमक समाप्त न हो तथा मित्रता स्थायी बनी रहे और उसमें दोष उत्पन्न न हों, तो धन-वैभव का इससे सम्बन्ध न होने दें। धन अथवा किसी अन्य वस्तु का लोभ मित्रता को मलिन कर देता है। मित्र के स्नेह से चिकना मन धनरूपी धूल के स्पर्श से मैला हो जाता है; अत: स्नेह में धन का स्पर्श न होने दें। जिस प्रकार तेल से चिकनी वस्तु धूल के स्पर्श से मैली हो जाती है और उसकी चमक घट जाती है, उसी प्रकार प्रेम से कोमल चित्त; धनरूपी धूल के स्पर्श से दोषयुक्त हो जाता है और मित्रता में कमी आ जाती है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** मित्रता में धन के लेन-देन का व्यवहार कम रखने से ही मित्रता विद्वेष रहित हो सकती है। चित्त की निर्मलता को बनाये रखने के लिए प्रेमरूपी तेल और धनरूपी धूल की जो प्रवृत्तिमूलक उपमा दी गयी है, उसने कवि के कथन को अत्यधिक कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक बना दिया है। **(2) भाषा**—ब्रज। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) रस** —शान्त। **(5) छन्द** —दोहा। **(6) अलंकार**—रूपक, अनुप्रास तथा श्लेष। **(7) गुण**—प्रसाद।

(ढ) बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु।
ज्यों निकलंकु मयंकु लखि, गनैं लोग उतपातु॥

प्रसंग—इस दोहे में कवि ने बताया है कि यदि दुष्ट व्यक्ति अचानक अपनी दुष्टता छोड़ दे तो सदा अमंगल की सम्भावना बनी रहती है।

व्याख्या—कविवर बिहारी का कथन है कि यदि दुष्ट व्यक्ति सहसा अपनी दुष्टता छोड़कर अच्छा व्यवहार करने लगे तो उससे चित्त अधिक भयभीत होने लगता है। जैसे चन्द्रमा को कलंकरहित देखकर लोग अमंगलसूचक मानने लगते हैं। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार चन्द्रमा का कलंकरहित होना असम्भव है, उसी प्रकार दुष्ट व्यक्ति का एकाएक दुष्टता त्यागना भी असम्भव है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** ज्योतिष सिद्धान्त के अनुसार निष्कलंक चन्द्रमा दिखाई देने से संसार में उपद्रव की आशंका होने लगती है। यह दोहा बिहारी के ज्योतिष-ज्ञान का परिचायक है। **(2)** दुष्ट व्यक्ति के अच्छा व्यवहार करने पर भी उससे सावधान रहना चाहिए। **(3) भाषा**—ब्रज। **(4) शैली**—मुक्तक। **(5) रस**—शान्त। **(6) छन्द**—दोहा। **(7) अलंकार** —'बुरौ बुराई' में **अनुप्रास** तथा चन्द्रमा का उदाहरण देने में **दृष्टान्त**। **(8) गुण**— प्रसाद।

(ण) स्वारथु सुकृतु, न श्रमु वृथा, देखि बिहंग बिचारि।
बाज, पराए पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि॥

प्रसंग—इस दोहे में कवि ने अन्योक्ति के माध्यम से अपने आश्रयदाता राजा जयसिंह को समय पर चेतावनी दी है। इस दोहे में उसे हिन्दू राजाओं पर आक्रमण न करने के लिए अन्योक्ति द्वारा सचेत किया गया है।

व्याख्या—(1) हे बाज! तू अपने मन में अच्छी तरह सोच-विचार कर देख ले कि तू शिकारी के हाथ में पड़कर अपनी जाति के पक्षियों को

मारता है। इसमें न तो तेरा स्वार्थ है, न यह अच्छा कार्य ही है, तेरा श्रम भी व्यर्थ ही जाता है; क्योंकि तेरे परिश्रम का फल तुझे न मिलकर तेरे मालिक को प्राप्त होता है। तू दूसरो के हाथ की कठपुतली बनकर अपनी जाति के पक्षियों का वध कर रहा है। अब तू मेरी सलाह मानकर अपनी जाति के पक्षियों का वध मत कर।

(2) हे राजा जयसिंह! तू विचार कर देख ले कि तू बाज पक्षी की तरह अपने शासक औरंगजेब के हाथ ही कठपुतली बनकर अपने साथी इन हिन्दू राजाओं पर आक्रमण कर रहा है। इस कार्य को करने से तेरे स्वार्थ की पूर्ति नहीं होती है, जीता हुआ राज्य तुझे नहीं मिलता। युद्ध में राजाओं का वध करना कोई पुण्य का कार्य भी नहीं है। तुम्हारे श्रम का फल तुम्हें न मिलने से तुम्हारा श्रम व्यर्थ हो जाता है। इसलिए तू औरंगजेब के कहने से अपने पक्ष के हिन्दू राजाओं पर आक्रमण करके उनका वध मत कर।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) राजा जयसिंह ने औरंगजेब के कहने से अनेक हिन्दू राजाओं के विरुद्ध युद्ध किया था। उन दोनों में यह तय था कि जीता हुआ राज्य तो औरंगजेब का होगा और विजित राज्य की लूट में मिला हुआ धन जयसिंह का। अत: उसे चेतावनी देना उसके आश्रित कवि (बिहारी) का कर्त्तव्य है। **(2)** यहाँ बाज पक्षी—जयसिंह का, शिकारी—औरंगजेब का तथा पक्षी अपने पक्ष के हिन्दू राजाओं का प्रतीक है। यह दोहा इतिहास की वास्तविक घटना पर आधारित होने के कारण विशेष महत्त्व रखता है। **(3) भाषा**—ब्रज। **(4) शैली**—मुक्तक। **(5) रस** —शान्त। **(6) छन्द**— दोहा। **(7) अलंकार**—बाज पक्षी के माध्यम से राजा जयसिंह को सावधान किया गया है; अत: **अन्योक्ति** अलंकार है। 'पच्छीनु' के दो अर्थ—पक्षी और पक्ष वाले होने से **श्लेष** है। **(8) गुण** —प्रसाद एवं ओज। **(9) शब्द- शक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह कीजिए तथा उनका नाम लिखिए—

पीतु पटु, नीलमनि, मन-सदन, दुपहर, रवि-चन्द, समूल।

उत्तर—

समस्तपद	समास-विग्रह	समास-नाम
पीतु पटु	पीला वस्त्र	कर्मधारय
नीलमनि	नीली मणि	कर्मधारय
मन-सदन	मनरूपी सदन	कर्मधारय
दुपहर	दो पहर का समूह	द्विगु
रवि-चन्द	रवि और चन्द्र	द्वन्द्व
समूल	मूल के साथ	अव्ययीभाव

प्रश्न 2. कविजन कभी-कभी अप्रस्तुत का वर्णन करते हैं और उसी के द्वारा प्रस्तुत की ओर संकेतमात्र कर देते हैं। इस प्रकार के चमत्कार को 'अन्योक्ति' अलंकार' कहते हैं; जैसे—

स्वारथु सुकृतु न श्रमु वृथा, देखि बिहंग बिचारि।
बाजि पराए पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि।।

बिहारी के दोहों से अन्योक्ति का एक अन्य उदाहरण लिखिए।

उत्तर—कर लै सूँघि सराहि हूँ, रहे सबै गहि मौनु।
गंधी गंध गुलाब कौ, गँवई गाहकु कौनु।।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा छन्द है? सोदाहरण समझाइए—

तौ लगु या मन-सदन मैं, हरि आवैं किहिं बाट।
विकट जटे जौ लगु निपट, खुटैं न कपट-कपाट।।

उत्तर—इन पंक्तियों में दोहा छन्द है क्योंकि इसके प्रथम और तृतीय चरणों में 13-13 तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों में 11-11 मात्राएँ हैं।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों को पहचानकर उनके नाम तथा स्पष्टीकरण दीजिए–

(क) जा तन की झाँईं परै, स्यामु हरित-दुति होइ।

(ख) जयौं-ज्यौं बड़ें स्याम रँग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होइ।

(ग) नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ।
जेतौ नीचौ ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ॥

उत्तर—(क) श्लेष—''झाँईं परै, स्यामु हरितु-दुति'' के एक से अधिक और भिन्न अर्थ होने के कारण श्लेष अलंकार है।

(ख) पुनरुक्तिप्रकाश, श्लेष और विरोधाभास—'ज्यौं' और 'त्यौं' शब्द की पुनरावृत्ति होने के कारण पुनरुक्तिप्रकाश, 'स्याम रँग' और 'उज्जलु' के दो-दो अर्थ होने के कारण श्लेष तथा काले रंग में डूबने के बाद सफेद होने के कारण विरोधाभास अलंकार है।

(ग) उपमा, विरोधाभास, दीपक तथा श्लेष—''नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ।'' में 'नर' की समानता 'नल-नीर' से किये जाने के कारण **उपमा** अलंकार है। ''जेतौ नीचौ ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ'' में जितना नीचा होने पर उतना ऊँचा होता है के कारण **विरोधाभास** अलंकार है। दो वस्तुओं (नल-नीर और नर) का एक ही समान धर्म होने के कारण **दीपक** अलंकार है। 'नीचो' (नीचा तथा पतन) और ऊँचो (ऊँचा तथा उत्थान) के दो-दो अर्थ होने के कारण **श्लेष** अलंकार है।

❑

5 चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार

(सुमित्रानन्दन पन्त)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पन्त जी का बचपन का क्या नाम था? इन्होंने अपना नाम कब बदला?

उत्तर—सुमित्रानन्दन पन्त के बचपन का नाम गुसाई दत्त था। इन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद अल्मोड़ा में अपना नाम सुमित्रानन्दन पन्त रख लिया।

प्रश्न 2. पन्त जी की शिक्षा कहाँ सम्पन्न हुई?

उत्तर—पन्त जी की शिक्षा का समापन अल्मोड़ा में हुआ तथा इसका प्रारम्भ घर से हुआ था।

प्रश्न 3. प्रकृति का सुकुमार कवि किसे कहा गया है?

उत्तर—प्रकृति का सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पन्त को कहा गया है।

प्रश्न 4. सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर—सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म 20 मई, 1900 ई० को अल्मोड़ा के निकट कौसानी ग्राम में हुआ था।

प्रश्न 5. काशी में पन्त जी का परिचय किन महापुरुषों से हुआ?

उत्तर—काशी में पन्त जी का परिचय सरोजिनी नायडू और रवीन्द्रनाथ ठाकुर से हुआ था।

प्रश्न 6. सुमित्रानन्दन पन्त की मृत्यु कब हुई?

उत्तर—सुमित्रानन्दन पन्त की मृत्यु 28 दिसम्बर, 1977 को हुई।

प्रश्न 7. पन्त जी की प्रथम रचना का नाम तथा उसका रचना-वर्ष भी लिखिए।

उत्तर—पन्त जी की प्रथम रचना 'गिरजे का घण्टा' है। इसकी रचना का वर्ष 1916 है।

प्रश्न 8. पन्त जी की चार मुख्य काव्य-कृतियों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—पन्त जी की चार प्रमुख काव्य-कृतियाँ इस प्रकार हैं—

(1) वीणा (2) पल्लव (3) गुंजन (4) युगवाणी।

प्रश्न 9. मुख्य रूप से वियोग का स्वर कवि की किस कृति में मुखरित हुआ?

उत्तर—पन्त जी की रचना 'ग्रन्थि' में मुख्य रूप से वियोग का स्वर मुखरित हुआ है।

प्रश्न 10. कवि सुमित्रानन्दन पन्त की भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—पंत जी की भाषा कोमलकान्त शब्दावली से युक्त खड़ीबोली है। इनकी भाषा-शैली गीतात्मक और मुक्तक दोनों रूपों में पायी जाती है। उन्होंने छन्द को विविधता प्रदान की। इनकी रचनाओं में गीतों के अतिरिक्त तुकान्त, स्वच्छन्द और मुक्तक छन्द भी पाये जाते हैं अर्थात् सरलता, मधुरता, चित्रात्मकता, कोमलता और संगीतात्मकता इनकी शैली की मुख्य विशेषताएँ हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सुमित्रानन्दन पन्त का जीवन-परिचय और रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—श्री सुमित्रानन्दन पन्त का सम्पूर्ण काव्य आधुनिक काव्य-चेतना का प्रतीक है। ये ऐसे कवि हैं जो हिन्दी-साहित्य-कानन को झरने के समान कल-कल निनाद से मुखरित कर नवजीवन प्रदान करते हैं। इन्होंने अपने काव्य की लय-ताल में मानव-जीवन की लय-ताल को निबद्ध करने का प्रयास किया है। इनके काव्य में धर्म, दर्शन, नैतिक एवं सामाजिक मूल्य, प्रकृति की सुकुमारता-उद्दण्डता आदि एक साथ देखी जा सकती है। वास्तव में इनका काव्य; काव्य-रसिकों के गले का कण्ठहार है।

जीवन-परिचय—सुकुमार भावनाओं के कवि और प्रकृति के चतुर-चितेरे श्री सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म **20 मई, 1900 ई०** को प्रकृति की सुरम्य गोद में **अल्मोडा** के निकट **कौसानी** नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० गंगादत्त पन्त था। इनके जन्म के छ: घण्टे के बाद ही इनकी माता का देहान्त हो गया था; अत: इनका लालन-पालन पिता और दादी के वात्सल्य की छाया में हुआ। पन्त जी ने अपनी शिक्षा का प्रारम्भिक चरण अल्मोड़ा में पूरा किया। यहीं पर इन्होंने अपना नाम गुसाईंदत्त से बदलकर सुमित्रानन्दन रखा। इसके बाद वाराणसी के जयनारायण हाईस्कूल से स्कूल-लीविंग की परीक्षा उत्तीर्ण की और जुलाई, 1919 ई० में प्रयागराज आये और म्योर सेण्ट्रल कॉलेज में प्रवेश लिया। 1921 ई० में महात्मा गाँधी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर इन्होंने बी० ए० की परीक्षा दिये बिना ही कॉलेज त्याग दिया था। इन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, अंग्रेजी, बांग्ला और हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। प्रकृति की गोद में पलने के कारण इन्होंने अपनी सुकुमार भावना को प्रकृति के चित्रण में व्यक्त किया। इन्होंने प्रगतिशील विचारों की पत्रिका 'रूपाभा' का प्रकाशन किया। सन् 1942 ई० में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' से प्रेरित होकर 'लोकायन' नामक सांस्कृतिक पीठ की स्थापना की और भारत-भ्रमण हेतु निकल पड़े। सन् 1950 ई० में ये 'ऑल इण्डिया रेडियो' के परामर्शदाता पद पर नियुक्त हुए और सन् 1976 ई० में भारत सरकार ने इनकी साहित्य-सेवाओं को 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया। इनकी कृति **'चिदम्बरा'** पर इनको 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार मिला। **28 दिसम्बर, 1977 ई०** को इस महान् साहित्यकार ने इस भौतिक संसार से सदैव के लिए विदा ले ली और चिरनिद्रा में लीन हो गये।

रचनाएँ—पन्त जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इन्होंने कविता के अतिरिक्त नाटक, उपन्यास और कहानियों की भी रचना की है, परन्तु काव्य ही इनका प्रधान क्षेत्र रहा है। अपने दीर्घकालिक काव्य-जीवन में इन्होंने हिन्दी काव्य-जगत को अनेक कृतियाँ प्रदान की हैं जो निम्नलिखित हैं—

(1) वीणा—यह पन्त जी की प्रथम काव्य-पुस्तक है। इसमें प्रकृति-निरीक्षण, अनुभूति और कल्पनाओं का सुन्दर रूप दिखाई देता है।

(2) ग्रन्थि—यह असफल प्रेम की दु:खपूर्ण गाथा का काव्य है। इसमें वियोग शृंगार की प्रधानता है।

(3) पल्लव—यह कल्पना-प्रधान काव्य है। इसमें प्रकृति-निरीक्षण और ऊँची कल्पनाओं के दर्शन होते हैं। इसमें **'वसन्तश्री'**, **'परिवर्तन'**, **'मौन-निमन्त्रण'**, **'बादल'** आदि श्रेष्ठ कविताएँ संकलित हैं।

(4) गुंजन—इसमें कवि का मन प्रकृति से हटकर आत्मचित्रण की ओर लग गया है। **'नौका-विहार'** इस संकलन की श्रेष्ठ कविता है।

(5) युगान्त, (6) युगवाणी, (7) ग्राम्या—इन काव्यों में कवि पर गाँधीवाद और समाजवाद का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

(8) लोकायतन—इस महाकाव्य में कवि की सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारधारा व्यक्त हुई है। इसमें ग्राम्य-जीवन और जनभावना को स्वर प्रदान किया गया है।

पन्त जी की अन्य रचनाएँ हैं—**पल्लविनी, अतिमा, युगपथ, ऋता, स्वर्णकिरण, चिदम्बरा, उत्तरा, कला और बूढ़ा चाँद, शिल्पी, स्वर्णधूलि** आदि।

साहित्य में स्थान—सुन्दर, सुकुमार भावों के चतुर-चितेरे पन्त ने खड़ी बोली को ब्रजभाषा जैसा माधुर्य एवं सरसता प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। पन्त जी गम्भीर विचारक, उत्कृष्ट कवि और मानवता के सहज आस्थावान् कुशल शिल्पी हैं, जिन्होंने नवीन सृष्टि के अभ्युदय की कल्पना की है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ''पन्त जी हिन्दी कविता के शृंगार हैं, जिन्हें पाकर माँ-भारती कृतार्थ हुई''।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

(क) चींटी को देखा?
वह सरल, विरल, काली रेखा
तम के तागे सी जो हिल-डुल,
चलती लघुपद पल-पल मिल-जुल
वह है पिपीलिका पाँति!
देखो ना किस भाँति
काम करती वह सतत!
कन कन करके वह चुनती अविरत!

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि **सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित '**युगवाणी**' काव्य-संग्रह के '**चींटी**' शीर्षक कविता से हमारी पाठ्यपुस्तक के '**काव्य-खण्ड**' में संकलित हैं।

[विशेष—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी दोहों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—इस अवतरण में कवि ने चींटी-जैसे लघु प्राणी की कर्मठता पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या—कवि कहता है कि क्या तुमने कभी चींटी को ध्यानपूर्वक देखा है?वह सीधी, पतली और काली रेखा; जो काले धागे के समान हिलती-डुलती हुई, अपने छोटे पैरों के द्वारा प्रतिपल मिलती-जुलती हुई चलती है (अर्थात् जो आपस में एक-दूसरे से बातें करते हुए, आपस में एक-दूसरे के पीछे अपने मार्ग की ओर अग्रसर होती हैं)। चींटियों की उस पंक्ति को देखो।

कवि ने आगे चींटी की कार्य-कुशलता पर प्रकाश डालते हुए बताया है कि चींटियाँ अनुशासन में रहकर पंक्तिबद्ध होकर चलती हैं। देखो, ये चींटियाँ किस प्रकार अपने कार्य में निरन्तर लगी हुई हैं। वे अपने लिए भोजन-सामग्री एकत्र करने हेतु कठोर परिश्रम करती हैं। वे एक-एक कण को, बिना किसी रुकावट के एकत्र करती रहती हैं। भाव यह है कि चींटियाँ भोजन का एक-एक कण बहुत ही मेहनत से एकत्र कर अपने घर तक ले जाती हैं। इस कार्य में वे निरन्तर संलग्न रहती हैं।

चींटियों की भी गायें होती हैं। चींटियाँ अपनी गायों को चराती हैं और यथासमय उन्हें धूप का सेवन कराती हैं। ये अपने अण्डों-बच्चों की देख-देख करती हैं। अपनी सुरक्षा हेतु ये अपने शत्रु से भी भिड़ जाती हैं। ये सदा निडर रहती हैं। चींटियों के दल-के-दल बहुत सुन्दर सेना के रूप में पंक्तिबद्ध होकर चलते हैं। ये चींटियाँ बहुत-सी गन्दी चीजें भी उठाकर ले जाती हैं तथा घर-आँगन और रास्ते को झाड़-पोंछकर साफ कर देती हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवि ने यहाँ चींटियाँ की कर्मठता का सजीव चित्रण कर मनुष्य को कर्मठता का सन्देश दिया है। **(2)** चींटियों की लघुता एवं कर्मठता का तुलनात्मकस्वरूप इस भाव को अभिव्यक्त करता है कि शारीरिक क्षमता का कर्मठता से कोई सम्बन्ध नहीं है, यह तो एक मानसिक प्रवृत्ति है। **(3) भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **(4) रस**—शान्त। **(5) गुण**—प्रसाद। **(6) अलंकार**—अनुप्रास, उपमा तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

(ख) चींटी है प्राणी सामाजिक,
वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।
देखा चींटी को?
उसके जी को?
भूरे बालों की सी कतरन,
छिपा नहीं उसका छोटापन,
वह समस्त पृथ्वी पर निर्भय
विचरण करती, श्रम में तन्मय,
वह जीवन की चिनगी अक्षय!

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि **सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित '**युगवाणी**' काव्य-संग्रह के '**चींटी**' शीर्षक कविता से हमारी पाठ्यपुस्तक के '**काव्य-खण्ड**' में संकलित हैं।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने चींटी के गुणों और उसकी क्रियाशीलता का वर्णन किया है।

व्याख्या—चींटी एक सामाजिक प्राणी है। चींटी का अपना एक समाज होता है और उसी के साथ वह हिल-मिलकर नियमपूर्वक रहती है। वह कठोर परिश्रमी जीव है और उसमें एक अच्छे नागरिक के सभी गुण विद्यमान हैं।

कवि कहता है कि तुमने चींटी को ध्यान से देखा होगा। वह अत्यधिक लघु प्राणी है, परन्तु उसका हृदय एवं आत्मबल अत्यन्त विशाल है। चींटियों की पंक्ति भूरे बालों की कतरन के समान दिखाई देती है। उसकी लघुता को सभी जानते हैं, लेकिन उसके हृदय में असीम साहस है। वह सारी पृथ्वी पर, जहाँ चाहती है। निर्भय होकर विचरण करती है। उसे किसी भी स्थान पर घूमने में भय नहीं लगता है। वह लगातार अपने श्रम से, भोजन को एकत्र करने के काम में तल्लीन होकर जुटी रहती है। चींटी श्रम की साकार मूर्ति है। वह जीवन की कभी नष्ट न होने वाली चिंगारी है। चींटी एक अतिलघु प्राणी है, परन्तु उसमें जीवन की सम्पूर्ण ज्योति जगमगाती है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** पन्त जी ने चींटी जैसे लघु प्राणी में भी आदर्श सामाजिक प्राणी के गुण देखे हैं। **(2)** कवि तुच्छ दिखने वाले जीवन में भी महानता के तत्व ढूँढने से सक्षम है। **(3) भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। **(4) शैली**— वर्णनात्मक। **(5) रस**—वीर रस (कर्मवीरता के कारण)। **(6) अलंकार**—'भूरे बालों की सी कतरन' में **उपमा**, 'रिलमिल-झिलमिल' में **अनुप्रास**। **(7) गुण**—ओजमिश्रित प्रसाद। **(8) भावसाम्य**—जिस प्रकार चींटी धूप-छाँव, शीत-वर्षा की चिन्ता किये बिना आजीवन श्रमशील बने रहने की प्रेरणा देती है, उसी प्रकार रामनरेश त्रिपाठी भी मृत्युपर्यन्त कर्म करने के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं—

कर्म तुम्हारा धर्म अटल हो,
कर्म तुम्हारी भाषा।
हो सकर्म ही मृत्यु तुम्हारे
जीवन की अभिलाषा।

(ग) चन्द्रलोक में प्रथम बार
मानव ने किया पदार्पण,
छिन्न हुए लो, देशकाल के,
दुर्जय बाधा बन्धन।
दिग्-विजयी मनु-सुत, निश्चय,
यह महत् ऐतिहासिक क्षण
भू-विरोध हो शान्त।
निकट आयें सब देशों के जन।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ **सुमित्रानन्दन पन्त** की कविता '**चन्द्रलोक में प्रथम बार**' से उद्धृत हैं। यह कविता उनके काव्य-संग्रह '**ऋता**' से हमारी पाठ्पुस्तक '**काव्य खण्ड**' में संकलित है।

प्रसंग—अमेरिकावासी आर्मस्ट्रांग पहला मानव था, जो चन्द्रमा की भूमि पर उतरा था। 'चन्द्रलोक में प्रथम बार' शीर्षक कविता में कवि ने उन सम्भावनाओं का वर्णन किया है, जो मानव के चाँद पर पहुँचने पर साकार-सी प्रतीत होती हैं।

व्याख्या—आज मानव ने पहली बार चन्द्रलोक में अपने कदम रखे हैं। इस घटना के साथ ही देश और काल से जुड़ी बाधाओं के न जीते जा सकने वाले बन्धन छिन्न-भिन्न होकर बिखर गए हैं।

चन्द्रलोक में मानव के पदार्पण की यह घटना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आज निश्चय ही मनु-पुत्र अर्थात् मानव ने दिग्विजय प्राप्त कर ली है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह एक बहुत बड़ा क्षण सिद्ध होता है। इस घटना पर कवि यह मंगलकामना करता है कि पृथ्वी पर दिखाई देने वाले समस्त विरोध शान्त हों और सभी देशों के लोग एक-दूसरे के समीप आएँ।

सारा संसार बहुत पुराने समय से चन्द्रमा के बारे में सुनहले स्वप्न देखा करता था। आज मानव ने चन्द्रलोक में पहुँचकर मानो उस स्वप्न को पूरा कर लिया है। चन्द्र-युग का यह मंगलकारी प्रारम्भ पृथ्वी को गरिमामण्डित करे—यह कवि की शुभकामना है। इस घटना से चन्द्रमा तक पृथ्वी का सम्बन्ध जुड़ा है; अत: उसके फलस्वरूप पृथ्वी की गरिमा बढ़ी है।

अब धरती का हरा-भरा अंचल ग्रहों और उपग्रहों सब जगह फहराए। समस्त संसार में सुख व सम्पत्ति की प्रचुरता हो और जीवन में कल्याण-ही-कल्याण हो—कवि की यही मंगलकामना है।

चन्द्रलोक पर प्रथम बार मानव के उतरने पर कवि मंगलकामना करता है कि अमेरिका और रूस जैसे विशाल और शक्तिसम्पन्न देश; दिशाओं की नई एवं श्रेष्ठ रचना के संवाहक बने। उसी प्रकार समस्त संसार के प्राणियों के जीवन-मार्गों में समन्वय स्थापित हो और सभी का मन विशाल और उदार बने।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** यहाँ कवि ने वैज्ञानिक घटना के परिप्रेक्ष्य में दार्शनिक आदर्शों की प्रेरणात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। **(2) भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **(3) रस**—वीर। **(4) गुण**—ओज। **(5) अलंकार**—अनुप्रास, रूपक तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

(घ) फहराए ग्रह उपग्रह में
धरती का श्यामल अंचल,
सुख संपद् सम्पन्न जगत् में
बरसे जीवन-मंगल।
अमरीका सोवियत बनें
नव दिक् रचना के वाहन
जीवन पद्धतियों के भेद
समन्वित हों, विस्तृत मन!

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि **सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित **'युगवाणी'** काव्य-संग्रह के **'चन्द्रलोक में प्रथम बार'** शीर्षक कविता से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित हैं।

व्याख्या—कवि का कथन है कि मैं अब यह चाहता हूँ कि ब्रह्माण्ड के ग्रहों-उपग्रहों में इस पृथ्वी का श्यामल अंचल फहराने लगे। तात्पर्य यह है कि मनुष्य अन्य ग्रहों पर भी पहुँचकर वहाँ पृथ्वी जैसी हरियाली और जीवन का संचार कर दे। सुख और वैभव से युक्त इस संसार में मानव-जीवन के कल्याण की वर्षा हो; अर्थात् सम्पूर्ण संसार में कहीं भी दु:ख और दैन्य दिखाई न पड़े।

अमेरिका और सोवियत रूस नयी दिशाओं की रचना करें, क्योंकि अन्तरिक्ष विज्ञान में यही देश सर्वाधिक प्रगति पर हैं। कवि का कहना है कि विश्व में प्रत्येक देश की संस्कृति और सभ्यता भिन्न-भिन्न है तथा अलग-अलग जीवन-पद्धतियाँ हैं। इनकी भिन्नता समाप्त होनी चाहिए। तात्पर्य यह है कि सभी जीवन-पद्धतियाँ आपस में मिलकर एक हो जाएँ और मन की संकुचित भावना का अन्त कर लोग उदारचेता बनें तथा विश्व-मानव में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का विकास हो।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवि चारों ओर कल्याणमय जीवन के प्रसार की कामना करता है। **(2) भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। **(3) शैली**—प्रतीकात्मक। **(4) रस**—वीर। **(5) छन्द**—तुकान्त-मुक्त। **(6) गुण**—ओज। **(7) अलंकार** —'फहराये ग्रह-उपग्रह में धरती का श्यामल अंचल' में **रूपक** तथा **अनुप्रास**।

(ङ) अणु-युग बने धरा जीवन हित
स्वर्ग-सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य
भू-राष्ट्र करें आत्मार्पण!
धरा चन्द्र की प्रीति परस्पर
जगत् प्रसिद्ध, पुरातन,
हृदय-सिन्धु में उठता
स्वर्गिक ज्वार देख चन्द्रानन!

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि **सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित **'युगवाणी'** काव्य-संग्रह के **'चन्द्रलोक में प्रथम बार'** शीर्षक कविता से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित हैं।

प्रसंग—इन पंक्तियों में पन्त जी ने अणु-युग के प्रति लोकमंगल की कामना को अभिव्यक्त किया है।

व्याख्या—पन्त जी की कामना है कि विज्ञान का सम्पूर्ण विकास मानव के कल्याण के लिए हो अर्थात् अणु-शक्ति का प्रयोग मानव-संहार के लिए न होकर, मानव-कल्याण के लिए हो। इसके विकास से संसार के आपसी द्वेषों का नाश हो जाए और उनके स्थान पर सद्भावना और भ्रातृ-प्रेम का उदय हो, जिससे यह पृथ्वी; स्वर्ग के समान सुखी और सम्पन्न हो जाए अर्थात् यह अणु-युग; पृथ्वी पर स्वर्ग के निर्माण का साधन बने। मानवता ही केवल इस संसार में एक सत्य है, अन्य वस्तुएँ तो मिथ्या हैं। सच्ची मानवता के लिए सभी राष्ट्रों को अपनी स्वार्थ-भावना त्याग देनी चाहिए और उसके प्रति आत्मसमर्पण कर देना चाहिए; तभी पृथ्वी पर विभिन्न राष्ट्रों के बीच के भेदभाव की खाई समाप्त होगी और विश्व में मानवता का साम्राज्य होगा।

पन्त जी कहते हैं कि पृथ्वी और चन्द्रमा का प्रेम बहुत पुराना है। विद्वानों का विश्वास है कि चन्द्रमा पहले पृथ्वी का ही एक टुकड़ा था, जो टूटकर-छिटककर उससे अलग हो गया। आज भी पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा को देखकर सागर के हृदय में ज्वार आता है। यह मानो पृथ्वी और चन्द्रमा के पुरातन सम्बन्ध और प्रेम का ही परिचायक है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** इन पंक्तियों में कवि का मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत हुआ है। **(2)** वैज्ञानिक शक्ति के मानवतावादी उपयोग की प्रेरणा दी गई है। **(3)** पन्त जी का मत है कि आपसी भेदभाव भुलाकर परस्पर मित्रता करने से ही विश्व की उन्नति होगी। **(4) भाषा** —साहित्यिक हिन्दी। **(5) रस**—शान्त। **(6) गुण**—माधुर्य। **(7) अलंकार**—अनुप्रास।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(क) तम के तागे सी जो हिल-डुल
चलती लघुपद पल-पल मिल-जुल।

उत्तर—उपमा, अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश।

(ख) भूरे बालों की सी कतरन,
छिपा नहीं उसका छोटापन।

उत्तर—उपमा।

(ग) सुख संपद् सम्पन्न जगत् में
बरसे जीवन-मंगल।

उत्तर—अनुप्रास।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए—
पृथ्वी, चन्द्र, लोक, सिन्धु।

उत्तर—

शब्द		पर्यायवाची शब्द
पृथ्वी	—	धरा, वसुधा
चन्द्र	—	सुधांशु, मयंक
लोक	—	संसार, दुनिया
सिन्धु	—	समुद्र, सागर

प्रश्न 3. निम्नलिखित पदों से उपसर्ग और शब्द को पृथक्-पृथक् करके लिखिए—

सुनागरिक, अक्षय, समारम्भ, उपग्रह।

उत्तर—

पद	उपसर्ग	शब्द
सुनागरिक	सु	नागरिक
अक्षय	अ	क्षय
समारम्भ	सम्	आरम्भ
उपग्रह	उप	ग्रह

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय और मूलशब्दों को अलग-अलग कीजिए—

नागरिक, ऐतिहासिक, समन्वित, पौराणिक, सामाजिक, छोटापन, मानवता, स्वर्गिक।

उत्तर—

शब्द	प्रत्यय	मूलशब्द
नागरिक	इक	नगर
ऐतिहासिक	इक	इतिहास
समन्वित	इत	समन्वय
पौराणिक	इक	पुराण
सामाजिक	इक	समाज
छोटापन	पन	छोटा
मानवता	ता	मानव
स्वर्गिक	इक	स्वर्ग

❑

6 हिमालय से, वर्षा सुन्दरी के प्रति

(महादेवी वर्मा)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महादेवी वर्मा का जन्म कब व कहाँ हुआ था? उनकी एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई० में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद नगर में हुआ था। उनकी एक रचना का नाम 'दीपशिखा' है।

प्रश्न 2. 'हिमालय से' शीर्षक कविता का मूलभाव लिखिए।

उत्तर—'हिमालय से' शीर्षक कविता का मूलभाव यह है कि हमें हिमालय की तरह धैर्यशील, करुणा, गंभीरता तथा दु:ख-सुख में समान भाव रखना चाहिए।

प्रश्न 3. छायावाद की प्रमुख आधार-स्तम्भ कवयित्री का नाम लिखिए।

उत्तर—छायावाद की प्रमुख आधार स्तम्भ कवयित्री महादेवी वर्मा हैं।

प्रश्न 4. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा महादेवी वर्मा को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

उत्तर—महादेवी वर्मा को उत्तर प्रदेश सरकार ने 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया।

प्रश्न 5. महादेवी वर्मा के पिता का नाम क्या था?

उत्तर—महादेवी वर्मा के पिता का नाम गोविन्दसहाय वर्मा था।

प्रश्न 6. 'वर्षा-सुन्दरी' के केश किसके समान श्यामल हैं?

उत्तर—'वर्षा सुन्दरी' के केश घने-घने बादल के समान श्यामल हैं।

प्रश्न 7. 'हिमालय से' शीर्षक कविता में महादेवी वर्मा ने हिमालय के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया है?

उत्तर—'हिमालय से' शीर्षक कविता में महादेवी वर्मा ने हिमालय के लिए निम्न विशेषणों का प्रयोग किया है—महान, स्वर्णरश्मि, श्वेतभाल, हिमनिधान, भाल, सेली आदि।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महादेवी वर्मा का संक्षिप्त जीवन-परिचय एवं काव्य-कृतियाँ लिखिए।

उत्तर—श्रीमती महादेवी वर्मा का नाम लेते ही भारतीय नारी की शालीनता, गम्भीरता, आस्था, साधना और कलाप्रियता साकार हो उठती है। महादेवी जी का मुख्य क्षेत्र काव्य है। छायावादी कवियों (पन्त, निराला, प्रसाद, महादेवी) की वृहत् कवि-चतुष्टयी में इनकी गणना होती है। इनकी कविताओं में वेदना की प्रधानता है। इन्हें आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है।

जीवन-परिचय—श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद जनपद में सन् **1907 ई०** में होलिकोत्सव के दिन हुआ था। इनके पिता गोविन्दप्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्रधानाचार्य और माता हेमरानी विदुषी और धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर में और उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई थी। संस्कृत में एम०ए० उत्तीर्ण करने के बाद ये प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्या हो गयीं। इनका विवाह छोटी आयु में ही हो गया था। इनके पति डॉक्टर थे। वैचारिक साम्य न होने के कारण ये अपने पति से अलग रहती थीं। कुछ समय तक इन्होंने 'चाँद' पत्रिका का सम्पादन किया। इनके जीवन पर महात्मा गाँधी का तथा साहित्य-साधना पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का विशेष प्रभाव पड़ा। इन्होंने नारी-स्वातन्त्र्य के लिए सदैव संघर्ष किया और अधिकारों की रक्षा के लिए नारी का शिक्षित होना आवश्यक बताया। कुछ वर्षों तक ये उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की मनोनीत सदस्या भी रहीं। इनकी साहित्य-सेवाओं के लिए राष्ट्रपति ने इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। 'सेकसरिया' एवं 'मंगलाप्रसाद' पारितोषिक से भी इन्हें सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 18 मई, 1983 ई० को इन्हें हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री के रूप में 'भारत-भारती' पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया गया। 28

नवम्बर, 1983 ई० को इन्हें इनकी अप्रतिम गीतात्मक काव्यकृति 'यामा' पर 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। ये प्रयाग में ही रहकर जीवनपर्यन्त साहित्य-साधना करती रहीं। **11 सितम्बर, 1987 ई०** को ये इस असार-संसार से विदा हो गयीं। यद्यपि आज ये हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन इनके गीत काव्य-प्रेमियों के मानस-पटल पर सदैव विराजमान रहेंगे।

रचनाएँ—महादेवी वर्मा की प्रमुख काव्य-कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) नीहार—यह महादेवी वर्मा का प्रथम काव्य-संग्रह है। इसमें 47 गीत संकलित हैं। इसमें वेदना तथा करुणा का प्राधान्य है। यह भावमय गीतों का संग्रह है।

(2) रश्मि—इसमें दार्शनिक, आध्यात्मिक और रहस्यवादी 35 कविताएँ संकलित हैं।

(3) नीरजा—यह 58 गीतों का संग्रह है। इसमें संगृहीत अधिकांश गीतों में विरह से उत्पन्न प्रेम का सुन्दर चित्रण हुआ है। कुछ गीतों में प्रकृति के मनोरम चित्रों के अंकन भी हैं।

(4) सान्ध्यगीत—इसमें 54 गीत हैं। इस संकलन के गीतों में परमात्मा से मिलन का आनन्दमय चित्रण है।

(5) दीपशिखा—यह रहस्य-भावना और आध्यात्मिकता से पूर्ण 51 भावात्मक गीतों का संकलन है। इस संग्रह के अधिकांश गीत दीपक पर लिखे गये हैं, जो आत्मा का प्रतीक है।

इनके अतिरिक्त **सप्तपर्णा, यामा, सन्धिनी** एवं **आधुनिक कवि** नामक इनके गीतों के संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। **'प्रथम आयाम', 'अग्निरेखा', 'परिक्रमा'** आदि इनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं। 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'श्रृंखला की कड़ियाँ', 'पथ के साथी', 'क्षणदा' **'साहित्यकार की आस्था तथ अन्य निबन्ध', 'संकल्पिता', 'मेरा परिवार', 'चिन्तन के क्षण'** आदि आपकी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ हैं।

साहित्य में स्थान—हिन्दी-साहित्य में महादेवी जी का विशिष्ट स्थान है। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में सृजन कर हिन्दी की अपूर्व सेवा की है। मीरा के बाद आप अकेली ऐसी महिला रचनाकार हैं, जिन्होंने ख्याति के शिखर को छुआ है। इनके गीत अपनी अनुपम अनुभूतियों और चित्रमयी व्यंजना के कारण हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के शब्दों में—

हिन्दी के विशाल मन्दिर की वीणापाणि,
स्फूर्ति चेतना रचना की प्रतिभा कल्याणी।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए—

हिमालय

(क) हे चिर महान!
यह स्वर्णरश्मि छू श्वेत भाल,
बरसा जाती रंगीन हास;
सेली बनता है इन्द्रधनुष,
परिमल मल मल जाता बतास!
पर रागहीन तू हिमनिधान!

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ आधुनिक युग की मीरा **श्रीमती महादेवी वर्मा** की **'हिमालय से'** नामक कविता से उद्धृत हैं। यह कविता हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में उनके काव्य-संग्रह **'सान्ध्यगीत'** से संकलित है।

[विशेष—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—इन पंक्तियों में महादेवी जी ने हिमालय की प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन किया है।

व्याख्या—हे हिमालय! तुम सदैव महान् हो। बर्फ से ढके हुए तुम्हारे श्वेत मस्तक का स्पर्श करके सूर्य की सुनहली किरणें हँसने लगती हैं और उसकी रंगीन हँसी चारों ओर बिखर जाती है। उस समय ऐसा प्रतीत होता है, मानो चारों ओर प्रकृति प्रसन्नता से हँस रही हो। रंग-बिरंगा इन्द्रधनुष ऐसा लगता है जैसे तुम्हारे सिर पर पगड़ी बाँध दी गई हो। शीतल वायु तुम्हारे अंग-अंग में सुगन्धित पदार्थों का लेपन कर देती है। हे हिमालय! तुम फिर भी वैरागी के समान उदासीन ही रहते हो।

हे हिमालय! तुम आकाश में सिर ऊँचा किए हुए गर्व से खड़े हुए हो। तुम्हारा सिर किसी के सामने नहीं झुकता। तुम इतने महान् हो कि दीन-हीन मिट्टी को भी अपनी गोद में लिए हुए हो। संसार को अपने सामने झुका हुआ देखकर तुम्हारा मन दया से पिघल जाता है। तुम्हारा शरीर कठोर भार को भी सहन कर लेता है। हे हिमालय! तुम अन्दर से कोमल हो; किन्तु कठोरता को भी सहन करने की शक्ति रखते हो।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** यहाँ पर हिमालय के प्राकृतिक सौन्दर्य का सजीव अंकन हुआ है। **(2)** भाषा की संगीतात्मकता द्रष्टव्य है। **(3) भाषा**—खड़ीबोली। **(4) रस**—शृंगार। **(5) गुण**—माधुर्य। **(6) अलंकार**—उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण तथा अनुप्रास।

(ख) नभ में गर्वित झुकता न शीश,
पर अंक लिये है दीन क्षार ;
मन गल जाता नत विश्व देख,
तन सह लेता है कुलिश-भार!
कितने मृदु कितने कठिन प्राण!

प्रसंग—कवयित्री ने इन पंक्तियों में हिमालय की कठोरता और कोमलता का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवयित्री का कथन है कि हे हिमालय! स्वाभिमान से आकाश को छूने वाला तुम्हारा मस्तक किसी शक्ति के सम्मुख कभी नहीं झुकता है, फिर भी तुम्हारा हृदय इतना उदार है कि तुम अपनी गोद में तुच्छ धूल को भी धारण किये रहते हो। संसार को अपने चरणों में झुका देखकर तुम्हारा कोमल हृदय पिघलकर सरिताओं के रूप में प्रवाहित होने लगता है। हे हिमालय! तुम अपने शरीर पर वज्र के आघात सहकर भी विचलित नहीं होते। इस प्रकार तुम हृदय से कोमल और शरीर से कठोर हो।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** इन पंक्तियों में कवयित्री ने हिमालय का मानवीकरण करते हुए उसके कोमल एवं कठोर स्वरूप का चित्रण किया है। **(2) भाषा**—सरल, साहित्यिक खड़ीबोली। **(3) शैली**—चित्रात्मक और भावात्मक। **(4) रस**—शान्त। **(5) छन्द**—अतुकान्त-मुक्त। **(6) गुण**—माधुर्य। **(7) शब्दशक्ति**—लक्षणा। **(8) अलंकार**—'कितने मृदु कितने कठिन प्राण' में **अनुप्रास** एवं **विरोधाभास**, हिमालय के चित्रण में **मानवीकरण**। **(9) भावसाम्य**—प्रसिद्ध संस्कृत कवि भवभूति ने श्रीराम में कोमलता और कठोरता के विरोधाभासी लक्षणों को देखकर कहा था—

वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि, को नु विज्ञातुमर्हसि॥

(ग) टूटी है तेरी कब समाधी,
झंझा लौटे सत हार-हार;
बह चला दृगों से किन्तु नीर;

सुनकर जलते कण की पुकार!
सुख से विरक्त दुःख में समान!

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ छायावादी काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री और आधुनिक युग की मीरा **श्रीमती महादेवी वर्मा** के गीत **'वर्षा सुन्दरी के प्रति'** से उद्धृत हैं। यह गीत उनके **'नीरजा'** नामक काव्य-संग्रह से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में श्रीमती महादेवी वर्मा ने हिमालय की दृढ़ता तथा उसके हृदय की कोमलता का सुन्दर चित्रण किया है।

व्याख्या—महादेवी जी ने हिमालय को एक समाधिस्थ योगी के रूप में देखा है। वे उससे कहती हैं कि हे हिमालय! सैकड़ों आँधी-तूफान तुमसे टकराते हैं और तुम्हारी दृढ़ता के सम्मुख हार मानकर लौट जाते हैं, किन्तु तुम अविचल भाव से समाधि में लीन रहते हो। इतनी बड़ी सहन-शक्ति और दृढ़ता होने पर भी तुच्छ धूल के जलते कण की करुण पुकार सुनकर तुम्हारी आँखों से करुणा के आँसू जल-धारा बनकर बहने लगते हैं। तुममें दृढ़ता है, पर हृदय की कोमलता भी है। तुम्हारी सुख-भोग में आसक्ति नहीं है। तुम सुख और दुःख में एकसमान रहते हो। यह समत्व की भावना तुम्हारी उच्चता की द्योतक है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** जहाँ एक ओर हिमालय के बाहरी स्वरूप में कठोरता है, वहीं दूसरी ओर उसमें हृदय की करुणा भी विद्यमान है। **(2)** कवयित्री ने प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है। **(3) भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली। **(4) शैली**—गीति। **(5) रस**—शान्त। **(6) छन्द**—अतुकान्त-मुक्त। **(7) गुण**—माधुर्य। **(8) शब्दशक्ति**—लक्षणा। **(9) अलंकार**—'हार-हार' में **पुनरुक्तिप्रकाश** तथा हिमालय के चित्रण में **मानवीकरण**। **(10) भावसाम्य**—कभी हँसना, कभी रोना और सुख-दुःख को समान भाव से ग्रहण करने के जिस जीवन-आदर्श को कवयित्री ने हिमालय के माध्यम से प्रस्तुत किया है, उसी का अपनी कविता में समर्थन करते हुए भगवतीचरण वर्मा कहते हैं—

छककर सुख-दुःख के घूँटों को
हम एक भाव से पिये चलें।

(घ) मेरे जीवन का आज मूक,
तेरी छाया से हो मिलाप;
तन तेरी साधकता छू ले!
मन ले करुणा की थाह नाप!
उर में पावस दृग में विहान।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ छायावादी काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री और आधुनिक युग की मीरा **श्रीमती महादेवी वर्मा** के गीत **'हिमालय से'** से उद्धृत हैं। यह गीत उनके **'नीरजा'** नामक काव्य-संग्रह से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित है।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण में महादेवी जी ने हिमालय की दृढ़ता एवं उसके प्रति अपनी भावनात्मक अनुभूमि का वर्णन किया है।

व्याख्या—हे हिमालय! तू कठोर तपस्वी की भाँति समाधि लगाए हुए है। इस समाधि को आँधी के सैकड़ों झटके भी भंग नहीं कर सके। वे तो केवल टकराए और हार मानकर ही लौट गए। एक ओर तो तुममें इतनी कठोरता है और दूसरी ओर जब तुमने तीव्र धूप से तपे हुए, धूल के कण की चीत्कार सुनी तो दया के कारण तुम्हारे नेत्रों से जलधारा फूट पड़ी। तुम सुख की कामना नहीं करते, अपितु सुख-दुःख में समान रहनेवाले योगी हो।

महादेवी जी कहती हैं—हे गिरिराज! मेरी तो यही कामना है कि मेरे जीवन की मौन भावना तुम्हारी विस्तृत छाया से मिल जाए। मेरा शरीर भी साधना की उस सीमा तक पहुँच जाए, जहाँ तक तुम्हारी साधना पहुँची है। मेरा मन भी उतना ही करुणापूर्ण हो जाए, जितनी करुणा तुम्हारे हृदय में भरी हुई है। मेरे हृदय में भी वर्षा का निवास है तथा नेत्रों में प्रातःकालीन सौन्दर्य विद्यमान है। कवयित्री का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार हिमालय सारे कष्टों, संकटों, आँधी, वर्षा आदि को झेलता है, उसी प्रकार मैं भी संकटों के आने पर अपने जीवन के आदर्शों से विचलित न हो सकूँ।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवयित्री का मन मानव-कष्टों को देखकर उन्हें दूर करने के लिए व्याकुल है। **(2)** कवयित्री हिमालय को देखकर उसके महान् गुणों को अपने मन में सहेजने की कामना कर रही है। **(3)**यहाँ हिमालय का मानवीकरण किया गया है। **(4)** कवयित्री का प्रकृति -चित्रण दर्शनीय है। **(5)** छायावाद का प्रभाव स्पष्ट रूप में परिलक्षित है। **(6) भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **(7) रस**—शान्त। **(8) गुण**—माधुर्य। **(9) अलंकार**—मानवीकरण, पुनरुक्तिप्रकाश तथा रूपकातिशयोक्ति।

वर्षा सुन्दरी के प्रति

(क) रूपसि तेरा घन-केश-पाश।
श्यामल - श्यामल कोमल - कोमल,
लहराता सुरभित केश-पाश!

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ छायावादी काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री और आधुनिक युग की मीरा **श्रीमती महादेवी वर्मा** के गीत **'वर्षा सुन्दरी के प्रति'** से उद्धृत है। यह गीत उनके **'नीरजा'** नामक काव्य-संग्रह से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित है।

[विशेष—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—इन पंक्तियों में वर्षा को सुन्दरी के रूप में चित्रित किया गया है।

व्याख्या—महादेवी जी कहती हैं कि हे वर्षारूपी सुन्दरी! तेरा केश-जाल बादलों के समान श्यामल-श्यामल है। तेरा श्याम और कोमल केश-जाल सुगन्ध से युक्त होकर लहरा रहा है।

हे सुन्दरी! क्या तू इन केशों को रात्रि के समय रजत-धार से युक्त आकाशगंगा में धोकर आई है? तेरे भीगे हुए अंग काँप रहे हैं। तेरा शरीर उस महिला के शरीर के समान सिहर रहा है, जो अभी-अभी स्नान करके आई हो, तेरी भीगी हुई अलकों के छोरों से जल की बूँदें प्रसन्नता के साथ नृत्य करती हुई टपक रही हैं। हे वर्षारूपी सुन्दरी! तेरा बादलरूपी बालों का समूह बड़ा आकर्षक लग रहा है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** यहाँ वर्षा को सुन्दरी के रूप में प्रस्तुत करके, उसका मानवीकरण किया गया है। **(2) भाषा**—परिमार्जित खड़ीबोली। **(3) रस**—शृंगार। **(4) गुण**—माधुर्य। **(5) अलंकार**—अनुप्रास, रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश तथा मानवीकरण।

(ख) सौरभ भीना झीना गीला
लिपटा मृद अंजन-सा दुकूल;
चल अंचल से झर-झर झरते
पथ में जुगनू के स्वर्ण-फूल;
दीपक से देता बार-बार
तेरा उज्ज्वल चितवन-विलास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ छायावादी काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री और आधुनिक युग की मीरा **श्रीमती महादेवी वर्मा** के गीत

'वर्षा सुन्दरी के प्रति' से उद्धृत है। यह गीत उनके **'नीरजा'** नामक काव्य-संग्रह से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में वर्षा सुन्दरी के शृंगार का अद्भुत वर्णन किया गया है।

व्याख्या—कवयित्री कहती है कि हे वर्षारूपी नायिका! तुमने बादलों के रूप में एक सुगन्धित, पारदर्शक, कुछ गीला एवं हल्का काले रंग का झीना रेशमी वस्त्र धारण कर लिया है। आकाश में चमकने वाले जुगनू ऐसे लग रहे हैं, मानो तुम्हारे हिलते हुए आँचल से मार्ग में सोने के फूल झर रहे हों। बादलों में चमकती बिजली ही तुम्हारी उज्ज्वल चितवन है। जब तुम अपनी ऐसी सुन्दर दृष्टि किसी पर डालती हो तो उसके मन में प्रेम के दीपक जगमगाने लगते हैं। हे रूपवती वर्षा सुन्दरी! तुम्हारी बादल रूपी केश-राशि अत्यधिक सुन्दर है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवयित्री ने प्रकृति के मानवीकरण के सहारे उसकी भाव-भंगिमाओं का सुन्दर वर्णन किया है। **(2)** वर्षाकाल की विभिन्न वस्तुओं का वर्षा-सुन्दरी के शृंगार-प्रसाधनों के रूप में प्रयोग किया गया है। **(3) भाषा**— साहित्यिक खड़ीबोली। **(4) शैली**—चित्रात्मक और प्रतीकात्मक। **(5) रस**—शृंगार। **(6) गुण**—माधुर्य। **(7) छन्द**—अतुकान्त-मुक्त। **(8) अलंकार**—'तेरा उज्ज्वल चितवन-विलास' में **रूपक,** 'मृदु अंजन-सा दुकूल' में **उपमा**, वर्षा के चित्रण में **मानवीकरण** तथा **अनुप्रास**।

(ग) उच्छ्वसित वक्ष पर चंचल है
बक-पाँतों का अरविन्द हार;
तेरी निश्वासें छू भू को
बन बन जातीं मलयज बयार;
केकी-रव की नूपुर-ध्वनि सुन
जगती जगती की मूक प्यास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ छायावादी काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री और आधुनिक युग की मीरा **श्रीमती महादेवी वर्मा** के गीत **'वर्षा सुन्दरी के प्रति'** से उद्धृत है। यह गीत उनके **'नीरजा'** नामक काव्य-संग्रह से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में वर्षा रूपी सुन्दर रमणी के सौन्दर्य का आलंकारिक वर्णन हुआ है।

व्याख्या—हे वर्षा रूपी सुन्दरी! साँस लेने के कारण ऊपर उठे तथा कम्पित तेरे वक्ष-स्थल पर आकाश में उड़ते हुए बगुलों की पंक्तियों रूपी श्वेत कमलों का हार हिलता हुआ-सा मालूम पड़ रहा है। जब तुम्हारे मुख से निकली बूँद रूपी साँसें पृथ्वी पर गिरती हैं तो उसके पृथ्वी के स्पर्श से उठने वाली एक प्रकार की महक, मलयगिरि की सुगन्धित वायु के समान प्रतीत होती है। तुम्हारे आगमन पर चारों ओर नृत्य करते हुए मोरों की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ने लगती है, जो कि तुम्हारे पैरों में बँधे हुए घुँघरुओं के समान मालूम पड़ती है, जिसको सुनकर लोगों के मन में मधुर प्रेम की प्यास जागृत होने लगती है। तात्पर्य यह है कि मोरों की मधुर आवाज से वातावरण में जो मधुरता छा जाती है, वह लोगों को आनन्द और उल्लास से जीने की प्रेरणा प्रदान करती है। उनके हृदय में मौन रूप में छिपा हुआ प्यार मुखर रूप धारण कर लेता है जो उनकी जीने की इच्छा को बलवती बनाता है। हे वर्षा रूपी सुन्दरी! तुम्हारी बादल रूपी बालों की राशि अत्यधिक सुन्दर है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवयित्री ने वर्षा का मानवीकरण करके उसके मोहक रूप का चित्रण किया है। **(2) भाषा**— साहित्यिक खड़ीबोली। **(3) शैली**—चित्रात्मक। **(4) रस**—शृंगार। **(5) गुण** —माधुर्य। **(6) छन्द** —अतुकान्त-मुक्त। **(7) अलंकार**—'उच्छ्वसित वक्ष पर चंचल है' में **रूपक**, 'बन-बन' में **पुनरुक्तिप्रकाश**, 'जगती, जगती' में **यमक** और **अनुप्रास**।

(घ) इन स्निग्ध लटों से छा दे तन
पुलकित अंकों में भर विशाल;
झुक सस्मित शीतल चुम्बन से
अंकित कर इसका मृदुल भाल;
दुलरा दे ना, बहला दे ना
यह तेरा शिशु जग है उदास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

प्रसंग—इन पंक्तियों में महादेवी वर्मा ने वर्षारूपी सुन्दरी को एक माता के रूप में चित्रित किया है।

व्याख्या—कवयित्री वर्षारूपी सुन्दरी से आग्रह करती है कि हे वर्षा सुन्दरी! तुम अपने कोमल बालों की छाया में इस संसाररूपी अपने शिशु को समेट लो। उसे अपनी रोमांचित एवं विशाल गोद में रखकर उसका सुन्दर मस्तक अपने बादलरूपी बालों से ढककर अपने हँसीयुक्त शीतल चुम्बन से चूम लो। हे सुन्दरी! तुम्हारे बादलरूपी बालों की छाया से, मधुर चुम्बन और दुलार से इस संसाररूपी; शिशु का मन बहल जाएगा और उसकी उदासी दूर हो जाएगी। हे वर्षारूपी सुन्दरी! तुम्हारी बादल रूपी काली केश-राशि बड़ी मोहक लग रही है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** वर्षा में मातृत्व का सजीव चित्रण हुआ है तथा बच्चे के प्रति माता के कर्त्तव्य को समझाया गया है। **(2)** प्रकृति का ऐसा सुन्दर चित्रण कम ही देखने को मिलता है। **(3) भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। **(4) शैली**—चित्रात्मक और भावात्मक। **(5) रस**—शृंगार एवं वात्सल्य। **(6) गुण**—माधुर्य। **(7) छन्द**—अतुकान्त-मुक्त। **(8) अलंकार**—रूपक और मानवीकरण।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(क) तन सह लेता है कुलिश भार।
कितने मृदु कितने कठिन प्राण।

उत्तर—विरोधाभास अलंकार।

(ख) रूपसि तेरा घन-केश-पाश।
श्यामल-श्यामल कोमल-कोमल
लहराता सुरभित केश-पाश।

उत्तर—रूपक और पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग और मूलशब्द को अलग कीजिए—

विरक्त, परिमल, सजल, उपहार, अधिकार, उज्ज्वल, सम्मित।

उत्तर—

पद	मूलशब्द	उपसर्ग
विरक्त	रक्त	वि
परिमल	मल	परि
सजल	स	जल
उपहार	हार	उप
अधिकार	कार	अधि
उज्ज्वल	ज्वल	उत्
सम्मित	मित	सम्

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय और प्रकृति (मूलशब्द) पृथक् करके लिखिए—

गर्वित, रागहीन, साधकता, मलयज, विशालता, शिशुपन, पुलकित।

उत्तर—

पद	प्रत्यय	मूलशब्द
गर्वित	इत्	गर्व
रागहीन	हीन	राग
साधकता	ता	साधक
मलयज	यज	मल
विशालता	ता	विशाल
शिशुपन	पन	शिशु
पुलकित	इत	पुलक

प्रश्न 4. 'हिमालय से' कविता में हिमालय के लिए प्रयुक्त विशेषणों में से किन्हीं पाँच विशेषणों को छाँटकर लिखिए।

उत्तर—हिमालय के लिए प्रयुक्त पाँच विशेषण इस प्रकार हैं—(1) चिरमहान (2) श्वेत भाल (3) हिमनिधान (4) स्वर्णरश्मि (5) विहान।

प्रश्न 5. उपमा अंलकार की विशेषता बताते हुए निम्नलिखित पंक्तियों में उपमेय और उपमान अलग-अलग कीजिए—

(क) बक-पाँतों का अरविन्द-हार।

उत्तर—

उपमेय	उपमान
अरविन्द	हार
बक	पाँत

(ख) लिपटा मृदु अंजन-सा दुकूल।

उत्तर—

उपमेय	उपमान
अंजन-सा	दुकूल

प्रश्न 6. ''रूपसि तेरा घन-केश-पाश'' पंक्ति में निम्नांकित में से कौन-सा अलंकार है?

(क) यमक (ख) श्लेष

(ग) रूपक (घ) उदाहरण।

उत्तर—रूपसि तेरा घन केश-पाश में रूपक अलंकार है।

❑

7 स्वदेश-प्रेम

(रामनरेश त्रिपाठी)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. त्रिपाठी जी की कविताओं का मूल स्वर क्या है?

उत्तर—त्रिपाठी जी की कविताओं का मूल स्वर राष्ट्रीय भावना और मानवसेवा से सम्बन्धित है।

प्रश्न 2. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर—रामनरेश त्रिपाठी का जन्म 1889 ई० में जौनपुर जिले के कोइरीपुर गाँव में हुआ था।

प्रश्न 3. रामनरेश त्रिपाठी के पिता का क्या नाम था?

उत्तर—रामनरेश त्रिपाठी के पिता का नाम पं० रामदत्त त्रिपाठी था।

प्रश्न 4. रामनरेश त्रिपाठी की शिक्षा-दीक्षा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—रामनरेश त्रिपाठी ने नौवीं कक्षा तक की शिक्षा विद्यालय में तथा आगे की शिक्षा स्वयं स्वतन्त्र रूप से प्राप्त की। उन्होंने स्वाध्याय से हिन्दी, बांग्ला, संस्कृत एवं गुजराती भाषा का ज्ञान प्राप्त किया।

प्रश्न 5. रामनरेश त्रिपाठी की दो प्रमुख काव्य और दो गद्य रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—रामनरेश त्रिपाठी की दो काव्य-रचनाएँ हैं—(1) पथिक (2) मिलन।

रामनरेश त्रिपाठी की दो गद्य-रचनाएँ हैं—(1) महात्मा बुद्ध (2) स्वप्नों के चित्र।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. श्री रामनरेश त्रिपाठी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्य-कृतियों (रचनाओं) का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—पं० रामनरेश त्रिपाठी स्वदेश-प्रेम, मानव-सेवा और पवित्र प्रेम के गायक कवि हैं। इनकी रचनाओं में छायावाद का सूक्ष्म सौन्दर्य एवं आदर्शवाद का मानवीय दृष्टिकोण एक साथ घुल-मिल गये हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न साहित्यकार हैं। राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित इनके काव्य अत्यन्त हृदयस्पर्शी हैं।

जीवन-परिचय—हिन्दी-साहित्य के विख्यात कवि रामनरेश त्रिपाठी का जन्म **सन् 1889 ई०** में उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के कोइरीपुर ग्राम के एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। इनके पिता पं० रामदत्त त्रिपाठी एक आस्तिक ब्राह्मण थे। इन्होंने नवीं कक्षा तक स्कूल में पढ़ाई की तथा बाद में स्वतन्त्र अध्ययन और देशाटन से असाधारण ज्ञान प्राप्त किया और साहित्य-साधना को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। इन्हें केवल हिन्दी ही नहीं वरन् अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला और गुजराती भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान था। इन्होंने दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा के प्रचार और प्रसार का सराहनीय कार्य कर हिन्दी की अपूर्व सेवा की। ये हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की इतिहास परिषद् के सभापति होने के साथ-साथ स्वतन्त्रतासेनानी एवं देश-सेवी भी थे। साहित्य की सेवा करते-करते सरस्वती का यह वरद पुत्र **सन् 1962 ई०** में स्वर्गवासी हो गया।

रचनाएँ—त्रिपाठी जी श्रेष्ठ कवि होने के साथ-साथ बाल-साहित्य और संस्मरण साहित्य के लेखक भी थे। नाटक, निबन्ध, कहानी, काव्य, आलोचना और लोक-साहित्य पर इनका पूर्ण अधिकार था। इनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) खण्डकाव्य—'पथिक', 'मिलन' और 'स्वप्न'। ये तीन प्रबन्धात्मक खण्डकाव्य हैं। इनकी विषयवस्तु ऐतिहासिक और पौराणिक है, जो देशप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत है।

(2) मुक्तक काव्य—'मानसी' फुटकर काव्य-रचना है। इस काव्य में त्याग, देश-प्रेम, मानव-सेवा और उत्सर्ग का सन्देश देने वाली प्रेरणाप्रद कविताएँ संगृहीत हैं।

(3) लोकगीत—'ग्राम्य गीत' लोकगीतों का संग्रह है। इसमें ग्राम्य-जीवन के सजीव और प्रभावपूर्ण गीत हैं। इनके अतिरिक्त त्रिपाठी जी द्वारा रचित प्रमुख कृतियाँ हैं।

'वीरांगना' और 'लक्ष्मी' (उपन्यास), 'सुभद्रा', 'जयन्त' और 'प्रेमलोक' (नाटक), 'स्वप्नों के चित्र' (कहानी-संग्रह), 'तुलसीदास और उनकी कविता' (आलोचना), 'कविता कौमुदी' और 'शिवा बावनी' (सम्पादित), 'तीस दिन मालवीय जी के साथ' (संस्मरण), 'श्रीरामचरितमानस' की टीका (टीका), 'आकाश की बातें', 'बालकथा कहानी', 'गुपचुप कहानी'; 'फूलरानी' और 'बुद्धि विनोद' (बाल-साहित्य), 'महात्मा बुद्ध' तथा 'अशोक' (जीवन-चरित) आदि।

साहित्य में स्थान—खड़ीबोली के कवियों में आपका प्रमुख स्थान है। अपनी सेवाओं द्वारा हिन्दी साहित्य के सच्चे सेवक के रूप में त्रिपाठी जी प्रशंसा के पात्र हैं। राष्ट्रीय भावों के उन्नायक के रूप में आप हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए–

(क) शोभित है सर्वोच्च मुकुट से,
जिनके दिव्य देश का मस्तक।
गूँज रही हैं सकल दिशाएँ
जिनके जय-गीतों से अब तक॥
जिनकी महिमा का है अविरल,
साक्षी सत्य-रूप हिम-गिरि-वर
उतरा करते थे विमान-दल,
जिनके विस्तृत वक्षःस्थल पर॥

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'स्वदेश-प्रेम' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक रामनरेश त्रिपाठी हैं।

[विशेष—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में भारत में गौरवपूर्ण अतीत की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

व्याख्या—कवि त्रिपाठी जी आगे कहते हैं कि यह 'भारत' हमारे चिरस्मरणीय पूर्वजों का देश है। इसका मस्तक हिमालय रूपी सर्वोच्च मुकुट से सुशोभित हो रहा है। हमारे पूर्वजों के विजय-गीतों से आज तक भी सम्पूर्ण दिशाएँ गूँज रही हैं। ये ही तो वे पूर्वज थे, जिनकी महिमा की गवाही आज भी सत्य स्वरूप वाला श्रेष्ठ हिमालय दे रहा है अथवा जिनकी महिमा की गवाही आज भी हिमालय के रूप में प्रत्यक्ष है। इस भारत-भूमि के अति विस्तृत अथवा विशाल वक्षस्थल पर विभिन्न देशों के विमान समूह बना-बनाकर उतरा करते थे।

काव्यगत विशेषताएँ—**(1)** हिमालय के महत्त्व और सौन्दर्य की झाँकी प्रस्तुत की गई है। **(2) भाषा**—साहित्यिक और बोधगम्य खड़ीबोली। **(3) शैली**—भावात्मक और वर्णनात्मक। **(4) रस**—वीर। **(5) गुण**—ओज। **(6) छन्द**—प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द। **(7) अलंकार**—अनुप्रास और रूपक।

(ख) सागर निज छाती पर जिनके,
अगणित अर्णव-पोत उठाकर।
पहुँचाया करता था प्रमुदित,
भूमंडल के सकल तटों पर॥
नदियाँ जिसकी यश-धारा-सी,
बहती हैं अब भी निशि-वासर।
ढूँढो उनके चरण चिह्न भी,
पाओगे तुम इनके तट पर॥

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'स्वदेश-प्रेम' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक रामनरेश त्रिपाठी हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में भारत के अतीत की गरिमापूर्ण झाँकी प्रस्तुत की गई है।

व्याख्या—हमारे पूर्वज ऐसे थे कि स्वयं समुद्र भी उनकी सेवा में तत्पर रहता था। वह अपनी छाती पर उनके असंख्य जहाजों को उठाकर प्रसन्नता के साथ पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने पर स्थित समस्त बन्दरगाहों पर पहुँचाया करता था। इस देश में रात-दिन बहती हुई नदियों की धारा मानो हमारे उन पूर्वजों का यशोगान गाती जाती है। धन्य थे वे हमारे ऐसे पूर्वज! जिनका समर्पण, उत्साह और शौर्य अद्‌भुत था। कवि को विश्वास है कि उनके चरण-चिह्न आज भी हमारी नदियों और समुदों के तटों पर मिल जाएँगे। तात्पर्य यह है कि यदि आप अपने पूर्वजों का अनुसरण करेंगे तो आपको उनका मार्गदर्शन अवश्य मिलता रहेगा।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** पूर्वजों की गौरव-गाथा का सजीव और आलंकारिक वर्णन किया गया है। **(2) भाषा**—सरल, सुबोध तथा साहित्यिक खड़ीबोली। **(3) शैली**—भावात्मक। **(4) रस**—वीर। **(5) छन्द**—प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राओं वाल मात्रिक छन्द। (6) **गुण**—ओज। **(7) अलंकार**—अनुप्रास, 'नदियाँ जिसकी यश-धारा-सी' में **उपमा** तथा **रूपक** हैं।

(ग) विषुवत्-रेखा का वासी जो,
जीता है नित हाँफ-हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक,
वह भी अपनी मातृ-भूमि पर।
ध्रुव-वासी, जो हिम में तम में,
जी लेता है काँप-काँप कर।
वह भी अपनी मातृ-भूमि पर,
कर देता है प्राण निछावर॥

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'स्वदेश-प्रेम' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक रामनरेश त्रिपाठी हैं।

प्रसंग—कवि ने इन पंक्तियों में बताया है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी मातृभूमि से प्रेम होता है। वह उसे छोड़कर कहीं जाना पसन्द नहीं करता।

व्याख्या—जो मनुष्य भूमध्य-रेखा का निवासी है, जहाँ असहनीय गर्मी पड़ती है, वहाँ वह गर्मी के कारण हाँफ-हाँफकर अपना जीवन व्यतीत करता है, फिर भी उस स्थान से लगाव के कारण वहाँ की भीषण गर्मी को छोड़कर वह शीतल प्रदेश में नहीं जाता। वह कष्ट उठाता हुआ भी अपनी मातृभूमि पर असाधारण प्रेम और अपार श्रद्धा रखता है। जो मनुष्य ध्रुव प्रदेश का रहने वाला है, जहाँ सदा बर्फ जमी रहने के कारण भयंकर सर्दी पड़ती है, वहाँ वह भयंकर ठण्ड से काँप-काँपकर अपना जीवन-निर्वाह कर लेता है, किन्तु ठण्ड से घबराकर गर्म प्रदेशों में जाकर जीवन नहीं बिताता। उसे भी अपनी मातृभूमि से बहुत प्रेम होता है और उसकी रक्षा के लिए वह भी अपने प्राण निछावर कर देता है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवि ने स्पष्ट किया है कि मानव-मात्र को मातृभूमि से स्वाभाविक प्रेम होता है। **(2)** इन पंक्तियों में स्वदेश-प्रेम की प्रेरणा दी गई है। **(3) भाषा**—सरल खड़ीबोली। **(4) रस**—वीर। **(5) शैली**—भावात्मक। **(6) छन्द**—प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द। **(7) गुण**—ओज। **(8) शब्दशक्ति**—व्यंजना।

(9) अलंकार—'अनुराग अलौकिक' तथा 'हिम में, तम में' में **अनुप्रास**, 'हाँफ-हाँफ' तथा 'काँप-काँप' में **पुनरुक्तिप्रकाश**। **(10) भावसाम्य** —महर्षि वाल्मीकि ने जन्मभूमि को स्वर्ग से भी बढ़कर माना है—**'जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी।'**

(घ) तुम तो, हे प्रिय बन्धु, स्वर्ग-सी,
सुखद, सकल विभवों की आकर।
धरा-शिरोमणि मातृ-भूमि में,
धन्य हुए हो जीवन पाकर॥
तुम जिसका जल अन्न ग्रहण कर,
बड़े हुए लेकर जिसकी रज।
तन रहते कैसे तज दोगे,
उनको हे वीरों के वंशज॥

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'स्वदेश-प्रेम' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक रामनरेश त्रिपाठी हैं।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि द्वारा जनता से स्वदेश-प्रेम का आग्रह किया गया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि कोई विषुवत्-रेखा का वासी हो या ध्रुववासी हो, उसे भी अपनी जन्मभूमि से प्यार होता है। हे बन्धु! तुम्हें तो पृथ्वी का वह भाग मिला है, जिससे अच्छा खण्ड कोई है ही नहीं। वास्तव में, तुम धन्य हो, क्योंकि तुमने उस मातृभूमि पर जीवन पाया है, जो समस्त पृथ्वी में सर्वोच्च मानी जाती है। यह भारत नाम की मातृभूमि सुख देने वाली है तथा समस्त ऐश्वर्यों की खान है। हे वीरों के वंश में उत्पन्न बन्धु! तुमने जिस मातृभूमि का जल और अन्न ग्रहण किया है तथा जिसकी रज में तुम बड़े हुए हो, यह कैसे सम्भव हो सकता है कि शरीर रहते तुम उस मातृभूमि को त्याग दो।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** इन पंक्तियों में मातृभूमि के प्रति ममत्व की भावना का प्रस्तुतीकरण हुआ है। **(2) भाषा**— खड़ीबोली। **(3) रस** —शान्त। **(4) गुण**—प्रसाद। **(5) अलंकार**—उपमा। **(6) भावसाम्य** —कवि ने अन्यत्र भी यही भाव प्रकट किए हैं—

जिस पर गिरकर उदर-दरी से तुमने जन्म लिया है।
जिसका खाकर अन्न, सुधा-सम नीर, समीर पिया है।
वह सनेह की मूर्ति दयामयि, माता तुल्य मही है।
उसके प्रति कर्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है?

(ङ) जब तक साथ एक भी दम हो,
हो अवशिष्ट एक भी धड़कन।
रखो आत्म-गौरव से ऊँची-
पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन॥
एक बूँद भी रक्त शेष हो,
जब तन मन में हे शत्रुंजय!
दीन वचन मुख से न उचारो,
मानो नहीं मृत्यु का भी भय॥

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में त्रिपाठी जी स्वाभिमान की भावना बनाये रखने पर बल दे रहे हैं।

व्याख्या—कविवर त्रिपाठी जी का कथन है कि जब तक तुम्हारी साँसें चल रही हैं और तुम्हारा हृदय धड़क रहा है, तब तक तुम्हें अपना और अपने देश का गौरव ऊँचा रखना है। अपनी पलकें, अपना सिर तथा अपना मनोबल ऊँचा रखना है, अर्थात् तुम्हें कोई ऐसा कार्य नहीं करना है, जिससे तुम्हें किसी के सामने सिर झुकाना पड़े, आँखें नीची करनी पड़ें और दीन-हीन बनना पड़े। जब तक तुम्हारे शरीर में एक बूँद भी रक्त शेष रहे, तब तक हे शत्रु को जीतने वाले भारतीयो! तुम दीन वचन नहीं बोलो और देश की रक्षा करते हुए यदि तुम्हारी मृत्यु भी हो जाए तो तुम्हें उसका भी डर नहीं होना चाहिए।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** स्वाभिमान की रक्षा पर बल दिया गया है। **(2) भाषा**—सहज और सरल खड़ीबोली। **(3) शैली**—भावात्मक। **(4) रस**—वीर। **(5) छन्द**—प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द। **(6) शब्दशक्ति**—व्यंजना। **(7) गुण**—ओज **(8) अलंकार** —अनुप्रास। **(9) भावसाम्य**—अन्यत्र भी कहा गया है—

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं पशु है निरा और मृतक समान है॥

(च) निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु एक है विश्राम-स्थल!
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नव जीवन-संबल॥
मृत्यु एक सरिता है जिसमें,
श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है,
काया-रूपी वस्त्र बहाकर॥

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'स्वदेश-प्रेम' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक रामनरेश त्रिपाठी हैं।

प्रसंग—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में मृत्यु से भयभीत न होने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या—हे भारत के वीरो! तुम निर्भय होकर मृत्यु का स्वागत करो और मृत्यु से कभी मत डरो क्योंकि मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य अपने जीवनभर की थकावट को दूर कर विश्राम प्राप्त करता है; अत: मानव को उससे भयभीत नहीं होना चाहिए। मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण करता है और पुन: नवीन जीवन की यात्रा पर अग्रसर होता है। कवि कहता है कि मृत्यु एक नदी है, जिसमें नहाकर मनुष्य जीवनभर की थकान को दूर करता है। वह उस मृत्यु रूपी नदी में अपने शरीर रूपी पुराने वस्त्र को बहा देता है और पुन: दूसरे नए जीवन रूपी वस्त्र को धारण करता है। कवि का तात्पर्य यह है कि हमें निर्भीकता और उल्लास के साथ मृत्यु का स्वागत करना चाहिए।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** जीवन रूपी मार्ग के मध्य में पड़ने वाले विश्राम-गृह के रूप में मृत्यु की कल्पना, कवि की नितान्त मौलिक कल्पना है। यह त्रिपाठी जी की प्रगल्भ चिन्तनशक्ति की परिचायक है। **(2)** कवि ने स्वदेश पर मर-मिटने की प्रेरणा दी है। **(3) भाषा**—सरल खड़ीबोली। **(4) शैली**—उद्बोधन। **(5) रस**—वीर। **(6) छन्द**—प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द। **(7) गुण**—प्रसाद। **(8) शब्दशक्ति** —व्यंजना। **(9) अलंकार**—'मृत्यु एक है विश्राम-स्थल' तथा 'मृत्यु एक सरिता है' में **रूपक** तथा **अनुप्रास**।

(छ) सच्चा प्रेम वही है जिसकी-
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर॥
देश-प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है,
अमल असीम त्याग से विलसित।

आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित।।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'स्वदेश-प्रेम' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक रामनरेश त्रिपाठी हैं।

प्रसंग—कवि ने त्याग और बलिदान को ही सच्चे देश-प्रेम के लिए आवश्यक माना है।

व्याख्या—कवि कहता है कि सच्चा प्रेम वही है, जिसमें आत्म-त्याग की भावना होती है; अर्थात् आत्म-त्याग पर ही सच्चा प्रेम निर्भर होता है। सच्चे प्रेम के लिए यदि हमें अपने प्राणों को भी न्योछावर करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए। बिना त्याग के प्रेम प्राणहीन या मृत है। त्याग से ही प्रेम में प्राणों का संचार होता है; अत: सच्चे प्रेम के लिए प्राणों का बलिदान करने को भी सदैव प्रस्तुत रहना चाहिए। देशप्रेम वह पवित्र भावना है, जो निर्मल और सीमारहित त्याग में सुशोभित होती है। देशप्रेम की भावना से ही मनुष्य की आत्मा विकसित होती है। आत्मा के विकास से मनुष्य का विकास होता है; अत: देशप्रेम से आत्मा का विकास और आत्मा के विकास से मनुष्यता का विकास करना चाहिए।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) प्रस्तुत पद में देशप्रेम की उत्पत्ति के मूलभावों पर प्रकाश डाला गया है। **(2) भाषा**—सरल खड़ीबोली। **(3) शैली**— उद्‌बोधन। **(4) रस**—वीर। **(5) छन्द**—प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द। **(6) गुण**—ओज। **(7) अलंकार** —'करो प्रेम पर प्राण निछावर' में **अनुप्रास** तथा **रूपक**। **(8) भावसाम्य** —रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने भी कहा है—

स्वातन्त्र्य गर्व उनका जो नर फाकों में प्राण गँवाते हैं
पर नहीं बेच मन का प्रकाश रोटी का मोल चुकाते हैं।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पदों में प्रत्यय और मूलशब्द को अलग-अलग करके लिखिए—

दर्शनीय, निशाकर, लेखक, मनुष्यता, वंशज, विलासित, लौकिक।

उत्तर—

शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय
दर्शनीय	दर्शन	अनीय
निशाकर	निशा	कर
लेखक	लेख	अक्
मनुष्यता	मनुष्य	ता
वंशज	वंश	ज
विलासित	विलास	इत
लौकिक	लोक	इक

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—

दिवाकर, निशाकर, सागर, नदी, भूमि, काया।

उत्तर—

शब्द	—	पर्यायवाची शब्द
दिवाकर	—	भानु, भास्कर
निशाकर	—	राका, चन्द्रमा
सागर	—	समुद्र, जलनिधि
नदी	—	अपगा, तटिनी
भूमि	—	धरा, धरित्री
काया	—	देह, शरीर

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों में सनियम समास-विग्रह कीजिए—

अचर, परीक्षा-स्थल, देश-जाति, गिरि-वर, चरण-चिह्न, शत्रुंजय।

उत्तर—

समस्तपद	समास-विग्रह	समास-नाम
अचर	न चर (न चलने वाला)	नञ् तत्पुरुष
परीक्षा-स्थल	परीक्षा का स्थल	षष्ठी तत्पुरुष
देश-जाति	देश और जाति	द्वन्द्व
गिरि-वर	गिरि में श्रेष्ठ (वर)	सप्तमी तत्पुरुष
चरण-चिह्न	चरणों के चिह्न	षष्ठी तत्पुरुष
शत्रुंजय	शत्रु को जय कर लिया है जिसने	बहुब्रीहि

❑

8 पुष्प की अभिलाषा, जवानी

(माखनलाल चतुर्वेदी)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ? उनकी एक रचना का नाम बताइए।

उत्तर—माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 1889 ई० में होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में हुआ था। उनकी एक रचना का नाम 'हिमकिरीटिनी' है।

प्रश्न 2. माखनलाल चतुर्वेदी को किस कृति के लिए 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

उत्तर—माखनलाल चतुर्वेदी की रचना 'हिमतरंगिनी' के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रश्न 3. साप्ताहिक पत्रिका 'कर्मवीर' के सम्पादक का नाम बताइए।

उत्तर—साप्ताहिक पत्रिका 'कर्मवीर' के सम्पादक माखनलाल चतुर्वेदी हैं।

प्रश्न 4. माखनलाल चतुर्वेदी को भारत-सरकार द्वारा किस उपाधि से सम्मानित किया गया?

उत्तर—माखनलाल चतुर्वेदी को भारत सरकार द्वारा 'पद्म विभूषण' उपाधि से सम्मानित किया गया।

प्रश्न 5. 'जवानी' कविता में 'स्वमुंड सुमेरु कर ले' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर—'जवानी' कविता से 'स्वमुंड सुमेरु कर ले' से कवि का आशय यह है कि स्वयं का ज्ञान कर ले, पत्थर की तरह धरती पर पड़ा मत रह, उठ आगे बढ़।

प्रश्न 6. पुष्प की अभिलाषा क्या है?

उत्तर—पुष्प की अभिलाषा यह है कि मैं उस पथ पर फेंक दिया जाऊँ जिस पथ पर से मातृभूमि पर शीश चढ़ाने वाले वीर गुजरते हैं।

प्रश्न 7. 'जवानी' कविता में कवि युवाओं को क्या पहनने के लिए कह रहा है?

उत्तर—जवानी कविता में कवि युवाओं को 'नर-मुंड माला' (पुरुषों के सिर की माला) पहनने को कह रहा है।

प्रश्न 8. कवि देश के युवा-वर्ग को शीश दे-देकर किस चीज की जाँच करने के लिए कह रहा है?

उत्तर—कवि देश के युवा-वर्ग को शीश दे-देकर अपने प्राण, जोश और साहस की जाँच करने को कह रहा है।

प्रश्न 9. 'जवानी' कविता के माध्यम से कवि क्या सन्देश देना चाहता है?

उत्तर—'जवानी' कविता के माध्यम से कवि अनेक प्रतीकों के माध्यम से युवा पीढ़ी को देश के स्वाभिमान की रक्षा हेतु अपने बलिदान के लिए सदैव तत्पर रहने की प्रेरणा दे रहा है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—श्री माखनलाल चतुर्वेदी एक ऐसे कवि थे, जिनमें राष्ट्रप्रेम कूट-कूटकर भरा हुआ था। परतन्त्र भारत की दुर्दशा को देखकर इनकी आत्मा चीत्कार कर उठी थी। ये एक ऐसे कवि थे, जिन्होंने युग की आवश्यकता को पहचाना। ये स्वयं त्याग और बलिदान में विश्वास करते थे तथा अपनी कविताओं के माध्यम से देशवासियों को भी यही उपदेश देते थे। राष्ट्रीय भावनाओं से पूर्णतया ओत-प्रोत होने के कारण इन्हें 'भारतीय आत्मा' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

जीवन-परिचय—श्री माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म **सन् 1889 ई०** में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के 'बाबई' नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० नन्दलाल चतुर्वेदी था, जो पेशे से अध्यापक थे। प्राथमिक शिक्षा विद्यालय में प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बांग्ला, गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। कुछ दिनों तक अध्यापन करने के अनन्तर आपने 'प्रभा' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन किया। ये खण्डवा से प्रकाशित 'कर्मवीर' पत्र का 30 वर्ष तक सम्पादन और प्रकाशन करते रहे।

श्री गणेशशंकर विद्यार्थी की प्रेरणा और सम्पर्क से इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया और अनेक बार जेल-यात्रा भी की। कारावास के समय भी इनकी कलम नहीं रुकी और कलम के सिपाही के रूप में ये देश की स्वाधीनता के लिए लड़ते रहे। सन् 1943 ई० में आप हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के सभापति निर्वाचित किये गये। इनकी हिन्दी-सेवाओं के लिए सागर विश्वविद्यालय ने इन्हें डी० लिट्० की उपाधि तथा भारत सरकार ने 'पद्मविभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। अपनी कविताओं द्वारा नव-जागरण और क्रान्ति का शंख फूँकने वाला कलम का यह सिपाही 30 जनवरी, **सन् 1968 ई०** को दिवंगत हो गया।

कृतियाँ—चतुर्वेदी जी एक पत्रकार, समर्थ निबन्धकार, प्रसिद्ध कवि और सिद्धहस्त सम्पादक थे, परन्तु कवि के रूप में ही इनकी प्रसिद्धि अधिक है। इनके कविता-संग्रह हैं—(1) हिमकिरीटिनी, (2) हिमतरंगिनी, (3) माता, (4) युगचरण, (5) समर्पण, (6) वेणु लो गुँजे धरा। इनकी 'हिमतरंगिनी' साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत रचना है। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं—

'साहित्य देवता' चतुर्वेदी जी के भावात्मक निबन्धों का संग्रह है। **'रामनवमी'** में प्रभु-प्रेम और देश-प्रेम को एक साथ चित्रित किया गया है। **'सन्तोष'** और **'बन्धन सुख'** नामक रचनाओं में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की मधुर स्मृतियाँ सँयोजी गयी हैं। इनकी कहानियों का संग्रह **'कला का अनुवाद'** नाम से प्रकाशित हुआ। **'कृष्णार्जुन युद्ध'** नामक रचना में पौराणिक कथानक को भारतीय नाट्य-परम्परा के अनुसार प्रस्तुत किया गया है।

साहित्य में स्थान—श्री माखनलाल चतुर्वेदी जी की रचनाएँ हिन्दी-साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। आपने ओजपूर्ण भावात्मक शैली में रचनाएँ कर युवकों में जो ओज और प्रेरणा का भाव भरा है, उसका राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में बहुत बड़ा योगदान है। राष्ट्रीय चेतना के कवियों में आपका मूर्धन्य स्थान है। हिन्दी साहित्य जगत् में आप अपनी हिन्दी-साहित्य सेवा के लिए सदैव याद किये जाएँगे।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए—

पुष्प की अभिलाषा

(क) चाह नहीं मैं, सुरबाला के गहनों मे गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ में तुम देना फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक॥

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' में संकलित और **माखनलाल चतुर्वेदी** द्वारा रचित **'पुष्प की अभिलाषा'** शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के **'युगचरण'** नामक काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

[**विशेष**—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले समस्त पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।*]

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने पुष्प में माध्यम से देश पर बलिदान होने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या—कवि अपनी देशप्रेम की भावना को पुष्प की अभिलाषा के रूप में व्यक्त करते हुए कहता है कि मेरी इच्छा किसी देवबाला के आभूषणों में गूँथे जाने की नहीं है। मेरी इच्छा यह भी नहीं है कि मैं प्रेमियों को प्रसन्न करने के लिए प्रेमी द्वारा बनाई गई माला में पिरोया जाऊँ और प्रेमिका के मन को आकर्षिक करूँ। हे प्रभु! न ही मेरी यह इच्छा है कि मैं बड़े-बड़े राजाओं के शवों पर चढ़कर सम्मान प्राप्त करूँ। मेरी यह कामना भी नहीं है कि मैं देवताओं के सिर पर चढ़कर अपने भाग्य पर अभिमान करूँ। भाव यह है कि इस प्रकार के किसी भी सम्मान को पुष्प अपने लिए निरर्थक समझता है।

पुष्प उपवन में माली से प्रार्थना करता है कि हे माली! तुम मुझे तोड़कर उस मार्ग में डाल देना, जिस मार्ग से होकर अनेक राष्ट्र-भक्त वीर, मातृभूमि पर अपने प्राणों का बलिदान करने के लिए जा रहे हों। फूल उन वीरों की चरण-रज का स्पर्श पाकर भी अपने को धन्य मानेगा, क्योंकि उनके चरणों पर चढ़ना ही देश के बलिदानी वीरों के लिए उसकी सच्ची श्रद्धांजलि है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवि ने फूल के माध्यम से अपने देशप्रेम की भावना को व्यक्त किया है। **(2)** कवि किसी राजनेता की भाँति सम्मान-प्राप्ति की अपेक्षा देश की रक्षा के लिए नि:स्वार्थ प्राण-उत्सर्ग करने में गौरव मानता है। **(3) भाषा**—सरल खड़ीबोली। **(4) शैली**—प्रतीकात्मक, आत्मपरक तथा भावनात्मक। **(5) रस**—वीर। **(6) गुण**—ओज। **(7) शब्दशक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा। **(8) अलंकार**—पद्य में सर्वत्र अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश। **(9) छन्द**— तुकान्त-मुक्त।

जवानी

(क) प्राण अन्तर में लिए पागल जवानी।
कौन कहता है कि तू
विधवा हुई, खो आज पानी?
चल रही घड़ियाँ, चले नभ के सितारे,
चल रही नदियाँ, चले हिम-खण्ड प्यारे;
चल रही साँस, फिर तू ठहर जाये?
दो सदी पीछे कि तेरी लहर जाये?
पहन ले नर-मुंड-माला,
उठ स्वमुंड सुमेरु कर ले,
भूमि सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी!
द्वार बलि का खोल चल, भूडोल कर दें,
एक हिम-गिरि एक सिर का मोल कर दें,
मसल कर, अपने इरादों-सी, उठा कर,
दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें?
रक्त है? या नसों में क्षुद्र पानी!
जाँच कर, तू सीस दे-देकर जवानी?

***अथवा* द्वार बलि का ..... दे-देकर जवानी?**

उत्तर—**प्रसंग**—इस पद्य में देश की युवा-शक्ति में उत्साह का संचार करते हुए उसे देशोत्थान के कार्यों में प्रवृत्त होने का आह्वान किया गया है।

व्याख्या—कवि युवाओं को सम्बोधित करता हुआ कहता है—अरी युवकों की पागल जवानी! तू अपने भीतर उत्साह एवं शक्ति रूपी प्राणों को समेटे है। यह कौन कहता है कि तूने अपना पानी (तेज) रूपी पति खो दिया है और तू विधवा होकर निस्तेज हो गई है? मैं आज जिधर भी दृष्टिपात करता हूँ, उधर गति-ही-गति देखता हूँ। घड़ियाँ अर्थात् समय निरन्तर चल रहा है। आसमान के सितारे भी गतिमान हैं। नदियाँ निरन्तर प्रवाहमान हैं और पहाड़ों पर बर्फ के टुकड़े सरक-सरककर अपनी गति का प्रदर्शन कर रहे हैं। प्राणिमात्र की साँसें भी निरन्तर चल रही हैं। इस सर्वत्र गतिशील वातावरण में ऐसा कैसे सम्भव हो सकता है कि तू ठहर जाए? इस गतिमान समय में यदि तू ठहर गई और तुझमें गति का ज्वार-भाटा न आया तो तू दो शताब्दी पिछड़ जाएगी। समय बीत जाने पर जब तुझमें तरंगे उठेंगी तो उन तरंगों में दो शताब्दी पीछे वाली गति होगी अर्थात् जवानी के अलसा जाने पर देश की प्रगति दो शताब्दी पिछड़ जाएगी।

हे नवयुवकों की जवानी! तू उठ और दुर्गा की भाँति मनुष्यों के मुण्डों की माला पहन ले। नरमुण्डों की इस माला में तू अपने सिर को सुमेरु बना अर्थात् बलिदान के क्षेत्र में तू सर्वोपरि बन। यदि आज समर्पण की आवश्यकता पड़े तो तू उससे पीछे मत हट। जिस प्रकार लहलहाते हुए धानों की हरियाली में धरती का जीवन झलकता है, ऐसी ही हे जवानी, तू भी उत्साह में भरकर धानी चूनर ओढ़ ले। प्राण-तत्व तेरे साथ है; अत: हे युवकों की जवानी! तू आलस्य को त्यागकर उठ खड़ी हो और सर्वत्र क्रान्ति ला दे।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** इन पंक्तियों में कवि ने देश के युवा वर्ग का आह्वान किया है कि वह देश पर अपने को उत्सर्ग कर इसे स्वतन्त्र कराए। **(2) भाषा**—सहज और सरल खड़ीबोली। **(3) शैली**—उद्‌बोधन। **(4) रस**—वीर। **(5) गुण**— ओज। **(6) शब्दशक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना। **(7) अलंकार**—अनुप्रास, उपमा एवं रूपक। **(8) छन्द**—तुकान्त-मुक्त।

(ख) द्वार बलि का खोल चल, भूडोल कर दें,
एक हिम-गिरि एक सिर का मोल कर दें,
मसल कर, अपने इरादों-सी, उठा कर,
दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें?
रक्त है? या है नसों में क्षुद्र पानी!
जाँच कर, तू सीस दे-देकर जवानी?

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से चतुर्वेदी जी देश के युवा वर्ग को उत्साहित कर रहे हैं कि वह देश की वर्तमान परिस्थिति को बदल दें।

व्याख्या—चतुर्वेदी जी युवकों का आह्वान करते हुए कहते हैं कि हे युवको! तुम अपनी मातृभूमि के लिए बलिदान देने की परम्परा का द्वार खोलकर इस धरती को कम्पायमान कर दो और हिमालय के एक-एक कण के लिए एक-एक सिर समर्पित कर दो।

हे नौजवानो! तुम्हारे संकल्प बहुत ऊँचे हैं जिन्हें पूर्ण करने के लिए तुम्हारे पास दो हथेलियाँ हैं। अपनी उन हथेलियों को अपने ऊँचे संकल्पों के समान उठाकर तुम पृथ्वी को गोल कर सकते हो अर्थात् बड़ी-से-बड़ी बाधा को हटा सकते हो।

हे वीरो! तुम अपनी युवावस्था की परख अपने शीश देकर कर सकते हो। इस बलिदानी परीक्षण से तुम्हें यह भी ज्ञात हो जाएगा कि तुम्हारी धमनियों में शक्तिशाली रक्त दौड़ रहा है अथवा उनमें केवल शक्तिहीन पानी ही भरा हुआ है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवि के अनुसार युवक अपनी संकल्प-शक्ति से सब कुछ बदल सकते हैं। **(2)** कवि द्वारा नवयुवकों में उत्साह का संचार किया गया है। **(3) भाषा**—विषय के अनुकूल शुद्ध परिमार्जित खड़ीबोली। **(4) शैली**—उद्‌बोधन। **(5) रस**—वीर। **(6) छन्द**—तुकान्त-मुक्त। **(7) शब्दशक्ति**—व्यंजना। **(8) गुण**—ओज। **(9) अलंकार**—'अपने इरादों-सी, उठाकर' में **उपमा** तथा सम्पूर्ण पद में **अनुप्रास**।

(ग) वह कली के गर्भ से फल-रूप में, अरमान आया!
देख तो मीठा इरादा, किस तरह, सिर तान आया!
डालियों ने भूमि रुख लटका दिए फल, देख आली!
मस्तकों को दे रही संकेत कैसे, वृक्ष-डाली!
फल दिए? या सिर दिए? तरु की कहानी-
गूँथकर युग में, बताती चल जवानी!

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक '**हिन्दी**' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित और **माखनलाल चतुर्वेदी** द्वारा रचित '**पुष्प**

की अभिलाषा' शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के **'युगचरण'** नामक काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने युवावर्ग को सत्संकल्प की प्रेरणा दी है।

व्याख्या—कविवर चतुर्वेदी जी युवावर्ग को प्रेरित कर रहे हैं। वे कहते हैं कि अरी जवानी! तू अपनी इच्छा-शक्ति को शुभ संकल्प वाली बना ले। सर्वत्र आशा का संचार हो रहा है। डालियों पर खिलती कलियों के भीतर से फल झाँकने लगे हैं, जो ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, मानो कली की अभिलाषाओं ने जन्म लिया है। देख तो सही, कली का मधुर संकल्प किस तरह ठाठ-बाट के साथ सधकर खड़ा हो गया। कवि जवानी को कहना चाहता है कि जिस प्रकार कली से फूल और फूल से सुन्दर फल बनता है, उसी प्रकार मन में उठने वाली तेरी इच्छाएँ दृढ़ होकर तथा शुभ संकल्पों का रूप धारण करके व्यावहारिक रूप से परिणत हों। अरी सखी जवानी! देख तो सही, वृक्ष की डालियों पर ज्यों ही फल आए, वे भार से पृथ्वी की ओर झुकने लगीं, मानो डालियों ने पृथ्वी को उपहार दे डाले हैं। वृक्ष की ये डालियाँ, लगता है कि जवानी को यह संकेत दे रही हैं, कि यदि आवश्यकता पड़े तो अपने सिर को भी समर्पित कर देना। जिस प्रकार डालियाँ फल देती हैं, उसी प्रकार जवानियाँ अपने मस्तक समर्पित कर देती हैं। फल देना या सिर देना एक की लक्ष्य की ओर संकेत करता है। हे जवानी! तू स्वयं में वृक्ष की कहानी को गूँथकर, युग-युग तक अपने परोपकारी संकल्पों का सन्देश देती चल।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** वृक्षों की डालियों पर फल आते हैं। वे फलों को स्वयं नहीं खातीं, वरन् संसार को दे देती हैं। यही उनकी परोपकारशीलता है। कवि चाहता है कि युवक भी परोपकार की इसी भावना से ओत-प्रोत रहें। **(2)** वृक्ष, फूल एवं फल की प्रकृति के माध्यम से कवि ने राष्ट्र के युवाओं को परहित में स्वयं को बलिदान करने की प्रेरणा दी है। **(3) भाषा**—साहित्यिक हिन्दी **(4) रस**—वीर। **(5) गुण**—ओज। **(6) अलंकार**—अनुप्रास, उपमा तथा रूपक।

(घ) श्वान के सिर हो-चरण तो चाटता है।
भौंक ले-क्या सिंह को वह डाँटता है?
रोटियाँ खायीं कि साहस खा चुका है,
प्राणी हो, पर प्राण से वह जा चुका है।
तुम न खेलो ग्राम-सिंहों में भवानी!
विश्व में अभिमान मस्तानी जवानी!

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' में संकलित और **माखनलाल चतुर्वेदी** द्वारा रचित **'जवानी'** शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के **'युगचरण'** नामक काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने मनुष्य को स्वाभिमान के साथ जीने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि सिर तो कुत्ते का भी होता है, किन्तु स्वाभिमान की भावना न होने के कारण वह अपने पालने वाने के पैरों को चाटता रहता है। कुत्ता चाहे कितना ही जोर से भौंक ले, किन्तु उसमें इतना साहस नहीं होता कि वह शक्तिशाली सिंह को डाँट सके क्योंकि जब वह दूसरों की रोटियाँ खाता है, तब वह रोटियाँ नहीं, अपितु अपना साहस खा रहा होता है। तात्पर्य यह है कि स्वाभिमान को त्यागकर अपना पेट भरने वाला व्यक्ति अपने साहस और अपनी क्षमताओं को नष्ट कर देता है। जीवित प्राणी होने पर भी ऐसा व्यक्ति अपने साहस और अपनी क्षमताओं को नष्ट कर देता है। जीवित करते हुए कहा है कि शक्ति के पुंज हे युवाओं! तुम संसार का अभिमान हो। तुम कायर, स्वाभिमान से रहित और परतन्त्र प्रकृति वाले कुत्तों (ग्राम-सिंहों) जैसे व्यक्तियों के साथ जीवन-निर्वाह मत करो, इससे तुम्हारा स्वाभिमान भी नष्ट हो जाएगा। तात्पर्य यह है कि श्वान-वृत्ति वाले इन कायरों का साथ छोड़ दो। तुम ही तो विश्व के स्वाभिमान हो।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** यहाँ कवि ने देश की युवा पीढ़ी को स्वाभिमान की प्रेरणा देने के लिए स्वाभिमानरहित व्यक्तियों की उपमा कुत्ते से की है। **(2)** इन पंक्तियों में स्वाभिमान का जीवन जीने की प्रेरणा मुखरित हुई है, जो कवि की उदात्त भावनाओं का परिचय देती है। **(3) भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **(4) रस**—वीर। **(5) गुण**—ओज। **(6) अलंकार**— उपमा, रूपक तथा अनुप्रास।

(ङ) ये न मग हैं, तव चरण की रेखियाँ हैं,
बलि दिशा की अमर देख-देखियाँ हैं।
विश्व पर, पद से लिखे कृति लेख हैं ये,
धरा तीर्थों की दिशा की मेख हैं ये।
प्राण-रेखा खींच दे, उठ बोल रानी,
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी!

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्यपुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' में संकलित और **माखनलाल चतुर्वेदी** द्वारा रचित **'पुष्प की अभिलाषा'** शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के **'युगचरण'** नामक काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग—इस पंक्तियों के द्वारा कवि ने युवा-वर्ग को सम्बोधित किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि अरी जवानी! ये जो मार्ग दिखाई दे रहे हैं, ये ऐसे नहीं हैं कि तू इन्हें पार न कर सके। ये तो चरणों की रेखामात्र हैं। इन मार्गों का निर्माण जवानियों ने ही तो किया है। जवानी उन मार्गों का निर्माण करती है, जो बलिदेवी की दिशा की ओर बढ़ते हैं। यही जवानी का लक्ष्य भी होना चाहिए कि जब आवश्यकता पड़े तो दूसरों की देखा-देखी स्वयं का भी बलिदान कर दे। भाव यह है कि वीर युवक भी प्राणों की चिन्ता किए बिना नए पथ का निर्माण करते हैं। वे दूसरे की देखा-देखी स्वयं भी बलिदान-पथ की ओर अग्रसार हुआ करते हैं। बलिदान के मार्ग केवल सामान्य मार्ग नहीं हैं, वरन् ये तो संसार-पथ पर पैरों से लिखे वे लेख हैं, जिनके भीतर सत्कर्मों की सुगन्ध है तथा जिनमें सत्कर्म हेतु लिया गया शिव-संकल्प निहित है। ये पवित्र मार्ग पृथ्वी के तीर्थों की दिशा-निर्धारण करने वाले स्तम्भ हैं। कवि आगे कहता है कि हे जवानी! तू प्राणों की रेखा खींच दे, अर्थात! स्वतन्त्रता की बलिदेवी पर प्राणों की ऐसी अमिट छाप छोड़ जा कि युग-युग तक तुझे याद किया जाता रहे। जवानी! तू अपना मौन तोड़ और उठकर बोल कि चढ़ती जवानी का मूल्य ही जीवन का बलिदान है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवि ने देश की युवा-शक्ति को सशक्त प्रेरणात्मक स्वर में राष्ट्र-कल्याण का पथ प्रशस्त करने का सन्देश दिया है। **(2)** यहाँ राष्ट्र-कल्याण के पथ पर बलिदान हो जाने का भाव मुखरित हुआ है, जो कवि की आदर्श भावनों का परिचायक है। **(3) भाषा** —साहित्यिक हिन्दी। **(4) रस**—वीर। **(5) गुण**—ओज। **(6) अलंकार** —रूपक तथा अनुप्रास।

(च) टूटता-जुड़ता समय-'भूगोल' आया,
गोद में मणियाँ समेट 'खगोल' आया,
क्या जले बारूद? हिम के प्राण पाए!

क्या मिला? जो प्रलय के सपने न आए।
धरा? यह तरबूज है, दो फाँक कर दे,
चढ़ा दे स्वातन्त्र्य-प्रभु पर अमर पानी।
विश्व माने-तू जवानी है, जवानी!

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' में संकलित और **माखनलाल चतुर्वेदी** द्वारा रचित **'पुष्प की अभिलाषा'** शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के **'युगचरण'** नामक काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग—प्रस्तुत कविता में कवि ने देश के नवयुवकों को अपने देश में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने के लिए प्रोत्साहित किया है तथा उनमें चेतना जागृत की है।

व्याख्या—कवि कहता है कि समय का भूगोल तो टूटता-जुड़ता चलता रहता है। ब्रह्माण्ड जिन तारक-मणियों को गोद में लेकर घूमता है, वे भी खगोलीय विस्फोट की ही अमूल्य भेंट हैं। यदि बारूद बर्फ जैसा ठण्डा हो जाएगा तो वह क्या जलेगा? जिस तरह बारूद को गर्मी चाहिए, ऐसे ही जवानी को भी ऊष्मा की आवश्श्यकता है। यदि मनुष्य को प्रलय के स्वप्न नहीं आते तो उसका जीवन व्यर्थ ही माना जाएगा। जीवन की उपलब्धि प्रलय की क्रान्ति है, निष्क्रियता की शान्ति नहीं। प्रलय के स्वप्न देखने वालों के लिए विशाल पृथ्वी भी तरबूज-जैसी छोटी वस्तु बन जाती है। तुम प्रलय के स्वप्न-द्रष्टा हो; अत: तरबूज जैसी इस पृथ्वी की दो फाँक कर सकते हो। कवि पुन: कहता है कि हे जवानी! इस समय तेरा प्रथम कर्तव्य यह है कि स्वतन्त्रता के देवता पर तू वह अमर जल अर्थात् अपना रक्त चढ़ा दे, जिससे कि संसार तेरा गुणगान इस रूप में करे—"वस्तुत: जवानी का परम उज्ज्वल रूप तो तुम्हारी ही जवानी है।"

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** विध्वंस की गोद से ही निर्माण के पुष्प खिलते हैं और प्रलय के बाद ही नई सृष्टि का निर्माण होता है। कवि ने यहाँ इसी भावना को व्यक्त करते हुए, देश की युवा शक्ति को बलिदान करने तथा अपने शीश को अर्पण करके मृत्यु का वरण करने की प्रेरणा दी है, जिससे राष्ट्र का कल्याण हो सके। **(2) भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **(3) रस**— रौद्र एवं वीर। **(4) गुण**—ओज। **(5) अलंकार**—रूपक तथा अनुप्रास।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अंलकारों के नाम लिखकर उनकी परिभाषा दीजिए—

(क) मसल कर, अपने
इरादों-सी, उठाकर,

उत्तर—दिए गए अंश में उपमा अलंकार है, क्योंकि यहाँ इरादों की उच्चता से हथेलियों की समानता की गई है।

(ख) लाल चेहरा है नहीं—
फिर लाल किसके?

उत्तर—यहाँ यमक अलंकार है, क्योंकि यहाँ लाल शब्द के दो अर्थ है—(1) लाल रंग (2) पुत्र।

प्रश्न 2. 'जवानी' कविता का सौन्दर्य उसकी फड़कती ओजपूर्ण शब्द-शैली में प्रस्फुटित हुआ है। कविता से उदाहरण देते हुए इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—'जवानी' कविता का वास्तविक सौन्दर्य उसकी ओजपूर्ण शब्द-शैली में ही प्रस्फुटित हुआ है। शब्दों का आघात इतना तीव्र है कि निष्प्राण-सा व्यक्ति भी उत्साह में आकर कुछ कर गुजरने के लिए तत्पर हो जाए। निम्नलिखित पंक्तियाँ भला किसकी रगों में उत्साह का संचार नहीं कर सकतीं—

दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें?
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी!
धरा? यह तरबूज है दो फाँक कर दे।
लाल चेहरा है नहीं—पर लाल किसके?
खून हो जाए न तेरा देख, पानी।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए—
पुष्प, देव, पथ, गिरि, मनुष्य।

उत्तर—

शब्द	—	**पर्यायवाची शब्द**
पुष्प	—	फूल, प्रसून
देव	—	निर्झर, अमर
पथ	—	राह, रास्ता
गिरि	—	शैल, भूधर
मनुष्य	—	मानव, आदमी

प्रश्न 4. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
शीश चढ़ाना, सिर का मोल करना, पृथ्वी गोल करना, आटा-दाल के भाव का पता चलना, काया-कल्प होना, खून का पानी होना।

उत्तर—**शीश चढ़ाना** (सिर काटकर अर्पित करना)—वीरों ने अपना शीश देश की रक्षा पर चढ़ा दिया।

सिर का मोल करना (बलिदान का फल प्राप्त करना)—वीरों ने आतंकियों को मारकर अपने सिर का मोल ले लिया।

पृथ्वी गोल करना (सबको आपस में मिला देना/साहस का परिचय देना)—यदि व्यक्ति मन में ठान ले तो वह अपने हाथों में मसलकर पृथ्वी को गोल कर सकता है।

आटा-दाल के भाव का पता चलना (दुनियादारी का पता चलना)—जब शादी हो जाएगी तो अपने आप आटे दाल का भाव पता चल जाएगा।

काया-कल्प होना (पूरी तरह बदल जाना)—नौकरी मिलने के बाद उसका तो काया-कल्प हो गया।

खून का पानी होना (उत्साह खत्म हो जाना)—आतंकवादी आते हैं और सरेआम हत्याएँ करके चले जाते हैं, कोई उनका विरोध नहीं करता, लगता है जैसे उसका खून पानी हो गया है।

❑

9 झाँसी की रानी की समाधि पर

(सुभद्राकुमारी चौहान)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सुभद्रा जी को देशसेवा की प्रेरणा किससे प्राप्त हुई और उन्होंने उसके लिए क्या किया?

उत्तर—सुभद्राकुमारी चौहान को देशसेवा की प्रेरणा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी से प्राप्त हुई। वे पढ़ाई-लिखाई छोड़कर देशसेवा में लग गईं और राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़ीं। इसके चलते वे कई बार जेल गईं।

प्रश्न 2. किस काव्य-रचना पर सुभद्राकुमारी चौहान को सेकसरिया पुरस्कार प्राप्त हुआ?

उत्तर—सुभद्राकुमारी चौहान की काव्य-रचना 'मुकुल' के लिए उन्हें सेकसरिया पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रश्न 3. सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर—सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन 1904 में इलाहाबाद में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था।

प्रश्न 4. हिन्दी की वीर रस की एक कवयित्री का नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी की वीर रस की एक कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान हैं।

प्रश्न 5. सुभद्रा जी की मृत्यु कब और कैसे हुई?

उत्तर—सुभ्रदा जी की मृत्यु वर्ष 1948 में एक मोटर-दुर्घटना में हुई थी।

प्रश्न 6. देशभक्ति से परिपूर्ण सुभद्राकुमारी चौहान की दो प्रसिद्ध रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—देशभक्ति से परिपूर्ण सुभद्राकुमारी चौहान की दो प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं—(1) झाँसी की रानी (2) वीरों का कैसा हो बसन्त।

प्रश्न 7. सुभद्रा जी की दो मुख्य काव्य-कृतियों के नाम लिखिए।

उत्तर—सुभद्रा जी की दो मुख्य काव्य कृतियाँ 'मुकुल' व 'त्रिधारा' हैं।

प्रश्न 8. 'बिखरे मोती' की विधा का नाम लिखिए।

उत्तर—'बिखरे मोती' कहानी है अर्थात् इसकी विधा कहानी है।

प्रश्न 9. 'झाँसी की रानी की समाधि पर' किसकी काव्य-रचना है?

उत्तर—'झाँसी की रानी की समाधि पर' नामक पुस्तक की लेखिका सुभद्राकुमारी चौहान हैं।

प्रश्न 10. सुभद्रा जी की काव्य-रचनाओं में देशप्रेम के अतिरिक्त और किन भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है?

उत्तर—सुभद्रा जी की काव्य-रचनाओं में देशप्रेम के अतिरिक्त वात्सल्य भावनाओं की भी अभिव्यक्ति हुई है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सुभद्राकुमारी चौहान का जीवन-परिचय देते हुए उनकी प्रमुख काव्य-कृतियों (रचनाओं) पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं से एक सच्ची वीरांगना का ओज और शौर्य प्रकट होता है। इनकी काव्य-रचनाओं ने भारतीय युवाओं के उदासीन जीवन में उत्साह का संचार कर स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान की। आपकी कविताएँ जन-जन के गले का हार बनीं और आप जन-कवयित्री के रूप में जानी जाने लगीं।

जीवन-परिचय—क्रान्ति की अमरसाधिका सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म **1904 ई०** में प्रयागराज जिले के निहालपुर गाँव में हुआ था। इनके पिता रामनाथ सिंह सुशिक्षित, सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज में हुई और 15 वर्ष की उम्र में इनका विवाह खण्डवा (मध्य प्रदेश) के ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ हुआ। इनके पति ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेते थे। सुभद्राकुमारी भी पति के साथ राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेती रहीं, जिसके परिणामस्वरूप ये अनेक बार जेल भी गयीं। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण इनका अध्ययन-क्रम भंग हो गया था। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी से प्रेरित होकर ये राष्ट्र-प्रेम पर कविताएँ लिखने लगीं। हिन्दी-काव्य-जगत् में ये ही ऐसी कवयित्री थीं, जिन्होंने अपनी ओजमय कविता द्वारा लाखों भारतीय तरुण-तरुणियों को स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लेने हेतु प्रेरित किया। 'झाँसी वाली रानी थी' तथा 'वीरों का कैसा को वसन्त' कविताएँ तरुण-तरुणियों में क्रान्ति की ज्वाला फूँकती रहीं। इन्हें पं० माखनलाल चतुर्वेदी से भी पर्याप्त प्रोत्साहन मिला, परिणामस्वरूप इनकी देशभक्ति का रंग और भी गहराता गया। आप मध्य प्रदेश विधानसभा की सदस्या भी रहीं। **1948 ई०** में हुई एक वाहन-दुर्घटना में नियति ने एक प्रतिभाशाली कवयित्री को हिन्दी-साहित्य जगत् से असमय ही छीन लिया।

काव्य-कृतियाँ—सुभद्राकुमारी चौहान की प्रमुख काव्य कृतियाँ निम्नवत् हैं—

(1) मुकुल—इस संग्रह में वीर रस से पूर्ण 'वीरों का कैसा हो वसन्त' आदि कविताएँ संगृहीत हैं। इस काव्य-संग्रह पर इन्हें **'सेकसरिया'** पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

(2) त्रिधारा—इस काव्य-संग्रह में 'झाँसी की रानी की समाधि पर' प्रसिद्ध कविता संगृहीत है। इनके इस संग्रह में देशप्रेम की भावना व्यक्त होती है।

(3) सीधे-सादे चित्र, (4) बिखरे मोती तथा **(5) उन्मादिनी।** ये तीनों इनके कहानी-संकलन हैं।

साहित्य में स्थान—श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान ने अपने काव्य में जिस वीर नारी को प्रदर्शित किया है वह अपने आपमें स्पृहणीय और नारी जगत् के लिए आदर्श है। आप अपनी ओजस्वी वाणी और एक समर्थ कवयित्री के रूप में हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए—

(क) इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी।
जल कर जिसने स्वतन्त्रता की,
दिव्य आरती फेरी।
यह समाधि, यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।

अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्यांश हिन्दी की सुविख्यात कवयित्री **श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान** द्वारा रचित **'त्रिधारा'** नामक ग्रन्थ से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित **'झाँसी की रानी की समाधि पर'** शीर्षक कविता से अवतरित है।

[**विशेष**—*इस शीर्षक से सम्बन्धित सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।*]

प्रसंग—इन पंक्तियों में रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई है।

व्याख्या—यह रानी लक्ष्मीबाई की समाधि है। इसमें रानी के शरीर की राख है। रानी ने अपने शरीर का बलिदान देकर यहीं पर स्वतन्त्रता की आरती उतारी थी। यह छोटी-सी समाधि लक्ष्मीबाई के महान् त्याग और देशभक्ति की निशानी है। यही स्थान रानी की जीवन-लीला का अन्तिम स्थल हैं, जहाँ रानी ने पुरुषों जैसी वीरता का प्रदर्शन कर स्वयं का बलिदान कर दिया था।

कवयित्री कहती हैं कि अपनी समाधि के आस-पास ही रानी लक्ष्मीबाई टूटी हुई विजयमाला के समान बिखर गई थीं। युद्धभूमि में अंग्रेजी सेना के साथ बहादुरी से लड़ते हुए रानी के शरीर के अंग यहीं-कहीं बिखर गए थे। इस समाधि में वीरांगाना लक्ष्मीबाई की अस्थियाँ एकत्र कर रख दी गईं है, जिससे कि देश की भावी पीढ़ी उनके गौरवपूर्ण त्याग-बलिदान से प्रेरणा ले सके।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और बलिदान की गौरवगाथा का गान किया है। **(2) भाषा**—सरल सुबोध खड़ीबोली। **(3) शैली**—ओजपूर्ण आख्यानक गीति शैली। **(4) रस** —वीर। **(5) छन्द**— तुकान्त-मुक्त **(6) गुण**—प्रसाद और ओज। **(7) शब्दशक्ति**—अभिधा। **(8) अलंकार**— 'यहीं-कहीं..... ज्वाला-सी' में **उपमा,** उदाहरण देने में **दृष्टान्त**, 'आरती' और 'फूल' में **श्लेष** और सर्वत्र **अनुप्रास** एवं **रूपक**।

(ख) यहीं कहीं पर बिखर गई वह,
भग्न विजय-माला सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं,
है यह स्मृतिशाला-सी।।
सहे वार पर वार अंत तक,
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी चढ़ी चिता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी।

उत्तर—प्रसंग—इन पंक्तियों में रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई है।

व्याख्या—कवयित्री कहती हैं कि वीरांगना लक्ष्मीबाई अन्तिम साँस तक शुत्रओं की तलवारों के प्रहार सहती रहीं। जिस प्रकार यज्ञ-कुण्ड में आहुतियाँ पड़ने से अग्नि प्रज्वलित होती है, उसी प्रकार रानी के आत्म-बलिदान से आजादी की आग चारों ओर फैल गई। रानी के इस महान् त्याग ने अग्नि में आहुति का काम किया, जिससे लोग अधिक उत्साह से स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लेने लगे और रानी की कीर्ति चारों ओर फैल गई।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** इस कविता में ओज की कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान ने लक्ष्मीबाई की वीरता और बलिदान की गाथा का ओजपूर्ण वर्णन किया है। कवि ने इसके माध्यम से तत्कालीन समाज में स्वतन्त्रता के लिए जागृति उत्पन्न करने का प्रयास किया है। **(2) भाषा** —सरल खड़ीबोली। **(3) रस**—वीर। **(4) गुण**—प्रसाद और ओज। **(5) अलंकार**—उपमा, रूपक, दृष्टान्त तथा अनुप्रास।

(ग) बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म यथा सोने से।।
रानी से भी अधिक हमें अब,
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतन्त्रता की,
आशा की चिनगारी।।

उत्तर—प्रसंग—इन पंक्तियों में कवयित्री कहती हैं कि देश के गौरव की रक्षा के लिए अपना बलिदान करने से रानी का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है।

व्याख्या—कवयित्री कहती हैं कि स्वतन्त्रता पर बलि होने से वीर का सम्मान बढ़ जाता है। रानी लक्ष्मीबाई भी युद्ध में बलिदान हुईं; अत: उनका सम्मान उसी प्रकार और भी अधिक बढ़ गया, जैसे कि सोने की अपेक्षा सवर्णभस्म अधिक मूल्यवान होती है। यही कारण है कि रानी लक्ष्मीबाई की यह समाधि हमें रानी लक्ष्मीबाई से भी अधिक प्रिय है क्योंकि इस समाधि में स्वतन्त्रता-प्राप्ति की आशा की एक चिंगारी छिपी हुई है, जो आग के रूप में फैलकर पराधीनता से मुक्त होने के लिए देशवासियों को सदैव प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवयित्री ने लक्ष्मीबाई की समाधि से स्वतन्त्रता-प्राप्ति की प्रेरणा प्राप्त करने के लिए युवकों का आह्वान किया है। **(2) भाषा**—सरल खड़ीबोली। **(3) शैली**—ओजपूर्ण व आख्यानक गीति शैली। **(4) रस**—वीर। **(5) छन्द**—तुकान्त-मुक्त। **(6) गुण**—ओज एवं प्रसाद। **(7) शब्दशक्ति**—अभिधा। **(8) अलंकार**—'बढ़ जाता है ..... सोने से' में **दृष्टान्त**, 'आशा की चिनगारी' में **रूपक** और **अनुप्रास**। **(9) भावसाम्य**—कवयित्री के समान ही ओज के कवि **श्यामनारायण पाण्डेय** भी देशहित में अपना सिर कटवा देने वाले को ही सच्चा वीर मानते हैं—

जो देश-जाति के लिए, शत्रु के सिर काटे, कटवा भी दे
उसको कहते हैं वीर, आन हित अंग-अंग छँटवा भी दे।

(घ) इससे भी सुन्दर समाधियाँ,
हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते।।
पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती,
है, वीरों की बानी।।

उत्तर—प्रसंग—इन पंक्तियों में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को अन्य समाधियों से अधिक महत्त्वपूर्ण माना है।

व्याख्या—कवयित्री कहती हैं कि संसार में रानी लक्ष्मीबाई की समाधि से भी सुन्दर अनेक समाधियाँ बनी हुई हैं, परन्तु उनका महत्त्व इस समाधि से कम ही है। उन समाधियों पर रात्रि में गीदड़, झींगुर, छिपकली आदि क्षुद्र जन्तु गाते रहते हैं अर्थात् वे समाधियाँ अत्यन्त उपेक्षित हैं, जिन

पर तुच्छ जन्तु निवास करते हैं, परन्तु कवियों की अमर वाणी में रानी लक्ष्मीबाई की समाधि की कभी न समाप्त होने वाली कहानी गाई जाती हैं, क्योंकि रानी की समाधि के प्रति उनमें श्रद्धाभाव है पर अन्य समाधियाँ ऐसी नहीं हैं। इस समाधि की कहानी को वीरों की वाणी बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ गाती है। अत: यह समाधि अन्य समाधियों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण और पूज्य है।

बुन्देले और हरबोलों के मुँह से हमने यह गाथा सुनी है कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पुरुषों की भाँति बहुत वीरता से लड़ी। यह अमर समाधि उसी झाँसी की रानी की है। यही उस वीरांगना की अन्तिम कार्य-स्थली है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवयित्री ने रानी की समाधि के प्रति अपना श्रद्धा-भाव व्यक्त किया है। **(2) भाषा**—सरल साहित्यिक खड़ीबोली। **(3) शैली**—आख्यानक गीति की ओजपूर्ण शैली। **(4) रस** —वीर। **(5) गुण**—प्रसाद और ओज। **(6) शब्दशक्ति**—व्यंजना। **(7) अलंकार**—सर्वत्र अनुप्रास है। **(8) भावसाम्य**—कला और कविता उन्हीं का गान करती है, जो विलासमय मधुर वंशी के स्थान पर रणभेदी की घोर-गम्भीर गर्जन करते हैं। जो कविता ऐसा नहीं करती, वह बाँझ स्त्री के समान है। कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने कवयित्री की भाँति ही कवि और कविता के विषय में कहा है—

यह किसने कहा कला कविता सब बाँझ हुई?
बलि के प्रकाश की सुन्दरता ही साँझ हुई,
मधुरी वंशी रणभेदी की डंका हो अब,
नव तरुणाई पर किसको, क्या शंका हो अब?

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पदों में समास का नाम बताते हुए समास-विग्रह कीजिए—

विजय-माला, स्मृति-शाला, वीर-बाला, अमिट।

उत्तर—

समस्तपद	समास-विग्रह	समास-नाम
विजय-माला	विजय की माला	षष्ठी तत्पुरुष
स्मृति-शाला	स्मृति के लिए शाला	चतुर्थी तत्पुरुष
वीर-बाला	वीरता से युक्त बाला	कर्मधारय समास
अमिट	न मिटने वाला	नञ् तत्पुरुष

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम लिखकर उसके स्थायी भाव का नाम लिखिए—

बुन्देले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मरदानी वह थी,
झाँसी वाली रानी।

उत्तर—'वीर रस' का वर्णन दी गई पंक्तियों में है। इसका स्थायी भाव 'उत्साह' होता है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय को पृथक् कीजिए—

मूल्यवती, निहित, अमर, अन्तिम।

उत्तर—

शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	मूलशब्द
मूल्यवती	—	वती	मूल्य
निहित	नि	—	हित
अमर	अ	—	मर
अन्तिम	—	इम	अन्त

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए—

लघु, अन्तिम, मान, मूल्यवती, आशा।

उत्तर—

शब्द		विलोम शब्द
लघु	—	दीर्घ
अन्तिम	—	प्रारम्भिक
मान	—	अपमान
मूल्यवती	—	अमूल्यवती
आशा	—	निराशा

❑

10 भारत माता का मन्दिर यह

(मैथिलीशरण गुप्त)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मैथिलीशरण गुप्त की किसी एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—साकेत महाकाव्य।

प्रश्न 2. जयद्रथ वध तथा पंचवटी के रचयिता का नाम लिखिए।

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त।

प्रश्न 3. मैथिलीशरण गुप्त को हिन्दी-साहित्य सम्मेलन द्वारा किस पारितोषिक से सम्मानित किया गया?

उत्तर—मंगला प्रसाद परितोषिक।

प्रश्न 4. किस कवि को राष्ट्रकवि होने का गौरव प्राप्त है?

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त को।

प्रश्न 5. मैथिलीशरण गुप्त की कुछ प्रमुख पुस्तकों के नाम लिखिए।

उत्तर—इनकी प्रमुख रचनाएँ—भारत-भारती, जयद्रथ वध, पंचवटी, यशोधरा, द्वापर आदि हैं।

प्रश्न 6. 'भारत माता का मंदिर' में मैथिलीशरण गुप्त ने किसके कल्याण की बात की है?

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त ने समाज व व्यक्तित्व के कल्याण की बात कही है।

प्रश्न 7. प्रस्तुत रचना में कवि का तीर्थ स्थलों से क्या आशय है?

उत्तर—कवि ने मन को पवित्र कर उसे ही तीर्थ स्थल बनाने की बात कही है।

प्रश्न 8. ''सौ-सौ आदर्शों को लेकर एक चरित्र बना लें हम'' प्रस्तुत पंक्तियों में कवि के भाव प्रकट कीजिए।

उत्तर—हमारे भारतवर्ष में अनेक महान लोग हुए हैं जिन्होंने हमारे देश की गरिमा को उन्नति की ओर अग्रसर किया है। हमें उन लोगों की उत्कर्षता को अपनाकर स्वयं को चरित्रवान बनाना चाहिए।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—जीवन-परिचय—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी काव्य-जगत् के अनुपम रत्न हैं। इनका जन्म **1886 ई०** में उत्तर प्रदेश के झाँसी जनपद के चिरगाँव नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण गुप्त बड़े ही धार्मिक काव्यप्रेमी और निष्ठावान् व्यक्ति थे। पिता के संस्कार पुत्र को पूरी तरह प्राप्त थे। बाल्यावस्था में ही एक छप्पय की रचना कर इन्होंने अपने पिता से सुकवि होने का आशीर्वाद प्राप्त किया था। इनकी शिक्षा का विधिवत् प्रबन्ध घर पर ही किया गया, जहाँ इन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी का अध्ययन किया। इनकी आरम्भिक रचनाएँ कलकत्ता (वर्तमान में कोलकाता) से प्रकाशित होने वाले 'वैश्योपकारक' पत्र में छपती थीं। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने के बाद इनकी प्रतिभा प्रस्फुटित हुई और इनकी रचनाएँ 'सरस्वती' में छपने लगीं। 'साकेत' महाकाव्य के सृजन पर इनको 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' द्वारा 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' से सम्मानित किया गया। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों के कारण ही आगरा तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा इनको डी० लिट्० की मानद उपाधि से विभूषित किया गया था। इनकी साहित्य-सेवा के कारण ही भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया था। ये राज्यसभा के लिए दो बार मनोनीत किये गये। जीवन के अन्तिम समय तक ये साहित्य-सृजन करते रहे। सरस्वती का यह महान् साधक **12 दिसम्बर, 1964 ई०** को पंचतत्व में विलीन हो गया।

रचनाएँ—गुप्त जी की चालीस मौलिक तथा छ: अनूदित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनमें से प्रमुख हैं—**'भारत भारती', 'रंग में भंग', 'जयद्रथ वध', 'पंचवटी', 'अनघ', 'हिन्दू', 'गुरुकुल', 'अलंकार', 'साकेत', 'यशोधरा', 'मंगल घट', 'नहुष', 'कुणाल गीत', 'द्वापर', 'विष्णुप्रिया', 'दिवोदास', 'मेघनाद वध', 'विरहिणी ब्रजांगना', 'जय भारत', 'सिद्धराज', 'झंकार', 'पृथिवीपुत्र', 'प्लासी का युद्ध'** आदि।

साहित्य में स्थान—मैथिलीशरण गुप्त भारतीय संस्कृति के अमर गायक, उद्भट प्रस्तोता और सामाजिक चेतना के प्रतिनिधि कवि थे। इन्हें राष्ट्रकवि होने का गौरव प्राप्त है। गुप्त जी खड़ीबोली के उन्नायकों में प्रधान हैं। इन्होंने खड़ीबोली को काव्य के अनुकूल भी बनाया और जनरुचि को भी उसकी ओर प्रवृत्त किया। अपनी रचनाओं में गुप्त जी ने खड़ीबोली के शुद्ध, परिष्कृत और तत्सम-बहुल रूप को ही अपनाया है। इनकी भाषा भावों के अनुकूल है तथा काव्य में अलंकारों के सहज-स्वाभाविक प्रयोग हुए हैं। सादृश्यमूलक अलंकार इनके सर्वाधिक प्रिय अलंकार हैं। हिन्दी की आधुनिक युग की समस्त काव्यधाराओं को गुप्त जी ने अपने साहित्य में अपनाया है। इनके द्वारा प्रयुक्त की गयी प्रमुख शैलियाँ हैं—विवरणात्मक, प्रबन्धात्मक, उपदेशात्मक, गीति तथा नाट्य। मुक्तक एवं प्रबन्ध दोनों काव्य-शैलियों का इन्होंने सफल प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं में छन्दों की विविधता दर्शनीय है। सभी प्रकार के प्रचलित छन्दों; जैसे—हरिगीतिका, वसन्ततिलका, मालिनी, घनाक्षरी, द्रुतविलम्बित आदि में इनकी रचनाएँ उपलब्ध हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में आप ''निस्सन्देह हिन्दी-भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते हैं।''

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए—

(क) भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
जाति-धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ।
राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का,
सुलभ एक सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित एवं **मैथिलीशरण गुप्त** द्वारा रचित **'भारत माता का मंदिर यह'** शीर्षक से उद्धृत है।

[**विशेष**—*इस शीर्षक से सम्बन्धित सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।*]

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने समस्त भारतभूमि को भारत माता का मंदिर (पवित्र स्थल) बताते हुए उसकी विशेषताओं का वर्णन किया है।

व्याख्या—इन पंक्तियों में कवि अपने देश (भारतभूमि) को भारत माता का मंदिर बताते हुए कहता है कि भारत माता का यह ऐसा मंदिर है जिसमें समानता की ही चर्चा होती है। यहाँ पर सभी के कल्याण की वास्तविक कामना की जाती है और यहीं पर सभी को परम सुखरूपी प्रसाद की प्राप्ति होती है।

इस मंदिर की यह विशेषता है कि यहाँ पर जाति-धर्म या संप्रदायवाद का कोई भेदभाव नहीं है यानी इस मंदिर में ऐसा कोई व्यवधान या समस्या नहीं है कि कौन किस वर्ग का है। सभी समान हैं। सभी का स्वागत है और सभी का बराबर सम्मान है। कोई किसी भी सम्प्रदाय को मानने वाला हो; चाहे वह हिन्दुओं के इष्टदेव राम हों, मुस्लिमों के इष्ट रहीम हों, चाहे बौद्धों के इष्ट बुद्ध हों या चाहे ईसाइयों के इष्ट ईसामसीह हों यानी इस मंदिर में सभी का बराबर सम्मान है, सभी के स्वरूप का बराबर-बराबर चिन्तन किया जाता है। सभी की ही बराबर पूजा की जाती है।

अलग-अलग संस्कृतियों के जो गुण हैं, जिनके द्वारा सम्पूर्ण संसार के मर्म को अलग-अलग रूपों में संचित किया गया है, वे सभी इस भारत माता के मंदिर में एकत्र हैं अर्थात् भारत माता के इस पावन मंदिर में सम्पूर्ण संस्कृतियों का समावेश है।

कहने का तात्पर्य यह है कि चाहे कोई भी देश हो सभी के अपने-अपने अलग-अलग धर्म, अलग-अलग सम्प्रदाय, अलग-अलग सिद्धान्त तथा अलग-अलग पवित्र स्थल होते हैं किन्तु हमारा भारत देश एक ऐसा पवित्र तीर्थ स्थल है जहाँ निवास करने वाला प्रत्येक प्राणी सभी धर्मों

को मानने वाला तथा सबको सम भाव से समझने वाला है। हमारा देश अनेकता में एकता का देश है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' इसकी भावना है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) अनेकता में एकता का अद्वितीय चित्रण किया गया है। (2) राष्ट्रप्रेम और स्वदेशाभिमान की भावना को प्रेरित किया गया है। **(3) भाषा**—खड़ीबोली। **(4) शैली**—मुक्तक। **(5) छन्द**—गेय। **(6) गुण**—प्रसाद। **(7) अलंकार**—रूपक, अनुप्रास। **(8) भावसाम्य**—वियोगी हरि द्वारा रचित 'विश्व मंदिर'।

(ख) नहीं चाहिए बुद्ध बैर की
भला प्रेम का उन्माद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने
मन के चित्र
बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर
एक चरित्र बना लें हम।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने लोगों से भारत माता मंदिर के गुणों को अपने जीवन-चरित्र में उतारने की बात कही है।

व्याख्या—उक्त पंक्तियों में कवि कह रहा है कि हमें ऐसी उन्नति कदापि प्रिय नहीं है जो ईर्ष्या से युक्त हो। इस भारत माता के मंदिर में सबके कल्याण और प्रेम का अत्यधिक अनुराग भरा पड़ा है। यहाँ पर सभी का मंगल कल्याण है और यहीं पर सभी को परम सुखरूपी प्रसाद की प्राप्ति होती है।

यह भारत माता का मंदिर सभी तीर्थों में उत्तम तीर्थ है क्योंकि यह किसी एक सम्प्रदाय या किसी धर्म से जुड़ा तीर्थ नहीं है। यद्यपि इसमें सभी तीर्थों का समावेश है, इसलिए इस तीर्थ का तीर्थाटन करके अपने हृदय को हम पवित्र बना लें। यह ऐसा पवित्र व उत्तम स्थान है जहाँ पर कोई किसी का शत्रु नहीं है इसलिए यहाँ बसकर हम सबको अपना मित्र बना लें। यहाँ पर रेखाओं के रूप में कल्याणकारी व मंगलकारी कामनाओं (इच्छाओं) के चित्रों को उकेरकर उनको साकार रूप देकर हम अपने मनोभावों को पूर्ण कर लें। अर्थात् यह भारत माता का मंदिर ऐसा पवित्र स्थल है जहाँ ईर्ष्या-द्वेष लेश मात्र भी नहीं है। ऐसे पावन मंदिर में बसकर हम अपने जीवन को धन्य बना सकने में और अपनी मानवता को साकार रूप दे पाने में सफल हो पाएँगे। हमें विभिन्न आदर्शों (विकारों) को मिलाकर एक ऐसा समन्वित आदर्श बना लेना चाहिए जो सभी को मान्य हो।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** भारत माता के मंदिर के रूप में मानवता की साकार मूर्ति का चित्रांकन। **(2)** कवि की शब्द-शक्ति के द्वारा प्रेम से परिपूर्ण दुनिया का निर्माण करना। **(3) भाषा**—खड़ीबोली। **(4) शैली**—मुक्तक। **(5) छन्द**—गेय। **(6) गुण**—प्रसाद। **(7) अलंकार**—रूपक। **(8) भावसाम्य**—वियोगी हरि द्वारा रचित 'विश्व मंदिर'।

(ग) बैठो माता के आँगन में
नाता भाई-बहन का
समझे उसकी प्रसव वेदना
वही लाल है माई का
एक साथ मिल बाँट लो
अपना हर्ष विषाद यहाँ है
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने भारत माता के इस पवित्र सदन में निवास करने वाले सभी लोगों के बीच वास्तविक रिश्ते को उजागर किया है।

व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि यहाँ (भारत में) निवास करने वाले लोगों से कहता है कि आइए माँ के इस पवित्र सदन में बैठिए। हम सबका यहाँ पर भाई-बहन का रिश्ता है अर्थात् एक घर (भारत) में निवास करने वाले हम सभी आपस में भाई-बहन के समान हैं और हमारा कर्त्तव्य है कि हम सब अपनी माँ (भारत माता) के कष्टों को महसूस करें; क्योंकि सच्चा पुत्र वहीं होता है जो अपनी माता के कष्टों को समझता है तथा उसके लिए हर क्षण समर्पण की भावना अपने मन में रखता है। हम सभी भाई-बहनों का यह उद्देश्य होना चाहिए कि किसी को किसी प्रकार का कष्ट न हो। सभी एक-दूसरे के सहयोग के लिए तैयार रहें। क्योंकि यह भारत माता का मंदिर है इसलिए यहीं पर हम सबका मंगल कल्याण है और यहीं पर सभी को परम सुख रूपी प्रसाद भी प्राप्त है। कहने का तात्पर्य यह है कि हम सब भारतवासी एक माँ (भारत माता) की सन्तानें हैं और आपस में सभी भाई-बहन के समान हैं। हमें आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिए और एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** समस्त भारतवासियों का भाई-बहन के रूप में वास्तविक चित्रण किया गया है। **(2)** सम्पूर्ण भारत देश का एक सदन के सदृश सुन्दर चित्रण हुआ है। **(3) भाषा**—खड़ीबोली। **(4) शैली**—मुक्तक। **(5) अलंकार**—रूपक। **(6) भावसाम्य**—महान संत **तिरुवल्लुवर** ने भी अपने एक कुरल (दोहे) के माध्यम से ऐसे ही भाव प्रकट किए हैं—

कपट, क्रोध, छल, लोभ से रहित प्रेम-व्यवहार।
सबसे मिल-जुलकर रहो, सकल विश्व परिवार॥

(घ) मिला सेव्य का हमें पुजारी
सकल काम उस न्यायी का
मुक्ति लाभ कर्त्तव्य यहाँ है
एक एक अनुयायी का
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर
उठे एक जयनाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने भारतवासियों को भारतभूमि में जन्म लेने पर धन्य होने की बात कही है।

व्याख्या—इन पंक्तियों के माध्यम से कवि मैथिलीशरण गुप्त जी कह रहे हैं कि हमारा परम सौभाग्य है जो हमें इस पावन भूमि (भारत) में जन्म मिला और भारत माता की सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह ईश्वर की हमारे ऊपर बहुत बड़ी कृपा है। यहाँ के प्रत्येक अनुयायी का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह इस मौके का सम्पूर्ण लाभ उठाकर मुक्ति प्राप्त करें। भारत माता के इस पावन मंदिर में करोड़ों स्वर एक साथ मिलकर जयघोष करते हैं अर्थात् यहाँ निवास करने वाले सभी लोग एक स्वर में जय-जयकार करते हैं। भारत माता के इस पावन मंदिर में सबके मंगलकारी कल्याण की कामना की जाती है और सभी को यहाँ परमसुख रूपी प्रसाद की प्राप्ति होती है।

कहने का तात्पर्य है कि जिसने भारत में जन्म लिया है उसका यह सौभाग्य है कि उसने मोक्ष के मार्ग को खोज लिया है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** प्रस्तुत पंक्तियों में देशभक्ति का सच्चा अनुराग दर्शाया गया है। **(2) भाषा**—सरल, सहज एवं प्रवाहयुक्त खड़ीबोली। **(3) शैली**—मुक्तक। **(4) अलंकार**—रूपक। **(5) भावसाम्य** —ऐसी ही भाव-व्यंजना **सुभद्राकुमारी चौहान** ने अपनी इन पंक्तियों के द्वारा व्यक्त की है—

सुनूँगी माता की आवाज,
रहूँगी मरने को तैयार,
कभी भी उस वेदी पर देव,
न होने दूँगी अत्याचार।
न होने दूँगी अत्याचार,
चलो मैं हो जाऊँ बलिदान,
मातृ-मंदिर में हुई पुकार,
चढ़ा दो मुझको हे भगवान!

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्न पदों में समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए–

जाति-धर्म, अजातशत्रु, भाई-बहन, सेव्य, जयनाद।

उत्तर—शब्द	**समास-विग्रह**	**समास**
जाति-धर्म	जाति और धर्म	द्वन्द्व समाज
अजातशत्रु	नहीं पैदा हुआ हो शत्रु जिसका	बहुव्रीह समास
भाई-बहन	भाई और धर्म	द्वन्द्व समाज
सेव्य	सेवा करने वाला	तत्पुरुष समाज

प्रश्न 2. निम्नलिखित पदों का सनाम सन्धि-विच्छेद कीजिए–

सम्मान, संवाद, पवित्र।

उत्तर—शब्द	**सन्धि-विच्छेद**	
सम्मान	सम् + मान	(व्यंजन संधि)
संवाद	सम् + वाद	(व्यंजन संधि)
पवित्र	पो + इत्र	(अयादि संधि)

प्रश्न 3. निम्नलिखित पदों में प्रत्ययों को मूल शब्दों से अलग करके लिखिए–

पुजारी, समता, संस्कृति।

उत्तर— पुजारी = पूजा + आरी।
समता = सम + ता।
संस्कृति = संस्कृत + इ।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है–

(क) सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ।

(ख) बैठो माता के आँगन में
नाता भाई-बहन का
समझे उसकी प्रसव वेदना
वही लाल है माई का

उत्तर—**(क)** अनुप्रास अलंकार।
(ख) रूपक अलंकार।

❑

11 नदी

(केदारनाथ सिंह)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. केदारनाथ सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर—केदारनाथ सिंह का जन्म वर्ष 1934 में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के चकिया नामक गाँव में हुआ था।

प्रश्न 2. केदारनाथ सिंह की शिक्षा-दीक्षा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—केदारनाथ की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में हुई तथा हाईस्कूल से लेकर पी०एच०डी० तक की शिक्षा बनारस में प्राप्त की। इन्होंने बनारस विश्वविद्यालय से वर्ष 1956 में हिन्दी में एम०ए० और वर्ष 1964 में पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। अनेक विद्यालयों में अध्यापन का कार्य करते हुए अन्तत: जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए।

प्रश्न 3. कवि केदारनाथ सिंह की बहुत प्रसिद्ध एक गद्य तथा एक पद्य रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—केदारनाथ सिंह की बहुत प्रसिद्ध गद्य रचना 'कब्रिस्तान में पंचायत' है तथा प्रसिद्ध पद्य रचना 'अकाल में सारस' है।

प्रश्न 4. 'अकाल में सारस' के लिए केदारनाथ सिंह को कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ?

उत्तर—'अकाल में सारस' के लिए केदारनाथ सिंह को, साहित्य अकादमी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, कुमारन आशवन पुरस्कार, दिनकर पुरस्कार, जीवन भारती सम्मान, व्यास सम्मान प्राप्त हुआ।

प्रश्न 5. किस पुरस्कार को केदारनाथ सिंह ने ठुकरा दिया था?

उत्तर—केदारनाथ सिंह ने 'शलाका सम्मान' को ठुकरा दिया था।

प्रश्न 6. भाषा की दृष्टि से केदारनाथ सिंह की कविता की विवेचना कीजिए।

उत्तर— भाषा की दृष्टि से केदारनाथ सिंह की कविता में पाण्डित्य के दर्शन नहीं होते और न ही उनमें निराशा के भाव हैं। उनमें आशा की किरण दिखाई देती है। इनकी भाषा सरल, सुबोध, अविरल है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. केदारनाथ सिंह के जीवन-परिचय और काव्यकृतियों (रचनाओं) पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—कवि केदारनाथ सिंह ने अपने समकालीन कवियों की तुलना में बहुत कम कविताएँ लिखी हैं परन्तु इनकी कविताएँ निजत्व की विशिष्टता से परिपूर्ण हैं। शहर में रहते हुए भी ये गंगा और घाघरा के मध्य की अपनी धरती को भूले नहीं थे। खुले कछार, हरियाली से लहलहाती फसलें और दूर-दूर तक जाने वाली पगडण्डियाँ इनके हृदय को भाव-विह्वल बनाती थीं।

जीवन-परिचय—केदारनाथ सिंह जी का जन्म **7 जुलाई, 1934 ई०** को उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद के चकिया नामक गाँव में हुआ था। इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1956 ई० में एम० ए० और 1964 ई० में पी-एच० डी० की। सन् 1978 ई० में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा विभाग में हिन्दी भाषा के प्रोफेसर (आचार्य) नियुक्त होने के पूर्व इन्होंने वाराणसी, गोरखपुर और पडरौना के कई स्नातक-स्नातकोत्तर विद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। सन् 1999 में इन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर पद से अवकाश ग्रहण किया और इसके बाद ये यहीं से मानद प्रोफेसर के रूप में जुड़े हुए थे।

केदारनाथ सिंह जी को अनेक सम्माननीय सम्मानों से सम्मानित किया गया है। सन् 1980 में इन्हें 'कुमारन असन' कविता-पुरस्कार तथा सन् 1989 में 'अकाल में सारस' रचना के लिए 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्रदान किया गया। कतिपय कारणों से इन्होंने हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा प्रदत्त सर्वोच्च शलाका सम्मान ठुकरा दिया।

लम्बी बीमारी के कारण **19 मार्च, 2018 ई०** को इनका निधन हो गया।

रचनाएँ—केदारनाथ सिंह द्वारा कविता व गद्य की अनेक पुस्तकों की रचना की गयी है, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं—

(1) कविता-संग्रह—'अभी बिलकुल अभी', 'जमीन पक रही है', 'यहाँ से देखो', 'अकाल में सारस', 'टॉल्सटॉय और साइकिल' एवं 'तीसरा सप्तक' में संकलित प्रकाशित कविताएँ। 'बाघ' इनकी प्रमुख लम्बी कविता है, जो मील का पत्थर मानी जा सकती है। 'जीने के लिए कुछ शर्तें', 'प्रक्रिया', 'सूर्य', 'एक प्रेम-कविता को पढ़कर', 'आधी रात', 'बादल ओ', 'रात', 'अनागत', 'माँझी का पुल', 'फर्क नहीं पड़ता' आदि इनकी प्रमुख कविताएँ हैं।

(2) निबन्ध और कहानियाँ—'मेरे समय के शब्द', 'कल्पना और छायावाद', 'हिन्दी कविता में बिम्ब-विधान', 'कब्रिस्तान में पंचायत' आदि।

(3) अन्य—'ताना-बाना'।

साहित्य में स्थान—कवि केदारनाथ सिंह के मूल्यांकन के लिए आवश्यक है कि इनकी 1960 ई० और उसके बाद की कविताओं के बीच एक विभाजक रेखा खींच दी जाए। अपनी कविताओं के माध्यम से ये भ्रष्टाचार, विषमता और मूल्यहीनता पर सधा हुआ प्रहार करते थे। प्रगतिशील लेखक संघ से सम्बद्ध श्री केदारनाथ सिंह जी समकालीन हिन्दी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर और आधुनिक हिन्दी कवियों में उच्च स्थान के अधिकारी हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए—

(क) अगर धीरे चलो
वह तुम्हें छू लेगी
दौड़ो तो छूट जाएगी नदी
अगर ले लो साथ
वह चलती चली जायेगी कहीं भी
यहाँ तक कि कबाड़ी की दुकान तक भी
छोड़ दो
तो वहीं अँधेरे में
करोड़ों तारों की आँख बचाकर
वह चुपके से रच लेगी
एक समूची दुनिया।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' में संकलित विविधा शीर्षक के अन्तर्गत **'नदी'** शीर्षक कविता से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों के रचयिता **श्री केदारनाथ सिंह जी** हैं।

[विशेष—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि नदी का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। यह जीवन में प्रत्येक क्षण हमारा साथ देती है।

व्याख्या—कवि कहता है कि यदि हम नदी के बारे में, उसके गुणों के बारे में, उसके महत्त्व के बारे में सोचते हैं तो वह हमारे अन्तस्तल को स्पर्श करती प्रतीत होती है। नदी हमारा पालन-पोषण उसी प्रकार करती है, जिस प्रकार हमारी माँ। जिस प्रकार अपनी माँ से हम अपने-आपको अलग नहीं कर सकते, उसी प्रकार हम नदी से भी अपने को अलग नहीं कर सकते। यदि हम सामान्य गति से चलते रहते हैं तो यह हमें स्पर्श करती प्रतीत होती है, लेकिन जब हम सांसारिकता में पड़कर भाग-दौड़ में पड़ जाते हैं, तो यह हमारा साथ छोड़ देती है। यदि हम इसे साथ लेकर चलें तो यह प्रत्येक परिस्थिति में किसी-न-किसी रूप में हमारे साथ रहती है, क्योंकि यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। न तो वह हमसे अलग हो सकती है और न हम उससे।

काव्यगत-सौन्दर्य—**(1)** कवि ने नदी के महत्त्व का वर्णन किया है कि यह हमारे जीवन में प्रत्येक क्षण में किसी-न-किसी रूप में हमारे साथ रहती है। **(2) भाषा**—सहज और सरल खड़ीबोली। **(3) शैली**—वर्णनात्मक व प्रतीकात्मक। **(4) छन्द**—अतुकान्त और मुक्त। **(5) अलंकार**—अनुप्रास का सामान्य प्रयोग।

(ख) सच्चाई यह है
कि तुम कहीं भी रहो
तुम्हें वर्ष के सबसे कठिन दिनों में भी
प्यार करती है एक नदी
नदी जो इस समय नहीं है इस घर में
पर होगी जरूर कहीं न कहीं
किसी चटाई
या फूलदान के नीचे
चुपचाप बहती हुई।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि नदी की सर्वव्यापकता की ओर संकेत कर रहा है।

व्याख्या—नदी की सर्वव्यापकता की ओर संकेत करता हुआ कवि कहता है कि जो नदी विभिन्न स्थलों के मध्य से अनवरत प्रवाहित होती रहती है वह किसी-न-किसी रूप में हमारे घरों में भी प्रवाहित होती हुई हमें सुख और आनन्द की अनुभूति देती है। इसके बहने की ध्वनि हमें किसी चटाई या फूलदान से भी सुनाई पड़ सकती है और इसका हम मन-ही-मन

अनुभव भी कर लेते हैं। आशय यह है कि नदी और व्यक्ति का गहरा और अटूट सम्बन्ध पहले से ही रहा है और आगे भी रहेगा।

काव्यगत-सौन्दर्य—**(1)** नदी से अटूट सम्बन्ध का वर्णन करते हुए कहा गया है कि नदी घरों में भी चुपचाप बहती रहती है। **(2) भाषा** —सहज और सरल खड़ीबोली। **(3) शैली**—प्रतीकात्मक। **(4) छन्द** —अतुकान्त और मुक्त।

(ग) कभी सुनना
जब सारा शहर सो जाए
तो किवाड़ों पर कान लगा
धीरे-धीरे सुनना
कहीं आसपास
एक मादा घड़ियाल की कराह की तरह
सुनाई देगी नदी।

उत्तर—**प्रसंग**—प्रस्तुत काव्यांश में कवि बताता है कि भले ही व्यक्ति भौतिक रूप से कितना भी आधुनिक हो जाए, किन्तु उसके मन-मस्तिष्क में अपनी सभ्याता और संस्कृति के प्रति एक लगाव अवश्य होता है।

व्याख्या—कवि वर्तमान में अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर होते रहे लोगों के व्यवहार पर चिन्ता व्यक्त करता हुआ कहता है कि भले ही आधुनिक कहलाने वाले लोगों के आचार और व्यवहार में हमें सभ्यता और संस्कृति रूपी नदी का कल-कल निनाद सुनाई न पड़ता हो; भले ही हम ऊपर से अत्याधुनिकता का दिखावा करके अपनी सभ्यता-संस्कृति से कटने का अभिनय करें, परन्तु यह हमारे मन के किसी गहरे कोने में कहीं छिपकर बहती ही रहती है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि व्यक्ति के जीवन से उसका अस्तित्व समाप्त हो। वह भले ही हमारे घर की रसोई अर्थात् खानपान से, हमारे ड्राइंगरूम अर्थात् हमारे रहने के तौर-तरीके और दूसरों के साथ किए जाने वाले व्यवहार से लुप्त हो जाए; किन्तु हो सकता है वह हमारे पारस्परिक सम्बन्धों की चटाई अथवा भावनाओं के कोमल गुलदस्ते के नीचे से चुपचाप बह रही हो। कहीं-न-कही हमारे जीवन में उसके पैरों की आहट अवश्य सुनाई देती है, आवश्यकता है उस आहट को ढूँढ़कर पहचानने और उसे सुनने की। जीवन की आपाधापी अथवा आधुनिकता की दौड़ में हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति रूपी नदी के पैरों की आहट सुनाई नहीं देती। मगर जब रात्रि में पूरा शहर, पूरा संसार सोया होता है और हमारी कानरूपी अन्तश्चेतना जागृत होती है, हमारी वैचारिकता हमारे आचार-व्यवहार का विश्लेषण करती है कि हम क्या सही कर रहे हैं और क्या गलत कर रहे हैं, तब उन शान्ति के क्षणों में हमें घर के प्रत्येक कोने से, उसके प्रत्येक खिड़की-दरवाजे से कहीं धीमी दूर से आती हुई-सी तो कहीं आस-पास से उस नदी के बहने की आवाज स्पष्ट सुनाई देती है। इस आवाज के साथ हमें सभ्यता और संस्कृति की इस नदी में पलने वाले जीवन-मूल्यों रूपी निरीह मादा घड़ियालों के ताड़ित-पीड़ित किए जाने की आह और कराह भी सुनाई देती है। कवि सभी से शान्त-एकान्त क्षणों में इस नदी के बहने और उसमें पलने वाले मादा-घड़ियालों का कराह को सुनने का अनुरोध यहाँ करता है। वह इस नदी के कल-कल निनाद को सुनकर उसे जीवन-संगीत बनाने अथवा कराह की ध्वनि को सुनकर उसके निवारण के उपाय करने का अनुरोध कदाचित् नहीं कर रहा है; क्योंकि उसे विश्वास है कि एक बार इस कल-कल निनाद और कराह को सुनने के बाद किसी भी व्यक्ति को उसे जीवन-संगनी बनाने और कराहों को आहा-वाह-वाह में परिवर्तित करने के प्रयासों से कोई नहीं रोक सकता।

काव्यगत-सौन्दर्य—**(1)** कवि यहाँ स्पष्ट रूप से यह संकेत कर रहा है कि यदि हम अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर भागती नई पीढ़ी को शिक्षा आदि के माध्यम से उसका एक बार दिग्दर्शन करा दें तो हमारी सभ्यता और संस्कृति इतनी सुन्दर, मोहक और आकर्षक है कि वह उस पर अपना मोहक जादू चलाकर उसे अपने साथ बहने के लिए अवश्य ही विवश कर देगी। **(2)** व्यक्ति कितना भी चाहकर अपनी सभ्यता और संस्कृति से पूर्णरूप से अलग नहीं हो सकता। **(3) भाषा**— प्रतीकात्मक, सरल, प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली। **(4) रस**—शान्त। **(5) गुण**—प्रसाद। **(6) अलंकार** —उपमा।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(क) अगर ले लो साथ वह चलती चली जाए कहीं भी,
यहाँ तक की कबाड़ी की दुकान तक भी।

उत्तर—ल, च, क की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार।

(ख) वह चुपके से रच लेगी
एक समूची दुनिया
एक छोटे से घोंघे में।

उत्तर—ए, क, च की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए— नदी, सिंह, पुत्र, दिन, दुनिया, आँख।

उत्तर—

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
नदी	सरिता, तटिनी
सिंह	शेर, शार्दुल
पुत्र	बेटा, सुत
दिन	दिवस, वार
दुनिया	संसार, भव
आँख	नयन, लोचन

प्रश्न 3. निम्नलिखित में सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए और सन्धि का नाम भी लिखिए–

समोश्वर, तन्द्रालय, अनासक्ति, निष्कलंक, नगाधिराज, हर्षातिरेक, रवीन्द्र, अत्याधुनिक।

उत्तर—

सन्धि पद	**सन्धि-विच्छेद**	**सन्धि का नाम**
समोश्वर	सोम + ईश्वर (अ + ई = ए)	गुण सन्धि
तन्द्रालय	तन्द्रा + आलस (आ + आ = आ)	दीर्घ सन्धि
अनासक्ति	अना + आशक्ति (अ + अ = आ)	दीर्घ सन्धि
निष्कलंक	नि: + कलंक (अ: + क = ष्क)	विसर्ग सन्धि
नगाधिराज	नग + अधिराज (अ + आ = आ)	दीर्घ सन्धि
हर्षातिरेक	हर्ष + अतिरेक (अ + अ = आ)	दीर्घ सन्धि
रवीन्द्र	रवि + इन्द्र (इ + इ = ई)	दीर्घ सन्धि
अत्याधुनिक	अति + आधुनिक (इ + आ = या)	यण् सन्धि

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में एक से अधिक उपसर्गों का प्रयोग हुआ है; उन्हें उनके मूलशब्दों से अलग करके लिखए–

अभिव्यक्ति, उपन्यास, उपाध्यक्ष, उपनिर्वाचन, निरभिमान, निरपराध, दुष्प्रयोग, व्याख्या, व्याकरण, समाधान, सुविख्यात, स्वागत, अधिनियम, अत्याचार, उदाहरण, समाचार।

उत्तर—शब्द	मूल शब्द	उपसर्ग
अभिव्यक्ति	व्यक्ति	अभि
उपन्यास	न्यास	उप
उपाध्यक्ष	अध्यक्ष	उप, आ
उपनिर्वाचन	वाचन	उप, नि:
निरभिमान	मान	नि:, अभि
निरपराध	अपराध	नि:
दुष्प्रयोग	योग	दु:, प्र
व्याख्या	आख्या	वि
व्याकरण	करण	वि, आ
समाधान	धान	सम्, आ
सुविख्यात	विख्यात	सु
स्वागत	गत	सु, आ
अधिनियम	नियम	अधि
अत्याचार	आचार	अति
उदाहरण	हरण	उद्, अ
समाचार	आचार	सम्

❑

12 युवा जंगल, भाषा एकमात्र अनन्त है

(अशोक वाजपेयी)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. अशोक वाजपेयी किस काव्यधारा के कवि हैं?

उत्तर—अशोक वाजपेयी, आधुनिक युग की प्रगतिवादी काव्यधारा के कवि हैं।

प्रश्न 2. अशोक वाजपेयी का जन्म कब व कहाँ हुआ था? उनकी किसी एक कृति का नाम बताइए।

उत्तर—अशोक वाजपेयी का जन्म वर्ष 1941 में दुर्ग, मध्य प्रदेश में हुआ था। उनकी एक रचना (कृति) 'उम्मीद का दूसरा नाम' है।

प्रश्न 3. 'अशोक वाजपेयी' जी का संक्षिप्त जीवन-परिचय एवं कृतियाँ बताइए।

उत्तर—अशोक वाजपेयी का जन्म वर्ष 1941 ई० में दुर्ग मध्य प्रदेश में हुआ था। उन्होंने बी०ए० की परीक्षा 'सागर' जिले में प्राप्त की तथा स्नातकोत्तर की उपाधि दिल्ली से प्राप्त की। आपने प्रशासनिक सेवा परीक्षा भी उत्तीर्ण की तथा भारत सरकार के अधीन कई पदों पर कार्य किया। साहित्य में रुचि के कारण प्रगतिवादी काव्यधारा में श्रीवृद्धि की। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—आविन्यों, कहीं नहीं वहीं, एक खिचड़ी, कितने दिन और बचे हैं, युवा जंगल, वे बच्चो, तिनका-तिनका, एक पतंग अनंत में इत्यादि।

प्रश्न 4. 'अशोक वाजपेयी' जी को 'साहित्य-अकादमी' पुरस्कार किस सन् में प्रदान किया गया?

उत्तर—अशोक वाजपेयी को वर्ष 1994 में साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

प्रश्न 5. 'अशोक वाजपेयी' द्वारा स्थापित किसी संस्था का नाम लिखिए।

उत्तर—अशोक वाजपेयी, चक्रधर नृत्य केन्द्र, उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी आदि संस्थाओं के संस्थापक थे।

प्रश्न 6. 'बहुरि अकेला' के रचयिता का नाम बताइए।

उत्तर—'बहुरि अकेला' के रचयिता अशोक वाजपेयी जी हैं। यह उनका कविता-संग्रह है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(क) एक युवा जंगल मुझे,
अपनी हरी उँगलियों से बुलाता है।
मेरी शिराओं में हरा रक्त बहने लगा है
आँखों मे परछाइयाँ फिसलती हैं
कन्धों पर एक हरा आकाश ठहरा है
होंठ मेरे एक हरे गान में काँपते हैं—
मैं नहीं हूँ और कुछ
बस एक हरा पेड़ हूँ
—हरी पत्तियों की एक दीप्त रचना!

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' में संकलित **'युवा जंगल'** शीर्षक कविता से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों के रचयिता **श्री अशोक वाजपेयी जी** हैं।

[विशेष—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि हरियाली और वृक्षों के महत्त्व का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या—कवि कहता है कि वृक्षों के निरन्तर कटाव को देखकर उसका हृदय अत्यधिक दु:खी होता है, क्योंकि वह चतुर्दिक हरियाली ही निहारना चाहता है। हरियाली और वृक्षों का उसके जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। एक दिन एक युवा अर्थात् नवीन जंगल की ओर उसकी दृष्टि जाती है तो वह उसे देखकर अत्यधिक प्रसन्न हो जाता है। वह युवा जंगल से स्वयं को आत्मसात-सा कर लेता है। जब युवा जंगल अपनत्व की भावना से छोटी-छोटी शाखाओं रूपी हरी-हरी अँगुलियों से उसे बुलाता है तो धीरे-धीरे उसकी रगों में भी लाल रक्त के स्थान पर हरा रक्त प्रवाहित होता प्रतीत होता है। आशय यह है कि कवि उस समय स्वयं को एक पौधे के रूप में स्वीकार कर रहा था। कवि की आँखों के सामने जो परछाइयाँ आती-जाती दीखती हैं, वह भी उसे हरी ही दिखाई पड़ती हैं। धीरे-धीरे उसे ऐसा प्रतीत होने लगता है कि उसने अपने कन्धों पर हरे रंग का एक आकाश ही उठा रखा है। उसके होंठ हरियाली को निहारकर बरबस हरियाली के गान गाने के लिए बुदबुदाने लगते हैं और अकस्मात् उसके मुख से निकल पड़ता है कि वह एक हरे पेड़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वह हरी पत्तियों से युक्त ईश्वर की एक प्रभासित रचना है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** स्वयं को वृक्षों के रूप में कल्पित करना अभूतपूर्व है। **(2) भाषा**—बोलचाल की खड़ीबोली। **(3) शैली**—प्रतीकात्मक। **(4) रस**—शान्त। **(5) छन्द**—अतुकान्त और मुक्त। **(6) अलंकार**—मानवीकरण। **(7) शब्दशक्ति**—अभिधा और लक्षणा। **(8) गुण**—माधुर्य।

(ख) ओ जंगल युवा,
बुलाते हो
आता हूँ
एक हरे बसन्त में डूबा हुआ
आऽताऽ हूँ ....।

प्रसंग—युवा जंगल के बुलाने पर कवि सहर्ष उसके आह्वान को स्वीकार करता हुआ अपने मन के विचारों को स्पष्ट कर रहा है।

व्याख्या—कवि युवा जंगल को सम्बोधित करता हुआ कह रहा है कि यदि तुम मुझे बुला रहे हो तो मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। मैं स्वयं को हरियाली से युक्त वसन्त में पूर्णरूपेण ओत-प्रोत करके आता हूँ। आशय यह है कि कवि उस समय अपने को भी एक वृक्ष के रूप में ही कल्पित कर रहा है। जब हम किसी के साथ; चाहे वह जड़ हो या चेतन; स्वयं को आत्मसात् करके देखते हैं तो उसके सुख-दु:ख हमें अपने ही सुख-दु:ख प्रतीत होते हैं। जब हमारा दृष्टिकोण विस्तृत होता है तो हम स्वयं में सारी प्रकृति को और सारी प्रकृति में स्वयं को समाहित देखते हैं; अर्थात् भिन्नता जैसी कोई वस्तु होती ही नहीं और यदि होती भी है तो वह स्वार्थ ही है। स्वार्थी व्यक्ति को प्रकृति में सभी भिन्न दिखाई देते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** प्रकृति के साथ एकात्मभाव की कल्पना अद्‌भुत है। **(2) भाषा**—बोलचाल की खड़ीबोली। **(3) शैली**—प्रतीकात्मक। **(4) छन्द**—अतुकान्त और मुक्त। **(5) अलंकार**—मानवीकरण। **(6) गुण**— प्रसाद।

भाषा एकमात्र अनन्त है

(क) फूल झरता है
फूल शब्द नहीं!
बच्चा गेंद उछालता है,
सदियों के पार
लोकती है उसे एक बच्ची!

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' में संकलित **'भाषा एकमात्र अनन्त है'** शीर्षक कविता से उद्‌धृत हैं। इन पंक्तियों के रचयिता **श्री अशोक वाजपेयी जी** हैं। यह कविता उनके **'तिनका-तिनका'** नामक काव्य-संग्रह से ली गयी है।

[विशेष—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—प्रस्तुत कविता-पंक्तियों में कवि भाषा की विशेषता का वर्णन कर रहा है। उसका कहना है कि सब कुछ समाप्त हो सकता है, लेकिन भाषा का अस्तित्व सदैव विद्यमान रहेगा।

व्याख्या—कवि का कहना है कि भाषा ही एकमात्र अनन्त है अर्थात् जिसका अन्त नहीं है। फूल वृक्ष से टूटकर पृथ्वी पर गिरते हैं, उसकी पंखुड़ियाँ टूटकर बिखर जाती हैं और अन्तत: फूल मिट्टी में ही विलीन हो जाता है। वह प्रकृति से जन्मा है और अन्त में प्रकृति में ही लीन हो जाता है। फूल की तरह शब्द विलीन नहीं होते। भाषा जो शब्दों से बनती है, वह कभी समाप्त नहीं होती। सदियों के पश्चात् भी भाषा का अस्तित्व बना रहता है। यह दूसरी बात है कि विशद समयान्तराल में भाषा के स्वरूप में परिवर्तन अवश्य हो जाता है, लेकिन वह समाप्त नहीं होती। यह उसी प्रकार है जैसे एक बालक गेंद को उछालता है और दूसरा उसे पकड़कर पुन: उछाल देता है। आज किसी न कोई बात कही, सैकड़ों वर्षों बाद परिवर्तित स्वरूप में कोई दूसरा व्यक्ति भी उसी बात को कह देता है। अत: निश्चित है कि भाषा ही एकमात्र अनन्त है, जिसका कोई अन्त नही है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** भाषा की विशिष्टता का वर्णन है कि भाषा अनन्त है। **(2)** सदियों पूर्व की घटनाओं को हमारे समक्ष उपस्थित करने का एकमात्र साधन भाषा है। **(3)** भाषा को अनन्त कहकर उसे ईश्वर के समतुल्य सिद्ध किया गया है। **(4) भाषा**—देशज शब्दों से युक्त सहज और सरल खड़ीबोली। **(5) शैली**—वर्णनात्मक और विवेचनात्मक। **(6) छन्द**—अतुकान्त और मुक्त। **(7) शब्दशक्ति**—अभिधा और लक्षणा। **(9) गुण** —प्रसाद।

(ख) बूढ़ा गाता है एक पद्य,
दुहराता है दूसरा बूढ़ा,
भूगोल और इतिहास से परे
किसी दालान में बैठा हुआ!
न बच्चा रहेगा,
न बूढ़ा,
न गेंद, न फूल, न दालान
रहेंगे फिर भी शब्द
भाषा एकमात्र अनन्त है!

प्रसंग—प्रस्तुत अंश में कवि कहता है कि सब कुछ समाप्त होने के उपरान्त भी भाषा की विद्यमानता रहेगी, क्योंकि भाषा अनन्त है।

व्याख्या—कवि कहता है कि हमें प्राचीन काल से सम्बन्धित ज्ञान इतिहास और भूगोल जैसे विषयों की सहायता से प्राप्त हो जाता है। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जब इतिहास और भूगोल भी नहीं लिखे गये थे, भाषा का अस्तित्व उस समय भी था। उस समय भी कोई एक वृद्ध व्यक्ति जब कोई पद गुनगुनाता था तो घर के ही किसी अन्य भाग में बैठा हुआ कोई अन्य वृद्ध उसी पद को या अन्य किसी पद को गुनगुना उठता था और इसी माध्यम से भाषा आज तक चलती चली आ रही है। कवि के कहने का अभिप्राय यह है कि भाषा की विद्यमानता किसी-न-किसी रूप में सदैव रही है।

पुन: कवि कहता है न बच्चा रहेगा, न वृद्ध; क्योंकि बच्चा एक समयान्तराल पर वृद्ध हो जाएगा और वृद्ध जीवन छोड़ चुका होगा। न गेंद रहेगा, न ही फूल और न ही दालान; क्योंकि ये सभी वस्तुएँ नश्वर हैं। एक-न-एक दिन सभी को समाप्त हो ही जाना है। लेकिन इन सबके समाप्त हो जाने के बाद भी शब्द बने रहेंगे; क्योंकि वह भाषा का ही एक भाग है और भाषा ही एकमात्र अनन्त है।

काव्यगत सौन्दर्य—**(1)** कवि ने भूगोल और इतिहास से पहले भाषा की सत्ता को स्वीकार किया है। **(2) भाषा**—सरल और सहज शब्दों से युक्त। **(3) शैली**—विवेचनात्मक। **(4) छन्द**—अतुकान्त और मुक्त। **(5) शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। **(6) भावसाम्य**—भाषा का एक अंश होने के कारण शब्द भी अनन्त है; क्योंकि अनन्त का अंश भी अनन्त ही होता है। भारतीय उपनिषद् ग्रन्थ भी इसकी स्वीकारोक्ति करते हैं—

ऊँ पूर्ण: पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्ण मेवावशिष्यते।।

व्याकरण एवं रचना बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए—

(क) एक युवा जंगल मुझे,
अपनी हरी उँगलियों से बुलाता है।

उत्तर—मानवीकरण।

(ख) कन्धों पर एक हरा आकाश ठहरा है,
होंठ मेरे एक हरे गान में काँपते हैं।

उत्तर—मानवीकरण।

(ग) न गेंद, न फूल, न दालान
रहेंगे फिर भी शब्द।

उत्तर—अनुप्रास।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए—

आकाश, आँख, पेड़, फूल, जंगल।

उत्तर—दिए गए शब्दों के पर्यायवाची इस प्रकार हैं—

शब्द	—	**पर्यायवाची शब्द**
आकाश	—	अन्तरिक्ष, अम्बर, व्योम, नभ आदि।
आँख	—	दृग, लोचन, चक्षु, अक्षि आदि।
पेड़	—	वृक्ष, विटप, द्रुम, पादप, आदि।
फूल	—	पुष्प, कुसुम, सुमन, पुहुप आदि।
जंगल	—	विपिन, कानन, अरण्य, वन आदि।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

उँगली, होंठ, सदी, पत्ता।

उत्तर—

शब्द	**तत्सम रूप**
उँगली	अंगुष्ठिका
होंठ	ओष्ठ
सदी	शती
पत्ता	पर्ण

❑

13 हल्दीघाटी

(श्यामनारायण पाण्डेय)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'हल्दीघाटी' रचना में कवि ने किस व्यक्ति विशेष के सामर्थ्य पर प्रकाश डाला है?

उत्तर—'हल्दीघाटी' में कवि श्यामनारायण पाण्डेय ने महाराणा प्रताप व उनके घोड़े चेतक के सामर्थ्य व कौशल पर प्रकाश डाला है।

प्रश्न 2. राणा प्रताप के सामर्थ्य किन लोगों को ऊर्जा प्रदान करता है?

उत्तर—राणा प्रताप के युद्ध सामर्थ्य को देखकर उनके सिपाही भी दोगुन-तिगुने सामर्थ्य से युद्ध लड़ते थे।

प्रश्न 3. राणा प्रताप के घोड़े का क्या नाम था?

उत्तर—राणा प्रताप के घोड़े का नाम चेतक है।

प्रश्न 4. ''वह हाथी दल पर टूट पड़ा'' प्रस्तुत पंक्ति से कवि का क्या आशय है?

उत्तर—कवि ने कहा है कि युद्ध मैदान पर राणा प्रताप मृत्यु भय से मुक्त होकर किसी भी शत्रु से दो-दो हाथ करने को तत्पर रहते थे। चाहे हाथियों का दल ही क्यों न हो। वह भयभीत होकर युद्ध मैदान नहीं छोड़ते थे।

प्रश्न 5. प्रस्तुत पंक्तियाँ ''पट गई भूमि नरमुण्डों से'' में कवि के विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—''पट गई भूमि नरमुण्डों से'' से कवि का आशय है कि युद्ध मैदान में, राणा प्रताप की तलवार से घायल होकर घरों पर नरमुण्डों की इतनी संख्या हो गयी है मानो सम्पूर्ण भूमि ही नरमुण्डों की बनी हो।

प्रश्न 6. श्यामनारायण पाण्डेय के लोकप्रिय दो महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर—हल्दी घाटी महाकाव्य—'हल्दीघाटी' हिन्दी का वीर रस का खण्डकाव्य है। यह महाराणा प्रताप व अकबर के मध्य हुए युद्ध पर लिखा गया प्रबंध महाकाव्य है। इसमें प्रताप के शौर्य, त्याग, आत्म-बलिदान, स्वातन्त्र्य-प्रेम एवं जातीय-गौरव भाव को प्रेरक आधार बनाते हुए कवि ने लिखा है।

जौहर महाकाव्य—कवि श्यामनारायण पाण्डेय ने अपना प्रसिद्ध महाकाव्य 'जौहर' चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी के वीरांगना चरित्र को चित्रित करने के उद्देश्य को लेकर ही लिखा है।

प्रश्न 7. श्यामनारायण पाण्डेय का जीवन-परिचय निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर दीजिए–

(क) जन्म-समय, जन्मस्थान, माता-पिता, स्वर्गवास का समय, शिक्षा-दीक्षा।

उत्तर—जन्म-समय—सन् 1907,

जन्म स्थान—डुमराँव, मऊ (उ० प्र०)।

माता-पिता—सन् 1991, 84 वर्ष,

शिक्षा-दीक्षा—काशी विद्यापीठ।

(ख) श्यामनारायण पाण्डेय की कृतियाँ।

उत्तर—श्याम नारायण पाण्डेय की कृत्रियाँ—हल्दी घाटी, शिवाजी, जौहर, तुमुल, भारती, जय-पराजय, रूपान्तर।

प्रश्न 8. 'जौहर' महाकाव्य श्यामनारायण पाण्डेय ने किस उद्देश्य को लेकर लिखा?

उत्तर—'जौहर' महाकाव्य चित्तौड़ को महारानी 'पद्मिनी के वीरांगना चरित्र को चित्रित करने के उद्देश्य से लिखा गया है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. श्री श्यामनारायण पाण्डेय के जीवन-परिचय एवं रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—जीवनी-परिचय—श्यामनारायण पाण्डेय का जन्म श्रावण कृष्ण पंचम सवंत् 1964, तद्नुसार ईसवी सन् 1907 में ग्राम डुमराँव, मऊ (उ० प्र०) में हुआ था। आरम्भिक, शिक्षा के बाद आप संस्कृत अध्ययन के लिए काशी चले गये। यहीं रहकर काशी विद्या पीठ से साहित्याचार्य किया। डुमराँव में अपने घर पर ही सन् 1991 में 84 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया।

रचनाएँ—पाण्डेय जी ने चार उत्कृष्ट महाकाव्य रचे, जिनमें 'हल्दीघाटी' (काव्य) सर्वाधिक लोकप्रिय और 'जौहर' विशेष चर्चित हुए। इसके अतिरिक्त तुमुल, रूपान्तर, आरती, जय-पराजय, गोरा-वध, जय-हनुमान एवं शिवाजी (महाकाव्य) आदि हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्यगत सौन्दर्य स्पष्ट करते हुए इनकी स-सन्दर्भ व्याख्या कीजिए–

(क) मेवाड़-केसरी देख रहा, केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण, वह मान-रक्त का प्यासा था।।
चढ़कर चेतक पर घूम-घूम, करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ-साथ मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के 'काव्य-खण्ड' में संकलित तथा ओजस्वी वाणी के कवि **श्यामनारायण पाण्डेय** द्वारा रचित **'हल्दीघाटी'** शीर्षक से उद्धृत हैं।

[विशेष—*इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।***]**

प्रसंग—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों के माध्यम से कवि श्यामनारायण पाण्डेय जी ने हल्दीघाटी की युद्धभूमि में महाराणा प्रताप द्वारा दिखाए गए रण-कौशल का दृष्टांत वर्णन किया है।

व्याख्या—उक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने बताया है कि हल्दीघाटी के युद्ध में मेवाड़ केसरी अर्थात् राणा प्रताप केवल युद्ध का तमाशा ही नहीं देख रहे थे, यद्यपि वह दौड़-दौड़कर इस प्रकार युद्ध कर रहे थे मानो वह मानसिंह (हल्दीघाटी के युद्ध में मानसिंह शत्रु सेना का नेतृत्व कर रहा था) के रक्त के प्यासे हों अर्थात् राणा प्रताप का रण-कौशल इतना भयानक था कि वह अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए मानसिंह की सेना पर रक्तपिपासु बनकर टूट पड़े थे।

राणा प्रताप अपने घोड़े चेतक पर सवार होकर अपनी सेना की रखवाली करते हुए इस प्रकार युद्ध कर रहे थे जैसे मानो अपने साथ मृत्यु का प्रलयकारी भीषण रूप लिए साक्षात् महाकाल युद्धभूमि में आ धमका हो।

तात्पर्य यह है कि हल्दीघाटी के युद्ध में जब शत्रुसेना का नेतृत्व करता हुआ मानसिंह युद्धभूमि में राणा प्रताप के सामने आया तो राणा प्रताप ने मानसिंह के नेतृत्व में भेजी गयी मुगल सेना में उथल-पुथल मचा दी।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) हल्दीघाटी की युद्धभूमि का दृष्टांत वर्णन हुआ है। **(2) रस**—वीर रस। **(3) शैली**—ओजपूर्ण। **(4) छन्द**—मुक्त, तुकान्त। **(5) अलंकार**—श्लेष, अतिशयोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास **(6) भावसाम्य**—देशभक्त माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी इन पंक्तियों में ऐसा ही भाव व्यक्त किया है—

बलि होने की परवाह नहीं, मैं हूँ कष्टों का राज रहे,
मैं जीता, जीता, जीता हूँ, माता के हाथ स्वराज रहे।

(ख) चढ़ चेतक पर तलवार उठा, रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट, करता था सफल जवानी को।।
सेना-नायक राणा के भी, रण देख देखकर चाह भरे।
मेवाड़ सिपाही लड़ते थे दूने तिगुने उत्साह भरे।।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में राणा प्रताप के युद्ध-कौशल और उनके पराक्रम का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—उक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि कह रहे हैं कि जब राणाप्रताप युद्धभूमि में तलवार उठाकर चेतक पर सवार होकर युद्ध करते थे तो ऐसा प्रतीत होता था मानो वह अपने अन्दर भूतल में स्थित पानी अर्थात् असीम शौर्य को धारण कर रहे हों अर्थात् युद्ध करते हुए राजा के अन्दर असीमित साहस दिखाई पड़ रहा था। वह ऐसा पराक्रमी वीर था जो शत्रुसेना के सिर काट-काटकर अपनी जवानी का वास्तविक परिचय देता था अर्थात् अपनी जवानी के कारण सफलता भी प्राप्त कर रहे थे।

राणा प्रताप की सेना के कुशल सैनिक राणा प्रताप का रणकौशल देख-देखकर और भी उत्साहित होकर युद्ध कर रहे थे। वे राणा प्रताप के पराक्रम को देखकर दोगुने-तिगुने उत्साह के साथ युद्ध कर रहे थे।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि ने देश के गौरवपूर्ण इतिहास का वर्णन किया है। **(2) रस**—वीर रस। **(3) छन्द**—मुक्त, तुकान्त। **(4) अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश, श्लेष, अतिशयोक्ति। **(5) शैली**—ओजपूर्ण। **(6) भावसाम्य**—हिन्दी के महान कवि जयशंकर प्रसाद ने भी अपनी इन पंक्तियों के माध्यम से स्वदेश हित में ऐसे ही भाव व्यक्त किए हैं—

असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ, विकीर्ण दिव्य दाह सी,
सपूत मातृभूमि के, रुको न शूर साहसी,
अराति सैन्य-सिन्धु में, सुवाड़वाग्नि से जलो।
प्रवीर हो जयी बनो, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

(ग) क्षण मार दिया कर कोड़े से, रण किया उतर कर घोड़े से।
राणा रण कौशल दिखा-दिखा, चढ़ गया उतर कर घोड़े से।।
क्षण भीषण हलचल मचा मचा, राणा-कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने का यह रण चण्डी जीभ पसार बढ़ी।।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में राणा प्रताप के रणकौशल का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—हल्दीघाटी की युद्धभूमि में कवि राणा प्रताप के रण कौशल को देखकर चकित है। वह उसके कौशल को देखकर कहता है कि राणा प्रताप इस तरह युद्ध कर रहा था कि कहीं वह शत्रु सेना में हाथ के कोड़े से हमला कर देता तो कहीं घोड़े से उतरकर युद्ध करने लगता था। उसका घोड़े से कहीं उतरकर और कहीं चढ़कर युद्ध करना देखते बनता था।

राणा प्रताप युद्ध स्थल में अपनी तलवार से शत्रुसेना पर जिस ओर हमला कर देता वहीं हाहाकर मच जाता था। शत्रु सेना में इस तरह शोर मच रहा था मानो वहाँ राणा प्रताप नहीं, बल्कि स्वयं महाकाली खड्ग लेकर रक्त पीने के लिए अपनी जीभ पसारकर बढ़ रही हो।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) राणा प्रताप की वीरता का अद्भुत वर्णन हुआ है। **(2) रस**—वीर। **(3) छन्द**—मुक्त, तुकान्त। **(4) शैली**—ओजपूर्ण। **(5) अलंकार**—अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा। **(6) भावसाम्य**—कवि सोहनलाल द्विवेदी जी ने भी स्वतन्त्रता की खातिर ऐसे ही भावों को व्यक्त किया है—

अशेष रक्त तोल दो
स्वतन्त्रता का मोल दो
कड़ी युगों की खोल दो
डरो नहीं, मरो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

(घ) वह हाथी दल पर टूट पड़ा, मानो उस पर पवि छूट पड़ा।
कट गई वेग से भू, ऐसा शोणित का नाला फूट पड़ा।।
जो साहस कर बढ़ता उसको, केवल कटाक्ष से टोक दिया।
जो वीर बना नभ-बीच फेंक, बरछे पर उसको रोक दिया।।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने महाराणा प्रताप के असीम पराक्रम का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि राणा प्रताप शत्रुसेना के हाथीदल पर इस भाँति हमला करता था कि मानो पूर्ण वेग से भाले का वार किया गया हो और उसके वेग से हाथीदल से इस भाँति लहू की धारा फूट पड़ी जैसे भूमि भाले के प्रहार से फट पड़ी हो और उससे जल का वेगपूर्ण नद-सा फूट पड़ा हो।

कवि कहता है कि यदि कोई शत्रु राणा पर वार करने के लिए साहस करके आगे बढ़ता तो वह केवल राणा की तिरछी निगाह के मात्र से ही वहीं का वहीं रुक जाता था और यदि कोई शत्रु सैनिक हमला भी कर देता तो राणा प्रताप उसे नभ के बीचोंबीच हवा में ही अपने भाले से रोक देता था।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) राणा प्रताप की वीरता का अद्‌भुत चित्रण हुआ है। **(2) रस**—वीर। **(3) छन्द**—मुक्त, तुकान्त। **(4) शैली**—ओजपूर्ण। **(5) भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। **(6) अलंकार** —उपमा, अनुप्रास, अतिशयोक्ति। **(6) भावसाम्य**—महाकवि भूषण ने छत्रसाल की वीरता का वर्णन इन पंक्तियों में किया है—

भुज भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी-सी,
खेदि-खेदि खाती दीह दारुन दलन के।

(ङ) क्षण उछल गया अरि घोड़े पर, क्षण लड़ा सो गया घोड़े पर।
बैरी दल से लड़ते-लड़ते, क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर।।
क्षण में गिरते रुण्डों से, मदमस्त गजों के शुण्डों से।
घोड़ों के विकल वितुण्डों से, पट गई भूमि नरमुण्डों से।।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने राणा प्रताप के शौर्य से युद्धभूमि में फैले हाहाकार का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि यदि कोई शत्रु राणा प्रताप पर हमला करने के लिए उठा भी तो वह वहीं धाराशायी हो गया अर्थात् राणा प्रताप द्वारा उसे घोड़े पर ही ढेर कर दिया गया। राणा प्रताप के पराक्रम का बयान करते हुए कवि कहता है कि वह शत्रु सेना से लड़ते-लड़ते कभी-कभी अपने घोड़े पर खड़ा भी हो जाता, इस प्रकार प्रचंड शत्रुओं के विशाल दलों को वह खदेड़-खदेड़ उन पर हमला करता था। राणा प्रताप के हमले से शत्रुओं के धड़ हाथियों की सूँड़ों के समान गिर रहे थे। हाथियों और घोड़ों की भयंकर विकलता के कारण युद्धभूमि नरमुण्डों से पटी हुई दिखाई पड़ रही थी।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि के माध्यम से राणा प्रताप के पराक्रम का बड़ा ही ओजस्वी वर्णन किया गया है। **(5) भाषा**—खड़ीबोली। **(3) रस**—वीर। **(4) अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश, अतिशयोक्ति। **(5) शैली**—ओजपूर्ण। **(6) भावसाम्य**—महाकवि भूषण द्वारा वीर रस का ऐसा ही वर्णन किया गया है—

निकसत म्यान तें मयूखैं प्रलैभानु कैसी,
फारैं तमतोम से गयंदन के जाल को।
लागति लपटि कंठ बैरिन के नागिनी सी,
रुद्रहिं रिझावै दै दै मुंडन के माल को।

(च) ऐसा रण, राणा करता था,
पर उसको था सन्तोष नहीं।
क्षण-क्षण आगे बढ़ता था वह,
पर कम होता था रोष नहीं।।
कहता था लड़ता मान कहाँ,
मैं कर लूँ रक्त-स्नान कहाँ?
जिस पर तय विजय हमारी है,
वह मुगलों का अभिमान कहाँ?

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने राणा प्रताप द्वारा मुगल सेना के छक्के छुड़ाने का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि राणा प्रताप के रण कौशल के बारे में कहता है कि राणा तरह भयानक युद्ध करता था कि वह कहीं रुकने का नाम ही नहीं लेता था। वह युद्धभूमि में जैसे-जैसे आगे बढ़ता था, वैसे-वैसे उसका और भी युद्ध का उत्साह बढ़ता जाता था।

राणा प्रताप कहता था कि युद्धभूमि में मानसिंह (मुगल सेना का नेतृत्व करने वाला) उसका मुकाबला नहीं कर सकते हैं। अर्थात् युद्धभूमि में राणा का मुकाबला करना मानसिंह के बस की बात नहीं है और उसके हाथों राणा का शरीर रक्त रंजित हो, यह कदापि नहीं हो सकता। राणा यह पूर्ण विश्वास के साथ कहता है कि युद्ध में विजय उसकी ही होगी, यह पूर्ण निश्चित है। उसके जीते जी मुगल सेना अभिमान प्रकट करे, यह कदापि नहीं हो सकता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि के द्वारा राणा प्रताप के अप्रतिम शौर्य का बखान किया गया है। **(2) भाषा**—खड़ीबोली। **(3) रस**—वीर। **(3) छन्द**—मुक्त, तुकान्त। **(4) अलंकार**—अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, श्लेष। **(5) शैली**— ओजपूर्ण। **(6) भावसाम्य**—स्वदेश के प्रति कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने ऐसी ही पंक्तियों का उद्‌गार किया है—

बलि होने की परवाह नहीं, मैं हूँ, कष्टों का राज्य रहे,
मैं जीता, जीता, जीता हूँ माता के हाथ स्वराज्य रहे।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

प्रश्न 1. कविता में आए निम्नलिखित मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

तमाशा देखना, रक्त का प्यासा होना, हलचल मचाना।

उत्तर—तमाशा देखना—हल्दीघाटी के युद्ध में मुगल सेना राणा प्रताप के रण-कौशल का **तमाशा देखती रह गयी**।

रक्त का प्यासा होना—राणा प्रताप शत्रु सेना पर इस भाँति टूट पड़ता था मानो वह **रक्त का प्यासा हो**।

हलचल मचाना—हल्दीघाटी के युद्ध में राणा प्रताप अपने घोड़े चेतक पर सवार होकर जिस ओर मुड़ जाता था उसी ओर मुगल सेना में **हलचल मच जाती** थी।

प्रश्न 2. पुस्तक में श्री श्यामनारायण पाण्डेय की दी गई कविता वीर रस से परिपूर्ण है। वीर रस की परिभाषा देते हुए पाठ से दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर—(क) वीर रस की परिभाषा—शत्रु की उन्नति, दीनों पर अत्याचार या धर्म की दुर्गति को मिटाने जैसे किसी विकट या दुष्कर कार्य को करने का जो उत्साह मन में उमड़ता है, वही **वीर रस** का स्थायी भाव है, जिसकी पुष्टि होने पर वीर रस की सिद्धि होती है।

(ख) वीर रस के अव्यय—स्थायी भाव—उत्साह।

आलम्बन (विभाव)—अत्याचारी शत्रु।

उद्दीपन (विभाव)—शत्रु का अहंकार रणवाद्य, यश की इच्छा आदि।

अनुभाव—गर्वपूर्ण उक्ति, प्रहार करना, रोमांच आदि।

संचारी भाव—आवेग, उग्रता, गर्व, औत्सुक्य, चपलता आदि।

उदाहरण—

वह हाथी दल पर टूट पड़ा, मानो उस पर पवि छूट पड़ा।
कट गई वेग से भू, ऐसा शोणित का नाला फूट पड़ा।।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम सहित स्पष्टीकरण कीजिए–

(क) कट गई वेग से भू, ऐसा शोणित का नाला फूट पड़ा।

(ख) घोड़ों के विकल वितुण्डों से, पट गई भूमि नरमुण्डों से।

उत्तर—(क) अतिशयोक्ति, उपमा अलंकार।

(ख) अतिशयोक्ति, अनुप्रास अलंकार।

प्रश्न 4. 'हल्दीघाटी' कविता का सौन्दर्य कवि की ओजपूर्ण शैली में प्रस्फुटित हुआ है। कविता से उदाहरण देते हुए कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—ओजपूर्ण शैली के निम्नलिखित उदाहरण हैं—

(क) मेवाड़-केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण,
वह मान-रक्त का प्यासा था।

(ख) कहता था लड़ता मान कहाँ,
मैं कर लूँ रक्त-स्नान कहाँ?
जिस पर तय विजय हमारी है,
वह मुगलों का अभिमान कहाँ?

❑

1

संस्कृत

वाराणसी (बनारस)

अभ्यास प्रश्न

पाठाधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए-

(क) वाराणसी नगरी कुत्र स्थिता अस्ति?

उत्तर—वाराणसी गङ्गायाः नद्याः कूले स्थिता अस्ति।

(ख) कुत्र मरणं मङ्गलं भवति?

उत्तर—वाराणस्यां मरणं मङ्गलं भवति।

(ग) वाराणस्यां कति विश्वविद्यालयः सन्ति?

उत्तर—वाराणस्यां त्रयः विश्वविद्यालयः सन्ति।

(घ) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः कस्यां नगर्यां विद्यते?

उत्तर—सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः वाराणस्यां नगर्यां विद्यते।

(ङ) वाराणसी नगरी केषां सङ्गमस्थली अस्ति?

अथवा, वाराणासी कस्य संगमस्थली अस्ति?

उत्तर—वाराणसी नगरी विविधधर्माणां सङ्गमस्थली अस्ति।

(च) वाराणसी नगरी केषां कृते लोके विश्रुता अस्ति?

उत्तर—वाराणसी नगरी विद्याकलानां सस्कृतभाषायाः, संस्कृतेश्च विश्रुता अस्ति।

(छ) दाराशिकोहेन उपनिषदाम् अनुवादः कस्यां भाषायां कारितः?

उत्तर—दाराशिकोहेन उपनिषदाम् अनुवादः पारसी भाषायां कारयत्।

(ज) वाराणस्याः कानि वस्तूनि प्रसिद्धानि सन्ति?

उत्तर—वाराणस्याः कला-शिल्प-कौशेयशाटिकाः प्रस्तरमूर्तयः च प्रसिद्धानि सन्ति।

(झ) वाराणस्यां गेहे-गेहे किं द्योतते?

उत्तर—वाराणस्यां गेहे-गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योति द्योतते।

(ञ) दाराशिकोहः कुत्र गत्वा भारतीय-शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत?

उत्तर—दाराशिकोहः वाराणस्यां गत्वा भारतीय-शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत्।

(ट) संस्कृतविश्वविद्यालयः कस्यां नगर्यां विद्यते?

उत्तर—संस्कृतविश्वविद्यालयः वाराणसी नगर्यां विद्यते।

(ठ) वाराणसी किमर्थं प्रसिद्धा?

उत्तर—वाराणसी विद्या-दर्शन-साहित्य-धर्म-कला-शिल्पार्थ प्रसिद्धा अस्ति।

(ड) वैदेशिकाः किमर्थं वाराणसीम् आगच्छन्ति?

उत्तर—वैदेशिकाः संस्कृतस्य अध्ययनाय वाराणसीम् आगच्छन्ति।

अनुवाद-आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

(क) वाराणसी सुविख्याता प्राचीना नगरी। इयं विमलसलिलतरङ्गायाः गङ्गायाः कूले स्थिता। अस्याः घट्टानां वलयाकृतिः पङ्क्तिः धवलायां चन्द्रिकायां बहु राजते। अगणिताः पर्यटकाः सुदूरेभ्यः नित्यम् अत्र आयान्ति, अस्याः घट्टानाञ्च शोभां विलोक्य इमां बहु प्रशंसन्ति।

[**शब्दार्थ—सुविख्याता** = सुप्रसिद्ध। **विमलसलिलतरङ्गायाः** = निर्मल जल की लहरों वाली। **कूले** = किनारे पर। **घट्टानाम्** = घाटों की। **वलयाकृतिः** = घुमावदार आकृति वाली।]

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**वाराणसी**' नामक पाठ लिया गया है। इसमें वाराणसी नगर की शोभा का वर्णन किया गया है।

अनुवाद—वाराणसी अत्यधिक विख्यात प्राचीन नगरी है। यह स्वच्छ जल की तरंगों वाली गंगा के किनारे स्थित है। इसके घाटों की घुमावदार आकृति वाली पंक्ति श्वेत चाँदनी में बहुत सुन्दर लगती है। दूर-दूर के देशों से असंख्य पर्यटक यहाँ नित्य प्रति आते हैं और इसके घाटों की शोभा को देखकर इसकी बहुत प्रशंसा करते हैं।

(ख) वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेहे गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योतिः द्योतते। अधुनाऽपि अत्र संस्कृतवाग्धारा सततं प्रवहति, जनानां ज्ञानञ्च वर्द्धयति। अत्र अनेके आचार्याः मूर्धन्याः विद्वांसः वैदिकवाङ्मयस्य अध्ययने अध्यापने च इदानीं निरताः। न केवलं भारतीयाः, अपितु वैदेशिकाः गीर्वाणवाण्याः अध्ययनाय अत्र आगच्छन्ति, निःशुल्कं च विद्यां गृहणन्ति। अत्र हिन्दूविश्वविद्यालयः, संस्कृतविश्वविद्यालयः, काशीविद्यापीठम् इत्येते त्रयः विश्वविद्यालयाः सन्ति, येषु नवीनानां प्राचीनानाञ्च ज्ञानविज्ञानविषयाणाम् अध्ययनं प्रचलति।

[**शब्दार्थ—निरताः** = लगे हुए हैं। **गीर्वाणवाण्याः** = देववाणी-संस्कृत के। **अध्ययनं प्रचलति** = अध्ययन चलता रहता है।]

सन्दर्भ-प्रसंग—पूर्ववत्।

अनुवाद—वाराणसी में प्राचीन काल से ही घर-घर में विद्या की अलौकिक ज्योति प्रकाशित है। अब भी यहाँ संस्कृत-वाणी की धारा निरन्तर बह रही है और लोगों के ज्ञान को बढ़ा रही है। इस समय यहाँ अनेक आचार्य, उच्चकोटि के विद्वान् वैदिक-साहित्य के अध्ययन-अध्यापन में लगे हुए हैं। न केवल भारतीय, अपितु विदेशी भी देववाणी-संस्कृत के अध्ययन के लिए यहाँ आते हैं और निःशुल्क विद्या ग्रहण करते हैं। यहाँ हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ—ये तीन विश्वविद्यालय हैं, जिनमें नवीन और प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के विषयों का अध्ययन चलता रहता है।

(ग) एषा नगरी भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतभाषायाश्च केन्द्रस्थलम् अस्ति। इत एव संस्कृतवाङ्मयस्य संस्कृतेश्च आलोकः सर्वत्र प्रसृतः। मुगलयुवराजः दाराशिकोहः अत्रागत्य भारतीय-दर्शन-शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत्। स तेषां ज्ञानेन तथा प्रभावितः अभवत्, यत् तेन उपनिषदाम् अनुवादः पारसीभाषायां कारितः।

[**शब्दार्थ—संस्कृतेश्च** = संस्कृति का। **प्रसृतः** फैला है। **कारितः** = कराया।]

सन्दर्भ-प्रसंग—पूर्ववत्।

अनुवाद—यह नगरी भारतीय संस्कृति और संस्कृत-भाषा का केन्द्र-स्थल है। यहीं से संस्कृत-साहित्य और संस्कृत का प्रकाश सर्वत्र फैला है। मुगल युवराज दाराशिकोह ने यहाँ आकर भारतीय दर्शनशास्त्रों का अध्ययन किया था। वह उनके ज्ञान से ऐसा प्रभावित हुआ कि उसने उपनिषदों का अनुवाद फारसी भाषा में कराया।

(घ) इयं नगरी विविधधर्माणां सङ्गमस्थली। महात्मा बुद्धः, तीर्थङ्करः पार्श्वनाथः, शङ्कराचार्यः, कबीरः, गोस्वामी तुलसीदासः अन्ये च बहवः महात्मानः अत्रागत्य स्वीयान् विचारान् प्रासारयन्। न केवलं दर्शने, साहित्ये, धर्मे, अपितु कलाक्षेत्रेऽपि इयं नगरी विविधानां कलानां, शिल्पानाञ्च कृते लोके विश्रुता। अत्रत्याः कौशेयशाटिकाः देशे देशे सर्वत्र स्पृह्यन्ते।

अत्रत्याः प्रस्तरमूर्तयः प्रथिताः। इयं निजां प्राचीनपरम्पराम् इदानीमपि परिपालयति-तथैव गीयते कविभिः-

***अथवा* इयं नगरी.....लोके विश्रुता।**

[**शब्दार्थ—स्वीयान् विचारान् प्रासारयन्** = अपने विचारों का प्रसार किया। **शिल्पानाम्** = शिल्पों के। **कृते** = लिए। **विश्रुता** = प्रसिद्ध है। **कौशेयशाटिकाः** = रेशमी साड़ी। **स्पृह्यन्ते** = चाही जाती हैं। **अत्रत्याः** = यहाँ की। **प्रस्तरमूर्तयः** = पत्थर की मूर्तियाँ। **प्रथिताः** = प्रसिद्ध हैं।]

सन्दर्भ-प्रसंग—पूर्ववत्।

अनुवाद—यह नगरी विविध धर्मों के मिलन का स्थान रही है। महात्मा बुद्ध, तीर्थंकर पार्श्वनाथ, शंकराचार्य, कबीर, गोस्वामी तुलसीदास और दूसरे बहुत-से महात्माओं ने यहाँ आकर अपने विचारों को फैलाया, अर्थात् अपने विचारों का प्रसार किया। केवल दर्शन, साहित्य और धर्म में ही नहीं, अपितु कला के क्षेत्र में भी यह नगरी विविध कलाओं और शिल्पों के लिए संसार में प्रसिद्ध है। यहाँ की रेशमी साड़ियाँ देश-विदेश में सभी जगह पसन्द की जाती हैं। यहाँ की पत्थर की मूर्तियाँ प्रसिद्ध हैं। यह अपनी प्राचीन परम्परा का इस समय भी पालन कर रही है। उसी प्रकार कवियों के द्वारा गाया जाता है—

(ङ) मङ्गलं मरणं यत्र विभूतिश्च विभूषणम्।
कौपीनं यत्र कौशेयं सा काशी केनोपमायते॥

[**शब्दार्थ—मीयते** = मापी जा सकती है।]

सन्दर्भ-प्रसंग—पूर्ववत्।

अनुवाद—जहाँ मरना कल्याणकारी है, यहाँ भस्म ही आभूषण है और जहाँ लँगोट (ही) रेशमी वस्त्र है, वह काशी किसके द्वारा मापी जा सकती है? (अर्थात् इसकी तुलना किससे की जा सकती है?)

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए-

(क) वाराणसी गंगा के किनारे स्थित है।

उत्तर—वाराणसी गङ्गायाः कूले स्थिता।

(ख) दूर देशों से यात्री यहाँ आते हैं।

उत्तर—यात्रीः सुदूरेभ्यः देशेभ्यः अत्र आगच्छन्ति।

(ग) राधा भोजन पकायेगी।

उत्तर—राधा भोजनं पक्ष्यति।

(घ) तुम अब मत खेलो।

उत्तर—त्वं इदानी मा क्रीडसी।

(ङ) कालिदास संस्कृत के महाकवि थे।

उत्तर—कालिदासः संस्कृतः महाकविः अस्ति।

(च) वाराणसी गंगा के पावन तट पर स्थित है।

उत्तर—वाराणसी गङ्गायाः पावन तटे स्थिता।

(छ) अनेक पर्यटक दूर देशों से यहाँ आते हैं।

उत्तर—अनेके पर्यटकाः सुदूरेभ्यः देशेभ्यः अत्र आगच्छन्ति।

(ज) वाराणसी में संस्कृत-अध्ययन के लिए बहुत सुविधाएँ हैं।

उत्तर—वाराणस्यां संस्कृताध्ययनाय बहवः सुविधाः सन्ति।

व्याकरण एवं भाषा-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित धातु-रूपों में धातु, लकार, वचन तथा पुरुष स्पष्ट कीजिए-

	धातु	लकार	वचन	पुरुष
आयान्ति	'आ' उपसर्ग + या	लट्	बहुवचन	प्रथम पुरुष
वर्द्धयति	वृध्	लट्	एकवचन	प्रथम पुरुष
गृहणन्ति	गृह्	लट्	बहुवचन	प्रथम पुरुष
अकरोत्	कृ	लङ्	एकवचन	प्रथम पुरुष
परिपालयति	पाल	लट्	एकवचन	प्रथम पुरुष
स्पृह्यन्ते	स्पृह्	लट्	बहुवचन	प्रथम पुरुष

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों में मोटे छपे शब्दों की विभक्ति और उनके प्रयोग का कारण स्पष्ट कीजिए-

(क) अगणिताः पर्यटकाः सुदूरेभ्यः देशेभ्यः नित्यम् अत्र आयान्ति।

उत्तर—पर्यटक अपने देशों से अलग होकर आते हैं। अलग होने के अर्थ में पञ्चमी विभक्ति होती है।

(ख) वैदेशिकाः गीर्वाणवाण्याः अध्ययनाय अत्र आगच्छन्ति।

उत्तर—'हेतु' के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है।

(ग) धर्मे, अपितु कलाक्षेत्रेऽपि इयं नगरी विविधानां कलानां कृते लोके विश्रुता।

उत्तर—कर्म कारक में द्वितीय विभक्ति होती है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों का सरल संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

ज्ञानेन, गङ्गायाः, अध्ययनाय, कूले, देशेभ्यः, विचारान्।

उत्तर—(क) जनानां **ज्ञानेन** च वर्द्धयति।

(ख) वाराणसी **गङ्गायाः** तटे स्थिता अस्ति।

(ग) वैदेशिकाः संस्कृतस्य **अध्ययनाय** वाराणसीम् आगच्छन्ति।

(घ) वाराणसी नगरी गङ्गायाः **कूले** स्थिता।

(ङ) अनेकाः पर्यटकाः सुदूरेभ्यः **देशेभ्यः** अत्र आगच्छति।

(च) महात्मानः अत्रागत्य स्वीयान् **विचारान्** प्रासारयन्।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति तथा वचन लिखिए-

उत्तर—

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
गङ्गायाः	षष्ठी	एकवचन
कूले	सप्तमी	एकवचन
धवलायां	सप्तमी	एकवचन
घट्टानां	षष्ठी	बहुवचन
लोके	सप्तमी	एकवचन
कलानां	षष्ठी	बहुवचन
क्षेत्रे	सप्तमी	एकवचन
देशे	सप्तमी	एकवचन

प्रश्न 5. सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम बताइए—

विभूतिश्च, अधुनाऽपि, भाषायाश्च, वलयाकृतिः, अत्रागत्य।

उत्तर—

शब्द	सन्धि विच्छेद	नाम
विभूतिश्च	विभूतिः + च	विसर्ग
अधुनाऽपि	अधुना + अपि	पूर्वरूप
भाषायाश्च	भाषायाः + च	विसर्ग
वलयाकृतिः	वलय + आकृतिः	दीर्घ
अत्रागत्य	अत्र + आगत्य	दीर्घ

❑

2 अन्योक्तिविलासः
(अन्योक्तियों का सौन्दर्य)

अभ्यास प्रश्न

पाठाधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए-

(क) सुवर्णस्य मुख्य दुःखं किम् अस्ति?

उत्तर—जनाः सुवर्णं गुञ्जया सहं तोलयन्ति इति तस्य मुख्यदुःखम्।

(ख) कूपः किमर्थं दुःखम् अनुभवति?

उत्तर—कूपः नितरां नीचः अस्ति; अतः सः दुःखम् अनुभवति।

(ग) कोशगतः भ्रमरः किम् अचिन्तयत्?

उत्तर—कोशगतः भ्रमरः अचिन्तयत् 'रात्रिः गमिष्यति, सुप्रभातं भविष्यति, सूर्यम् उदेष्यति: कमलं विकसिष्यति।'

(घ) भ्रमरे चिन्तयति गजः किम् अकरोत्?

उत्तर—भ्रमरे चिन्तयति गजः नलिनीम् उज्जहार।

(ङ) अत्यन्त सरस हृदयो यतः किं ग्रहीतासि?

उत्तर—अत्यन्त सरस हृदयो यतः परेषां गुणं गृहीतासि।

(च) नीर-क्षीर-विषये हंसस्य का विशेषताः अस्ति?

उत्तर—नीर-क्षीर-विषये नीर-क्षीर-विवेकम् एव हंसस्य विशेषताः अस्ति।

(छ) कविः कोकिलं किं बोधयति?

उत्तर—कविः कोकिलं कथयति यत् वसन्तकालं कोऽपि रसालः न समुल्लसति तावत् करीलविटपेषु एव सन्तोषं कर्त्तव्यम्।

(ज) कविः चातकं किम् उपदिशति/शिक्षयति?

उत्तर—कविः चातकम् उपदिशति यत् सः सर्वेषां पुरतः दीनं वचः न ब्रूयात्।

(झ) गजः काम् उज्जहार?

उत्तर—गजः नलिनीं उज्जहार।

(ञ) कविः हंस किं बोधयति?

उत्तर—कविः हंस नीर-क्षीर-विभागे आलस्यं न कर्तुं इति बोधयति।

(ट) हंसस्य किं कुलव्रतम् अस्ति?

उत्तर—हंसस्य कुलव्रतं नीर-क्षीर-विवेकम् अस्ति।

अनुवाद-आधारित प्रश्न

प्रश्न 2. निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) नितरां नीचोऽस्मीति त्वं खेदं कूप! कदापि मा कृथाः।
अत्यन्तसरसहृदयो यतः परेषां गुणग्रहीतासि।।

[**शब्दार्थ**—**नितरां** = अत्यधिक। **मा कृथाः** = मत करो। **गुणग्रहीता** = (1) गुणों को ग्रहण करने वाला; (2) रस्सियों को ग्रहण करने वाला।]

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक के '**संस्कृत परिचायिका**' में संकलित **अन्योक्तिविलासः** नामक पाठ से लिया गया है।

प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में अपने अवगुणों पर दुःखी न होने तथा दूसरे के गुणों को ग्रहण करने को श्रेष्ठ बताया गया है।

अनुवाद—हे कुएँ! "(मैं) अत्यधिक नीच (गहरा) हूँ"—तुम इस प्रकार कभी भी खेद मत करो; क्योंकि (तुम) अत्यन्त सरस-हृदय (जल से पूर्ण) हो (और) दूसरों के गुणों (रस्सियों) को ग्रहण करने वाले हो।

(ख) नीर-क्षीर-विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत्।
विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः।।

[**शब्दार्थ**—**तनुषे** = बढ़ाते हो; करते हो। **कुलव्रतम्** = कुल के व्रत को। **पालयिष्यति** = पालन करेगा।

सन्दर्भ-पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में अपने कुलधर्म व कर्तव्यपालन की शिक्षा दी गई है।

अनुवाद—हे हंस! यदि तुम ही नीर और क्षीर का विवेक करने में आलस्य करोगे तो इस संसार में ऐसा कौन है, जो अपने कुलव्रत का पालन करेगा?

(ग) कोकिल! यापय दिवसान् तावद् विरसान् करीलविटपेषु।
यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति।।

[**शब्दार्थ**—**यापय** = बिताओ (व्यतीत करो)। **दिवसान्** = दिन को। **विरसान्** = नीरस। **करीलविटपेषु** = करील के वृक्षों पर। **अलिमाल :** = भौंरे। **रसाल** = आम। **समुल्लसति** = सुशोभित होता है।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में बुरे दिनों में भी धैर्य रखने की प्रेरणा दी गई है।

अनुवाद—हे कोयल! जब तक कोई आम का पेड़ मौलों से युक्त होकर लहराने नहीं लगता, तब तक तुम अपने नीरस दिनों को किसी भी प्रकार से करील के वृक्षों पर ही बिताओ अर्थात् जब तक अच्छे दिन नहीं आते हैं, तब तक बुरे दिनों को किसी-न-किसी प्रकार से व्यतीत कर लेना चाहिए।

(घ) रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र! क्षणं श्रूयताम्।
अम्भोदा हि सन्ति वसन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा।
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः॥

[**शब्दार्थ—अम्भोदा** = बादल। **नैतादृशाः** = ऐसे नहीं हैं। **आर्द्रयन्ति** = गीला कर देते हैं।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में चातक के माध्यम से यह बताया गया है कि हमें किसी के सामने दीन वचन बोलकर याचना नहीं करनी चाहिए।

अनुवाद—हे मित्र चातक! सावधान मन से क्षणभर सुनो। आकाश में अनेक बादल रहते हैं, पर सभी ऐसे (उदार) नहीं होते। कुछ तो वर्षा से पृथ्वी को गीला कर देते हैं, (पर) कुछ व्यर्थ ही गरजते हैं। (अतः तुम) जिस-जिस-को देखते हो उस-उसके सामने दीन वचन मत बोलो (अर्थात् प्रत्येक से माँगना उचित नहीं; क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति दानी नहीं होता)।

(ङ) न वै ताडनात् तापनाद् वह्निमध्ये।
न वै विक्रयात् क्लिश्यमानोऽहमस्मि॥
सुवर्णस्य मे मुख्यदुःखं तदेवं।
यतो मां जना गुञ्जया तोलयन्ति॥

[**शब्दार्थ—वह्निमध्ये** = आग के बीच। **विक्रयात्** = बेचने से। **क्लिश्यमानः** = दुःखी। **गुञ्जया** = गुंजा के दाने (फल) के साथ, घुँघुची बेल का दाना जिसकी माप एक रत्ती के बराबर होती है। **तोलयन्ति** = तौलते हैं।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में स्वर्ण के माध्यम से गुणवान और स्वाभिमानी व्यक्ति के मन की व्यथा को व्यक्त किया गया है।

अनुवाद—मैं (स्वर्ण) न तो पीटे जाने से, न अग्नि में तपाए जाने से और न बेचे जाने से दुःखी होता हूँ। मुझ सुवर्ण का एक ही दुःख है कि लोग मुझको रत्ती (घुँघुची) से तोलते हैं। (अर्थात् मेरी कितनी ही कठिन परीक्षा ली जाए, उसमें दुःख नहीं; किन्तु तुच्छ से मेरी तुलना की जाए, यही दुःख है।)

(च) रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं।
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजालिः॥
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे।
हा हन्त! हन्त! नलिनीं गज उज्जहार॥

[**शब्दार्थ—भास्वान्** = सूर्य। **उदेष्यति** = उदय होगा। **पङ्कजालिः** = कमलों की पंक्ति। **इत्थम्** = इस प्रकार। **विचिन्तयति** = विचार करने पर; विचारमग्न होने पर। **कोशगते द्विरेफे** = कली के अन्दर बैठे भौंरे के। **हा हन्त हन्त** = दुःख का विषय है कि।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में कमलिनी में बन्द भौंरें के माध्यम से जीवन की क्षणभंगुरता को बताया गया है।

अनुवाद—कमल का रसपान करता हुआ कोई भौंरा सायंकाल में उसमें बन्द हो जाने पर सोचता है कि रात बीत जाएगी, सुन्दर प्रातःकाल होगा, सूर्य उदय होगा, कमलों का समूह खिलेगा। कमल पुट में बैठे हुए भौंरे के ऐसा सोचते हुए ही, हाय बहुत दुःख है कि हाथी ने उसी कमलिनी को उखाड़ लिया।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) कौए ने कहा-मैं अधम हूँ।
उत्तर—कौएः अकथयत् "अहं अधमः अस्मि इति।"
(ख) हे मनुष्य! सबके सामने वचन मत कहो।
उत्तर—रे मनुष्य! सर्वेषां समक्षे वचः मा ब्रूहि।
(ग) अब तुम्हें अध्ययन करना चाहिए।
उत्तर—इदानी त्वं अध्ययनं कुर्युः।
(घ) अपना कर्तव्य शीघ्र करो।
उत्तर—स्व कर्त्तव्यं शीघ्र कुरु।
(ङ) सत्य की जीत होती है।
उत्तर—सत्येन जीतः भवति।
(च) हे चातक! क्षण भर सुनो।
उत्तर—रे रे चातक! क्षणं श्रूयताम्।
(छ) मैं प्रतिदिन स्नान करता हूँ।
उत्तर—अहम् प्रतिदिनम् स्नानं कुर्यामि।
(ज) हम दोनों को आज विद्यालय जाना चाहिए।
उत्तर—आवाम् विद्यालयम् गच्छेव।

व्याकरण एवं भाषा-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित के दो-दो पर्यायवाची लिखिए—

दूध, आम, पृथ्वी, अग्नि, आकाश, कमल, रात्रि तथा भानु।

उत्तर—

शब्द	पर्यायवाची
दूध	पयः, दुग्धः
आम	आम्रः, रसाल
पृथ्वी	वसुन्धराः, वसुधाः
अग्नि	हुताशनः, अनलः
आकाश	अम्बरः, नभः
कमल	शतदलः, पुण्डरीकः
रात्रि	रजनीः, यामिनीः
भानु	भास्करः, दिनेशः

प्रश्न 2. निम्नलिखित में सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए—

अस्मीति, कदापि, अत्यन्त, अधुनान्यः, नैतादृशाः, तदेकम्, कोऽपि, ग्रहीतासि, हंसालस्यं।

उत्तर—

शब्द	सन्धि-विच्छेद			नियम
अस्मीति	अस्मि	+	इति	गुण
कदापि	कदा	+	अपि	दीर्घ
अत्यन्त	अति	+	अन्तः	यण्
अधुनान्यः	अधुना	+	अन्यः	दीर्घ
नैतादृशाः	न	+	एतादृशाः	वृद्धि
तदेकम्	तत्	+	एकम्	यण्
कोऽपि	कः	+	अपि	विसर्ग, पूर्वरूप
ग्रहीतासि	ग्रहीत	+	असि	दीर्घ
हंसालस्यं	हंस	+	आलस्यं	दीर्घ

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति एवं वचन का निर्देश कीजिए—

परेषां, मनसा, वसुधां, गुञ्जया, विक्रयात्, विटपेषु, रसालः, वृष्टिभिः।

उत्तर—

शब्द	विभक्ति	वचन
परेषां	षष्ठी	एकवचन
मनसा	तृतीया	एकवचन
वसुधां	सप्तमी	एकवचन
गुञ्जया	तृतीया	एकवचन
विटपेषु	सप्तमी	बहुवचन
रसालः	प्रथमा	एकवचन
वृष्टिभिः	तृतीया	बहुवचन

❑

3 वीरः वीरेण पूज्यते
(वीर के द्वारा वीर पूजा जाता है)

अभ्यास प्रश्न

पाठाधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए-

(क) पुरुराजः केन सह युद्धम् अकरोत्?

उत्तर—पुरुराजः अलक्षेन्द्रेण सह युद्धम् अकरोत्।

(ख) अलक्षेन्द्रः कः आसीत्?

उत्तर—अलक्षेन्द्रः यवनराजः आसीत्।

(ग) पुरुराजः कः आसीत्?

उत्तर—पुरुराजः एकः भारतवीरः आसीत्।

(घ) अलक्षेन्द्रः पुरुराजस्य केन भावेन हर्षितः अभवत्?

उत्तर—अलक्षेन्द्रः पुरुराजस्य वीर भावेन हर्षितः अभवत्।

(ङ) भारतविजयः न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि, कस्यः उक्तिः?

उत्तर—भारतविजयः न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि' इति पुरुराजस्य उक्तिः।

(च) गीतायाः कः सन्देशः?

उत्तर—निष्काम कर्म करणं एवं गीतायाः सन्देशः अस्ति।

(छ) पुरुराजः गीतायाः कं सन्देशम् अकथयत्?

उत्तर—गीतायाः सन्देशः अस्ति (देश) हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा भोक्ष्यसे महीम्।

(ज) वीरः केन पूज्यते?

उत्तर—वीरः वीरेण पूज्यते।

(झ) अलक्षेन्द्रः सेनापतिं किम् आदिशत्?

उत्तर—अलक्षेन्द्रः सेनापतिम् आदिशत् यत् ''वीरस्य पुरुराजस्य बन्धनानि मोचय।''

अनुवाद-आधारित प्रश्न

प्रश्न 2. निम्नलिखित नाट्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) बन्धनं मरणं वापि जयो वापि पराजयः।
उभयत्र समो वीरः वीरभावो हि वीरता॥

[**शब्दार्थ—जयो** = विजय। **उभयत्र** = दोनों जगह।]

सन्दर्भ—प्रस्तुत नाट्य खण्ड हमारी पाठ्यपुस्तक के '**संस्कृत परिचायिका**' खण्ड में संकलित '**वीरः वीरेण पूज्यते**' नामक पाठ से लिया गया है।

प्रसंग—इस नाट्यांश में सिकन्दर और पुरुराज की वार्ता द्वारा वीरता को परिभाषित किया गया है।

अनुवाद—बन्धन हो या मृत्यु, जय हो या पराजय, वीर पुरुष दोनों ही स्थितियों में समान रहता है, वीरों के भाव को ही 'वीरता' कहते हैं।

(ख) उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

[**शब्दार्थ—हिमाद्रे** = हिमालय। **यत्र** = जहाँ। **सन्ततिः** = सन्तान।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इस अंश में पुरुराज ने भारतवर्ष की एकता और अखण्डता पर प्रकाश डाला है।

अनुवाद—जो समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में स्थित है, वह भारत नाम का देश है, जहाँ की सन्तान भारतीय है।

(ग) अलक्षेन्द्रः—(किमपि विचिन्त्य) अलं तव गीतया। पुरुराज। त्वम् अस्माकं बन्दी वर्तसे। ब्रूहि कथं त्वयि वर्तितव्यम्।

पुरुराजः—यथैकेन वीरेण वीरं प्रति।

अलक्षेन्द्रः—(पुरोः वीरभावेन हर्षितः) साधु वीर! साधु! नूनं वीरः असि। धन्यः त्वं, धन्या ते मातृभूमिः! (सेनापतिम् उद्दिश्य) सेनापते!

सेनापतिः—सम्राट्।

अलक्षेन्द्रः—वीरस्य पुरुराजस्य बन्धानानि मोचय।

[**शब्दार्थ—वर्तितव्यम** = व्यवहार करना चाहिए। **साधु** = धन्य है। **मोचय** = खोल दो।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इस नाट्यांश में सन्देश दिया गया है कि शत्रुता होने पर भी एक वीर को दूसरे वीर के साथ वीरोचित व्यवहार ही करना चाहिए।

अनुवाद—सिकन्दर—*(कुछ विचारकर)* बस, रहने दो अपनी गीता को। पुरुराज! तुम हमारे कैदी हो। बताओ, तुमसे कैसा व्यवहार किया जाए?

पुरुराज—जैसा एक वीर दूसरे वीर के साथ करता है।

सिकन्दर—*(पुरु की वीरता से हर्षित होकर)* धन्य वीर! धन्य! वास्तव में तुम वीर हो! तुम धन्य हो! तुम्हारी मातृभूमि धन्य है। *(सेनापति को लक्ष्य करके)* सेनापति!

सेनापति—सम्राट!

सिकन्दर—वीर पुरुराज के बन्धन खोल दो।

(घ) हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः॥

[**शब्दार्थ—हतो** = मारे जाने पर। **प्राप्स्यसि** = प्राप्त करोगे। **जित्वा** = जीतकर। **भोक्ष्यसे** = भोगोगे। **निराशीर्निर्ममो** = बिना किसी इच्छा और मोह के। **युध्यस्व** = युद्ध करो। **विगतज्वर** = सन्तापरहित होकर।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रंसग—इस अंश में पुरुराज की निर्भीकता और उसके द्वारा सिकन्दर को दिए गीता के ज्ञान का वर्णन है।

अनुवाद—यदि तुम मर गए तो स्वर्ग को प्राप्त करोगे, इसीलिए इच्छा, मोह और सन्तापरहित होकर युद्ध करो।

(ङ) अलक्षेन्द्रः—अथ मे भारतविजयः दुष्करः।

पुरुराजः—न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि।

अलक्षेन्द्रः—(सरोषम्) दुर्विनीत, किं न जानासि, इदानीं विश्वविजयिनः अलक्षेन्द्रस्य अग्रे वर्तसे?

पुरुराजः—जानामि, किन्तु सत्यं तु सत्यम् एव यवनराज! भारतीयाः वयं गीतायाः सन्देशं न विस्मरामः।

अलक्षेन्द्रः—कस्तावत् गीतायाः सन्देशः?

पुरुराजः—श्रूयताम्।

[**शब्दार्थ—दुष्कर :** = कठिन है। **सरोषम्** = क्रोध सहित। **दुर्विनीत** = दुष्ट। **नविस्मराम :** = नहीं भूलते हैं।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इस नाट्यांश में सन्देश दिया गया है कि शत्रुता होने पर भी एक वीर को दूसरे वीर के साथ वीरोचित व्यवहार ही करना चाहिए।

अनुवाद—सिकन्दर—तो मेरा भारत पर विजय प्राप्त करना कठिन है?

पुरुराज—केवल कठिन ही नहीं; असम्भव भी है।

सिकन्दर—(*क्रोधसहित*) दुष्ट! क्या तू नहीं जानता कि इस समय तू विश्वविजेता सिकन्दर के सामने (खड़ा) है?

पुरुराज—जानता हूँ, किन्तु सत्य तो सत्य ही है, यवनराज! हम भारतवासी गीता के सन्देश को नहीं भूलते हैं।

सिकन्दर—तो क्या है, तुम्हारी गीता का सन्देश?

पुरुराज—सुनो।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) भारत एक राष्ट्र है।

उत्तर—भारत एकं राष्ट्रम इति।

(ख) वीर पुरुराज के बन्धन खोल दो।

उत्तर—वीर पुरुराजस्य बन्धनाति मोचय।

(ग) यह वाचाल मारने योग्य है।

उत्तर—वाचाल एष हन्तव्यः!

(घ) अपने राष्ट्र की रक्षा करना हमारा धर्म है।

उत्तर—स्व राष्ट्र-रक्षणम् अस्माकं धर्मः अस्ति।

(ङ) हमें अपने राष्ट्रधर्म का पालन करना चाहिये।

उत्तर—वयं स्व राष्ट्रधर्म कुर्याम।

(च) तुम्हारे प्रति कैसा व्यवहार किया जाना चाहिये।

उत्तर—त्वया सह कीदृशः व्यवहारः करणीय?

(छ) एक विद्वान् दूसरे विद्वान का सम्मान करता है।

उत्तर—एकः विद्वानः अपरस्य विद्वानस्य सम्मानं करोति।

(ज) हम सब भारतीय हैं।

उत्तर—वयं सर्वे भारतीयाः सन्ति।

(झ) पुरुराज राष्ट्रभक्त वीर थे।

उत्तर—पुरुराजः राष्ट्रभक्तः वीरः आसीत्।

(ञ) बालक घर के अन्दर है।

उत्तर—बालकः गृहे अस्ति।

व्याकरण एवं भाषा-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय का निर्देशन कीजिए—

कृत्वा, लब्ध्वा, गृहीत्वा, गत्वा, हत्वा।

उत्तर—

शब्द	धातु	प्रत्यय
कृत्वा	कृ	क्त्वा
लब्धवा	लभ्	क्त्वा
गृहीत्वा	गृह्	क्त्वा
गत्वा	गम्	क्त्वा
हत्वा	हन्	क्त्वा

प्रश्न 2. 'कृ' धातु में क्त्वा' प्रत्यय जोड़कर 'कृत्वा' शब्द की रचना होती है। इसी प्रकार निम्नलिखित को जोड़कर शब्द-रचना कीजिए—

रक्ष् + क्त्वा, पठ् + क्त्वा, हन् + क्त्वा,
गृह् + क्त्वा, नी + क्त्वा, मुच् + क्त्वा।

उत्तर—

			प्रत्यय
रक्ष्	+	**क्त्वा**	रक्षत्वा
पठ्	+	**क्त्वा**	पठत्वा
हन्	+	**क्त्वा**	हत्वा
गृह्	+	**क्त्वा**	गृहीत्वा
नी	+	**क्त्वा**	नीत्वा
मुच्	+	**क्त्वा**	मुचत्वा

❑

4 प्रबुद्धो ग्रामीणः (बुद्धिमान ग्रामीण)

अभ्यास प्रश्न

पाठाधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) पदेन विना किं दूरं याति?

उत्तर—पदेन विना पत्रं दूरं याति।

(ख) अमुखोऽपि कः स्फुटवक्ता भवति?

उत्तर—अमुखोऽपि पत्रं स्फुटवक्ता भवति।

(ग) अन्ते नागरिकः किम् अनुभवम् अकरोत्?

उत्तर—अन्ते नागरिकः अनुभवम् अकरोत् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति।

(घ) नागरिकः किमर्थं लज्जितः अभवत्?

उत्तर—नागरिकः ग्रामीणस्य प्रहेलिकायाः उत्तरं दातुं समर्थः न अभवत्, अतः लज्जितः अभवत्।

(ङ) ज्ञानं कुत्र सम्भवति?

उत्तर—ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति।

(च) समये स्वीकृते प्रथमं कः अवदत्?

उत्तर—समये स्वीकृते प्रथमं ग्रामीणः अवदत्।

(छ) 'कथयिष्यामि परं पूर्वं समयः विधातव्यम्' इति केन उक्तम्?

उत्तर—'कथयिष्यामि परं पूर्वं समयः विधातव्यम्' इति नागरिकेन उक्तम्।

(ज) ग्रामीणान् कः उपाहसत्?

उत्तर—ग्रामीणान् एकः नागरिकः उपाहसत्।

(झ) बहवः जनाः धूमयानम् आरुह्य कुत्र गच्छन्ति स्म?

उत्तर—बहवः जनाः धूमयानम् आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म।

(ञ) ग्रामीणान् उपहसन् नागरिकः किम् अकथयत्?

उत्तर—नागरिकः अकथयत् यत् ग्रामीणाः अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिताः अज्ञाश्च सन्ति। न तेषां विकासः अभवत् न च भवितुं शक्नोति।

(ट) ग्रामीणः नागरिकं किम् अपृच्छत्?

उत्तर—ग्रामीणः नागरिकं एकं प्रहेलिकाम् अपृच्छत्।

(ठ) धूमयाने समयः केन जितः?

उत्तर—धूमयाने समयः एकः ग्रामीणेन जितः।

(ड) ग्रामीणस्य प्रहेलिकायाः किम् उत्तरम् आसीत्?

उत्तर—ग्रामीणस्य प्रहेलिकायाः 'पत्रम्' उत्तरम् आसीत्।

अनुवाद-आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) एकदा बहवः जनाः धूमयानम् (रेलगाड़ी) आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म। तेषु केचित् ग्रामीणाः केचिच्च नागरिकाः आसन्। मौनं स्थितेषु एकः नागरिकः ग्रामीणान् उपहसन् अकथयत्, ''ग्रामीणाः अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिताः अज्ञाश्च सन्ति। न तेषां विकासः अभवत् न च भवितुं शक्नोति।'' तस्य तादृशं जल्पनं श्रुत्वा कोऽपि चतुरः ग्रामीणः अब्रवीत्, ''भद्र नागरिक! भवान् एव किञ्चित् ब्रवीतु, यतो हि भवान् शिक्षितः बहुज्ञः च अस्ति।''

[**शब्दार्थ**—धूमयानम् = रेलगाड़ी। **आरुह्य** = चढ़कर। **अज्ञाः** = मूर्ख। **जल्पनम्** = कथन। **आकर्णय** = सुनकर। **उन्नमय्य** = उठाकर। **समयः** = शर्त। **विधातव्यः** = बद लेनी चाहिए। **अल्पज्ञा** = कम जानने वाले। **बहुज्ञः** = बहुत जानने वाला। **विज्ञाय** = समझकर। **कर्त्तव्यः** = लगानी चाहिए। **प्रहेलिकाम्** = पहेली को।]

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक '**संस्कृत परिचारिका**' के '**प्रबुद्धो ग्रामीणः**' नामक पाठ से अवतरित है। इसमें किसी ग्रामीण की चतुराई का बड़े ही मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश में ग्रामीण व्यक्ति की चतुरता का वर्णन बड़े ही मनोरंजक ढंग से किया गया है।

अनुवाद—एक बार बहुत-से मनुष्य रेलगाड़ी पर चढ़कर नगर की ओर जा रहे थे। उनमें कुछ ग्रामीण और कुछ शहरी थे। उनके मौन रहने पर एक शहरी ने ग्रामीणों का उपहास करते हुए कहा—''ग्रामीण आज भी पहले की तरह अशिक्षित और मूर्ख हैं। न उनका विकास हुआ और न हो सकता है।'' उसके इस प्रकार के कथन को सुनकर कोई चतुर ग्रामीण बोला—''हे शिष्ट शहरी, आप ही कुछ कहें; क्योंकि आप ही शिक्षित और बहुत जानकार हैं।''

(ख) तस्य तां वार्त्तां श्रुत्वा स चतुरः ग्रामीणः अकथयत्, ''भोः वयम् अशिक्षिताः भवान् च शिक्षितः, वयम् अल्पज्ञाः भवान् च बहुज्ञः, इत्येवं विज्ञाय अस्माभिः समयः कर्त्तव्यः, वयं परस्परं प्रहेलिकां प्रक्ष्यामः। यदि भवान् उत्तरं दातुं समर्थः न भविष्यति तदा भवान् दशरूप्यकाणि दास्यति। यदि वयम् उत्तरं दातुं समर्थाः न भविष्यामः तदा दशरूप्यकाणाम् अर्धं पञ्चरूप्यकाणि दास्यामः।''

[**शब्दार्थ**—**सदर्पं** = गर्व सहित। **प्रहेलिका** = पहेली को। **प्रक्ष्याम** = पूछेंगे। **दशमरुप्यकाणाम् अर्धं** = दस रुपये के आधे, पाँच रुपये।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इस गंद्याश में ग्रामीण व्यक्ति की चतुरता का वर्णन बड़े ही रोचक व मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

अनुवाद—''यह सुनकर उस शहरी ने घमण्ड के साथ गर्दन को ऊँचा उठाकर कहा-कहूँगा, किन्तु पहले (कुछ) शर्त बदल लेनी चाहिए।'' उसकी इस बात को सुनकर उस चतुर ग्रामीण के कहा—''अरे हम अशिक्षित हैं और आप शिक्षित हैं; हम कम जानते हैं और आप बहुत जानते हैं—ऐसा समझकर हमारे साथ शर्त लगानी चाहिए। हम परस्पर पहेली पूछेंगे। यदि आप उत्तर देने में समर्थ न होंगे तो आप दस रुपये देंगे। यदि हम उत्तर देने में समर्थ नहीं होंगे, तो (हम) दस रुपये के आधे (अर्थात्) पाँच रुपये देंगे।''

(ग) अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

[**शब्दार्थ**—**साक्षरः** = अक्षरयुक्त। **अमुखः** = बिन मुख का; मुखविहीन। **स्फुटवक्ता** = स्पष्ट बोलने वाला। **अपदो** = बिना पैरों का।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इस श्लोक में ग्रामीण व्यक्ति शहरी व्यक्ति से पहेली पूछता है।

अनुवाद—बिना पैरों का है, किन्तु दूर तक जाता है, साक्षर (अक्षरयुक्त) है, किन्तु पण्डित नहीं है। मुखविहीन होने पर भी स्पष्ट बोलने वाला है। इसे जो जानता है, वह पण्डित है।

(घ) नागरिकः बहुकालं यावत् अचिन्तयत्, परं प्रहेलिकायाः उत्तरं दातुं समर्थः न अभवत्। अतः ग्रामीणम् अवदत्, ''अहम् अस्याः प्रहेलिकायाः उत्तरं न जानामि।'' इदं श्रुत्वा ग्रामीणः अकथयत्, ''यदि भवान् उत्तरं न जानाति, तर्हि ददातु दशरूप्यकाणि।'' अतः म्लानमुखेन नागरिकेण समयानुसारं दशरूप्यकाणि दत्तानि।

[**शब्दार्थ—बहुकाल यावत्** = बहुत देर तक। **अचिन्तयत्** = सोचता रहा। **भावान्** = आप। **तर्हि** = तो। **म्लानमुखेन** = मलिन मुख वाले।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इस गद्यांश में नागरिक के पहेली का उत्तर न दे पाने का वर्णन किया गया है।

अनुवाद—नागरिक बहुत देर तक सोचता रहा, परन्तु पहेली का उत्तर देने में समर्थ न हो सका; अतः ग्रामवासी से बोला—''मैं इस पहेली का उत्तर नहीं जानता हूँ।'' यह सुनकर ग्रामवासी ने कहा—''यदि आप इसका उत्तर नहीं जानते हैं तो दस रुपये दें।'' अतः मलिन मुख वाले नगरवासी के द्वारा शर्त के अनुसार दस रुपये दे दिये गये।

(ङ) पुनः ग्रामीणोऽब्रवीत्, ''इदानीं भवान् पृच्छतु प्रहेलिकाम्।'' दण्डदानेन खिन्नः नागरिकः बहुकालं विचार्य न काञ्चित् प्रहेलिकाम् अस्मरत्। अतः अधिकं लज्जमानः अब्रवीत्, '' स्वकीयायाः प्रहेलिकायाः त्वमेव उत्तरं ब्रूहि।'' तदा सः ग्रामीणः विहस्य स्वप्रहेलिकायाः सम्यक् उत्तरम् अवदत्, ''पत्रम्'' इति। यतो हि इदं पदेन विनापि दूरं याति, अक्षरैः युक्तमपि न पण्डितः भवति।''

[**शब्दार्थ—दण्डानेन** = दण्ड देने के कारण। **खिन्नः** = दुःखी। **विचार्थ** = सोचकर, विचार करके। **काञ्चित** = किसी। **अस्मरत्** = याद कर सका।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—उत्तर दे पाने में असमर्थ नागरिक के लज्जित होने का वर्णन इस गद्यांश में किया गया है।

अनुवाद—फिर ग्रामवासी ने कहा—''अब आप पहेली पूछें।'' दण्ड देने से दुःखी नगरवासी बहुत समय तक विचार करने पर भी कोई पहेली यदि न कर सका, अतः अधिक लज्जित होते हुए बोला—''अपनी पहेली का तुम ही उत्तर बताओ।'' तब उस ग्रामवासी ने हँसकर अपनी पहेली का सही उत्तर बताया—''पत्र (चिट्ठी)। क्योंकि यह पैरों के बिना भी अधिक दूर चला जाता है, अक्षरों से युक्त होते हुए भी पण्डित नहीं होता है।''

(च) एतस्मिन्नेव काले तस्य ग्रामीणस्य ग्रामः आगतः। स विहसन् रेलयानात् अवतीर्य स्वग्रामं प्रति अचलत्। नागरिकः लज्जितः भूत्वा पूर्ववत् तूष्णीम् अतिष्ठत्। सर्वे यात्रिणः वाचालं तं नागरिकं दृष्ट्वा अहसन्। तदा स नागरिकः अन्वभवत् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति। ग्रामीणाः अपि कदाचित् नागरिकेभ्यः प्रबुद्धतराः भवन्ति।

[**शब्दार्थ—विहसन्** = हँसता हुआ। **अवतीर्य** = उतरकर। **तूष्णीम्** = चुपचाप। **वाचालं** = अधिक बात करने वाला। **दृष्टवा** = देखकर। **अहसन्** = हँसे। **अन्वभवत** = अनुभव किया।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इस गद्यांश में पहेली का जवाब न दे पाने पर लज्जित शहरी व्यक्ति की दशा का वर्णन किया गया है।

अनुवाद—उसी समय उस ग्रामवासी का गाँव आ गया। वह हँसता हुआ रेलगाड़ी से उतरकर अपने गाँव चला गया। नगरवासी लज्जित होकर पहले की तरह चुपचाप बैठ गया। सब यात्री उस बातूनी नगरवासी को देखकर हँसने लगे। तब उस नगरवासी ने अनुभव किया कि ज्ञान सभी जगह सम्भव होता है। ग्रामीण भी कभी नगरवासियों से अधिक बुद्धिमान् होते हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) बहुत-से लोग रेलगाड़ी से नगर की ओर जा रहे थे।

उत्तर—बहवः जनाः धूमयानम् आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म।

(ख) सदा सत्य बोलो।

उत्तर—सदा सत्यं वदत।

(ग) हम परस्पर पहेली पूछेंगे।

उत्तर—वयं परस्पर प्रहेलिकां प्रक्ष्यामः।

(घ) मैं आज प्रयाग जाऊँगा।

उत्तर—अहम् अद्य प्रयागः गमिष्यामि।

(ङ) तुम कल वहाँ जाकर क्या करोगे?

उत्तर—त्वं श्वः तत्र गमिष्यसि किम् करिष्यसि?

(च) ज्ञान सभी जगह सम्भव नहीं है।

उत्तर—यत ज्ञांन सर्वत्र न सम्भवति।

(छ) वह बस से उतरकर बैठ गया।

उत्तर—सः विहसन् बसयानात् अवतीर्य अतिष्ठत।

(ज) विद्या से ज्ञान बढ़ता है।

उत्तर—विद्यायेन ज्ञानं वर्धते।

व्याकरण एवं भाषा-बोध

प्रश्न 1. सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए—

अद्यापि, अज्ञाश्च, कोऽपि, समयानुसारं।

उत्तर—

शब्द	**सन्धि-विच्छेद**			**सन्धि का नाम**
अद्यापि	अद्य	+	अपि	दीर्घ
अज्ञाश्च	अज्ञाः	+	च	विसर्ग
कोऽपि	कः	+	अपि	विसर्ग, पूर्वरूप
समयानुसारं	समय	+	अनुसारं	दीर्घ

प्रश्न 2. निम्नलिखित धातुओं से 'तव्यत्' प्रत्यय जोड़कर नये शब्द बनाइए—

कथ्, पठ्, दृश्, दा, ध्या, स्था, या, ज्ञा, गम्।

उत्तर—	**धातु**	+	**प्रत्यय**	=	**शब्द**
कथ्	कथ्	+	तव्य	=	कथतव्य
पठ्	पठ्	+	तव्य	=	पठितव्य
दृश्	दृश्	+	तव्य	=	द्रष्टव्य
दा	दा	+	तव्य	=	दातव्य
ध्या	ध्या	+	तव्य	=	ध्यातव्य
स्था	स्था	+	तव्य	=	स्थातव्य

पा	पा	+	तव्य	=	पातव्य
ज्ञा	ज्ञा	+	तव्य	=	ज्ञातव्य
गम्	गम्	+	तव्य	=	गन्तव्य

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत-वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

वाचालः, निर्धनम्, अल्पज्ञः, दातुम, अयुक्तम्, प्रश्नं, तूष्णीम्, नागरिकः, दृष्ट्वा, सर्वत्र।

उत्तर—(क) सर्वे यात्रिणः **वाचालं** तं नागरिकं दृष्टवा अहसन्।

(ख) निर्धनम् पश्य।

(ग) ग्रामीणः **अल्पज्ञः** भवति।

(घ) उत्तर **दातुम** समर्थः न अभवत्।

(ङ) तस्य तर्कम् **अयुक्तम्** अस्ति।

(च) इदानीं भवान् **प्रश्नं** पृच्छत।

(छ) उत्तरं श्रुत्वा स **तूष्णीम्** अभवत्।

(ज) नागरिकः दण्डदानेन खिन्नः अभवत्।

(झ) नागरिक **दृष्ट्वा** अहसन्।

(ञ) ज्ञानं **सर्वत्र** सम्भवति।

प्रश्न 4. 'दा' धातु के लोट्लकार के रूप लिखिए—

उत्तर—'दा' धातु लोट्लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ददातु	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

प्रश्न 5. 'अल्प' में 'ज्ञः' जोड़कर 'अल्पज्ञः' शब्द की रचना की गयी है। इसी प्रकार से 'ज्ञः' जोड़कर पाँच अन्य शब्दों की रचना कीजिए।

उत्तर—(क) सर्वज्ञ; (ख) अवयज्ञ; (ग) यज्ञ; (घ) कृतज्ञ; (ङ) वेदज्ञः

❑

5 देशभक्तः चन्द्रशेखरः
(देशभक्त चन्द्रशेखर)

अभ्यास प्रश्न

पाठाधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) चन्द्रशेखरः कः आसीत्?

उत्तर—चन्द्रशेखरः एकः प्रसिद्धः क्रान्तिकारी देशभक्तः च आसीत्।

(ख) दुर्मुखः कः आसीत्?

उत्तर—दुर्मुखः चाण्डालः आसीत्।

(ग) राष्ट्रभक्तः कः अस्ति?

उत्तर—राष्ट्रभक्तः चन्द्रशेखरः अस्ति।

(घ) केन कारणेन चन्द्रशेखरः न्यायालये आनीतः?

उत्तर—चन्द्रशेखरः राजद्रोहस्य आरोपे न्यायालये आनीतः।

(ङ) चन्द्रशेखरः स्वपितुः नाम किम् अकथयत्?

अथवा **चन्द्रशेखरस्य पितुः किं नाम?**

उत्तर—चन्द्रशेखरः स्वपितुः नाम 'स्वतन्त्र' इति अकथयत्।

(च) चन्द्रशेखरः स्वनाम किम् अकथयत्?

उत्तर—चन्द्रशेखरः स्वनाम् 'आजाद' अति अकथयत्।

(छ) न्यायाधीशः चन्द्रशेखरं किम्/कथम् अदण्डयत्?

उत्तर—न्यायाधीशः चन्द्रशेखरं पञ्चदश कशाघातेन ताडयितुम अदण्डयत्।

(ज) 'कारागार एव मम गृहम्' कस्य वचनम् अस्ति?

उत्तर—'कारागार एव मम गृहम्' इति चन्द्रशेखरः अवदतः।

(झ) चन्द्रशेखरः स्वगृहं कुत्र किम् अवदत्?

उत्तर—चन्द्रशेखरः अकथयत् यत् कारागार एवं मम गृहम्।

(ञ) चन्द्रशेखरस्य रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिङ्गाः केषां कृते भविष्यन्ति?

उत्तर—चन्द्रशेखरस्य रक्तबिन्दवः शत्रूणां कृते अग्निस्फुलिङ्गाः भविष्यन्ति।

(ट) कशयाताडितः चन्द्रशेखरः पुनः पुनः किम् अवदत्?

उत्तर—कशयाताडितः चन्द्रशेखरः पुनः पुनः 'जयतु भारतम्' इति अवदत्।

अनुवाद-आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित नाट्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

(क) न्यायाधीशः—(तं बालकं विस्मयेन विलोकयन्) रे बालक! तव किं नाम?

चन्द्रशेखरः—आजादः (स्थिरीभूय)।

न्यायाधीशः—तव पितुः किं नाम?

चन्द्रशेखरः—स्वतन्त्रः।

न्यायाधीशः—त्वं कुत्र निवससि? तव गृहं कुत्रास्ति?

चन्द्रशेखरः—कारागार एव मम गृहम्।

न्यायाधीशः—(स्वगतम्) कीदृशः प्रमत्तः स्वतन्त्रतायै अयम्? (प्रकाशम्) अतीव धृष्टः, उद्दण्डश्चायं नवयुवकः। अहम् इमं पञ्चदश कशाघातान् दण्डयामि।

चन्द्रशेखरः—नास्ति चिन्ता।

[शब्दार्थ—दुर्धर्षः = उच्छृंखल; उद्दण्ड। **आरक्षकाः** = सिपाही। **सम्मुखम्** = सामने। **अभियोगः** = मुकदमा। **प्रस्तरखण्डेन** = पत्थर के

टुकड़े से। **आहतः** = घायल हुआ। **कारागारः** = जेल। **धृष्ट** = ढीठ। **कशघातान्** = कोड़े मारने की।]

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**देशभक्तः चन्द्रशेखरः**' नामक पाठ से लिया गया है।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में देशभक्त चन्द्रशेखर की वीरता, निडरता और देशभक्ति का वर्णन किया गया है।

अनुवाद—**न्यायाधीश**—(उस बालक को आश्चर्य से देखते हुए) हे बालक! तेरा क्या नाम है?

चन्द्रशेखर—आजाद (दृढ़ होकर)।

न्यायाधीश—तेरे पिता का क्या नाम है?

चन्द्रशेखर—स्वतन्त्र।

न्यायाधीश—तुम कहाँ रहते हो? तुम्हारा घर कहाँ है?

चन्द्रशेखर—कारागार ही मेरा घर है।

न्यायाधीश—(अपने मन में) यह स्वाधीनता के लिए कितना मतवाला है? (प्रकट रूप में) यह नवयुवक अत्यधिक ढीठ और उद्दण्ड है। मैं इसे पन्द्रह कोड़ों की सजा देता हूँ।

चन्द्रशेखर—चिन्ता नहीं है।

(ख) आरक्षकः—श्रीमन्! अयम् अस्ति चन्द्रशेखरः। अयं राजद्रोही। गतदिने अनेनैव असहयोगिनां सभायां एकस्य आरक्षकस्य दुर्जयसिंहस्य मस्तके प्रस्तरखण्डेन प्रहारः कृतः। येन दुर्जयसिंहः आहतः।

न्यायाधीशः—(तं बालकं विस्मयेन विलोकयन्) रे बालक! तव किं नाम?

चन्द्रशेखरः—आजादः (स्थिरीभूय)।

न्यायाधीशः—तव पितुः किं नाम?

चन्द्रशेखरः—स्वतन्त्रः।

न्यायाधीशः—त्वं कुत्र निवससि? तव गृहं कुत्रास्ति?

चन्द्रशेखरः—कारागार एव मम गृहम्।

न्यायाधीशः—(स्वगतम्) कीदृशः प्रमत्तः स्वतन्त्रतायै अयम्? (प्रकाशम्) अतीव धृष्टः, उद्दण्डश्चायं नवयुवकः।

[**शब्दार्थ—आरक्षकः** = सिपाही; **सम्मुख** = सामने। **आनथन्ति** = ले आते है। **अनेनैव** = इसमें ही। **मस्तके** = माथे पर।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इसमें चन्द्रशेखर आजाद की वीरता, साहस और देशभक्ति का वर्णन किया गया है।

अनुवाद—**सिपाही**—श्रीमन्! यह चन्द्रशेखर है। यह राजद्रोही है। पिछले दिन इसने ही असहयोगियों की सभा में एक सिपाही दुर्जयसिंह के मस्तक पर पत्थर के टूकड़े से प्रहार किया, जिससे दुर्जयसिंह घायल हो गया।

न्यायाधीश—(उस बालक को आश्चर्य से देखते हुए) रे बालक। तेरा क्या नाम है?

चन्द्रशेखर—आजाद (दृढ़ होकर)।

न्यायाधीश—तेरे पिता का क्या नाम है?

चन्द्रशेखर—स्वतन्त्र।

न्यायाधीश—तुम कहाँ रहते हो? तुम्हारा घर कहाँ है?

चन्द्रशेखर—कारागार ही मेरा घर है।

न्यायाधीश—(अपने मन में) यह स्वाधीनता के लिए कितना मतवाला है? (प्रकट रूप में) यह नवयुवक अत्यधिक ढीठ और उद्दण्ड है।

(ग) गण्डासिंहः— (चाण्डालं प्रति) दुर्मुख! मम आदेशसमकालमेव कशाघातः कर्त्तव्यः। (चन्द्रशेखरं प्रति) रे दुर्विनीत युवक! लभस्व इदानीं स्वाविनयस्य फलम्।

कुरु राजद्रोहम। दुर्मुख! कशाघातः एकः। (दुर्मुखः चन्द्रशेखरं कशया ताडयति।)

चन्द्रशेखरः—जयतु भारतम्।

गण्डासिंहः—दुर्मुख! द्वितीयः कशाघातः।(दुर्मुखः पुनः ताडयति।)

ताडितः चन्द्रशेखरः पुनः पुनः ''भारतं जयतु'' इति वदति। (एवं स पञ्चदशकशाघातैः ताडितः।) यदा चन्द्रशेखरः कारागारात् मुक्तः बहिः आगच्छति, तदैव सर्वे जनाः तं परितः वेष्टयन्ति, बहवः बालकाः तस्य पादयोः पतन्ति, तं मालाभिः अभिनन्दयन्ति च।

[**शब्दार्थ— लभस्व** = प्राप्त करो। **स्वाविनयस्य** = अपनी उद्दण्डता का फल।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में चन्द्रशेखर की वीरता, निडरता, साहस व देशभक्ति का वर्णन किया गया है।

अनुवाद—**गण्डासिहं**—(चाण्डाल से) हे दुर्मुख! मेरे द्वारा आज्ञा देते ही कोड़े लगाना। (चन्द्रशेखर से) हे उद्दण्ड युवक। अब तू अपनी उद्दण्डता का फल प्राप्त कर। और करो राजद्रोह! हे दुर्मुख! एक कोड़ा मारो। (दुर्मुख चन्द्रशेखर को कोड़ा मारता है।)

चन्द्रशेखर—भारत की जय हो।

गण्डासिंह—हे दुर्मुख! दूसरा कोड़ा मारो। (दुर्मुख फिर से मारता है) पिटते हुए चन्द्रशेखर बार-बार 'भारत माता की जय हो' ऐसा कहते हैं। (इस प्रकार वह पन्द्रह कोड़ों से पीटे जाते हैं)।

जब चन्द्रशेखर कारागार से मुक्त होकर बाहर आते हैं, तब सारे लोग उन्हें चारो ओर से घेर लेते हैं। बहुत से बालक उनके पैरों पर गिर पड़ते हैं और उनका मालाओं से अभिनन्दन करते हैं।

(घ) यदा चन्द्रशेखरः कारागारात् मुक्तः बहिः आगच्छति, तदैव सर्वे जनाः तं परितः वेष्टयन्ति, बहवः बालकाः

तस्य पादयोः पतन्ति, तं मालाभिः अभिनन्दयन्ति च।

चन्द्रशेखरः—किमिदं क्रियते भवद्भिः? वयं सर्वे भारतमातुः अनन्यभक्ताः। तस्याः शत्रूणां कृते मदीयाः इमे रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिङ्गाः भविष्यन्ति।

[**शब्दार्थ—कारागारात्** = जेल से। **मुक्त** = छूटकर। **बहिः** = बाहर। **परितः** = चारों ओर। **वेष्टयन्ति** = घेर लेते हैं। **पादयो** = मेरी। **रक्तबिन्दव** = रक्त की बूँदें।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में चन्द्रशेखर के जेल से बाहर आने के बाद लोगों में खुशी के वातावरण का वर्णन है।

अनुवाद—जब चन्द्रशेखर कारागार से मुक्त होकर बाहर आते हैं, तब सारे लोग उन्हें चारों ओर से घेर लेते हैं। बहुत-से बालक उनके पैरों पर गिर पड़ते हैं और उनका मालाओं से अभिनन्दन करते हैं।

चन्द्रशेखर—आप लोग यह क्या कर रहे हैं? हम सभी भारतमाता के अनन्य भक्त हैं। उसके शुत्रओं के लिए मेरी ये रक्त की बूँदें अग्नि की चिनगारियाँ हो जाएँगी।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) यह राजद्रोही है।

उत्तर—अयं राजद्रोही अस्ति।

(ख) तुम्हारे पिता का क्या नाम है?

उत्तर—तव पितुः नाम किम् अस्ति?

(ग) न्यायाधीश ने कहा–मैं इसे पन्द्रह कोड़ों का दण्ड देता हूँ।

उत्तर—न्यायाधीश अकथयत्—अहं इमं पञ्चदश कशाघातान् दण्डयामि।

(घ) तुम नगर से आते हो।

उत्तर—त्वम् नगरात् आगच्छसि।

(ङ) तुम्हारा विद्यालय कहाँ है?

उत्तर—तव विद्यालयः कुत्रास्ति?

(च) युवकों को परिश्रम करना चाहिए।

उत्तर—युवकाः परिश्रमं कुर्युः।

(छ) हम सबको एक होना चाहिए।

उत्तर—वयम् एकीभूताः भवेम्।

(ज) विवेकानन्द एक विलक्षण महापुरुष थे।

उत्तर—विवेकानन्द एकः विलक्षणमहापुरुषः आसीत्।

(झ) पेड़ से पत्ते गिरते हैं।

उत्तर—वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

(ञ) हम सब भारतमाता के अनन्य भक्त हैं।

उत्तर—वयं सर्वे भारतमातुः अनन्यभक्ताः सन्ति।

व्याकरण एवं भाषा-बोध

प्रश्न 1. विभक्ति तथा वचन लिखिए—

मस्तके, खण्डेन, विस्मयेन, पितुः, मम, मालाभिः।

उत्तर—

शब्द	विभक्ति	वचन
मस्तके	सप्तमी	एकवचन
खण्डेन	तृतीया	एकवचन
विस्मयेन	तृतीया	एकवचन
पितुः	षष्ठी	एकवचन
मम	षष्ठी	एकवचन
मालाभिः	तृतीया	बहुवचन

प्रश्न 2. 'युष्मद्' के पञ्चमी में और 'अस्मद्' के सप्तमी विभक्ति के रूप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

उत्तर— **युष्मद**—पञ्चमी—त्वत् युवाभ्याम् युष्मत्।

अस्मद्—सप्तमी—मयि आवयोः अस्मासु।

प्रश्न 3. निम्नलिखित धातु-रूपों के लकार, वचन तथा पुरुष लिखिए—

वदति, आनयन्ति, दण्डयामि, ताडयति, अस्ति, जयतु, निवससि, अभिनन्दयन्ति, प्रारभते, भविष्यन्ति, वेष्टयन्ति, आगच्छति।

उत्तर—

धातुरुप	लकार	वचन	पुरुष
वदति	लट्	एकवचन	प्रथम
आनयन्ति	लट्	बहुवचन	प्रथम
दण्डयामि	लट्	एकवचन	उत्तम
ताडयति	लट्	एकवचन	प्रथम
अस्ति	लट्	एकवचन	प्रथम
जयतु	लोट्	एकवचन	प्रथम
निवससि	लट्	एकवचन	मध्यम
अभिनन्दयन्ति	लट्	बहुवचन	प्रथम
प्रारभते	लट्	एकवचन	प्रथम
भविष्यन्ति	लृट्	बहुवचन	प्रथम
वेष्टयन्ति	लट्	बहुवचन	प्रथम
आगच्छति	लट्	एकवचन	प्रथम

प्रश्न 4. सन्धि-विच्छेद कीजिए—

अनेनैव, नास्ति, कुत्रास्ति, चायं, कारावासाधिकारी, स्वाविनयस्य।

शब्द	सन्धि - विच्छेद		
अनेनैव	— अन	+	अनैव
नास्ति	— न	+	अस्ति
कुत्रास्ति	— कुत्र	+	अस्ति
चायं	— च	+	अयम्
कारावासाधिकारी	— कारावास	+	अधिकारी
स्वाविनयस्य	— स्व	+	अविनयस्य

❑

6 केन किं वर्धते?

(किससे क्या बढ़ता है?)

पाठाधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए-

(क) नीचसङ्गेन का वर्धते?

उत्तर—नीचसङ्गेन दुश्शीलता वर्धते।

(ख) रागः केन वर्धते?

उत्तर—रागः अपथ्येन वर्धते।

(ग) धर्मः केन वर्धते?

उत्तर—सत्येन धर्मः वर्धते।

(घ) व्यसनेन कः वर्धते?

उत्तर—व्यसनेन कलहः वर्धते।

(ङ) कलहः केन वर्धते?

उत्तर—कलहः दुर्व्यसनेन वर्धते।

(च) असन्तोषेण कां वर्धते?

उत्तर—असन्तोषेण तृष्णा वर्धते।

(छ) तपः केन वर्धते?
उत्तर—तपः क्षमया वर्धते।
(ज) विनयेन कः वर्धते?
उत्तर—विनयेन गुणः वर्धते अथवा गुणः विनयेन वर्धते।
(झ) वैश्वानरः केन वर्धते?
उत्तर—वैश्वानरः तृणैः वर्धते।
(ञ) दुर्वचनेन किं वर्धते?
उत्तर—दुर्वचनेन कलह वर्धते।
(ट) पुत्रदर्शनेन कः वर्धते?
अथवा **पुत्रदर्शनेन किं भवति?**
उत्तर—पुत्रदर्शनेन हर्षः वर्धते।
(ठ) लोभः केन वर्धते?
उत्तर—लोभः लाभेन वर्धते?
(ड) मैत्री केन वर्धते?
उत्तर—मैत्री सुवचनेन वर्धते।
(ढ) सुवचनेन किं वर्धते?
उत्तर—सुवचनेन मैत्री वर्धते।
(ण) इन्दुदर्शनेन कः वर्धते?
उत्तर—इन्दुदर्शनेन समुद्रः वर्धते।
(त) विद्या केन वर्धते?
उत्तर—विद्या अभ्यासेन वर्धते।
(थ) सदाचारेण कः वर्धते?
उत्तर—रोगः अपथ्येन वर्धते।
(द) औदार्येण किम् वर्धते?
उत्तर—औदार्येण प्रभुत्वम् वर्धते।
(ध) कुटुम्बकलहेन किं वर्धते?
उत्तर—कुटुम्बकलहेन दुःखम् वर्धते।
(न) अभ्यासेन किं वर्धते?
उत्तर—अभ्यासेन आह्लादो वर्धते।
(प) मित्रदर्शनेन किं वर्धते?
उत्तर—मित्रदर्शनेन आह्लादो वर्धते।
(फ) दुश्शीलता केन वर्धते?
उत्तर—नीचसङ्गेन दुश्शीलता वर्धते।

अनुवाद-आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित सूक्तियों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क)	**सुवचनेन मैत्री,**	**इन्दुदर्शनेन समुद्रः,**
	शृङ्गणरेण रागः,	**विनयेन गुणः,**
	दानेन कीर्तिः,	**उद्यमेन श्रीः,**
	सत्येन धर्मः,	**पालनेन उद्यानम्,**
	सदाचारेण विश्वासः,	**अभ्यासेन विद्या,**
	न्यायेन राज्यम्,	**औचित्येन महत्त्वम्,**
	औदार्येण प्रभुत्वम्,	**क्षमया तपः।**

[**शब्दार्थ—उद्यमेन** = परिश्रम करने से। **श्रीः** = लक्ष्मी (धन-सम्पत्ति)। **औचित्येन** = उचित कार्य करने से।]

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के '**संस्कृत परिचायिका**' खण्ड में संकलित '**केन किं वर्धते?**' नामक पाठ से लिया गया है।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में सूक्तियों के माध्यम से जीवनोपयोगी बातें बताई गई हैं। कि किन-किन कार्यों को करने से क्या-क्या बढ़ता है?

अनुवाद—सुन्दर व मीठे वचन बोलने से मित्रता, चन्द्रमा का दर्शन करने से समुद्र, श्रृंगार करने से प्रेम, विनम्रता से गुण, दान करने से कीर्ति, परिश्रम करने से लक्ष्मी, सत्य बोलने से धर्म, पालन-पोषण करने से उपवन, सदाचार से विश्वास, अभ्यास करने से विद्या, न्याय करने से राज्य, उचित व्यवहार करने से बड़प्पन, उदारता से प्रभुत्व, क्षमा करने से तप बढ़ता है।

(ख)	**पूर्ववायुना जलदः,**	**लाभेन लोभः,**
	पुत्रदर्शनेन हर्षः,	**मित्रदर्शनेन आह्लादः,**
	दुर्वचनेन कलहः,	**तृणैः वैश्वानरः,**
	नीचसङ्गेग दुश्शीलता,	**उपेक्षया रिपुः,**
	कुटुम्बकलहेन दुःखम्,	**दुष्टहृदयेन दुर्गतिः,**
	अशौचेन दारिद्र्यम्,	**अपथ्येन रोगः,**
	असन्तोषेण तृष्णा,	**व्यसनेन विषयः।**

[**शब्दार्थ—आह्लोदः** = प्रसन्नता (खुशी)। **वैश्वानरः** = अग्नि, **अशौचेन** = अपवित्रता से। **दारिद्र्यम्** = गरीबी। **अपथ्येन** = परहेज न करने से। **तृष्णा** = इच्छाएँ। **विषयः** = वासनाएँ]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इनमें बताया गया है कि किस वस्तु से व्यक्ति की क्या वस्तु वृद्धि प्राप्त करती है।

अनुवाद—पूर्व दिशा से चलने वाली हवा से बादल, लाभ से लालच, पुत्र के दर्शन करने से प्रसन्नता, मित्र के दर्शन करने से खुशी, बुरे वचन बोलने से झगड़ा, तिनकों से अग्नि, नीच व्यक्ति का साथ करने से दुष्टता, उपेक्षा करने से शत्रुता, पारिवारिक झगड़ों से दुःख, दुष्ट हृदय से दुर्गति, अपवित्रता से दरिद्रता, परहेज न करने से रोग, सन्तोष न करने से लालच और बुरी आदतों से विषय-वासना बढ़ती है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए-
(क) लाभ से लोभ बढ़ता है।
उत्तर—लाभेन लोभः वर्धते।
(ख) उपेक्षा से शत्रुता बढ़ती है।
उत्तर—उपेक्षया रिपु वर्धते।
(ग) मित्र के दर्शन से प्रसन्नता बढ़ती है।
उत्तर—मित्रदर्शनेन आह्लादः वर्धते।
(घ) अपवित्रता से दरिद्रता बढ़ती है।
उत्तर—अशौचेन दारिद्र्यम वर्धते।
(ङ) सत्य से धर्म की रक्षा होती है।
उत्तर—सत्येन धर्म रक्षणः भवति।
(च) तुम्हारे पिता कहाँ हैं?
उत्तर—तव पितु कुत्र अस्ति।
(छ) वह कल लखनऊ गया।
उत्तर—सः हाः लखनऊ अगच्छत्।
(ज) दान से कीर्ति बढ़ती है।
उत्तर—दानेन कीर्तिः वर्धते।
(झ) बुरे वचनों से कलह होती है।
उत्तर—दुर्वचनेन कलहः भवति।

व्याकरण एवं भाषा-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखिए—
सत्येन, दुर्वचनेन, अशौचेन, औचित्येन, मित्र।

उत्तर—

शब्द	विलोम
सत्येन	असत्येन/अनृतेन
दुर्वचनेन	सुवचनेन
अशौचेन	शौचेन
औचित्येन	अनौचित्येन
मित्र	शत्रु

प्रश्न 2. दातृ, पुंस, धेनु, गुरु और वधू के तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी तथा सप्तमी विभक्तियों में रूप लिखिए।

उत्तर—

दातृ

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	दातृणा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दातृणे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातृणः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
सप्तमी	दातृणि	दातृणोः	दातृषु

पुंस

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभि
चतुर्थी	पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
पञ्चमी	पुंसः	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
सप्तमी	पुंसि	पुंसोः	पुंसु

धेनु

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
सप्तमी	धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनुषु

गुरु

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
सप्तमी	गुरौ	गुर्वीः	गुरुषु

वधू

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु

प्रश्न 3. वायु, चन्द्रमा, समुद्र, उद्यान तथा लक्ष्मी के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर—

शब्द	पर्यायवाची शब्द
वायु	अनिलः, वातः
चन्द्रमा	निशाकरः, हिंमाशुः
समुद्र	सागरः, सिन्धुः
उद्यान	उपवनः, कुसुमाकरः
लक्ष्मी	इन्दिराः, श्रीः

प्रश्न 4. तृतीया विभक्ति के प्रयोग के मुख्य नियम लिखिए।

उत्तर—कर्ता जिसकी सहायता से क्रिया सम्पन्न करता है, वहाँ तृतीया। विभक्ति प्रयोग की जाती है; जैसे—रमेशः कलमेन लिखति। इस वाक्य में रमेश लिखने का कार्य कलम की सहायता से कर रहा है, अतः कलम में तृतीया विभक्ति है।

❑

7 छान्दोग्य उपनिषद् षष्ठोध्यायः

(छान्दोग्य उपनिषद् छठे अध्याय का वर्णन)

अभ्यास प्रश्न

पाठाधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए-

(क) श्वेतकेतुः कस्य पुत्रः आसीत्?

उत्तर—श्वेतकेतुः आरुणेयपुत्रः आसीत्।

(ख) कः द्वादशवर्षम् उपेत्य चतुर्विंशतिवर्षः वेदानधीत्य आगतः?

उत्तर—श्वेतकेतुः द्वादशवर्षम् उपेत्य चतुर्विंशतिवर्षः वेदानधीत्य आगतः।

(ग) श्वेतकेतुः कतिवर्षाणि सर्वान् वेदान् अपठत्?

उत्तर—श्वेतकेतुः द्वादशवर्षाणि सर्वान् वेदान् अपठत्।

(घ) अनूचानमानी कः अभवत्?

उत्तर—अनूचानमानी श्वेतकेतुः अभवत्।

(ङ) मृत्पिण्डेन किं विज्ञातम्?

उत्तर—मृत्पिण्डेन सर्वं मृण्मयं विज्ञातम्।

(च) कुत्र लोहमयं विज्ञातम्?

उत्तर—लोहमणिना लोहमयं विज्ञातम्।

(छ) कः आरुणिं गुरुरूपेण स्वीकरोति?

उत्तर—श्वेतकेतुः आरुणिं गुरुरूपेण स्वीकरोति।

अनुवाद-आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित सूक्तियों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) ॥ ॐ ॥ श्वेतकेतुर्हारुणेय आस तं ह पितोवाच श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यं न वै सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति ॥1॥

[**आरुणेय** = आरुणि का पुत्र। **आस** = था। **पितोवाच** = पिता ने कहा। **वस ब्रह्मचर्यम्** = ब्रह्मचर्य का पालन करो। **वै** = क्योंकि। **कुलीनोऽननूच्य** = कुल (परिवार) में कोई ऐसा (व्यक्ति) नहीं हुआ।। **ब्राह्मबन्धुरिव** = ब्रह्मबंधु के समान]

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक '**हिन्दी**' के 'संस्कृत-खण्ड' के '**छान्दोग्य उपनिषद् षष्ठोध्यायः**' पाठ से उद्धृत है।

प्रसंग—इस श्लोक में आरुणि अपने पुत्र श्वेतकेतु को ज्ञान की बातें बता रहे हैं।

अनुवाद—आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु था। उससे एक बार पिता ने कहा—''हे श्वेतकेतु! तुम ब्रह्मचर्य का पालन करो क्योंकि हमारे कुल में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ, जो ब्रह्मबन्धु के समान न लगता हो।

(जो ब्राह्मण अपने को ब्राह्मण समझता हो लेकिन ब्राह्मणोचित आचरण न करता हो उसे गुरुकुल जाना आवश्यक है। उसे गुरुकुलावास आवश्यक प्रतीत होता है।)

(ख) स ह द्वादशवर्षं उपेत्य चतुर्विंशतिवर्षः सर्वान्वेदानधीत्य महामना अनूचानमानी स्तब्ध एयाय तं ह पितोवाच ॥2॥

[**द्वादशवर्षम् उपेत्य** = बारह वर्ष पर्यन्त। **सर्वान्वेदानधीत्य** = समस्त वेदों को पढ़कर। **महामना** = पांडित्यमना। **अनूचानमानी** = स्वाभिमानी, अहंकार युक्त होकर। **स्तब्ध** = शान्त होकर। **एयाय** = लौटा।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—बारह वर्ष पर्यन्त आश्रम जाकर चौबीस वर्ष आयु पर्यन्त श्वेतकेतु समस्त वेदों को पढ़कर स्वाभिमानी, पाण्डित्यमना, अहंकार युक्त होकर लौटा तो उसके पिता ने कहा।

(ग) यथा सोम्यैकेन मृत्पिण्डेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातं स्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम् ॥4॥

[**मृत्पिण्डेन** = मिट्टी से बने पदार्थ विशेष के द्वारा। **मृन्मयम्** = मिट्टी से युक्त। **आचारम्भणम्** = आवरण। **मृत्तिकेत्येव** = मिट्टी ही है]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—पिता आरुणि ने कहा—''हे श्वेतकेतु! जिस प्रकार (मिट्टी के बने) पात्रों को देखकर उनके मिट्टी द्वारा बने होने का आभास नहीं किया जा सकता है किन्तु वास्तव में वे मिट्टी के बने होते हैं अर्थात् पात्रों में मृत्तिकत्व है यही सत्य है।

(घ) न वै नूनं भगवन्तस्त एतदवेदिषुर्यध्द्येतदवे-दिष्यन्कथं से नावक्ष्यन्निति भगवांस्त्वेव मे तद्ब्रबीत्विति तथा सोम्येति होवाच ॥7॥

[**न वै नूनम्** = ऐसा कहे जाने पर। **भगवांस्त्वेव** = आप ही मेरे।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—पिता के ऐसा कहने पर श्वेतकेतु ने कहा—''आप ही मेरे पूजनीय गुरुजी हैं। जिसने उसे इस प्रकार का आत्म-बोध कराया।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) ऋग्वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ है।

उत्तर—ऋग्वेदः अति प्राचीन ग्रन्थः अस्ति।

(ख) उपनिषद् ज्ञान के लिए महत्त्वपूर्ण है।

उत्तर—उपनिषद्: ज्ञानाय महत्त्वपूर्णः अस्ति।

(ग) आरुणि ने श्वेतकेतु को आत्मतत्व का उपदेश दिया है।

उत्तर—अरुणिः ने श्वेतकेतुम् आत्मतत्वस्य उपदेशः ददाति।

(घ) औपनिषद् दर्शन ही सम्यदर्शन है।

उत्तर—औपनिषद्: दर्शनेव सम्यदर्शनः अस्ति।

व्याकरण एवं भाषा-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित संधि पदों का संधि-विच्छेद कीजिए—

श्वेतकेतो वस, सोम्यास्मत्, कुलीनोऽननूच्य, भवतीति, सोम्येदम्, स्तब्धोऽस्युत, तमादेशम्, येनाश्रुतम्, मृन्मयम्, श्वेतकेतुर्हारुणेय, पितोवाच, विकारो नामधेयम्, लोहभित्येव, सत्यमेवम्, भगवन्तस्त।

उत्तर—पद	सन्धि	+	विच्छेद
श्वेतकेतो वस	श्वेतकेतुः	+	वस
सोम्यास्मत्	सोम्य	+	अस्मत्
कुलीनोऽननूच्य	कुलीनः	+	अननूच्य
भवतीति	भवति	+	इति
सोम्येदम्	सोम्य	+	इदम्
स्तब्धोऽस्युत	स्तब्धः	+	अस्युत
तमादेशम्	तम्	+	आदेशम्
येनाश्रुतम्	येन	+	अश्रुतम्
मृन्मयम्	मृत्	+	मयम्
श्वेतकेतुर्हारुणेय	श्वेतकेतुः	+	आरुणेय
पितोवाच	पिता	+	उवाच
विकारो नामधेयम्	विकारः	+	नामधेयम्
लोहिमत्येव	लोहम्	+	इति + एव
सत्यमेवम्	सत्यम्	+	एवम्
भगवन्तस्त	भगवन्तः	+	त

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का उपसर्ग अथवा प्रत्यय अलग कीजिए—

उपेत्य, अधीत्य, महामना, अननूच्य, ब्रह्बन्धु, स्तब्ध, प्राक्ष्यः विज्ञातम्, लोहमित्य।

उत्तर—शब्द	उपसर्ग/प्रत्यय			
उपेत्य	उप	+	इत्य	
अधीत्य	अधि	+	इत् +	ल्यप्

महामना	महान्	+	मन्	+	आप्	प्राक्ष्यः	प्र	+	अक्ष्यः
अननूच्य	अन्	+	अनुच्य			विज्ञातम्	वि	+	ज्ञातम्
ब्रह्मबन्धुः	ब्रहम	+	बन्धुः			लोहमित्य	लोहम्	+	इति + ल्यप्
स्तब्ध	स्त्	+	अब्ध						

❑

8 भारतीया संस्कृतिः (भारतीय संस्कृति)

अभ्यास प्रश्न

पाठाधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) भारतीया संस्कृतिः कीदृशी अस्ति/वर्तते?

अथवा, **अस्माकं संस्कृतिः कीदृशी वर्तते/अस्ति?**

उत्तर—भारतीयः संस्कृतिः सदा गतिशीला वर्तते।

(ख) भारतीय संस्कृतौ कः विशेषः गुणः अस्ति?

उत्तर—भारतीय संस्कृतौ सर्वेषां मतानां समभावः इति विशेषः गुणः अस्ति।

(ग) संस्कृतेः अर्थः कः?

उत्तर—मानव जीवनस्य संस्करणं संस्कृतिः अस्ति।

(घ) अस्माकं संस्कृतेः कः नियमः?

उत्तर—पूर्व कर्म, तदनन्तरं फलम् इति अस्माकं संस्कृतेः नियमः।

(ङ) भारतीय संस्कृतिः कस्य अभ्युदयाय इति?

उत्तर—विश्वस्य अभ्युदयाय भारतीय संस्कृतिः इति।

(च) अस्माकं मुख्य कर्त्तव्यं किम् अस्ति?

उत्तर—इदानीं यदा वयं राष्ट्रस्य नवनिर्माणे संलग्नाः स्मः निरन्तरं कर्मकरणम् अस्माकं मुख्यं कर्त्तव्यम्।

(छ) संस्कृतिशब्दस्य किम् तात्पर्यम् अस्ति?

उत्तर—मानवजीवनस्य संस्करणं संस्कृतिः इति संस्कृति शब्दस्य तात्पर्यम्।

(ज) भारतीय संस्कृतेः मूलम् किम् अस्ति?

अथवा, **किं भारतीय संस्कृतेः मूलम्?**

उत्तर—विश्वस्य स्रष्टा ईश्वरः एक एव इति भारतीय-संस्कृतेः मूलम् अस्ति।

(झ) विश्वस्य स्रष्टा कः?

उत्तर—विश्वस्य स्रष्टा ईश्वरः।

(ञ) भारतीय संस्कृतेः कः दिव्यः (प्रमुखः) सन्देशः अस्ति?

अथवा, **अस्मांक भारतीय संस्कृतेः कः सन्देशः?**

उत्तर—सर्वेषा मतानां समभावः सम्मानश्च भारतीय-संस्कृतेः दिव्यः (प्रमुखः) सन्देशः अस्ति।

अनुवाद-आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भारतीया संस्कृतिः तु सर्वेषा मतावलम्बिनां सङ्गमस्थली। काले काले विविधाः विचाराः भारतीयसंस्कृतौ समाहिताः। एषा संस्कृतिः सामासिकी संस्कृतिः यस्याः विकासे विविधानां जातीनां, सम्प्रदायानां, विश्वासानाञ्च योगदानं दृश्यते। अतएव अस्माकं भारतीयानाम् एका संस्कृतिः एका च राष्ट्रियता। सर्वेऽपि वयं एकस्याः संस्कृतेः समुपासकाः एकस्य राष्ट्रस्य च राष्ट्रियाः। यथा भ्रातरः परस्परं मिलित्वा सहयोगेन सौहार्देन च परिवारस्य उन्नतिं कुर्वन्ति, तथैव अस्माभिः अपि सहयोगेन सौहार्देन च राष्ट्रस्य उन्नतिः कर्त्तव्या।

अथवा, **भारतीया संस्कृतिः.....राष्ट्रस्य च राष्ट्रियाः।**

अथवा, **भारतीया संस्कृतिः.....च राष्ट्रियाः।**

अथवा, **एषा संस्कृतिः.....कर्त्तव्याः।**

[**शब्दार्थ—सङ्गमस्थली** = मिलने का स्थान। **काले-काले** = समय-समय पर। **समाहिता** = मिल गए, आ मिले। **सामासिकी** = समन्वयात्मक, समुच्चयात्मक। **समुपासकाः** = उपासक। **सौहार्देन** = प्रेम से।]

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश में भारतीय संस्कृति को समन्वयात्मक संस्कृति बताया गया है।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के '**संस्कृत परिचायिका**' में संकलित '**भारतीया संस्कृतिः**' नामक पाठ से लिया गया है।

अनुवाद—भारतीय संस्कृति तो सभी मतों के मानने वालों का मिलन-स्थल है। समय-समय पर अनेक प्रकार के विचार भारतीय संस्कृति में मिल गये। यह संस्कृति मिली-जुली संस्कृति है, जिसके विकास में अनेक जातियों, सम्प्रदायों और विश्वासों का योगदान दिखाई पड़ता है। इसलिए हम भारतवासियों की एक संस्कृति और एक राष्ट्रीयता है। हम सभी एक संस्कृति की उपासना करने वाले और एक राष्ट्र के नागरिक हैं। जैसे जब भाई आपस में मिलकर सहयोग ओर प्रेमभाव से परिवार की उन्नति करते हैं, उसी प्रकार हमें भी सहयोग और मित्रभाव से राष्ट्र की उन्नति करनी चाहिए।

(ख) अस्माकं संस्कृतिः सदा गतिशीला वर्तते। मानवजीवनं संस्कर्तुम् एषा यथासमयं नवां नवां विचारधारां स्वीकरोति, नवां शक्तिं च प्राप्नोति। अत्र दुराग्रहः नास्ति, यत् युक्तियुक्तं कल्याणकारि च तदत्र सहर्षं गृहीतं भवति। एतस्याः गतिशीलतायाः रहस्यं मानवजीवनस्य शाश्वतमूल्येषु निहितम्, तद् यथा सत्यस्य प्रतिष्ठा, सर्वभूतेषु समभावः विचारेषु औदार्यम्, आचारे दृढता चेति।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश में भारतीय संस्कृति की गतिशीलता का रहस्य बताया गया है।

[**शब्दार्थ—गतिशीला** = वेगवती, चलती रहती है। **संस्कर्तुम्** = सँवारने के लिए। **नवां**—नई। **दुरागृहः** = हठ। **युक्तियुक्त** = ठीक-ठीक, उचित। **एतस्याः** = इसकी; **शाश्वतमूल्येषु** = सदा रहने वाले मूल्यों या आदर्शों में। **निहितम्** = स्थित है, समाया हुआ है। **औदार्यम्** = उदारता।]

अनुवाद—हमारी संस्कृति निरन्तर चलती रहती है। मानव जीवन को संस्कारित करने के लिए यह समय-समय पर नई-नई विचारधाराएँ अपनाती रहती है और नई शक्ति प्राप्त करती है। यहाँ हठधर्मिता नहीं है। जो कुछ उचित और कल्याणकारी है, वह यहाँ खुशी-खुशी स्वीकार होता है। इसकी गतिशीलता का रहस्य मानव जीवन के लिए सदैव रहने वाले आदर्शों या मूल्यों; जैसे-सत्य की प्रतिष्ठा, सभी प्राणियों के लिए एकसमान भाव, विचारों में उदारता और आचरण की दृढ़ता में समाया हुआ है।

(ग) मानव-जीवनस्य संस्करणं संस्कृतिः। अस्माकं पूर्वजाः मानवजीवनं संस्कर्तुं महान्तं प्रयत्नम् अकुर्वन्। ते अस्माकं जीवनस्य संस्करणाय यान् आचारान् विचारान् च अदर्शयन् तत् सर्वम् अस्माकं संस्कृतिः।

''विश्वस्य स्रष्टा ईश्वर एक एव'' इति भारतीयसंस्कृतेः मूलम्। विभिन्नमतावलम्बिनः विविधैः नामभि एकम् एव ईश्वरं भजन्ते।

[**शब्दार्थ**—संस्करणं = सँवारना, संस्कार। **संस्कर्तुं** = सँवारने के लिए। **संस्करणाय** = संस्कार के लिए। **अदर्शयन्** = दिखाया।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इसमें भारतीय संस्कृति के स्वरूप और महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

अनुवाद—मानव-जीवन को सँवारना (दोषादि को दूर करना) संस्कृति है। हमारे पूर्वजों में मानव-जीवन को शुद्ध करने के लिए महान् प्रयत्न किये। उन्होंने हमारे जीवन के संस्कारों के लिए जिन आचारों और विचारों को दिखाया, वह सब हामरी संस्कृति है। ''संसार की रचना करने वाला ईश्वर एक ही है'', यह भारतीय संस्कृति का मूल है। विभिन्न मतों के अनुयायी अलग-अलग नामों से ईश्वर का भजन करते हैं।

(घ) ''विश्वस्य स्रष्टा ईश्वर एक एव'' इति भारतीयसंस्कृतेः मूलम्। विभिन्नमतावलम्बिनः विविधैः नामभिः एकम् एव ईश्वरं भजन्ते। अग्निः, इन्द्रः, कृष्णः, करीमः, रामः, रहीमः, जिनः, बुद्धः, ख्रस्तः, अल्लाहः इत्यादीनि नामानि एकस्य एव परमात्मनः सन्ति। तम् एव ईश्वरं जनाः गुरुः इत्यपि मन्यन्ते। अतः सर्वेषां मतानां समभावः सम्मानश्च अस्माकं संस्कृतेः सन्देशः।

[**शब्दार्थ—स्रष्टा** = रचयिता, रचना करने वाला। **विभिन्नमतावलम्बिनः** (विभिन्नमत + अवलम्बिन) = विविध मतों को मानने वाले अर्थात् अनुयायी। **समभावः** = समान भाव।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश में भारतीय संस्कृति के मूल रहस्य पर प्रकाश डाला गया है।

अनुवाद—संसार की रचना करने वाला ईश्वर एक ही है। यह भारतीय संस्कृति का मूल है। विभिन्न मतों के अनुयायी अलग-अलग नामों से ईश्वर का भजन करते हैं। अग्नि, इन्द्र, कृष्ण, करीम, राम, रहीम, जैन, बुद्ध, ईसा, अल्लाह आदि एक ही ईश्वर के विभिन्न नाम हैं। उसी ईश्वर को लोग गुरु के रूप में भी मानते है। अतः सभी मतों के प्रति एकसमान भाव रखना और सम्मान करना ही हमारी संस्कृति का सन्देश है।

(ङ) एषा कर्मवीराणां संस्कृतिः। ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'' इति अस्याः उद्घोषः। पूर्वं कर्म, तदनन्तरं फलम् इति अस्माकं संस्कृतेः नियमः। इदानीं यदा वयं राष्ट्रस्य नवनिर्माणे संलग्नाः स्मः निरन्तरं कर्मकरणम् अस्माकं मुख्य कर्त्तव्यम्। निजस्य श्रमस्य फलं भोग्यं, अन्यस्य श्रमस्य शोषणं सर्वथा वर्जनीयम्। यदि वयं विपरीतम् आचरामः तदा न वयं सत्यं भारतीयसंस्कृतेः उपासकाः। वयं तदैव यथार्थं भारतीयाः यदास्माकम् आचारे विचारे च अस्माकं संस्कृतिः लक्षिता भवेत्। अभिलषामः वयं यत् विश्वस्य अभ्युदयाय भारतीयसंस्कृतेः एषः दिव्यः सन्देशः लोके सर्वत्र प्रसरेत्।

अथवा, **पूर्वं कर्म ..... फलं भोग्यम्।**

[**शब्दार्थ—कर्मवीराणां** = कर्म में संलग्न रहने वालो की। **कुर्वन्नेवेह** (कुर्वन + एव + इह) = यहाँ करते हुए ही। **जिजीविषेच्छतं (जिजीविषेत् + शतम्) समाः** = सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। **उद्घोषः** = घोषणा। **संलग्नाः** = लगे हुए हैं। **कर्मकरणम्** = कर्म करना। **वर्तनीयम्** = त्यागने योग्य है। **आचरामः** = आचरण करते हैं। **लक्षिता भवेत्** = दिखाई दे। **अभिलषामः** = चाहते है। **अभ्युदयाय** = उन्नति के लिए। **प्रसरेत्** = प्रसारित हो।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश में हमारी संस्कृति को कर्मवीरों की संस्कृति बताया गया है।

अनुवाद—यह कर्म में संलग्न रहने वालों (कर्मवीरों) की संस्कृति है। ''यहाँ कर्म करते हुए ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए'' यह इसकी घोषणा है। पहले कर्म, बाद में फल—यह हमारी संस्कृति का नियम है। इस समय जब हम लोग राष्ट्र के नव-निर्माण में लगे हुए हैं, निरन्तर काम करना ही हमारा प्रधान कर्त्तव्य है। अपने परिश्रम का फल भोगने योग्य है, दूसरे के श्रम का शोषण त्यागने योग्य है। यदि हम विपरीत आचरण करते हैं तो हम भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक नहीं हैं। हम तभी वास्तविक रूप में भारतीय हैं, जब हमारे आचार और विचार में हमारी संस्कृति दिखाई दे। हम सब चाहते हैं कि संसार की उन्नति के लिए भारतीय संस्कृति का यह दिव्य सन्देश संसार में सब जगह फैले।

(च) सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

[**शब्दार्थ—निरामयाः** = रोगरहित, नीरोग। **भद्राणि** = कल्याण। **दुखभाग्** = दुःखी या दुख का भागी। **भवेत्** = होवे।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में भारतीयों की मूल भावना को दर्शाया गया हैं।

अनुवाद—सभी सुखी हों, सभी नीरोगी हों, सभी कल्याण देखें और कोई भी दुःख का भागी न हो।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) मानव जीवन का सुधार ही संस्कृति है।

उत्तर—मानव-जीवनस्य संस्करणाम् एवं संस्कृतिः।

(ख) ईश्वर एक है।

उत्तर—ईश्वरः एकः एव।

(ग) हमारी संस्कृति उदार और गतिशील है।

उत्तर—अस्माक संस्कृतिः उदारा गतिशीला च अस्ति।

(घ) हमें अपनी संस्कृति की रक्षा करनी चाहिये।

उत्तर—वयं स्वसंस्कृतिः रक्षेयुः।

(ङ) सदा सत्य बोलना चाहिए।
उत्तर—सदा सत्यं वदेत्।
(च) मुझे अब विद्यालय जाना चाहिये।
उत्तर—अहं विद्यालयं गच्छेत्।
(छ) माता भोजन पकायेगी।
उत्तर—माता भोजनं पक्ष्यति।
(ज) हम सब भारतीय हैं।
उत्तर—वयं सर्वा: भारतीय: सन्ति।
(झ) हम सभी एक ही देश के नागरिक हैं।
उत्तर—वयं सर्वेऽपि एकस्य एव देशस्य नागरिक: सन्ति।
(ञ) सभी सुखी हों।
उत्तर—सर्वे भवन्तु सुखिन:।

व्याकरण एवं भाषा-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित के धातु, लकार तथा पुरुष लिखिए—
कुर्वन्ति, अदर्शयन्, भवति, भवेत्, अकुर्वन्।
उत्तर—

क्रियापद	धातु	लकार	पुरुष	वचन
कुर्वन्ति	कृ	लट्	प्रथम	एकवचन
अदर्शयन्	दृश (पश्य)	लङ्	प्रथम	बहुवचन
भवति	भू	लट्	प्रथम	एकवचन
भवेत्	भू	विधिलिङ्	प्रथम	एकवचन
अकुर्वन्	कृ	लङ्	प्रथम	बहुवचन

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में मूलशब्द, विभक्ति और वचन लिखिए—
अस्माभि:, नामभि:, विविधै:, कर्माणि, जातीनाम्, नवनिर्माणे, उपासका:, सौहार्देन, विचारेषु, अभ्युदयाय।
उत्तर—

शब्द	विभक्ति	वचन
अस्माभि:	तृतीया	बहुवचन
नामभि:	तृतीया	बहुवचन
विविधै:	तृतीया	बहुवचन
कर्माणि	द्वितीया	बहुवचन
जातीनाम्	षष्ठी	बहुवचन
नवनिर्माणे	सप्तमी	एकवचन
उपासका:	प्रथमा	बहुवचन
सौहार्देन	द्वितीया	द्विवचन
विचारेषु	सप्तमी	बहुवचन
अभ्युदयाय	तृतीया	द्विवचन

प्रश्न 3. निम्नलिखित में सन्धि कीजिए और सन्धि का नाम भी लिखिए—
मत + अवलम्बी, अभि + उदय:, जिजीविषा + इच्छेत्, सर्वे + अपि, यथा + अर्थम्, इति + आदि।
उत्तर—

सन्धि-विच्छेद			शब्द	सन्धि
मत	+	**अवलम्बी**	मतावलम्बि:	दीर्घ
अभि	+	**उदय:**	अभ्युदय:	यण
जिजीविषा	+	**इच्छेत्**	जिजीविषेच्छेत्	स्वर
सर्वे	+	**अपि**	सर्वेऽपि	गुण
यथा	+	**अर्थम्**	यथार्थम्	दीर्घ
इति	+	**आदि**	इत्यादि	यण

प्रश्न 4. निम्नलिखित अव्ययों का अर्थ संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
एव, अतएव, यथा, सदा, यत्, सर्वत्र, मा, कश्चिद्।
उत्तर— (क) विश्वस्य स्रष्टा ईश्वर: एक **एव** इति दिव्य अस्ति।
(ख) अतएव अस्माकं एका ईश्वर:।
(ग) यथा भारतीय: कर्त्तव्य।
(घ) ईश्वर: **सदा** अस्ति।
(ङ) अत्र दुराग्रह: नास्ति, **यत्** युक्तियुक्तं कल्याणकारि च।
(च) ईश्वरस्य **सर्वत्र** भवन्ति।
(छ) मा कश्चित् दु:खभाग्भवेत्।

9 जीवन-सूत्राणि
(जीवन के सूत्र)

अभ्यास प्रश्न

पाठ से संवाद (पाठाधारित प्रश्न)

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—
(क) भिषक् कस्य मित्रं भवति?
अथवा, **आतुरस्य मित्रं किम् अस्ति?**
उत्तर—भिषक् आतुरस्य मित्रं भवति।
(ख) मरिष्यत: किं मित्रं भवति?
उत्तर—मरिष्यत: दानं मित्रं भवति।
(ग) किंस्वित् शीघ्रतरं वातात् किंस्विद् बहुतरं तृणात्?
उत्तर—मन: शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात्।
(घ) तृणात् बहुतरं किम् अस्ति?
उत्तर—चिन्ता बहुतरी तृणात् अस्ति।
(ङ) किं हित्वा नर: प्रियो भवति?
उत्तर—नर: मान हित्वा प्रियो: भवति।
(च) सर्वेषु उत्तमं धनं किम् अस्ति?

उत्तर—सर्वेषु उत्तमं धनं श्रुतम् अस्ति।

(छ) धनानां उत्तमं धनं किम् अस्ति?

उत्तर—धनानां उत्तमं धनं दाक्ष्यम् अस्ति।

(ज) मनुष्यः कि हित्वा सुखी भवेत्/भवति?

उत्तर—मनुष्यः लोभ हित्वा सुखी भवेत्।

(झ) वातात् शीघ्रतरं किं भवति?

उत्तर—वातात् शीघ्रतरं मनः भवति।

(ञ) किंस्विद् गुरुतरा भूमेः?

उत्तर—माता गुरुतरा भूमेः।

(ट) भूमेः गुरुतरं किम् अस्तिः?

उत्तर—भूमेः गुरुतरं माता अस्ति।

(ठ) गृहे सतः मित्रं किम् अस्ति?

उत्तर—ग्रहे सतः मित्रं भार्या अस्ति।

(ड) आकाशात् उच्चतरं किम् अस्ति?

अथवा, **खात् उच्चतरं किम् अस्ति?**

उत्तर—पिता आकाशात् उच्चतरं अस्ति।

(ढ) पिता कस्मात् उच्चतरः भवति?

उत्तर—पिता आकाशात् उच्चतरं अस्ति।

अनुवाद-आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) धान्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम्।
लभानां श्रेय मारोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा।

[**शब्दार्थ—धान्यानाम्** = अन्नों में। **धनानामुत्तमं** = धनों में उत्तम।]

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक के '**संस्कृत परिचायिका**' में संकलित '**जीवन-सूत्राणि**' नामक पाठ से लिया गया है।

प्रसंग—इस श्लोक में युधिष्ठिर यक्ष के प्रश्नों का उत्तर देता है।

अनुवाद—युधिष्ठिर कहता है कि अन्नों में उत्तम अन्न निपुणता है। धनों में उत्तम धन शास्त्र है। लाभों में उत्तम लाभ आरोग्य है। सुखों में उत्तम सुख सन्तोष है।

(ख) किं नु हित्वा प्रियो भवति किन्नु हित्वा न शोचति?
किं नु हित्वार्थवान् भवति किन्नु हित्वा सुखी भवेत्?॥
मानं हित्वा प्रियो भवति? क्रोध हित्वा न शोचति?
कामं हित्वार्थवान् भवति? लोभं हित्वा सुखी भवेत्॥

[**शब्दार्थ—हित्वा** = त्यागकर। **शोचति** = शोक करता है।]

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इन श्लोकों में विभिन्न त्यागों के महत्त्व को दर्शाया गया है।

अनुवाद—(यक्ष)—मनुष्य् क्या छोडकर प्रिय हो जाता है? मनुष्य क्या छोड़कर शोक नहीं करता है? मनुष्य क्या छोड़कर धनवान् हो जाता है? मनुष्य क्या छोड़कर सुखी होता है?

(यूधिष्ठिर)—मनुष्य अहंकार को छोड़कर प्रिय हो जाता है। मनुष्य क्रोध को छोड़कर शोक नहीं करता है। मनुष्य इच्छा (कामना) को छोड़कर धनवान् हो जाता है। मनुष्य लोभ को छोड़कर सुखी हो जाता है।

(ग) किंस्विद् गुरुतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात्?
किंस्वित् शीघ्रतरं वातात् किंस्विद् बहुतरं तृणात्?॥
माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात्॥

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इन श्लोकों में यक्ष के प्रश्नों व के युधिष्ठिर के उत्तरों के माध्यम से माता-पिता इत्यादि के महत्त्व को दर्शाया गया है।

अनुवाद—(यक्ष युधिष्ठिर से पूछता है) भूमि से महान् क्या है? आकाश से ऊँचा कौन है? वायु से अधिक शीघ्रगामी क्या है? तिनके से अधिक दुर्बल (क्षीण) बनाने वाली क्या है?

(युधिष्ठिर उत्तर देता है) पृथ्वी से अधिक भारी माता है। आकाश से अधिक ऊचाँ पिता है। वायु से अधिक शीघ्रगामी मन है। तृण से अधिक दुर्बल बनाने वाली चिन्ता है।

(घ) सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः।
आतुरस्य भिषक् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः॥

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इस श्लोक में विभिन्न व्यक्तियों के मित्रों के विषय में बताया गया है।

अनुवाद—प्रवास में रहने वाले का मित्र या साथी धन होता है। घर में रहने वाले का मित्र पत्नी होती है। रोगी का मित्र वैद्य होता है। मरने वाले का मित्र दान होता है।

(ङ) किंस्विदेकपदं धर्म्यं किंस्विदेकपदं यशः।
किंस्विदेकपदं स्वगर्यं किंस्विदेकपदं सुखम्॥ 5॥
दाक्ष्यमेकपदं धर्म्यं दानमेकपदं यशः।
सत्यमेकपदं स्वर्ग्यं शीलमेकपदं सुखम्॥ 6॥

[**एकपदं = एकमात्र। दाक्ष्यम् = योग्यता, चतुरता।**]

प्रसंग—इन श्लोकों में धर्म और सुखादि को परिभाषित किया गया है।

अनुवाद—(यक्ष)—एकमात्र धर्म क्या है? एकमात्र यश क्या है? एकमात्र स्वर्ग दिलाने वाला क्या है? एकमात्र सुख क्या है।

(युधिष्ठिर)—दक्षता (योग्यता) एकमात्र धर्म है। दान एकमात्र यश है। सत्य एकमात्र स्वर्ग दिलाने वाला है। सदाचार एकमात्र सुख है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) माता भूमि से बढ़कर है।

उत्तर—माता गुरुतरां भूमेः।

(ख) विदेश में धन ही व्यक्ति का मित्र होता है।

उत्तर—विदेशे मित्रम् धनम् अस्ति।

(ग) धनों में वेदवचन ही उत्तम धन है।

उत्तर—धनेषु वेदवचन उत्तमः धनं अस्ति।

(घ) स्वास्थ्य उत्तम सुख है।

उत्तर—स्वास्थ्यः उत्तमम् सुखं अस्ति।

(ङ) आकाश से ऊँचा क्या है?

उत्तर—आकाशात् उच्चः किम् अस्ति।

(च) धर्म से व्यक्ति का कल्याण होता है।

उत्तर—धर्मायाः मनुष्यस्य कल्याणम् भवति।

(छ) मरने वाले का मित्र दान है।

उत्तर—दानं मित्रं मरिष्यतः।

(ज) लोभ त्यागकर मनुष्य सुखी हो जाता है।

उत्तर—लोभं हित्वा जनः सुखी भवति।

व्याकरण एवं भाषा-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित में धातु, लकार, पुरुष तथा वचन बताइए—

मरिष्यतः, स्यात्, शोचति, भवेत्, भवति।

शब्द रूप	धातु	लकार	पुरुष	वचन
मरिष्यतः	मृ	लृट्	प्रथम	द्विवचन
स्यात्	अस्	विधिलिङ्	प्रथम	एकवचन
शोचति	शुच्	लट्	प्रथम	एकवचन
भवेत्	भू	विधिलिङ्	प्रथम	एकवचन
भवति	भू	लट्	प्रथम	एकवचन

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति और वचन लिखिए—

भूमेः, धनानाम्, प्रिय, खात्, तृणात्, मित्रम्, कामम्, आतुरस्य, गृहे, उत्तमा, लाभानाम्।

शब्द	विभक्ति	वचन
भूमेः	पंचमी, पष्ठी	एकवचन
धनानाम्	षष्ठी	बहुवचन
प्रिय	प्रथमा	एकवचन
खात्	पंचमी	एकवचन
तृणात्	पंचमी	एकवचन
मित्रम्	द्वितीया	एकवचन
कामम्	द्वितीया	एकवचन
आतुरस्य	षष्ठी	एकवचन
गृहे	सप्तमी	एकवचन
उत्तमा	सप्तमी	एकवचन
लाभानाम्	षष्ठी	बहुवचन

प्रश्न 3. 'अस्' धातु के लोट्लकार तथा 'भू' धातु के विधिलिङ्लकार के तीनों पुरुषों और वचनों के रूप लिखिए।

उत्तर—अस् लोट्लकार (आज्ञा अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अस्तु/स्तात्	स्ताम्	सन्तु
मध्यम	एधि/स्तात्	स्तम्	स्त
उत्तम	असानि	असाव	असाम

'भू' विधिलिङ्लकार (चाहिए अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम	भवेयम्	भवेव	भवेम

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

तृणात्, चिन्ता, मित्रम्, मरिष्यतः, सुखम्, आरोग्यम्, शोचति, हित्वा, मानम्।

उत्तर— **(क)** **तृणात्** चिन्ता बहुतरी अस्ति।
(ख) मनुष्यस्य बहुतरी **चिन्ता** अस्ति।
(ग) विदेशे **मित्रम्** धनम् अस्ति।
(घ) **मरिष्यतः** मित्रं दानम् अस्ति।
(ङ) विद्यां सत्यं **सुखम्** अस्ति।
(च) लाभानाम् उत्तमं **आरोग्यम्** अस्ति।
(छ) क्रोध त्यक्त्वा न **शोचति**।
(ज) लोभं **हित्वा** सुखी भवेत्।
(झ) **मानम्** चिन्ता तृणात्।

❑